बाजीगर

बांग्ला के बहुचर्चित
उपन्यास का
हिन्दी रूपान्तर

बाजीगर

आशुतोष मुखर्जी

हिन्दी रूपान्तर
सुशील गुप्ता

·········श्रावणी अन्दर-ही-अन्दर दर्द से छटपटाती रही और घुटती रही। अतः गुणीदत्त के जाते ही वह उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। उसे अपने पर ही क्षोभ हो आया। अपने प्रति तीखी विरक्ति होने लगी। वह रात को गहरी नींद से चौंककर जाग उठती और एक निचाट सूनापन उसे हहराकर अपने दामन में समेट लेता। लेकिन इसके साथ ही वह यह भी महसूस करती कि उसकी जिन्दगी में किसी शाहंशाह के कदम पड़े हैं, वह यूँ ही खो देने लायक नहीं हैं। इन विपरीत खयालों में, वह भरमाई हुई-सी चुपचाप जाने किसे खोजने लगती। वह दिल से महसूस कर रही थी कि हर औरत के दिल में ऐसे ही पुरुष की आकांक्षा करवटें लेती है।···श्रावणी अकेले में इन तमाम सत्यों को झुठलाने की भरसक कोशिश करती है, तो बेहद असहाय महसूस करती है और फिर अपने ही प्रति गहरा क्षोभ उभर आता है और वह अजीब-सी बेचैनी से छटपटाने लगती है।······

बाजीगर
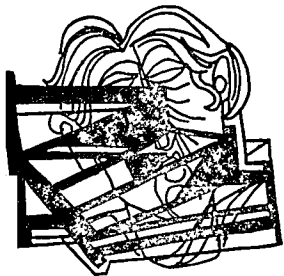
…और दो घण्टे बाद समुद्र नि:शेष हो जाएगा।

लगातार उन्नीस दिनों में अपने चारों ओर पानी ही पानी देखते हुए, जो लोग घबरा उठे थे, उनकी आँखों और चेहरों पर रोशनी की लहर नाच उठी—खास कर भारतीयों के चेहरों पर। उनमें से बहुत से हैं, जो कई सालों बाद, स्वदेश लौट रहे हैं। इस समुद्र के साथ मानो किसी बहुत बड़ी चीज की परिसमाप्ति होने को है। सबकी आशा-उम्मीद की झोली अब भरने ही वाली है। जो लोग भविष्य के लिए पाथेय संग्रह, करने समुद्र-पार गए थे, कम-से-कम उनकी उम्मीदें तो अब पूरी होने को है। आने वाले दिनों की भूमिकास्वरूप की हुई परिक्रमा अब पूरी हुई। लोगों के सामने अब नयी जिन्दगी, नए सपने हैं। इस नये अनागत के आँगन में समृद्धि-देवी उनसे आँख-मिचौनी खेलती हुई, खुश-खुश थिरक रही थी।

जहाज के भीतर, लोगों के चमकते हुए चेहरों की ओर देखते हुए, गुणीदत्त, अन्दाज लगा सकता था कि कौन, किस कीमत की योग्यता का सर्टिफिकेट लिये लौट रहा है।

दरअसल, इस जमाने में आगे बढ़ने के लिए एक पासपोर्ट की जरूरत होती है। जिसके पास जिस कीमत का सर्टिफिकेट होगा, उसकी वैसी ही कद्र होगी। आप जब इस सार्थकता के दरबार में तशरीफ लाएँगे, आपको भी बैठने की जगह दी जाएगी। लेकिन प्रवेश पाने के लिए, पहले योग्यता अर्जित कीजिए, पासपोर्ट दिखाइए। आपकी जगह सामने की कतार में होगी या बीच में, या बिल्कुल पीछे, इसका फैसला तो आपकी योग्यता की पूँजी के अनुसार होगा।

रोशनी के धुंधलके में डेक के एक कोने से पीठ टिकाए, गुणीदत्त पानी की ओर देखता हुआ, मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। अपने अनजाने में मानों कोई अज़ीबोगरीब तमाशा देख रहा हो। छः साल बाद वही, कौन-सी योग्यता का पासपोर्ट लेकर लौट रहा है ?

ना, गुणीदत्त को किसी से ईर्ष्या नहीं होती, बल्कि पिछले उन्नीस दिनों से, जहाज के तमाम देशी-विदेशी यात्री ईषत् ईर्ष्या से, सम्मान सहित उसे घेर कर हो-हुल्लड़ मचाते रहे। उनके अनुनय-विनय, आदर-अभ्यर्थना की अतिशयता में उसकी साँसें ऊब-डूब करने लगीं।

गुणीदत्ता ! गुणीदत्ता !! गुणीदत्ता !!!

'गुणीदत्ता ! यू आर सिम्प्ली वोन्डरफुल ! तुम वाकई गजब हो, यार !'

'अरे, आइए, गुणीदत्ता जी, आइए ! तशरीफ रखिए !'

'आइए न—शाम रौशन कीजिए।'

गुणीदत्त आदमी के तौर-तरीकों या स्वभाव के बारे में एक मोटी-सी बात, अच्छी तरह समझ चुका है। उसके ख्याल से उसमें कहीं कोई खास फर्क या व्यतिक्रम भी नहीं दिखता। चमडी चाहे गोरी हो या पीली या काली—हर आदमी जादुई-करिश्मों का भक्त होता है। सहज ही चकित कर देनेवाले ऐडवेन्चर के प्रति वह हमेशा से ही लोभी रहा है। एक खास उम्र होती है—किशोर उम्र ! जब अनपेक्षित या आकस्मिक हैरानी, विमूढ़ता या आकर्षण उसे सुखद लगते हैं। वह किशोर प्रायः हर किसी में विद्यमान होता है, और उसकी उम्र भी कभी बढ़ती-घटती नहीं है।

बस, इतना-सा ज्ञान ही गुणीदत्त के समूचे जीवन की पूंजी है। हर आदमी के भीतर छुपा हुआ, बच्चा-मन ही उसे चिर-किशोर बनाये रखता है। छः साल पहले बस, इत्ती-सी पूंजी के सहारे, वह लक्ष्यहीन-सा सागर-यात्रा पर निकल पड़ा था और आज छः साल बाद भी, सिर्फ उसी पूंजी के भरोसे, समुद्र की राह, फिर अपने देश वापस लौट रहा है।

गुणीदत्त जब गया था, तो जरखरीद गुलाम की तरह। उसका

खेल देखते हुए, लोगों के चेहरे उसके दिल पर, हमेशा के लिए अपनी छाप छोड़ गये। अपने मन की द्विधा और परेशानी को झूठी हँसी या अनाड़ीपन के पर्दे में छुपा कर, वह बहाने-बहाने से उनके करीब आने का मौका खोजता रहा। इसके लिए उसे कभी-कभी खुशामदों का जाल भी बिछाना पड़ा है। उनकी इस हँसी-खुशी की रौशनी से, अपनी उम्मीदों का चिराग जलाए, वह एक दिन सागर-पार जा पहुँचा था।

अगर उसके खेलों में कोई नवीनता नहीं होती या यात्रियों को उसके खेल पसन्द न आते या बोर लगते, तो भी जहाज के क्वार्टर-मास्टर की कृपा-दृष्टि वैसी ही बनी रहती, यह कहना मुश्किल था। किसी अपरिचित बन्दरगाह पर, अगर वह उसे गरदनिया देकर उतार भी देता, तो भी उसे खास आश्चर्य नहीं होता। उनमें समझौता ही कुछ इसी तरह का हुआ था। शायद इसीलिए यात्रा की शुरुआत में, गुणीदत्त को सागर का यह अनन्त विस्तार बेहद-बेहद निर्मम लगा था। लगा था, यह सामने बिछा हुआ सागर, जैसे कभी खत्म ही नहीं होगा।

लेकिन आज लौटते हुए, इससे विपरीत महसूस कर रहा था। उसे लगा, इस बार यह समुद्र जैसे बहुत जल्दी खत्म हो गया। अन्य यात्रियों की तरह, आज वह भी शान से सिर ऊंचा किए हुए, स्वदेश लौट रहा है। इस बार वापसी के समय जहाज का क्वार्टर-मास्टर ही नहीं, बाकी और अफसर भी, उसकी दुगनी खातिर में लगे रहे। समूची यात्रा के दौरान, यात्रियों के लिए बिना किसी टिकट के, ढेर-ढेर अजीबोगरीब खेल दिखा कर उनके लिए दिमागी खुराक भी तो उसी ने जुटायी थी। हाँ, अलबत्ता इस बार ऐसा करने को वह विवश नहीं किया गया था। उसने जो कुछ किया, वह यात्रियों के दिल-बहलाव और समय के सदुपयोग के ख्याल से किया। यानी इस बार तो वह भी, अन्य मुसाफिरों की तरह, बाकायदा टिकट खरीदकर, जहाज पर सवार हुआ था, किसी की करुणा पर आश्रित होकर नहीं लौटा था।

शाम को गुणीदत्त के प्रोग्राम की सूचना सुनकर, यात्रियों में पहले से ही हलचल मच जाती। लोग बेहद उत्सुकता से शाम राह देखने लगते। हाथ-सफाई के जादुई करिश्मों के बीच

श्मे भी बुन देता था। लोगों का ख्याल था, वह खुशियों का
श्ता है। वह जब चाहे, दोनों हाथों से खुशियों की बरसात कर
ता है। कभी किसी अच्छे खासे आदमी की दुर्गत बना दी, या किसी
ारी को ऐसा चकमा दिया कि बेचारी हैरानी में पड़ गई—उसके इन
ों में खुशियों का जैसे ज्वार उमड़ आता और लोग उसमें सराबोर
उठते थे। कभी उसके खेलों में अगर दो-तीन दिन का भी अन्तराल
जाता, तो झुंड के झुंड लोग, उसके दरवाजे के आगे धरना देकर
जाते, 'एक छोटा-मोटा शो तो आपको देना ही होगा, वर्ना हमारी
समुद्र-यात्रा बिल्कुल बोरिंग हो जाएगी।'

समूचे जहाज-भर में चुनकर, उसने सबसे पहले, जिस स्वार्थवश
भेन्दु नन्दी से दोस्ती की थी, यह सारा रस-रंग तमाशा उसी वजह
था। वैसे भी, अगर भविष्य में इससे कोई स्वार्थ सधता हो, तो आज
ोड़ी-सी निस्वार्थ सेवा करने में, उसे कोई आपत्ति भी नहीं थी। पिछले
: सालों में गुणीदत्त ने बहुत-कुछ देखा है, बहुत-कुछ सीखा भी है।
स बहुत-कुछ देखने-सीखने के चक्कर में, उसने प्रचार का महत्त्व भी
ना है। उसी सुदूर भविष्य को ध्यान में रखकर, उसने शुभेन्दु नन्दी
ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया था।

किसी को अचानक चौंकाकर, अविभूत कर देने के लिए, थोड़ी-बहुत जासूसी की भी जरूरत पड़ती है। सुनते हैं कि पुराने जमाने के बहुत-से मशहूर जादूगर भी, जब किसी नयी-नयी जगह अपना आश्चर्य-जनक खेल दिखाने उतरते थे, तो इससे पहले वे शहर-भर में अपने आदमी तैनात कर देते थे। गुणीदत्त उतना सजग न भी हो, तो भी जहाज-भर के यात्रियों के बारे में छोटी-मोटी सूचनाएँ इकट्ठी करने में, उसे डेढ़ दिन से अधिक नहीं लगे। जहाज के आधे-से ज्यादा यात्रियों के स्वभाव और भावी काम-धन्धों की खबर तो उसे जहाज पर सवार होने से पहले ही मिल चुकी थी। यूँ तो उस जहाज में और भी बहुत-से वी० आइ० पी० यात्री थे, लेकिन उन सबको छोड़कर, उसकी निगाह इस बंगाली रिपोर्टर पर ही सबसे पहले पड़ी।

बंगाल के एक बेहद मशहूर अखबार से सम्बद्ध शुभेन्दु नन्दी को

रिपोर्टर ही कहना चाहिए, वर्ना सिर्फ ज्ञान बढ़ाने के लिए या विदेशी रिपोर्ट लेकर स्टैंडर्ड जानने के लिए, कितने लोगों को विदेश जाने का चास मिलता है ? उम्र मे भी वह गुणीदत्त से एक-आध साल छोटा ही होगा। अभी शायद तीस वर्ष भी पूरे नही किए। काफी स्मार्ट और विनम्र ! शायद रिपोर्टरों के पैरो की वजह से ही, उसने शुरू-शुरू में जरा गम्भीर दिखने की कोशिश की थी।

लेकिन बहुत जल्दी ही, गम्भीरता पिघलकर बह गई। गुणीदत्त ने बातो-ही-बातो मे यह भी पता लगा लिया कि सिर्फ शुभेन्दु नन्दी ही नही, उसके डैडी भी एक प्रसिद्ध अखबार के कुशल रिपोर्टर हैं। यह सूचना पाकर गुणीदत्त मन-ही-मन बेहद खुश भी हुआ था। आदमी लेने को जब एक हाथ फैलाता है, तो प्रभु मानो उसके दोनो हाथ-भर देते हैं। हाँ, उसे अपने दोनो हाथ बेहद भरे-भरे लगे थे। प्रचार की दो-दो जादू-छड़ी के होते हुए, उसके जादू-खेलो के लिए भीड़ जुटाना मुश्किल हो, यह नामुमकिन है।

जाहिर है कि गुणीदत्त ने खुद ही उसकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। वह रिपोर्टर भी मन-ही-मन गर्व से फूल गया। सुबह से लेकर अब तक, अभी भी निगाह कई बार उसकी तरफ जा चुकी थी। वैसे उसकी ओर आकर्षित होने की ठीक-ठीक वजह शायद वह भी नही जानता। बस, यही लगा कि मन से बेहद सहज होते हुए भी इस आदमी के व्यक्तित्व मे कही कोई फौलादी दृढ़ता भी है। चेहरे-मोहरे से भारतीय तो लगता है, लेकिन वह विशुद्ध बंगाली होगा, यह नही सोचा था। खैर, यह तो शायद किसी ने भी नही सोचा था। यात्रियों की लिस्ट मे उसका नाम सिर्फ 'गुणीडाटा' लिखा है, लेकिन इससे उसकी जात-पात का अन्दाज लगा पाना बहुत मुश्किल था। इसके अलावा दो-दो मेम साहबों से, करीब तीनेक साहबों से, उसकी अंतरंग घनिष्ठता भी, शुभेन्दु की नजर से छुपी नही थी। इतने दिनो से विलायती रूप-रंग देखते रहने की अभ्यस्त आँखों को, इसमे कोई विचित्रता भी नही लगी। लेकिन वह ठीक-ठीक बंगालियों जैसा भी तो नही लगा था।

'आप बंगाली हैं ?' शुभेन्दु शुरू दिन ही अपना

विस्मय व्यक्त कर बैठा था।

गुणीदत्त होंठों में ही मुस्कराता रहा, फिर मुलायम-सा जवाब दिया, 'जी हां, बाँकुड़ा जिले का—'

अब शुभेन्दु के लिए गुणीडाटा के नाम का एक स्कूल खोला गया।

स्कूल के मास्टर लोग भी उसकी जुल्फें खींचते हुए झल्लाकर कहते, 'चेहरे से तो लगता है, दिमाग में जाने कितनी बुद्धि भरी हुई है, लेकिन असल में भूस है! भूस!'

जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, लोगों ने और भी कई मन्तव्य जाहिर किये, खासकर, फ्रॉक छोड़कर, साड़ी पहननेवाली लड़कियों ने। जूली ऐण्डरसन तो उसे अब भी छेड़ती है, 'अरे, भाई, तुम्हारे लिए कहीं, कोई मुश्किल नहीं है। तुम्हारे सामने अगर पत्थर की दीवार खड़ी कर दी जाए, तो तुम्हारा एक बार आँख उठाकर देखना-भर काफी है। दीवार दरककर दो टुकड़े हो जाएगी और तुम शान से उस पार चले जाओगे। तुम्हें कौन रोक सकता है?'

गुणीदत्त से गहरी दोस्ती हो जाने के बावजूद शुभेन्दु नन्दी अब तक यह अन्दाज नहीं लगा पाया कि यह आदमी आखिर किस तबके का है? इस आदमी की आखिर कितनी कीमत है। हाँ, उससे बातें करते हुए, शुभेन्दु एक साँस में ही बहुत सारी बातें कह गया, जैसे किसी ने बेहद सहज भाव से, उनके मन की सारी बातें निकाल ली हों। लेकिन उसकी उत्सुकता के बावजूद, सामने वाला व्यक्ति अपने बारे में जान-बूझकर कतराता रहा।

शुभेन्दु ने हार मान ली। विलायती औपचारिकता छोड़कर, उसने सीधे-सीधे ही पूछा, 'आप करते क्या हैं?'

गुणीदत्त ने सिगरेट के पॉकेट की चमचमाती हुई पन्नी बाहर निकाल ली और उससे चिपके हुए सफेद कागज की महीन पर्त को अलग करते हुए, मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। चमकीली पन्नी फेंककर, महीन कागज की चिन्दियाँ बनाने लगा। उन चिन्दियों को पहले अपनी बाएं हाथ की हथेली पर फैलाकर देखता रहा फिर हथेली में समेट-कर, दूसरी हथेली से ढंक लिया और लड्डू की तरह गोला बनाने

लगा। कई मिनट बाद, शुभेन्दु का एक हाथ खींचकर, अपनी बन्द मुट्ठी पर रख लिया। गुणीदत्त आगे क्या करेगा, शुभेन्दु इसका अन्दाज नहीं लगा पाया। अपने सवाल का कोई जवाब न पाकर, उसे हैरानी हो रही थी। अलबत्ता गुणीदत्त की आँखें जरूर कुछ कह रही थीं, और जिसके बारे में वे कह रही थीं, वह मानो उसकी मुट्ठी में बन्द थी। गुणीदत्त के चेहरे पर निगाहें जमाए हुए, उसने जब मुट्ठी खोली, तो अवाक् रह गया। उसके हाथ मे कागज की चिन्दियों की जगह, कोरे कागज का एक बड़ा-सा टुकड़ा था, जिस पर स्याही से साफ-साफ अक्षरों में लिखा था, 'ठगबाजी!'

शुभेन्दु अचकचा गया। थोड़ी देर पहले, उसकी आँखों के सामने ही, कागज फाड़कर चिन्दियाँ बनायी गयीं थी और उसकी गोली बनाकर, उसके हाथ पर रख दी गयी थी। इस बीच वह जुड़ कैसे गयी? और उसने तो अभी-अभी सवाल किया था उसने इतनी जल्दी जवाब कब और कैसे लिख लिया?

गुणीदत्त से नजरें मिलते ही वह हँस पड़ा। उसने कागज पर लिखे हुए जवाब को हँसकर उड़ा देना चाहा। उसे लगा, उसकी पलक झपक गयी होगी और इसी बीच उसने हाथ-सफाई दिखा दी। उसने पूछ ही लिया, 'तो मैं क्या यह समझूँ कि मेरा सवाल तुम्हें मालूम था और इसका जवाब, तुम पहले से ही लिख लाए थे?'

'जी नहीं, आपकी ही कलम से तो लिखा है! आपको पता नहीं चला?'

शुभेन्दु एक बार फिर चकरा गया। उसने अपनी जेब टटोली। सच ही, उसकी कलम गायब थी। अभी थोड़ी देर पहले ही, बाहर डेक चेयर पर बैठकर उसने घरवालों को खत लिखा था। उस समय तो उसकी कलम जेब में ही थी। उसके सामने ही गुणीदत्त हाथ घुमाते हुए, हवा में कुछ खोजता रहा और जाने कहाँ से कलम निकालकर, धीरे से उसके सामने रख दिया। शुभेन्दु मुंह बाए देखता रहा। गुणीदत्त ने अपने हाथों से शुभेन्दु की जेब मे वह पेन खोंस दिया और मन्द-मन्द मुस्कराने लगा।

शुभेन्दु भी उसकी तरफ देखते हुए हँस दिया, लेकिन अपने मन-ही-मन उसकी हाथ सफाई की तारीफ किए बिना नहीं रह पाया। यही उसका पेशा है, जाने क्यों, यह बात अभी भी उसके आगे स्पष्ट नहीं हो पायी, लेकिन इस बारे में उसे कोई उलझन भी नहीं हुई। दो-दो बार, एक ही तरह का चकमा खाकर, उनकी दोस्ती और सहज हो उठी।

उसने मुड़े-तुड़े कागज की लिखावट पर दुबारा गौर किया और पूछा, 'खैर, ठगबाजी में तो थोड़ा-बहुत सभी उस्ताद होते हैं, लेकिन आपकी कला का राज क्या है ?'

गुणीदत्त पहले की तरह ही मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। हँसी से छलकती हुई, उसकी आँखों की पुतलियाँ, शुभेन्दु के चेहरे पर टिकी रहीं। उसने एक बार, अपने कन्धे झटकाए और हाथ बढ़ाकर, वह मुड़ा-तुड़ा कागज उठा लिया और पहले की तरह कागज की चिन्दियाँ बनाने लगा इस बार शुभेन्दु की आँखें अतिशय सजग थीं। वह आदमी गम्भीरता का मुखौटा ओढ़े, हँसी-हंसी में दुबारा कुछ करने जा रहा है। लेकिन शुभेन्दु नन्दी, छोटे बच्चों की तरह दुबारा धोखा खाने को राजी नहीं था।

गुणीदत्त बेहद निश्चिन्त भाव से कागज की चिन्दियाँ बनाता रहा। उसने शुभेन्दु की आँखों के सामने ही स्याही से लिखे हुए 'ठगबाजी' शब्द के टुकड़े-टुकड़े कर डाले, फिर पहले की तरह ही दोनों हाथों से उनकी गोलियाँ बना-बनाकर, दवाई की गोली की तरह, शुभेन्दु की हथेली पर रखता गया।

शुभेन्दु को इस बार भी उसके करिश्मे पर, विश्वास करना होगा ? इस बार तो उसने जरा-सी भी लापरवाही नहीं बरती। उसके सामने दुबारा एक कागज का टुकड़ा फड़फड़ा उठा, जिस पर छोटे-छोटे साफ अक्षरों में अंकित था—'धप्पाबाजी'। कागज की दूसरी तरफ 'ठगबाजी' शब्द भी ज्यों-का-त्यों चमक रहा था। अभी कुछ ही मिनट पहले, वह इस शब्द को टुकड़े-टुकड़े होते देख चुका था।

इस बार वह जरा और सजग हो उठा। गुणीदत्त की तरफ हैरत-भरी नजरों से देखते हुए पूछा, 'तुम कोई जादूगर तो नहीं हो ?'

गुणीदत्त ने हाँ या ना—कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ मन्द-मन्द

मुस्कराता रहा।

शुभेन्दु को लगा वह उसी पर हँस रहा है। उसने दुबारा पूछा, 'अच्छा, इस बार आपने किस कलम से लिखा?'

'क्यों---? आप ही की कलम से तो लिखा है!'

शुभेन्दु ने चौंककर अपनी पॉकेट की तरफ देखा। उसकी कलम जेब में ही थी। लेकिन गुणीदत्त के चेहरे पर अर्थभरी मुस्कान देखकर, उसने एक बार कलम निकालकर देखा। कलम की सिर्फ कैप ही हाथ लगी। कैप क्लिप, उसी तरह जेब में ही अटकी हुई थी, लेकिन कलम नदारद! हालाँकि आगे अपनी आँखों से देखा था कि गुणीदत्त ने उसकी जेब में पूरी कलम खोंसी थी।

उक्त घटना के बाद, दोस्ती पक्की होने में अधिक वक्त नहीं लगा। वैसे, एक मैजीशियन से जान-पहचान होगी, कोई अजीब बात भी नहीं थी। लेकिन जो जादूगर इतनी जरा-सी उम्र में ही, किसी खास विलायती कम्पनी का सर्वेसर्वा बनकर, भारत लौट रहा था, उसे कोई मामूली आदमी समझना तो दूर की बात, उससे मिलकर, शुभेन्दु को जितनी खुशी हुई थी, उतनी शायद किसी राजा महाराजा या मंत्री से मिलकर भी नहीं हुई।

यात्रियों के मनोरंजन के लिए, शाम की महफिल में, गुणीडाटा को बतौर नजिराना पेश करने का श्रेय, मानो उसी को हो। जहाज के यात्रियों को भी उसका नाम कुछ परिचित-सा लगा, लेकिन यह जादूगर स्टेज पर कैसे-कैसे अद्भुत करिश्मे दिखा सकता है, इस बारे में उसे कोई अन्दाज भी नहीं था। इससे पहले भी उसने बहुत-से जादू-खेल देखे हैं। गुणीदत्त ने भी साँस रोककर देखने लायक खेल एकाध-बार दिखाए हैं, लेकिन बहुत अनुनय-आग्रह के बाद! ज्यादातर, उसने ऐसे छोटे-मोटे आश्चर्यजनक जादू-खेल ही दिखाए हैं, जिन्हें अपने ड्राइंग-रूम में देखते हुए, आदमी खाना हजम कर सके। यूँ ही हंसी-खेल में ही किसी आदमी का बेशकीमती रूमाल, किसी भद्र महिला [illegible] ...टी-बैग [illegible] अपने से निकला। कभी किसी खूबसूरत महिला को स्टेज पर [illegible] स्टेनो को एक छोटा-सा खत लिखवाने का

ने खत को, दुबारा पढ़ भी लिया, ताकि उसकी बातें किसी और के कानों तक न जाएँ। गुणीदत्त उससे वह खत दुबारा पढ़ लेने का आग्रह किया। खत पर, दुबारा नजरें दौड़ाते हुए महिला ने स्वीकृति में सिर हिलाया यानी वह स्वीकार करती है कि यह खत उसी ने लिखवाया है। बाद में इसे अपना मानने से इन्कार न कर दे, अतः दर्शकों के सामने ही उससे दस्तखत कर देने का अनुरोध किया। महिला ने डरते-डरते उसके हाथों से खत ले लिया और तीसरी बार, उस पर एक सरसरी निगाह दौड़ाकर निश्चित हो गयी और इस खत पर दस्तखत कर दिया। गुणीदत्त ने उसे एक लिफाफा भी दिया। उसके आदेशानुसार उसे लिफाफे में बन्द करके, एक दर्शक को पकड़ा दिया। वह दर्शक, उस महिला से अनुमति लेकर लिफाफा फाड़कर, खत पढ़ने ही वाला था कि गुणीदत्त ने उसे पल भर रुकने का इशारा किया और गम्भीर आवाज में ऐलान किया कि उसके पास ऐसा जादू है, जिसके बल पर वह किसी भी मर्द या औरत के मन की गहराई में छुपी हुई बातें भी निकलवा सकता है। वह सामने खड़े आदमी से जो-जो सवाल करेगा, वह सच-सच जवाब देता जाएगा। प्रमाण हाजिर है—

इस घोषणा के बाद सच्चाई प्रमाणित करने का ड्रामा शुरू हुआ। उस आदमी ने पूरा खत अभी पढ़ा भी नहीं था कि दर्शकों में हँसी का कोहराम मच गया। खत में वह शादीशुदा खूबसूरत बर्मी लड़की, जहाज के किसी गँवई खलासी पर अपना दिलो-जान न्योछावर कर बैठी थी। लिफाफे पर उस महिला के दस्तखत भी मौजूद थे। उस खलासी को पाकर, उस महिला का युग-युगान्तरों, देह-देहान्तरों का द्वैत-भाव एकाकार हो उठा था। उस खलासी को देखते ही उसकी तरुणाई में प्रेम की ज्वाला भड़क उठी थी और वह उसके प्यार में अपनी सुध-बुध खो बैठी थी—आदि-आदि ! उस खत के नीचे अपने हस्ताक्षर से इन्कार न कर पाने की शर्म के मारे वह भाग खड़ी हुई। यह बात और थी कि बाद में पूछताछ करने पर पता लगा कि जहाज में इस नाम का कोई खलासी ही नहीं था।

गुणीदत्त ने ऐसे ही कई छोटे-मोटे खेल दिखा डाले। मारे हुए आद-

मियों की खोपड़ियाँ चलते हुए दिखाया, शर्ट की बाहें समेटकर हाथ बढ़ाकर जलती हुई मोमबत्ती में से, जिन्दा भुनगे-पतिंगे निकाल निकालकर, दर्शकों की ओर फेंकता गया। दर्शक पहले तो डर के मारे एक-दूसरे पर लोट-पोट हो गये लेकिन थोड़ी देर मे पता चला, वह सब कीट पतिंगे महज रबड के थे। सबसे अन्त मे उसी मोमबत्ती से रुपये निकालकर दर्शकों की ओर उछालने ही जा रहा था कि अचानक इसे अनुचित कहकर उसने हाथ रोक लिया। और अपने सामने की मेज पर रुपयों की झड़ी लगा दी—ठन्न ! ठन्न ! दर्शकों के सामने ही एक ढक्कनदार डब्बे में लकडी के बुरादे और फटे-पुराने कागज भर दिए गए। उसने डिब्बे का ढक्कन बन्द करते हुए एक खूबसूरत-सी महिला को स्टेज पर आने का आमन्त्रण दिया, जिसकी हथेलियों का स्पर्श तक बेहद सलोना लगे।

यह बताना फिजूल है कि दर्शकों मे से कोई आगे नही आया। अन्त मे गुणीदत्त ही स्टेज से नीचे उत्तर आया और एक सलोनी-सी महिला को स्टेज पर लिवा लाया। उस महिला के हाथो का स्पर्श तक कितना मधुर है, यह प्रमाणित करने के लिए, उसके हाथो मे फटे-पुराने कागजों और लकड़ी के बुरादो से भरा डिब्बा थमा दिया। थोडी देर बाद डिब्बा वापस लेकर, ज्योंही उसका ढक्कन उठाया, लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। उस डिब्बे मे कूडे-कर्कट की जगह रसगुल्ला भरा हुआ था। गुणीदत्त रसगुल्ला निकाल-निकालकर सबको दिखाने लगा। अचानक ढक्कन बन्द करके, फिर उसी महिला को थमा दिया और थोडी ही देर बाद रसगुल्ला खिलाने की फर्माइश की। लेकिन हैरत है, जब डब्बा उल्टा गया, तो वही फटे-पुराने कागज और बुरादे निकल आए। गुणीदत्त ने एक लम्बी-सी उसाँस भरकर कहा, 'सहिबान, अब इसे अपनी बद-किस्मती कहूँ या न कहूँ कि यह दरियादिल महिला भी, एक मेरे ही सन्दर्भ मे इतनी बेमुरौव्वती दिखा रही है।'—कभी कभी एक नीबू के दो टुकड़े कर डाले और उसे निचोड़ा तो रस की जगह खून की धार टपकने लगी। दर्शक बुरी तरह डर गए। कभी जादू का प्रभाव दिखाकर लोगों के मन मे छुपी हुई बात निकाल ली और फिर लोगों के उन्हें परेशानी में डाल दिया, कभी दिव्य-दृष्टि का

दिखाकर, सबको अवाक् कर दिया। कभी ताश के खेल में हाथ सफाई दिखाकर लोगों को चकित कर दिया। कभी-कभी तो, जादू के जोर से खाली पीपे में से हल्की और तेज शराब की बोतलें निकाल-निकालकर औरत-मर्दों को पिलाने में जुट गया।

वैसे दर्शकों के लिए ये सब खेल नए नहीं थे। लेकिन शो-मैनशिप इसी को कहते हैं। साधारण से साधारण खेलों को भी ऐसे दिलचस्प और रंगीन ढंग से पेश किया जाए कि वह एकबारगी असाधारण लगने लगे। यही तो इस पेशे का सबसे बड़ा कमाल है और गुणीदत्त के प्रत्येक हाव-भाव तौर-तरीकों में यह कमाल जैसे घुल-मिल गया हो। वह दर्शकों के सामने जो कुछ भी कहता या करता था, उसमें कहीं कोई बनावटीपन नहीं झलकता था। उसका हर खेल, उसके मन की सहजता व्यक्त करता था।

लोगों को यह सब जादू-खेल अच्छे लगने लगे और गुणीदत्त ने दर्शकों को चौंकाने के लिए, इन सब खेलों को ही माध्यम बनाया। जादू-कम्पनी के मैनेजर उड साहब ने, अपने दल के इस युवा शिरोमणि जादूगर के सीरियस जादुओं के बारे में एक छोटा-मोटा लेक्चर भी दे डाला। उन्होंने कहा—लोगों ने जादूगर के हल्के-फुल्के खेलों को जैसे इन्ज्वाय किया है, उसके सीरियस खेल देखें, तो स्तब्ध रह जाएँगे।' उसके मशहूर खेलों ने कौन से शहर में, कितनी शोहरत पायी, उसकी एक लम्बी-सी फेहरिश्त भी गिना डाली। उड साहब का आशय शायद यही था कि जहाज में उन खेलों का वातावरण और जरूरी सरंजाम प्रस्तुत करना मुश्किल है, लेकिन उन्हें इस बात का पक्का विश्वास है कि इंडिया के जादू-मंच पर गुणीडाटा के जादुई करिश्मे देखकर, दर्शकों का दिमाग चकरा जाएगा! वह मुग्ध रह जाएँगे।

भारत भ्रमण पर निकले हुए, मैजिउड दल का जोर शोर से प्रचार के अलावा, उड साहब का और कोई मतलब नहीं था। उनका विश्वास था कि जहाज के इतने सारे गण्य-मान्य प्रतिष्ठित लोगों का मौखिक प्रचार भी बेकार नहीं जा सकता। लेकिन उड साहब की बातें सुनकर यात्रियों में उसी समय खलबली मच गयी। लोगों ने सम्मिलित स्वर में

माँग की, 'एकाध सीरियस जादू तो यहाँ, इस जहाज में ही दिखाना होगा।'

लेकिन गुणीदत्त के सीरियस कारनामों की फैक्टरी देखकर लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। लोगों की आरजू-मिन्नत पर वह स्टेज पर आकर चुपचाप खड़ा हो गया। उसका गम्भीर चेहरा अचानक तम-तमा उठा। उसके हाथ मे करीब डेढ़ फीट लम्बा छुरा था। स्टेज की तेज रोशनी मे छुरे की तीखी धार चमचमा उठी।

'...जूली!'

गुणीदत्त की गम्भीर पुकार, जूली सहमी-सी उसके पास आ खडी हुई।

'ये लोग कोई सीरियस खेल देखना चाहते हैं। सोच रहा हूँ, तुम्हारी गर्दन के दो टुकड़े कर डालूँ, तो कैसा रहे।'

उसकी जादू सहचरी डर के मारे अपने गले पर हाथ फेरने लगी। उसने थूक निगलते हुए पूछा, 'दर्द तो नही होगा।'

गुणीडाटा ने गम्भीर, अनुशासन भरे स्वर मे कहा, 'जब इतने सारे सम्मानित स्त्री-पुरुष कोई सीरियस खेल देखने की उम्मीद मे यहाँ इकट्ठे हुए हैं, तो तुम्हारा दर्द क्या इनकी इच्छा से भी बडा है?'...यह कहते हुए, गुणीदत्त ने, जूली का सिर, एक झटके से, पीछे की तरफ मोड दिया और उसकी गर्दन पर चमचमाता हुआ छुरा फेरने लगा। सचमुच क्या वह उसकी गर्दन उड़ा देगा? किसी-किसी महिला दर्शक के मुँह से दबी हुई चीख निकल गयी। पुरुष वर्ग भी जरा सम्हलकर बैठ गया। जूली एण्डरसन, गुणीडाटा के हाथो से छिटककर, स्टेज के बिल्कुल अगले हिस्से मे चली आयी और करुण स्वर मे मिन्नतें करने लगी, आप लोग यहाँ बैठे-बैठे, एक बेसहारा अबला औरत को, इस भयकर बलि का शिकार होते देखते रहेंगे? आप सब, जरा गौर कीजिए, यह आदमी मेरी गर्दन उडाने को आमादा है।'

दर्शकों मे से किसी ने आवाज कसी, 'गुणीडाटा के हाथो गला कट-वाने से, खास दर्द नही होगा। आप निश्चिन्त भाव से, अपनी दर्दन बढा दीजिए।'

जूली एण्डरसन का चेहरा अचानक कृत्रिम क्रोध से लाल हो उठा, 'तो फिर आप में से ही कोई आदमी, अपनी गर्दन क्यों नहीं आगे कर देता ? जी नहीं, मेरी जान इतनी सस्ती नहीं है।' यह कहते हुए वह मंच से कूदकर, नीचे उतर आयी और सामने वाली कतार में, लड़कियों की बगल में धम्म से जा बैठी।

गुणीदत्त दो कदम आगे बढ़ आया और उन लड़कियों में से एक को आमन्त्रित करते हुए कहा, 'तो फिर, आप लोगों में से ही कोई एक जन ऊपर आ जाइए। वरना इतने सारे लोग सीरियस खेल देखने से रह जाएंगे।'

यह जानते हुए भी कि वह सिर्फ मजाक कर रहा है, उसके हाथ में लपलपाता हुआ छुरा देखकर, किसी लड़की की, आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। सब एक-दूसरे को आगे बढ़ने के लिए कुहनियाने लगीं।

ऐसे दिलचस्प खेल का रंग और गहरा करने के खयाल से या महज कौतूहलवश शुभेन्दु नन्दी अपनी सीट से उठकर, स्टेज पर आ खड़ा हुआ, यानी उसे अपना गला कटवाने में कोई एतराज नहीं है।

गुणीदत्त उसे देखते ही, खुशी से खिल उठा, 'आइए ! आइए ! आपका तहेदिल से स्वागत है। मैडम ! आप सचमुच बेहद खूबसूरत हैं ! आप वाकई विलक्षण हैं। आपके कोमल गले पर छुरा फेरते हुए, सचमुच बेहद मजा आएगा, मैडम !'

शुभेन्दु अपने लिए दो-दो बार मैडम सम्बोधन सुनकर अचकचा गया। उधर दर्शक कौतूहलवश साँस रोककर, स्टेज की ओर टकटकी बाँधकर देख रहे थे।

गुणीडाटा उसके गले पर छुरा फेरते हुए, अचानक चौंककर रुक गया। उसकी तरफ हैरतभरी आँखों से देखते हुए सवाल किया, 'जनाब, एक बात पूछूं ? आपको पक्का यकीन है कि आप मर्द नहीं, औरत हैं ?'

ठहाकों के सम्मिलित स्वर में, दर्शकों का दबा हुआ आवेग, जैसे फूट पड़ने को हुआ। शुभेन्दु नन्दी एक छलांग में स्टेज छोड़कर, बाहर की तरफ भाग गया। लेकिन गुणीदत्त उसी तरह गम्भीर और मासूम

बना रहा। बेहद हताश स्वर में कहा, 'तब तो मजबूरी है, लेडीज एण्ड जेन्टलमैन ! दरअसल मैं सिर्फ लड़कियों का ही गला काटता हूँ। गला कटवानेवाली औरत जितनी खूबसूरत होगी, मेरा खेल उतना अधिक रंग लाएगा।' उस दिन जादू खेल की जगह, यह ड्रामा ही अधिक जमा था।

गुणीदाटा देखते ही देखते, हर किसी का यार बन गया। यह सब देखते हुए, मैंजीउड कम्पनी के मालिक उड साहब और उनकी मिसेज जेनीफर उड को यह पक्का विश्वास हो गया कि गुणीदत्त सिर्फ खेलों के जादू से ही नहीं, बातों के जादू से भी, आदमी का दिल जीत सकता है। इसीलिए तो इतनी महँगी और लम्बी यात्रा पर निकल पड़ने में, उन्हें कोई द्विधा या हिचकिचाहट नहीं हुई। यह बात अलग है कि वह उसका महत्व, सिर्फ जादू-खेलों की दृष्टि से आँकते थे। लेकिन दर्शकों का दिल खुश करने के लिए, अगर उसके पास ऐसा मोहक और सफल जादू न होता, तो भी वह इतना लोकप्रिय होता, यह बताना मुश्किल था।

॥ दो ॥

...लेकिन आज गुणीदत्त को, कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। जहाज के यात्रियों के सामने इस तरह के ड्रामे करते-करते वह ऊब उठा है। उसने यह सब ड्रामे, इसीलिए दिखाए थे, क्योंकि इसकी बेहद जरूरत थी। शुमेन्दु नन्दी की दोस्ती से, कितना फायदा होगा, यह तो उस समय ज्ञात होगा, जब वह बंगाल के स्टेज पर उतरेगा। इन दिनों शुमेन्दु नन्दी उसका अन्ध-भक्त हो उठा है और यही वह चाहता भी था।

कभी-कभी गुणीदत्त को यह भी लगा है कि इतने सारे लोग,
ल, समुद्र को नजरअन्दाज करना चाहते हैं। इधर-उधर
ड़ में डूबकर, सामने फले समुद्र को भूल जाना चाह[illegible] लेकिन
तो दूर-दूर तक आकाश छूता हुआ समुद्र ही अधिक प्रि[illegible]
दृष्टि से परे, यहाँ अकेले खड़े होकर, आत्मलीन-सा, महासृष्टि के
स विरामहीन, हर्षोल्लास को घण्टों निहारते रहना, कितना भला
गता है! अक्सर आधी रात को, जव अचानक ही उसकी नींद उचट
जाती है, तो वह डेक पर चला आता है और मंत्रमुग्ध-सा सामने फैले
समुद्र को निहारने में भोर हो गया है। गुणीदत्त अपने इस परिवर्तन
पर खुद ही चकित है। जव वह जा रहा था, तव उसके पास इन्हें
सराहने वाली आँखें कहाँ थीं? उस समय उसकी आँखें यह सव क्यों
नहीं देख पायीं?

पिछले कई दिनों से, खासकर रात को उसे समुद्र निहारने का जैसे
नशा-सा हो गया है। आकाश की ओर देखते हुए, आगे मन ही मन
अन्दाज लगाया कि यह शुक्ल पक्ष का महीना है। आकाश के चाँद ने
मानो तश्तरी उलट दी हो और उससे चाँदनी झर रही हो। कभी
कभी तो यह सारा का सारा समुद्र चाँद की उजली-धुली चाँदनी का
अक्षय कोप लगने लगता है। सामने उमड़ती हुई वड़ी-वड़ी लहरें हहरा-
कर, मानो चाँद को छू लेने को आतुर हो उठी हों और न छू पाने के
दुःख से टूट-टूटकर विखर गयी हों। सव कुछ धुली-धुली शुभ्रता में
एकाकार हो उठता है।

गुणीदत्त की निगाहें, सुदूर क्षितिज के अन्तिम छोर पर, सितारे
टँके आकाश से गले मिलते हुए समुद्र पर से फिसलती हुई, धीरे-धी
अपने जहाज के आस-पास सिमट आयीं। दाएँ-वाएँ, आगे-पीछे—ह
तरफ एक जैसा दृश्य! एक ही तरह का सुख! वस सृष्टि की ए
वूंद की तरह, इस अनन्त सागर के सीने पर खड़े-खड़े, जीवन का स्व
लेगा, उसे वहोत अच्छा लगता है।

जहाज के लोग शायद मन ही मन वेहद खुश हैं कि सामने फ
सा सागर, अव खत्म होने वाला है। लेकिन गुणीदत्त निर्लिप्त

से, डक पर खड़ा-खड़ा, अँधेरे में आँखें गड़ाए, समुद्र निहारता रहा। जिन्हें खुशी हो रही है, वे खुशी मनाएँ ! दो घण्टे बाद, इस जहाज के साथ-साथ, वह भी किसी निश्चित मुहाने पर आ पहुँचेगा। अतः उसे तो खुश होना चाहिए। लेकिन···हो सकता है कि औरों का सागर खत्म हो गया हो, लेकिन उसके आगे बिछा हुआ सागर, अभी ज्यों का त्यों है। पिछले कई दिनों से वह अपने को बेहद निश्चिन्त महसूस कर रहा है। आज की रात खत्म होते ही, आका सागर शुरू होगा। ये सब यात्री जिस सागर को पार कर आए हैं, उसके लिए वह सागर शुरू होगा—अनिश्चय का सागर ! अपने गले से लगे हुए, जादू-विद्या का वजनी जहाज खींचते हुए, उसे इस समुद्र के सीने पर पैदल ही चलना होगा, या फिर खुद ही तैर कर पार करना होगा। हर्षोल्लास का देवदूत गुणीदत्त, समुन्दर पार से, आखिर ऐसी कौन-सी किस्मत लिखाकर, स्वदेश लौट रहा है ?

स्वदेश की हवा, देह में लगते ही, अपना यह कटा-छँटा, संक्षिप्त नाम बेहद अजीब लगने लगा। गुणीदादा, गुणमय किशोर दत्त उर्फ गुणी-दादा !

करीब दस साल पहले, जब वह कलकत्ते आया था, तो जेब में कानी कौड़ी तक न होने के कारण, अपनी इकलौती शर्ट को, बार-बार सस्ते दामों में धुलवाना पड़ता था, अतः कुछेक सालों में ही वह बेडौल और बदरंग हो गयी। यह शर्ट उसे बेहद प्रिय थी। पिछले दफ्ड में जब उसे दुबारा निकाला तो हैरान रह गया। उसे लगा. ऐसे ही चोट खाते-खाते उसके नाम का रूप-रंग और हुलिया भी बदरंग हो गयी हो।

बचपन में, बुआ उसे गुणमय—गुणी कहकर पुकारती थीं ? दादी बुलाती थीं—किशोर ! उसके नाम में ये दोनों शब्द जुड़ गये थे—गुण-मय किशोर ! जब वह बड़ा हुआ और उसे अक्ल आयी, तो उसने अपने नाम में से किशोर को खुद ही आउट कर दिया। गुणमय के बदले, लोग उसे गुणी कहकर पुकारते थे। कलकत्ते आकर अपने परिचितों में वह फिर से गुणीदत्त बन बैठा। उस दिन से लेकर आज तक, देश-विदेश में उसके साथ-साथ, उसका नाम भी अधिकतर गैर-बंगालियों के हाथ ही

माँजा-घिसा गया है—डट्टो ! डाट्टो ! डाट्टा, की ऊबड़खावड़ राह से होकर, अन्त में वह सीधा-सपाट 'डाटा' ही रह गया। उसके पास नाम के रूप में संयुक्त-अक्षर-वर्जित एक शब्द भी बच रहा—गुणीडाटा ! वैसे भी, सागर पार विदेशी मुल्कों के जादूगरों ने अपने नाम की तड़क-भड़क की ओर, अधिक झुकाव है। दुनिया के सबसे बड़े जादूगर हैरी उडनिक को, एहरिक माइस के नाम से कोई नहीं जानता। चुंग० लिग० सू० के चीनी नाम का मुखौटा उतार कर, अगर कोई विलियम रॉविन्सन को दिखाए, तो बड़े से बड़ा जादू-भक्त भी मुँह फेरकर चल देगा। खास बंगाल के जादू-सम्राट रेपन वसु को, अगर राजा बोस के नाम से न पुकारें, तो उसे कितने लोग पहचानेंगे ? विदेशों में, जादू-मंच के दर्शकों को गुणीडाटा नाम, बेहद शानदार लगा। गुणी नाम के साथ शायद गिनी शब्द का कोई अपरोक्ष सम्बन्ध जोड़ लिया गया था। उनका विश्वास था जिस व्यक्ति का नाम तक इतना शानदार है, उसके खजाने में कुछ-न-कुछ जादू जरूर होगा।

उसका जहाज अब बम्बई बन्दरगाह पर पहुँचने ही वाला है ! बंगाल यहाँ से काफी दूर है। खैर, उस जगह से अब उसका कोई रिश्ता भी नहीं है। उस जगह को याद करते हुए, अब उसे कोई तकलीफ भी नहीं होती। फिर भी अचरज है कि इस बन्दरगाह पर पहुँचते ही सुदूर बंगाल के एक छोटे-से शहर के एक टूटे-फूटे मकान में उसकी राह देखती हुई एक जोड़ी आँखें उसे बेध रही हैं। उसकी आँखों के आगे एक षोड़षी का चेहरा तैर गया ! नहीं-नहीं, पहले चेहरा याद नहीं आया। चेहरे से भी पहले, बायीं आँख की पलक के नीचे, मटर के आकार का, गहरे काले रंग का तिल ! और फिर बाकी चेहरा !···सोलह साल···गुणी-दत्त ने मन ही मन हिसाब लगाने की कोशिश की—सोलह साल और इधर के ग्यारह साल—स्वर्ण कुल मिलाकर अब सत्ताईस साल की हो गयी होगी ? अच्छा, सत्ताईस साल की स्वर्ण अब कैसी दिखती होगी ! वह चाहकर भी उस सोलह वर्षीया स्वर्ण की उम्र में, इधर ग्यारह साल नहीं जोड़ पाया।

हाँ, अगर दिमाग पर काफी जोर देकर याद करने की कोशिश करे

तो कुछ पलों के लिए उन्नीस साल की एक विस्मित-विमूढ स्वर्ण की प्रतिछवि, अपनी यादो के आईने में देख सकता है। विदेश जाने के तीन साल पहले, एक शाम को, कुछ पलो के लिए, उसने स्वर्ण की एक झलक भी देखी थी। खबर पाकर, वह किसी अन्धे आवेग में, बौखलाया हुआ-सा, कलकत्ते से बांगुडा पहुँचा था। लेकिन उस दिन जो व्यक्ति वहाँ पहुँचा था, दरअसल वह गुणीदत्त नही था। गुणीदत्त तो जाना ही नही चाहता था। खबर सुनकर, जो भागकर आया था, वह तो उसके मन का सुप्त जानवर था, जिस पर उसका कभी कोई वश नही रहा। तीन साल पहले, खून में डूबी हुई वह करुण स्मृति भी, अब उसके मन मे घुल-पुँछ चुकी है।

उसने माँ बनने वाली स्वर्ण की एक झलक भी देखी थी—जब वह प्रसव के लिए अपने मायके आयी थी। उसे देखते हुए, उसकी दृष्टि धुँधला गयी और वह आँखें फाडे देखता रह गया था। स्वर्ण का यह रूप देखकर, अपने मन का बर्बर पशु कही भीतर जा छुपा था। अपनी खिडकी पर खड़े-खड़े, वह बचपन के उस चिर-परिचित पोखर की ओर, हतबुद्धि चोरों की तरह मुँह बाए देखता रहा।

स्वर्ण के कमरे मे लालटेन की मद्धिम रोशनी जल रही थी। अपने कमरे से स्वर्ण उसे नहीं देख सकती थी। वैसे अगर वह देख भी लेती तो इतनी दूर से पहचान पाना मुश्किल था। लेकिन स्वर्ण ने उसे ताक-झांक करते हुए देख लिया था और पहचान भी लिया था। जो व्यक्ति पोखर के किनारे उसकी राह देखते हुए, घुप्प अँधेरे मे भी साँप-गोजर, केंकड़े बिच्छू की परवाह किए बिना बैठा रहा था, वह बाद की जिन्दगी मे भी अक्सर उसके सामने आ खड़ा हुआ। इस रूखे-सूखे मुर्झाए चेहरे को स्वर्ण मन ही मन पहचानती थी। उसे जानती भी थी।

उस दिन उसे अपनी ओर देखते हुए, अगर उसके मुँह से अस्फुट चीख निकल जाती, तो भी कोई अचम्भा नही होता। लेकिन स्वर्ण ने ऐसा नही किया। वह गले तक उमडती हुई चीख को, अपनी भरपूर ताकत से पीछे की ओर ढकेलते हुए, खामोश रह गयी। वह थोड़ को, उसी तरह काठ बनी खड़ी रही, उस दिन गुणीदत्त उन

छुपी हुव दहशत, जाने देख पाया था या नहीं, उसे तो स्वर्ण की आँखों में केवल नफरत और ताड़ना भरी भर्त्सना ही दिखी थी।

···क्यों···क्यों भूल गये ? इतनी जल्दी भूल गये ? पीठ का दाग इतनी जल्दी भर गया ?

लेकिन किसी ने भी उससे कुछ नहीं कहा ! स्वर्ण ने भी नहीं ! गुणीदत्त को ही जाने क्यों लगा कि स्वर्ण ने उससे कुछ कहा था या कहना चाहती थी।

उस दिन वह चोरों की तरह वहाँ से मुँह छिपाकर भाग आया था। अचानक, कहीं दर्दभरी चिनचिनाहट उभर आयी—नहीं, दिल में नहीं पीछे, पीठ की तरफ !

गर्दन से लेकर कमर तक टाँके का निशान। मेरुदण्ड के दोनों तरफ पूरे आध इंच गहरा जख्म जैसे दर्द कर उठा। वह आँखें घुमाकर, पीठ के जख्म को, पूरी तरह देख नहीं सकता था, वर्ना वह शायद पागल हो जाता। आगे-पीछे आईना घुमाकर, जब-जब उसने पीठ पर का दाग देखने की कोशिश की, उसका मन एक अव्यक्त मन्त्रणा से कचोट उठा। ना—अब तो वहाँ कोई दर्द भी नहीं होता। छाल-पपड़ी विहीन जख्म का एक सूखा-सा, खुरदुरा दाग भी बच रहा है। लेकिन जब-जब उस पर नजर पड़ी है, उसका गोरा चेहरा दर्द से नीला पड़ गया है। उसकी नसों में दौड़ता हुआ खून, अचानक जमने लगता है और श्वासें कहीं अटकने लगती हैं। उसके तन-बदन में, साँसों में दर्द की एक जानलेवा लहर फैल जाती है। उसे लगता है एक साथ हजारों बिच्छुओं के दंश में भी शायद इतनी तीखी जलन नहीं होती होगी।

कुछ दिनों बाद उसने आईने में उस जख्म को निहारना भी छोड़ दिया, लेकिन जो बातें मन में बिल्कुल जम गयी थीं। उन्हें निकाल फेंकने में समय लगा। इसके बाद, बहुत बार ऐसा हुआ कि अचानक ही पिछली कोई बात याद आ जाती और तन-बदन में अजब-सी कँपकँपी फैल जाती। आईने के सामने खड़े होकर, जख्म को निहारते रहने की आदत कभी की छूट गयी, लेकिन शर्ट के भीतर हाथ डालकर गर्दन से पीठ तक सहलाते रहने की आदत, अब तो जैसे रोग बन चुकी है।

जख्म पर हाथ फेरते हुए, उसकी उँगलियों के पोर-पोर तक सिहर उठते और सारे बदन मे झुरझुरी फैल जाती।

अब तो उसकी यह आदत भी मिट चली है। लेकिन आज इतने दिनों बाद, अनजाने मे ही फिर उसका हाथ पीठ की तरफ क्यो जा पडा? अजीब बात है जख्मों की उम्र क्या इतनी लम्बी होती है? इतने सालों में उसे याद नहीं आया, कोई ख्याल भी नहीं आया, लेकिन आज स्वदेश लौटते ही अचानक फिर क्या हो गया? बंगाल तो यहाँ से काफी दूर है।

वह रेलिंग के सहारे टिककर, समुद्र को निहारता रहा। अचानक वह अपने को झटककर सीधे तनकर खडा हो गया। ना, अब कही कोई निशान बाकी नही है। यह सब तो पिछली यादो और उदासियों का शगल भर है। गुणीदत्त ने अपने ख्यालो को दूसरी तरफ मोड़ने की कोशिश की—नही! नही!! पिछले जख्म का अब कही कोई दाग बाकी नही है! अब तो जो है, वह बाहरी दाग ही है। भीतर की जलन तो चाँद साहब ने मिटा दी। दर्द देकर, दर्द मिटाने की यह निराली रीति चाँद साहब के अलावा, और कौन निभा सकता था? ...

अपने सामने का समुद्र खत्म हो जाने पर, उसे पहली बार खुशी हुई। उसे अचानक ही ख्याल आया कि रात बीतते ही चाँद साहब से मुलाकात होगी।

अद्‌भुत इन्सान है, यह चाँद साहब!

भलाई-बुराई और गुण-दोषो से भरा हुआ सच्चा इन्सान! उसे समझने के लिए जब तक उसके साथ बैठकर शराब न पी जाए, कोई उसकी खूबियो और खामियों से परिचित हो ही नही सकता। बिना किसी कोशिश के, किसी को जहन्नुम की राह धकेल देने मे, सचमुच उसका कही कोई जोड नहीं है। लेकिन इसी आदमी ने गुणीदत्त को निश्चित मौत के शिकंजे से निकालकर जीवन की राह पर क्यों ला खड़ा किया, यह वही जाने। चाँद साहब के माध्यम से ऊपरवाले ने

गजब का जादुई करिश्मा दिखाया।

वैसे गुणीदत्त ने चाँद साहब में बुराई ढूंढ़ने की कभी कोशिश भी नहीं की। उनकी तमाम कमजोरियों को भी नज़रअन्दाज कर दिया। अगर ऐसा न करता तो नमकहरामी होती। इस आदमी के दिल में जमे हुए तमाम कूड़ा-कर्कट को हटाकर उसके उजले-धुले, सहज मन को देखने की कोशिश की। चाँद साहब में जो बातें नहीं दिखीं, उसने आरोपित कर लीं। यही चाँद साहब उसे उठते-बैठते लेक्चर पिलाया करता था, उपदेश झाड़ता था। कहा करता था, 'खबरदार कभी लोभ मत करना। लोभ जैसा दुश्मन और कोई नहीं। असल में लोभ ही मौके-बेमौके आदमी के सीने में कटार भोंक देता है वर्ना इस जहान में कौन किसका बुरा कर सकता है ?'

गुणीदत्त मन ही मन हँसता हुआ, ऊपर से खामोश रहा। कभी-कभार अपनी तरफ से भी एकाध बात जोड़ देता, 'हाँ—सो तो ठीक बात है। तुम जैसे महात्मा की संगति में रहकर, मैंने भी इसे जिन्दगी का सार-तथ्य मान लिया है।'

'खा-मोश !'

चाँद साहब बंगाली मुसलमान नहीं था, लेकिन बंगाली अच्छी तरह जानता था। बंगालियों से बात करते हुए, हमेशा उन्हीं की तरह बोलने की कोशिश की। लेकिन गुस्से में, या शराब के नशे में या खुश मूड में, हमेशा शुद्ध हिन्दी का उर्दू में बातें करता। शराब पीने के बाद तो वह अंग्रेजी न जानने का अफसोस भी भूल जाता।

गुणीदत्त इतने साल विदेश रहा, लेकिन किसी को इस तरह ड्राम पर ड्राम शराब चढ़ाते हुए देखा हो, उसे याद नहीं पड़ता, चाँद साहब तो पानी की जगह भी शराब मिलने से खुश !

अब तक दूसरों के पैसों पर, वह जितनी शराब पी चुका है, उसकी जगह अगर दोनों हाथ से रुपए बटोरता, तो बम्बई शहर के खास मैरिन-ड्राइव के इलाके में, टेरेसवाला एक मकान खड़ा कर सकता था। कभी-कभी तो गुणीदत्त को यह सोच-सोचकर अचम्भा होता था, कि इस ठिगने-बौने आदमी की ढोल जैसी तोंद में आखिर कितनी शराब

ग्रंट सकती है।

शराब की बात पर, चाँद साहब ने उसकी कम बेइज्जती और दुर्दशा नहीं की। पहले दिन वाली घटना जब याद आती है तो आज भी हँसी आती है। उस दिन चाँद साहब की गुस्सेभरी त्योरियों के डर से, जितनी शराब अपने पेट में उंडेल चुका था, उसी में उसकी बुरी हालत थी। फिर भी वह होंठ दबाकर, गले तक उमड़ती हुई उबकाई को जबरन रोके रहा। गिलास में बची हुई शराब को दयनीय आँखों से देखता हुआ, इस उलझन में था कि इसका क्या करे।

चाँद साहब के खौफ के मारे उसकी हालत और पतली थी। आखिरकार वह पकड़ा गया।

चाँद साहब की उस पर नजर पड़ते ही, वह गुस्से से आग हो उठा। वह अपने साथियों से बात करना भूल गया और उसका लाल चेहरा और लाल हो उठा। मेंहदी में रंगी हुई फ्रेंचकट दाढ़ी और उसके चेहरे का रंग जैसे एक हो गया। वह उठकर गुणीदत्त के पास चला आया और उसकी गर्दन पीछे की ओर झटककर, थोड़ी देर उसकी तरफ एकटक देखता रहा। उसने शराब का गिलास उठा लिया और उसके चेहरे पर पानी की जगह शराब के छींटे मारता हुआ, उसे एकबारगी नहला दिया। उसे हौसला देते हुए कहा : अभी सब ठीक हो जाएगा। तुम बाकी शराब झटपट पी डालो—'

गुणीदत्त की सांसें ऊब-डूब करने लगीं। मारे घबराहट के, वह शराब में तर होंठों पर, जुबान फेरता हुआ चुप बैठा रहा।

'मैंने कहा न, बाकी शराब भी पी डालो।' चाँद साहब ने दबी हुई आवाज में डाँटा।

गुणीदत्त ने एक सांस में बाकी शराब पी डाली। आश्चर्य है कि कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। उसके बाद तो इतनी बेचैनी भी नहीं रही। चाँद साहब अगर और धमकाता तो हो सकता है, वह थोड़ी-सी शराब और पी लेता।

आखिरी दिनों में, गुणीदत्त ने इसके लिए भी, उस पर अहसान जताते हुए कहा, 'तुम्हीं तो लोभ करने को मना करते हो। फिर शराब के

लिए ही इतनी जोर-जबर्दस्ती क्यों करते हो ? इससे लोभ नहीं बढ़ेगा !'

चाँद साहब उस की बात सुनकर, हँसते-हँसते बेहाल हो गया, 'अरे कहीं शराब पीने से भी लोभ बढ़ता है ?' मानो इतनी मजेदार बात, वह पहली बार सुन रहा हो।

'हाँ, बढ़ेगा नहीं ? जब पीने की आदत पड़ जाएगी, तो मुझे शराब कहाँ से मिलेगी ?'

'अरे बुद्धू ! इतना घबड़ाता क्यों है ? आएगी···आएगी—आसमान से बारिश बनकर आएगी।' और उसने फिर वही घिसी-पिटी पुरानी बात दोहरा दी, 'जब तक खुदा मेहरबान होगा, शराब ठीक मिलती रहेगी। जिस दिन उसकी मेहरबानी का साया हट जाएगा, शराब भी बन्द हो जाएगी। अगर खुदा की यही मर्जी होगी तो शराब न मिलने पर भी तकलीफ नहीं होगी। और फिर, अगर खुदा ही हमें तकलीफ देने पर आमादा हो, तो हाथ बढ़ाकर कबूल करने में डर कैसा ?'

गुणीदत्त पर खुदाई की इन बातों का कभी-कोई असर नहीं पड़ा। असर होने लायक कोई बात भी नहीं थी। चाँद साहब की इन बातों पर उसे झुँझलाहट हुई थी, 'लेकिन पिलाने के लिए तुम इतना जोर-जुल्म क्यों करते हो ?'

इस विषय में भी चाँद साहब की बिल्कुल सीधी और एकटक राय थी, मतलन 'शराब पीने से दिमाग ताजा रहता है। डर, क्रोध, दुःख वगैरह बहुत-सी फालतू भावुकताएँ दूर हो जाती हैं। सौ बातों की एक बात—दिल के अन्दर छिपे हुए तमाम दुश्मन, सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े होते हैं।'

चाँद साहब का ख्याल था कि गुणीदत्त भी अपने दिल में ऐसे बहुत से कूड़ा-कर्कट पाले हुए था, ऐसी हालत में अगर खींचकर शराब नहीं पिएगा, तो ये दुःख-दर्द पिघल-पिघलकर आँखों की राह, आँसू बनकर बहेंगे। वह चेतावनी के स्वर में कहा करता था, 'उन सबको पनाह दिया नहीं कि जिन्दगी बरबाद !'

कैसा होगा चाँद साहब ? इन छः सालों में वह क्या जरा भी नहीं बदला होगा ? अब तो बुढ़ा भी गया होगा। पचपन के करीब पहुँच

चुका होगा। इतने सालों में गुणीदत्त को उसके सिर्फ दो खत मिले थे। खत को सजा-सँवार कर लिखने में, उसने कभी यकीन नहीं किया। कोई उसे लिखता भी था, तो उसे झुँझलाहट होती थी। लेकिन गजब है— पूरे छः साल गुजर गए।

गुणीदत्त को पिछली सारी बातें, अभी कल जैसी ही लगती हैं। अभी उसी दिन तो चाँद साहब का तार पाकर वह चारों हाथों-पाँवों से भागता हुआ कलकत्ता से बम्बई पहुँचा था। जब चाँद साहब कलकत्ते में था, गुणीदत्त ने बातों-बातों में विलायत जाने की इच्छा व्यक्त कर बैठा था। कहा था 'किसी तरह अगर एक बार विलायत घूम आने का मौका मिल जाए, तो मुमकिन है कि किस्मत का सितारा चमक जाए। एक बार विदेशों का चक्कर लगा आता तो नाम-धाम का रौब बढ़ जाता।'

चाँद साहब ने जवाब दिया 'देखो—अगर खुदा की मर्जी होगी, तो जरूर जाओगे।'

कुछ दिनों बाद ही चाँद साहब अपनी किस्मत आजमाने कलकत्ता छोड़कर, बम्बई चला आया। उसके जान-पहचान वालों का कहना था और खुद गुणीदत्त का भी यही ख्याल था कि वह जरूर किसी को उल्लू फँसाकर, रातों-रात रफूचक्कर हो गया। उसके शहर छोड़ने के बाद, कोई यह अन्दाज नहीं लगा पाया कि वह कहाँ गया होगा। गुणीदत्त को भी दो साल बाद उसका पता नहीं लगा। कई सालों बाद अचानक ही, बम्बई से उसके नाम एक टेलीग्राम आया, कि तार मिलते ही वह फौरन चल दे। देर न करे। उसके पास जितना कुछ सामान है, सब ले आए और हाँ, इस बारे में किसी को कुछ बताए नहीं।

गुणीदत्त तार पाकर अपने को रोक नहीं पाया। वैसे उसकी जगह और कोई होता तो चाँद साहब के इस रहस्यमय टेलीग्राम पर विश्वास कर के आने की हिम्मत नहीं करता। लेकिन गुणीदत्त फौरन रवाना हो गया। उसे भय या चिन्ता का कोई कारण नहीं दिखा। अरे हद से हद यही तो होगा कि उबलते हुए कड़ाहे से निकलकर भट्ठी में , लेकिन इसमें डर की क्या बात है? वैसे कलकत्ते से

सफर तय करने के पीछे क्या कोई खास वजह नहीं थी ? व्यावहारिक दिमाग से सोचें तो यह कोरी भावुकता भले लगे लेकिन इसमें कहीं कुछ झूठ भी नहीं था। कम से कम गुणीदत्त के सन्दर्भ में बिल्कुल सच साबित हुआ। खैर बाघ-भालू जैसे बर्बर-जानवरों के सीने में भगवान ने एक ऐसी जगह बनायी है जहाँ अथाह प्यार-मुहब्बत लहराता है।

गुणीदत्त के प्रति, चाँद साहब के व्यवहार में ऐसी कोई सन्तान-वत्सलता या ममता भी नहीं झलकती थी। वह तो गुणीदत्त को 'दोस्त' कहकर पुकारता था। गुणीदत्त भी, इस शराबी के दिल के आईने में सच्ची दोस्ती की तस्वीर देख चुका था। अत: उसे चाँद साहब पर पूरा विश्वास और भरोसा था।

बम्बई में, विक्टोरिया टर्मिनस से बाहर आते ही, चाँद साहब ने उससे पूछा, 'तुम मेरा टेलिग्राम पाकर फौरन रवाना हो गये, यह बात कोई जानता तो नहीं ?'

गुणीदत्त ने आते समय, सचमुच किसी को कुछ नहीं बताया। उसका ऐसा कोई अपना था भी नहीं, जिसे वह बताकर आता। उसने सिर हिलाकर बताया कि उसके आने की बात किसी को नहीं मालूम है ? लेकिन, आखिर बात क्या है ? एकदम से तार क्यों भेजा ?

चांद साहब ने गद्‌गद् आवाज में जवाब दिया, 'बात ही ऐसी है। तुम विलायत जा रहे हो, भाई !'

गुणीदत्त उसकी तरफ हैरत से मुंह बाए देखता रहा।

चाँद साहब खुशी से उमड़ पड़ रहा था। हँसते हुए उसकी देह के साथ-साथ, उसकी फ्रेंचकट दाढ़ी तक हिल उठी। गुणीदत्त का सारा सामान क्लोक रूम में जमा करवाकर, उसे लेकर, सीधे यूरोप जानेवाले जहाज के क्वार्टर में, मिस्टर टॉमस के पास पहुंचा। उनके आगे झुककर आदाब बजा लाने के बाद गुणीदत्त को उनके हाथों में सौंपते हुए कहा, 'साहब, ये रहा हमारा दोस्त—गुणीडाटा !'

साहब ने उसके दोस्त की ओर एक बार गौर से देखा।

चाँद साहब ने सफाई देने की कोशिश की, 'बात यह है साहब, कि हमारा दोस्त अभी-अभी ट्रेन से उतरा है। उसीसे इसकी सूरत-शक्ल

श्रौर कपड़ों की ऐसी बुरी हालत है। तरो-ताजा होकर श्राएगा, तो बुरा नहीं लगेगा।'

साहब ने पूछा, 'अपने खेलों के कुछेक नमूने दिखा सकते हो?'

टॉमस साहब का यह आशय नहीं था कि वह, उसी वक्त खेल दिखाए। लेकिन चाँद साहब ने आते वक्त, जादू-खेलों की दो-चार छोटी-मोटी चीजें उसकी जेब मे ठूँस दी थी। साहब की बात पर, उसने फौरन गुणीदत्त को कुहनिया कर कहा, 'जरूर साहब! जरूर, अभी, इसी वक्त दिखा सकता है। 'क्यो, भाई तुम्हारे पास, इस वक्त दिखाने को कुछ है?...क्या कहा, नहीं है? तो फिर आसमान से निकालो। तुम तो जादूगर ठहरे! साहब, इसी वक्त तुम्हारा जादू देखना चाहते हैं। उन्हे अपना कोई करिश्मा दिखाओ, तो जानें।'

गुणीदत्त अपनी परेशानी और नर्वसनेस छिपाते हुए, उसकी तरफ बौराया-सा देखता रहा। धीरे-धीरे उसकी घबराहट और शून्यता का भाव एकबारगी मिट गया। अपनी पैंट की जेब टटोलते हुए, उसने सकुचाते हुए मुस्कराने की कोशिश की और मन-ही-मन यह अन्दाज लगाता रहा कि चाँद साहब ने उसकी जेब में कौन-कौन-सी चीजें डाली थी।

अन्त में, बेहद निरुपाय-सा चेहरा बनाकर, अपनी शर्ट की बाँहें समेटने लगा। खेल शुरू करने से पहले, उसने अपने दोनों खाली हाथ घुमा-फिराकर साहब को दिखा दिया, फिर साहब से उनका रूमाल माँगा और उसे तहाकर, एक छोर पर आग लगा दी। रूमाल जलता रहा। गुणीदत्त उसे अपनी मुट्ठी मे थोडी देर रगडता रहा और जब साहब को रूमाल लौटाया तो उसमें जलने का कही कोई निशान नही था। साहब के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। गुणीदत्त पैंट की जेब मे हाथ घुसाए हुए मन्द-मन्द मुस्कराता रहा।

कोई और वक्त होता तो चाँद साहब ऐसे छोटे-मोटे जादू पर उडती निगाह भी नही डालता। लेकिन साहब के सामने खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगा, मानो कोई अजूबा देखा हो।

गुणीदत्त ने जेब से हाथ निकालकर साहब के सामने घुमा-फिराकर

दिखा दिया। उसके दोनों हाथ खाली थे। वह साहब के बिल्कुल सामने जा खड़ा हुआ और उनकी कोट की बाँह, देह, गले और समूचे चेहरे से रुपयों के चमचमाते हुए सिक्के निकाल-निकालकर, उनके आगे मेज पर फेंकता गया—झन्न ! झन्न !

साहब हाथ पर हाथ धरे देखता रह गया और वह उसके अंग-अंग से रुपये तोड़कर फेंकता रहा। साहब ने रुपयों को उलट-पुलटकर देखा, सब के सब असली रुपये हैं या जादू के।

गुणीदत्त का यह खेल देखकर, उसकी तबीयत सचमुच खुश हो गयी। उसकी शक्ल देखकर, कोई भी अन्दाज लगा सकता था कि उसने जिन्दगी में मैजिक-वैजिक कभी नहीं देखा, वर्ना इतने मामूली-से खेल पर, इतना खुश होने की कोई बात नहीं थी। मौका देखकर, चाँद साहब ने एक बार फिर तारीफ़ों का पुल बाँध दिया।

साहब ने गुणीदत्त की ओर देखते हुए, मीठा-सा व्यंग्य किया, 'तुम दूसरे आदमी की देह से इतने रुपये निकाल सकते हो, लेकिन यूरोप जाने के लिए तुम्हारे पास रुपया नहीं है ?'

गुणीदत्त ने भी, उसी तरह हँसकर जवाब दिया, 'बात यह है, साहब, कि मैं दूसरे की देह से रुपये निकाल सकता हूँ, अपनी देह से नहीं ?'

साहब ने फिर कहा, 'इसमें क्या बात है ? दूसरों की देह से रुपये झाड़ लो और चले जाओ।'

गुणीदत्त ने हल्के से हँसकर जवाब दिया, 'जी-हाँ, वही तो कर रहा हूँ।'

साहब को गुणीदत्त की बात-चीत ने मोह लिया। वह बहुत देर हँसता रहा। अचानक गुणीदत्त ने उनसे अपनी घड़ी उतारने को कहा।

वह थोड़ी देर साहब की घड़ी उलट-पुलटकर देखता रहा और तारीफ करता रहा। साहब को समझ नहीं आया कि उस मामूली-सी घड़ी में, इतनी तारीफ लायक कौन-सी बात है। गुणीदत्त ने टेबल पर एक रूमाल बिछाकर, उस पर घड़ी रख दी और उसे अच्छी तरह बाँधकर पेपरवेट से चूर-चूर कर डाला।

'माइ गॉड !' साहव की आँखें गोल हो उठीं।

चाँद साहव का चेहरा भी इत्ता-सा हो गया।

घड़ी को चकनाचूर करके, उसे रूमाल समेत खिड़की से बाहर पानी मे फेंककर गुणीदत्त जैसे निश्चिन्त हो गया और अपनी कमर पर एक हाथ रखकर, साहव की तरफ, बुद्धुओं-सा, मुँहबाए देखने लगा।

'देन···व्हाट ?' साहव को उसका यह खेल पसन्द नही आया।

गुणीदत्त ने, उत्तर में, झट से साहब के कोट की पॉकेट में हाथ डाला और उनकी घड़ी निकालकर उनके आगे रख दी।

बस, इसके वाद, और कोई जादू दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी।

साहव ने प्रश्न किया, 'तुम ऐसे कितने जादू जानते हो ?'

गुणीदत्त कुछ कहे, इससे पहले चाँद साहव ने ही उत्साह-भरे स्वर मे जवाब दिया, 'एक-दो नही, कम-से-कम दो-चार हजार, हुजूर !' फिर थोड़ा-सा सच बोलने की कोशिश की, 'साहव, यह सब तो कुछ भी नहीं है। आप अगर इसका असली जादू देखें, तो ताज्जुब में पड़ जाएँगे ! इन सबमें कोई खास जादू नही है !'

गुणीदत्त के जाने का सारा इन्तजाम पक्का हो गया। दो दिनों वाद ही, जहाज रवाना होनेवाला है। यात्रियों के मनवहलाव के लिए, मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत करने और शामें रंगीन बनाने की जिम्मेदारी क्वार्टर मास्टर की ही थी। कभी-कभार जादू-खेलों का कार्यक्रम, यात्रियों के लिए, कुछ नयापन तो लाएगा ही, इसी बहाने गुणीदत्त भी जहाज के स्टॉफ में शामिल होकर, सागर-यात्रा कर सकेगा। जहाँ तक क्वार्टर-मास्टर के व्यक्तिगत स्वार्थ का सवाल था, उसने वेहद सख्त आवाज में, चेतावनी दे दी कि अगर कहीं किसी तरह की गड़बड़ी हुई या यात्रियों को उसके खेल एकरस लगे या वे वोर होने लगे, तो वह किसी भी बन्दरगाह पर, विना कोई कैफियत दिए, उसे उतार देगा।

चाँद साहव ने भी उसकी वातो मे 'हाँ में हाँ' मिलाते हुए कहा कि उस स्थिति मे उसे जहाज से फौरन उतार न दिया गया तो सरासर

दिखा दिया। उसके दोनों हाथ खाली थे। वह साहब के बिल्कुल सामने जा खड़ा हुआ और उनकी कोट की बाँह, देह, गले और समूचे चेहरे से रुपयों के चमचमाते हुए सिक्के निकाल-निकालकर, उनके आगे मेज पर फेंकता गया—झन्न ! झन्न !

साहब हाथ पर हाथ धरे देखता रह गया और वह उसके अंग-अंग से रुपये तोड़कर फेंकता रहा। साहब ने रुपयों को उलट-पुलटकर देखा, सब के सब असली रुपये हैं या जादू के।

गुणीदत्त का यह खेल देखकर, उसकी तबीयत सचमुच खुश हो गयी। उसकी शक्ल देखकर, कोई भी अन्दाज़ लगा सकता था कि उसने जिन्दगी में मैजिक-वैजिक कभी नहीं देखा, वर्ना इतने मामूली-से खेल पर, इतना खुश होने की कोई बात नहीं थी। मौका देखकर, चाँद साहब ने एक बार फिर तारीफ़ों का पुल बाँध दिया।

साहब ने गुणीदत्त की ओर देखते हुए, मीठा-सा व्यंग्य किया, 'तुम दूसरे आदमी की देह से इतने रुपये निकाल सकते हो, लेकिन यूरोप जाने के लिए तुम्हारे पास रुपया नहीं है ?'

गुणीदत्त ने भी, उसी तरह हँसकर जवाब दिया, 'बात यह है, साहब, कि मैं दूसरे की देह से रुपये निकाल सकता हूँ, अपनी देह से नहीं ?'

साहब ने फिर कहा, 'इसमें क्या बात है ? दूसरों की देह से रुपये झाड़ लो और चले जाओ।'

गुणीदत्त ने हल्के से हँसकर जवाब दिया, 'जी-हाँ, वही तो कर रहा हूँ।'

साहब को गुणीदत्त की बात-चीत ने मोह लिया। वह बहुत देर हँसता रहा। अचानक गुणीदत्त ने उनसे अपनी घड़ी उतारने को कहा।

वह थोड़ी देर साहब की घड़ी उलट-पुलटकर देखता रहा और तारीफ करता रहा। साहब को समझ नहीं आया कि उस मामूली-सी घड़ी में, इतनी तारीफ लायक कौन-सी बात है। गुणीदत्त ने टेबल पर एक रूमाल बिछाकर, उस पर घड़ी रख दी और उसे अच्छी तरह बाँधकर पेपरवेट से चूर-चूर कर डाला।

'माइ गॉड !' साहब की आँखें गोल हो उठीं।

चाँद साहब का चेहरा भी इत्ता-सा हो गया।

घड़ी को चकनाचूर करके, उसे रूमाल समेत खिड़की से बाहर पानी में फेंककर गुणीदत्त जैसे निश्चिन्त हो गया और अपनी कमर पर एक हाथ रखकर, साहब की तरफ, बुद्धुओं-सा, मुँहबाए देखने लगा।

'देन…व्हाट ?' साहब को उसका यह खेल पसन्द नहीं आया।

गुणीदत्त ने, उत्तर में, झट से साहब के कोट की पॉकेट में हाथ डाला और उनकी घड़ी निकालकर उनके आगे रख दी।

बस, इसके बाद, और कोई जादू दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी।

साहब ने प्रश्न किया, 'तुम ऐसे कितने जादू जानते हो ?'

गुणीदत्त कुछ कहे, इससे पहले चाँद साहब ने ही उत्साह-भरे स्वर में जवाब दिया, 'एक-दो नहीं, कम-से-कम दो-चार हजार, हुजूर !' फिर थोड़ा-सा सच बोलने की कोशिश की, 'साहब, यह सब तो कुछ भी नहीं है। आप अगर इसका असली जादू देखें, तो ताज्जुब में पड़ जाएँगे ! इन सबमें कोई खास जादू नहीं है !'

गुणीदत्त के जाने का सारा इन्तजाम पक्का हो गया। दो दिनों बाद ही, जहाज रवाना होनेवाला है। यात्रियों के मनबहलाव के लिए, मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत करने और शामें रंगीन बनाने की जिम्मेदारी क्वार्टर मास्टर की ही थी। कभी-कभार जादू-खेलों का कार्यक्रम, यात्रियों के लिए, कुछ नयापन तो लाएगा ही, इसी बहाने गुणीदत्त भी जहाज के स्टॉफ में शामिल होकर, सागर-यात्रा कर सकेगा। जहाँ तक क्वार्टर-मास्टर के व्यक्तिगत स्वार्थ का सवाल था, उसने बेहद सख्त आवाज में, चेतावनी दे दी कि अगर कहीं किसी तरह की गड़बड़ी हुई या यात्रियों को उसके खेल एकरस लगे या वे बोर होने लगे, तो वह किसी भी बन्दरगाह पर, बिना कोई कैफियत दिए, उसे उतार देगा।

चाँद साहब ने भी उसकी बातों में 'हाँ में हाँ' मिलाते हुए कहा कि उस स्थिति में उसे जहाज से फौरन उतार न दिया गया तो सरासर

दिखा दिया। उसके दोनों हाथ खाली थे। वह साहब के बिल्कुल सामने जा खड़ा हुआ और उनकी कोट की बाँह, देह, गले और समूचे चेहरे से रुपयों के चमचमाते हुए सिक्के निकाल-निकालकर, उनके आगे मेज पर फेंकता गया—झन्न ! झन्न !

साहब हाथ पर हाथ धरे देखता रह गया और वह उसके अंग-अंग से रुपये तोड़कर फेंकता रहा। साहब ने रुपयों को उलट-पुलटकर देखा, सब के सब असली रुपये हैं या जादू के।

गुणीदत्त का यह खेल देखकर, उसकी तबीयत सचमुच खुश हो गयी। उसकी शक्ल देखकर, कोई भी अन्दाज़ लगा सकता था कि उसने जिन्दगी में मैजिक-वैजिक कभी नहीं देखा, वर्ना इतने मामूली-से खेल पर, इतना खुश होने की कोई बात नहीं थी। मौका देखकर, चाँद साहब ने एक बार फिर तारीफ़ों का पुल बाँध दिया।

साहब ने गुणीदत्त की ओर देखते हुए, मीठा-सा व्यंग्य किया, 'तुम दूसरे आदमी की देह से इतने रुपये निकाल सकते हो, लेकिन यूरोप जाने के लिए तुम्हारे पास रुपया नहीं है ?'

गुणीदत्त ने भी, उसी तरह हँसकर जवाब दिया, 'बात यह है, साहब, कि मैं दूसरे की देह से रुपये निकाल सकता हूँ, अपनी देह से नहीं ?'

साहब ने फिर कहा, 'इसमें क्या बात है ? दूसरों की देह से रुपये झाड़ लो और चले जाओ।'

गुणीदत्त ने हल्के से हँसकर जवाब दिया, 'जी-हाँ, वही तो कर रहा हूँ।'

साहब को गुणीदत्त की बात-चीत ने मोह लिया। वह बहुत देर हँसता रहा। अचानक गुणीदत्त ने उनसे अपनी घड़ी उतारने को कहा।

वह थोड़ी देर साहब की घड़ी उलट-पुलटकर देखता रहा और तारीफ करता रहा। साहब को समझ नहीं आया कि उस मामूली-सी घड़ी में, इतनी तारीफ लायक कौन-सी बात है। गुणीदत्त ने टेबल पर एक रूमाल बिछाकर, उस पर घड़ी रख दी और उसे अच्छी तरह बाँधकर पेपरवेट से चूर-चूर कर डाला।

'माइ गॉड !' साहब की आँखें गोल हो उठीं ।

चाँद साहब का चेहरा भी इत्ता-सा हो गया ।

घड़ी को चकनाचूर करके, उसे रूमाल समेत खिड़की से बाहर पानी में फेंककर गुणीदत्त जैसे निश्चिन्त हो गया और अपनी कमर पर एक हाथ रखकर, साहब की तरफ, बुद्धुओं-सा, मुँहबाए देखने लगा ।

'देन···व्हाट ?' साहब को उसका यह खेल पसन्द नहीं आया ।

गुणीदत्त ने, उत्तर में, झट से साहब के कोट की पॉकेट में हाथ डाला और उनकी घड़ी निकालकर उनके आगे रख दी ।

बस, इसके बाद, और कोई जादू दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी ।

साहब ने प्रश्न किया, 'तुम ऐसे कितने जादू जानते हो ?'

गुणीदत्त कुछ कहे, इससे पहले चाँद साहब ने ही उत्साह-भरे स्वर में जवाब दिया, 'एक-दो नहीं, कम-से-कम दो-चार हजार, हुजूर !' फिर थोड़ा-सा सच बोलने की कोशिश की, 'साहब, यह सब तो कुछ भी नहीं है । आप अगर इसका असली जादू देखें, तो ताज्जुब में पड़ जाएँगे ! इन सबमें कोई खास जादू नहीं है !'

गुणीदत्त के जाने का सारा इन्तज़ाम पक्का हो गया। दो दिनों बाद ही, जहाज रवाना होनेवाला है । यात्रियों के मनबहलाव के लिए, मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत करने और शामें रंगीन बनाने की जिम्मेदारी क्वार्टर मास्टर की ही थी । कभी-कभार जादू-खेलों का कार्यक्रम, यात्रियों के लिए, कुछ नयापन तो लाएगा ही, इसी बहाने गुणीदत्त भी जहाज के स्टॉफ में शामिल होकर, सागर-यात्रा कर सकेगा । जहाँ तक क्वार्टर-मास्टर के व्यक्तिगत स्वार्थ का सवाल था, उसने बेहद सख्त आवाज में, चेतावनी दे दी कि अगर कहीं किसी तरह की गड़बड़ी हुई या यात्रियों को उसके खेल एकरस लगें या वे बोर होने लगें, तो वह किसी भी बन्दरगाह पर, बिना कोई कैफियत दिए [illegible] देगा ।

चाँद साहब ने भी उसकी बातों में 'हाँ मे [illegible] कहा कि उस स्थिति में उसे जहाज से फौरन उतार [illegible]

अन्याय होगा।

गुणीदत्त का सिर चकराने लगा। बाहर निकलकर, उसने चाँद साहब से छूटते ही पूछा, 'लन्दन जा तो रहा हूँ, मगर पासपोर्ट ?'

उसके इस सवाल पर चाँद साहब की त्योरियाँ चढ़ गयीं, 'हद है ! तुम तो जैसे दुधमुँहे बच्चे हो, पासपोर्ट के बिना, हिल ही नहीं सकते। मेरी बात सुनो और आँख-कान मूँदकर, बस, चल दो। समय आने पर, यह बौड़म ही, तुम्हें निकलने की राह बताएगा।'

बौड़म—यानी क्वार्टर मास्टर। गुणीदत्त उस समय जान-बूझकर चुप रह गया। बर्फीले देशों की यात्रा में क्या कम मुसीबत है ? उस पर से ठंड का मौसम। उसके पास तो, साथ ले जाने के लिए ढंग का सामान भी नहीं है। लेकिन वह इतनी जरा-जरा-सी बातों में उलझे तो चाँद साहब चिढ़ जाएगा। उन दिनों गुणीदत्त के हाथ में पैसे भी तो नहीं थे। वैसे, थोड़े-बहुत पैसे, उसे जहाज से मिल जाएँगे, लेकिन यह सब तो बाद की बात है। इतना सुनहरा मौका पाकर, उसमें छोटी-मोटी समस्याओं को मन से निकल फेंकने की कोशिश की, 'अरे दुर्गा जी का नाम लेकर, जहाज पर सवार हो लें, फिर जो होगा, देखा जाएगा।'

लेकिन चाँद साहब ने इस क्वार्टर मास्टर को कहाँ से जुटा लिया, यह बात उसके लिए, अभी भी रहस्य बनी हुई थी। उसने आखिर पूछ ही लिया, 'तुमने इस आदमी को कहाँ से फाँस लिया ?'

'जुए के अड्डे पर।' चाँद साहब ने गद्गद् आवाज में बताया, 'देख लो, तुम ही कहा करते थे, शराब पीना बुरी आदत है, जुआ खेलना बुरी बात है ! अब बताओ, इसमें क्या बुराई है ?'

चाँद साहब ने जो कहानी सुनायी, वह सचमुच जादू-कहानी जैसी ही लगी। जहाज किनारे लगते ही, क्वार्टर मास्टर जुए के एक मशहूर अड्डे पर पहुंचा। और चाँद साहब—उसकी पहुँच भला कहां नहीं है ? वह तो जाने कब से ऐसे मौके की तलाश में था, जब वह अपने यार को किसी तरह जहाज में बिठाकर, विलायत रवाना कर सके। पहले साल तो नहीं, लेकिन उसके अगले साल आखिर एक मौका हाथ लग ही गया। चाँद साहब के पास जुआ खेलने को पैसा कहाँ था ? वह तो

उन जगहों पर महज ग्रड्डा मारने जाता था। कभी-कभार मौका देखकर किसी की पार्टनरशिप में एक-दो बाजी भी खेल लेता। उस दिन नशे की धुन में, करीब हजार रुपये हार जाने के बाद भी, क्वार्टर-मास्टर का नशा नहीं टूटा। चाँद साहब तो जाने कब से ऐसे मौके की ताक में था। उसने फौरन कहीं से, दो सौ रुपये उधार लाकर, साहब के आगे सरका दिया, 'तुम खेलते जाग्रो साहब! देखना, बाजी जरूर पलटेगी।'

साहब पहले तो रुपये लेने को राजी नहीं हुग्रा, लेकिन चाँद साहब वहाँ छोड़नेवाला था? कहा, 'तुम खेलो न, साब, ग्रगर रुपये जाएंगे तो मेरे जाएँगे।' चाँद साहब ने इतने रुपये दाँव पर लगा दिए। ग्रपने दोस्त की किस्मत ग्राजमाने के लिए वह दो सौ रुपये का जोखिम उठाने को तैयार हो गया। चलो, एक बार कोशिश तो कर देखें। शायद इसी बहाने ग्रपने दोस्त की किस्मत में यूरोप यात्रा लिखी हो।

थोड़ी ही देर में इसका परिणाम भी सामने ग्रा गया। साहब ने, उन दो सौ रुपयों के बल पर, हारे हुए ग्राठ सौ रुपये भी वसूल लिए। उसने जीत के सारे रुपये चाँद साहब की ग्रोर बढ़ा दिए। चाँद साहब ने जीभ निकालकर, एक बार ग्रपना नाक-कान छुग्रा ग्रौर उसमें से सिर्फ दो सौ रुपये वापस उठा लिए।

चाँद साहब की वह दराज हँसी, गुणीदत्त के कानों में ग्राज भी रह-रहकर बज उठती है। चाँद साहब ने कहा था, 'भई, जब खुदा की यही मर्जी है, कि तुम विलायत जाग्रो, तो साहब को जीतना ही था!'

चाँद साहब के रुपयों से क्वार्टर मास्टर जीत गया था, ग्रतः उसके ग्रागे विशेष ग्रनुनय-विनय नहीं करना पड़ा। बस, दो-चार दिनों तक ग्रपने दोस्त के करिश्मों का बखान करते ही, ग्रपने दोस्त को ले ग्राने का हुक्म मिला!

जहाज पर सवार होने से पहले, गुणीदत्त को दो-तीन दिन वेटिंग-रूम में ही बिताने पड़े। रात के ग्रलावा दिन के ग्रधिकांश समय चाँद साहब गुणीदत्त के साथ ही रहा। लेकिन गुणीदत्त को कुछ ग्रौर ही उम्मीद थी। सब कुछ जानते-समझते हुए भी, उसे यही ग्राशा थी कि चाँद साहब, इस बार उसे ग्रपने घर पर ही ठहराएगा। लेकिन ग्रपने

लिए होटल में खाने और वेटिंग-रूम में सोने की व्यवस्था देखकर, आगे अपनी तरफ से ही जुबान खोलकर कहा, 'बाकी के ये दो दिन, न हो, तुम्हारे यहाँ रहकर ही गुजारे जा सकते हैं। क्यों, क्या ख्याल है ?'

चांद साहब की भृकुटियाँ पलभर को तन गयीं। उसने गुणीदत्त की ओर एक नजर डाली, फिर स्पष्ट स्वर में जवाब दिया, 'दिल्लगी छोड़ो, मास्टर !'

लोग चांद साहब की इस कमजोरी से बहुत पहले से ही अनभिज्ञ थे। उसने कभी किसी को अपने घर की चहारदीवारी के अन्दर कदम रखने की इजाजत नहीं दी। कलकत्ते में भी, हर रोज नियमित रूप से एक अड्डे पर आता, वहीं सबसे भेंट-मुलाकात भी कर जाता या फिर, किसी रेस्तरां में मिल लेता। लोगों को वह कभी-कभी अपने दफ्तर के पते पर भी बुला लेता था, लेकिन अपने घर का पता, कभी भूले से भी किसी को नहीं दिया।

उसके यार-दोस्तों को उसकी इस कमजोरी की वजह भी मालूम थी। कभी-कभार तो लोग उससे मजाक भी कर बैठते, 'यार, चांद साहब, तुम हम लोगों को अपने घर कब दावत दे रहे हो ?'

जवाब में चांद साहब के मुंह से कोई भद्दी-सी गाली निकल जाती।

गुणीदत्त को चांद साहब के किसी दोस्त ने ही इसका रहस्य बताया था। कलकत्ते में डेरा जमाने से पहले, चांद साहब कराची में रहता था। यह सब देश आजाद होने के कुछ वर्ष पहले का किस्सा है। कराची में उसका अपना मकान था, पत्नी-पुत्र थे और अच्छी-खासी आमदनी भी थी। वहीं एक सिन्धी आदमी के साझे में नया काम शुरू किया। चांद साहब को अपने पार्टनर पर पूरा भरोसा था। वह सारी जिम्मेदारी उसे सौंपकर निश्चिन्त हो गया। चांद साहब ठहरा मस्त-मौला जीव। काम-धाम में सिर खपाने की उसे फुर्सत कहाँ थी ? पार्टनर ने सारा माल हड़पकर, उसे फुटपाथ पर खड़ा कर दिया। चांद साहब सारा मामला समझ गया, लेकिन जान-बूझकर नासमझ बना रहा। बदले में उसने भी मामूली-सा हेर-फेर कर डाला। अपने घर-बार, पत्नी-पुत्र का मोह त्यागकर, अत्यन्त भारतीय तरीके से पार्टनर की बीवी को ले उड़ा।

शुरू-शुरू में वह सिन्धी औरत काफी बिगड़ी, लेकिन बाद मे ठंडी पड़ गयी और चाँद साहब के साथ मजे मे नया घर बसा लिया।

आजादी की नयी लहर की वजह से देश की स्थिति में भी थोडा-बहुत परिवर्तन आया। लेकिन अगर वह चाहती, तो कलकत्ते आकर चाँद साहब के चंगुल से छूटने की कोई न कोई राह जरूर निकाल लेती। लेकिन आज तक किसी को भी ठीक-ठीक मालूम न हो सका कि आगे ऐसा क्यो नही किया। वैसे, यार-दोस्तो का ख्याल था कि चाँद साहब ने उसे शराब पिला-पिलाकर अपने वश मे कर लिया था। अब अगर उसका शौहर भी, उसे लेने आता, तो वह जाने मे मुकर जाती। दरअसल शराब का नशा, बड़ा जब्बर नशा होता है।

गुणीदत्त ने चाँद साहब के दोस्त के मुह से ही सुना कि उन दिनो चाँद साहब के घर के दरवाजे पर किसी के लिए खुले रहते थे। उसके घर बहुत-से लोगो का आना-जाना था। कोई-कोई उस औरत को लेकर आवाजें भी कसता, लेकिन चाँद साहब ने उनकी भी कभी परवाह नही की। यह बात अलग थी, कि लोगों के सामने वह सिन्धी महिला निकलती ही बहुत कम थी। उसके तो दर्शन ही दुर्लभ थे।

लेकिन इस बीच अचानक ऐसा कुछ घटा कि चाँद साहब अजीब मुसीबत में फँस गया। एक सज्जन को फँसाकर, वह उससे हजार दो हजार रुपये ऐंठने के चक्कर मे था। जाने वह कौन-सी अशुभ घड़ी थी, जब उसे अपने घर लाकर, थोड़ी-बहुत खातिर भी कर डाली। उस आदमी की दुश्मन नजर उस औरत पर पडी, जो चाँद साहब की सबसे बड़ी कमजोरी थी। जितनी बार उसे मौका मिला, वह उसका रूप-रस पीता रहा। किसी जमाने में वह भी कराची का ही आदमी था। उसे भी चाँद साहब की कहानी मालूम थी। उसने चाँद साहब को लालच देते हुए कहा, 'मैं तुम्हें दो हजार नही, पूरे पाँच हजार दूँगा। बस, तुम उसे मुझे दे दो।'

चाँद साहब ने उससे रुपये मिलने की उम्मीद छोड़ दी और उसे अपने घर से खदेड़कर दम लिया। लेकिन उस आदमी ने उसका पीछा नही छोड़ा। उसके घर का चक्कर लगाता रहा। कहा, चलो, दस हजार

दे दूंगा। तुम उसे मेरे हवाले कर दो।'

चाँद साहब का वश चलता तो वह उसका खून कर डालता। लेकिन उस आदमी के पास रुपये की बड़ी जबर्दस्त ताकत थी। चाँद साहब की इतनी डाँट-फटकार के बावजूद वह एक दिन फिर आ धमका। कहा, 'क्या बात है, वह तुम्हारी व्याहता बीवी तो है नहीं, तुम्हें उसे देने में आखिर क्या आपत्ति है ? अच्छा, चलो, पन्द्रह हजार दे दूंगा और कुछ दिनों बाद, तुम्हारा माल भी तुम्हें लौटा दूंगा। अब अगर तुम अपनी खैरियत चाहते हो, तो सीधे से उसे मेरे हवाले कर दो, वर्ना तुम बहुत मुसीबत में पड़ जाओगे, कहे देता हूँ। तुम उसे कहाँ से उड़ाकर लाए हो, मैं यह राज भी फाश कर दूंगा।

चाँद साहब को राज खुल जाने की परवाह नहीं थी, क्योंकि उसका यह राज सभी जानते थे। दरअसल, वह उस आदमी को इस बुरी तरह रुपये फेंकते और कीमत बढ़ाते देखकर, घबड़ा उठा। वह मन ही मन अपने से ही सहम गया। जाने कितने हजारों तक, वह अपना दिमाग ठीक रख पाएगा। उसकी नीयत तो अभी ही डगमगाने लगी है। उसे लगा, जिस औरत को पाने के लिए वह इस कदर रुपये बरसाने को तैयार है, उसकी पीठ पीछे, कौन जाने उस औरत पर क्या असर पड़े।

चाँद साहब ने रातों-रात घर बदल डाला और काफी दिनों तक लापता रहा। बहुत दिनों तक लोगों को पता नहीं चल सका कि उसने किस मुहल्ले में घर लिया है। उस दिन के बाद अगर कोई अपने घर, ले जाने का आग्रह करता, तो वह मारने-मरने को आमादा हो जाता।

...लेकिन इतने सालों बाद चाँद साहब को अपने घर ले जाने में क्या आपत्ति हो सकती है, गुणीदत्त को समझ नहीं आया। चाँद साहब की बीवी का तो कलकत्ते में ही अन्तकाल हो गया था। चाँद साहब के बम्बई भाग आने के करीब सालभर पहले ही उसकी मृत्यु हो चुकी थी। यार-दोस्तों में काफी दिनों तक यह चर्चा रही कि यह खूबसूरत परी अपने आखिरी दिनों में बेतरह शराब पीने लगी थी। इसीलिए उसने इतनी जल्दी भवसागर पार कर लिया। गुणीदत्त ने उस औरत को कभी नहीं देखा, लेकिन उसकी मौत के सदमे को उसने अपनी आँखों से देखा

था। मानो अचानक ही कोई काली आँधी आयी हो और चाँद साहब को जड़ से हिला गयी हो। उसकी मौत के करीब छः महीने बाद तक चाँद साहब दिन-रात शराब में डूबा रहा लेकिन धीरे-धीरे थोडा संयत हुआ और उसके कुछ दिनों बाद एकदम से गायब हो गया!

काफी सोचने के बावजूद गुणीदत्त को यह समझ नही आया कि बम्बई आने पर उसे दो दिनो तक वेटिंग रूम में क्यों ठहराया गया! चाँद साहब उसे अपने घर क्यो नही ले गया? जिस आदमी के लिए चाँद साहब ने इतना कुछ किया, टेलीग्राम भेजकर उसे कलकत्ते से बुलाया जहाज से विलायत भेजने का इन्तजाम किया, वही आदमी अपनी बीवी की मौत के इतने सालों बाद भी अपने घर आने की इजाजत क्यों नही दे रहा है?

चाँद साहब ने अपने यहाँ क्या फिर कोई दूसरी औरत बिठा ली है?

/

तीन

गुणीदत्त डेक पर खड़े-खड़े अँधेरे मे यात्रियों के शोर-गुल की आवाजें सुनता रहा। बस, एक घंटा बाकी रह गया है। थोडी देर और यह जहाज पानी को चीरते हुए आगे बढ़ेगा और उसके बाद छुट्टी। लेकिन गुणीदत्त को कोई जल्दी नही है। कैप्टेन से उसकी बात हो चुकी है। रात के वक्त जहाज किनारे नही लगाया जाएगा। सुबह होने तक, बीच धार मे यूँ ही खड़ा रहेगा। सुबह होते ही जहाज किनारे लगेगा।

अपनी पीठ पर किसी के हाथों का स्पर्श पाकर, उसने चौंककर देखा —जूली एण्डरसन खड़ी थी।

'यूं चुपचाप अँधेरे में क्यों खड़े हो ? अब तो तुम अपने मुल्क पहुँचने वाले हो ! किस चन्द्रमुखी हसीना की याद में डूबे हो, भाई ?

गुणीदत्त ने हँसकर जवाब दिया, उसी की—'जिसके चन्द्रमुख पर ढेर सारी दाढ़ी-मूंछे हैं।'

जूली ने चोर निगाहों से एक वार अपने आस-पास देखा और झट से उसके होंठ चूम लिए फिर हँसते हुए कहा, और लोग तो किनारा पाने की खुशी में नाच रहे हैं। तुम खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ? मैं तो चली, मिसेज उड सामान मिला रही हैं, अभी मेरी पुकार होने ही वाली है।

जूली जैसे आकस्मिक भाव से आयी थी, उसी तरह गायव हो गयी। गुणीदत्त किसी हसीना की याद में नहीं डूबा है, यह जानकर मानो वह आश्वस्त हो गयी। यही तो वात है। यह लड़की वहुत थोड़े में ही खुश हो जाती है। हिन्दोस्तान में कोई लड़की गुणीदत्त की प्रतीक्षा में नहीं होगी। इस पर उसे विश्वास नहीं होता। गुणीदत्त को डायरी लिखने की आदत है। दस-वारह दिनों में वह पाँच-सात पन्ने रंग डालता है। लेकिन डायरी चूंकि बंगला में लिखता है, जूली कुछ पढ़ नहीं पाती। डायरी के पन्ने उलटते-उलटते हुए वह खीजकर कहती, 'मैं तुम लोगों की भाषा लिख-पढ़ नहीं सकती, इसीलिए न मुझे चकमा देते हो ! इसमें तुमने जरूर दर्जन-भर लड़कियों का नाम लिख रखा होगा।'

कभी-कभी उसकी तरफ हैरतभरी निगाहों से देखते हुए सवाल किया है, 'अच्छा, तुम्हारे देश की लड़कियों के पास, आँखें नाम की क्या कोई चीज नहीं ? सच कहो, आज तक तुम पर किसी की भी निगाह नहीं पड़ी ?'

उसने सच ही पूछा था। गुणीदत्त सिर्फ चाँद साहव को ही क्यूं याद करता है ? ऊपरवाला अगर अपना जादू न दिखाता, उसे इस लड़की से न मिलवाता तो वह कुछ कर सकता था ? सचमुच, अगर उससे मुलाकात न हुई होती, तो कौन जाने क्या होता ?

जब वह विलायत पहुँचा था, तो इस करिश्मे के लिए जरा भी प्रस्तुत नहीं था।

जहाज का क्वार्टर-मास्टर, बात-बात में लम्बी-चौड़ी डींगें मारता और गला फाड़कर चीखा करता था। हफ्ते में चार-पाँच दिन मुसाफिरों के मनबहलाव के लिए उसकी बुलाहट होती। क्वार्टर-मास्टर की फटे-बाँस-सी आवाज सुनकर उसके दिल में अजीब-सी घबराहट शुरू हो जाती। कभी-कभी तो उसे यह भी शक होने लगता कि उसने जो कुछ सीखा था, वह उसे अच्छी तरह याद भी है या नहीं और अगर याद है तो वह उसे ठीक तरह दिखा भी पाएगा या नहीं—यह डर उसे हमेशा बना रहता। किसी-किसी शाम वह खेल दिखाते हुए, पसीने से नहा उठता, तब कहीं जाकर उसका बुखार उतरता।

हर सुबह उसे यह चिन्ता सवार हो जाती कि आज कौन-कौन-सा नया खेल दिखाया जाए? उसके पास सामान भी तो सीमित था। रोंगटे खड़े करने लायक, खेलों के लिए, उसके पास सामान भी तो नहीं था। बस, जो कुछ सामान हाथ में था, उसी को हर रोज अलग-अलग तरीके से सजा-संवारकर और एन-तेन कहानियाँ गढ़कर, नयापन बनाए रखना पड़ता है। गुणीदत्त अपने चेहरे पर झलकते हुए तेज और आत्मविश्वास के लिए, छः साल पूर्व की, उस विदेश-यात्रा का हमेशा कृतज्ञ रहेगा।

उन दिनों उसकी आँखों में संशय और घबड़ाहट के बावजूद, आने वाले दिनों के सपनों की झलक थी। अपने अवकाश के पलों में वह अक्सर जहाज की डेक पर आ खड़ा होता और अछोर सागर की ओर देखते हुए ध्यानमग्न होकर सोचा करता था—यह जहाज आखिर कभी न कभी तो उसके सपनों के सिंहद्वार तक पहुँचाएगा ही। उसके बाद तो वह खुद ही अपनी स्वप्नश्री, भाग्यलक्ष्मी के अन्तःपुर का दरवाजा ढूँढ़ निकालेगा, वर्ना इतनी बड़ी घटना, विदेश जाने का सपना यूँ सच कैसे हो जाता?

बाँकुड़ा जिले के एक नितान्त साधारण-से घर का एक लावारिस और कमअक्ल लड़का जो जीवन-सिन्धु में मौत के थपेड़े झेलते हुआ, बिल्कुल डूबने-डूबने को ही था, अचानक सचमुच की सागर-यात्रा पर कैसे निकल पड़ा? उस सागर का कभी न कभी अन्त तो होना ही था। वैसे वह यह भी जानता है कि यह सागर पार कर लेने के बाद भी

कई और बाधा-विपदाएँ, परीक्षाएँ सामने हैं। लेकिन महज सूनी निरर्थकता की अंधी गुफा में खोने के लिए, इतने सारे आयोजन की क्या जरूरत थी ?

मन के ये तर्क-वितर्क गुणीदत्त को कहीं से ताकत देते हैं ! मन की सारी उदासी, छँटने लगती है। अतः बनी रहें, ये मुसीबतें। अब तो वह किनारे के बिल्कुल करीब आ पहुँचा है—यह बात वह अपने मन में माला की तरह फेरता रहता है। अपने खिलाफ पड़ने वाली तमाम वास्तविकताओं को झटककर, वह स्वयं को जादू की दुनिया में खींच ले जाता है ! बस दुनिया में कुछ भी, अलौकिक या अनोखा नहीं लगता है।

अब चाहे वह विश्वास न करता हो, लेकिन कभी उसने दुनिया भर के पोथी-पत्रा उलट डाले थे। हिन्दुओं का विश्वास है कि दुनिया के हर असम्भव काम को सम्भव करने में कुशल, राजा भोज ही इस विद्या के आदिगुरु थे। शान्ति कर्म, मारन, उच्चाटन, वशीकरण। स्तम्भन, रोग निराकरण, भूत प्रसाधन, मनहरण, मोहन, विद्वेषन, आदि विविध नैसर्गिक क्रियाकलापों की, बहुत-सी कहानियाँ भी उसने सुनी थीं। लेकिन इन कहानियों ने बचपन के अलावा, उम्र के और किसी हिस्से पर अपना निशान नहीं छोड़ा। बड़े होने पर ये तमाम कहानियाँ बेहद स्थूल लगीं। ये स्थूल कहानियाँ ही, कभी आदमी को इतना अविभूत कर गयी थीं कि यहाँ के लोग पश्चिम की बड़ी-बड़ी जादू पुस्तकों को भी जला कर खाक करने को तैयार थे।

लेकिन गुणीदत्त जब यहाँ से चला था, तो जहाज पर, खड़े-खड़े समुद्र निहारते हुए, आगे पोथी-पत्रों में लिखी हुई, उन अलौकिक बातों पर विश्वास करना चाहा था।

उनमें से अब तो वही कहानियाँ याद रह गयी हैं जिनसे उनका सौन्दर्य-बोध आहत नहीं होता। उसने इन कहानियों से प्रेरणा ली है, विस्मृति संग्रह किया है। उसने महसूस किया है कि इस समुद्र की या उसके पार की कोई वर्जना या सीमाएँ सच नहीं हैं। दरअसल उसकी नजर में कहीं से बेहद झूठा साबित हुआ। कहा जाता है राजा भोजराज

की रूपसी विदुषी और दुर्लभ-यौवना जादू सम्राज्ञी पुत्री भानुमति ने कभी 'मोहिनी' नामक जादू के जोर से रेगिस्तान में समुन्दर रचकर राजा विक्रमादित्य की राह रोकने की कोशिश की। लेकिन अगर वह राह रोकने में सचमुच सफल हो जाती तो शायद उसे भी बहुत बुरा लगता। वह जानती थी कि ऐसा नहीं होगा। गुणीदत्त को आँखें मूँदकर उस दृश्य की कल्पना करना बेहद सुखद लगता है। विक्रमादित्य भी बंजर रेगिस्तान में सागर देखकर विस्मित विमूढ़-सा खड़ा रह गया। लेकिन अचानक उसकी दृष्टि जादूमाया के समुद्र के उस पार अपनी भावी वधू पर पड़ी। सागर के किनारे पर वह खूबसूरत लड़की मन्द-मन्द हँस रही थी।

गुणीदत्त ने भी कल्पना करने की कोशिश की, उसके सामने भी जादू का जो समुद्र बिछा हुआ है, वह किसी जादूगरनी की माया भर है। सागर पार, वह मनमोहिनी रूपसी खड़ी है और उसे देखकर, खिल-खिल हँस रही है। वह हँसते हुए, उसे अपने करीब आने से वरज भी रही है और उसकी प्रतीक्षा भी कर रही है। वह मानो उसी की तलाश में उसे आवाज दे रही है।

'सेफर, टोल्डेथ यीशु'—कई सालों पहले पढ़ी हुई, पुरानी बातें उसके कानों में बजती रहीं। इस चमत्कार विद्या की शुरुआत के बारे में सोचते हुए उसे अच्छा लगता है। यह विश्वास करने को मन करता है कि इन अजीबोगरीब चमत्कारों के पीछे कोई दिव्य मन्त्र जरूर है। और वह इसी दुनिया में कहीं न कहीं लिखा हुआ है।

गुणीदत्त वह कहानी कभी भुला नहीं पाया। कई बार तो उसने घंटों इस उधेड़-बुन में दिमाग लगाया है कि इस कहानी के आधार पर कोई सचमुच का जादू दिखाया जा सकता है या नहीं—जेरसलम की पवित्र मन्दिरों की खुदाई करते समय, भक्त डेविड को अचानक ही एक अद्‌भुत चमत्कार देखने को मिला। उसे देखकर वह स्तब्ध रह गये। उन्हें एक अद्‌भुत पत्थर मिला। जिस पर दिव्य-ज्ञान मंत्र खुदा हुआ था। डेविड चिन्तित हो उठे। अगर यह मन्त्र किसी की निगाह में पड़ गया, तो वह उसके सहारे दुनिया भर के अलौकिक कांड करता फिरेगा।

इससे लोगों का अमंगल होगा। दुनिया का अशुभ होगा। यह मन्त्र अगर किसी अज्ञानी व्यक्ति के हाथ लग गया, तो किसी बच्चे के हाथ भयंकर अस्त्र थामने की तरह गजब हो जाएगा। काफी सोच-विचार के बाद, डेविड ने उस पत्थर के टुकड़े को मन्दिर के निचले तहखाने में गाड़ दिया। लेकिन वह निश्चिन्त नहीं हो सके। पवित्र मन्दिर के प्रवेश द्वार पर दो प्राच्य सिंह मूर्तियाँ स्थापित कीं ताकि कोई व्यक्ति उस मन्त्र का पता लगाने के लिए जादू की करामात से मन्दिर के अन्दर घुस भी आए तो भी कोई डर नहीं। उस मन्त्र के बल पर, दिव्य-दृष्टि प्राप्त करके ज्योंही वह बाहर निकलेगा, दोनों सिंह जोर से दहाड़ उठेंगे और वह डर के मारे मन्त्र भूल जाएगा। लेकिन अगर सचमुच वह मन्त्र किसी के हाथ न लगता, तो अकारथ हो जाता। कहा जाता है कि श्रेष्ठ मानव सन्तान प्रभु यीशु को वह मन्त्र प्राप्त हुआ था।

एक दिन यीशु भोजविद्या के बल पर, पुरोहितों के अनजाने में मन्दिर के तहखाने में जा पहुँचे। उन्होंने एक कागज पर वह खुदा हुआ मन्त्र उतार लिया और अपनी बाँह चीरकर, उसमें छुपा लिया। बाहर आते ही, होश-हवास गुम कर देनेवाली, सिंह की वह कराल गर्जना सुनकर, वह भी मन्त्र भूल गये। लेकिन उन्होंने तो वह मन्त्र लिख भी लिया था। अपनी बाँह से उसे निकालकर दुबारा रट लिया और उसी जादू मन्त्र के प्रभाव से, तरह-तरह के अलौकिक काम करते हुए, दुनिया की भलाई करने में सफल हुए।

गुणीदत्त को लगा, वह भी राह में आयी हुई तमाम बाधा-विपदाओं को पार करके, अपने सक्षम हाथों से, उस मन्त्र का पुनरुद्धार करने निकला है।

लेकिन सागर-पार, विदेश की धरती पर कदम रखने के कुछेक दिनों बाद ही, उसके सारे संकल्प और सपने टूट-फूटकर बिखर गये। वहाँ पहुँचकर आपने पहली बार महसूस किया कि उसके सपने कभी पूरे नहीं होंगे और प्रतीक्षा-रत जादू-लक्ष्मी को ढूंढ़ निकालना भी असम्भव है। वहीं उसे मिली थी, निहायत सस्ते ऑपेरा हाउसों में नाचने-गाने वाली लड़की जूली एण्डरसन !

गुणीदत्त लन्दन पहुँचकर शुरू-शुरू के कई दिनों तक, अपने को लोगों की निगाहों से बचाता रहा। क्वार्टर-मास्टर ने ही उसे समझाया था कि जहाज से उतरकर, गेट से बाहर निकल जाने के बाद, उससे कोई पूछ-ताछ नहीं करेगा। वह पासपोर्ट दिखाने की मुसीबत से भी बच जाएगा।

·

उन दिनों लन्दन मे गजब की ठंड पड़ रही थी—हड्डियाँ गला देनेवाली सर्दी ? आस-पास के लोग भी बिल्कुल अपरिचित ! आते समय, चाँद साहब ने उसे दो कम्बल थमा दिये और शर्ट की जेब में तीन गिन्नी ठूँस दी थी। जहाज मे भी उसे नाममात्र को पैसे मिले थे। पासपोर्ट न होने के कारण, उसे शुरू-शुरू मे कई दिनो तक, नौकरी के लिए कोशिश भी नही की। शहर से काफी दूर, एक निहायत दरिद्र कस्बे मे, एक पाउण्ड प्रति सप्ताह के हिसाब से, उसने एक कमरा किराए पर ले लिया और बची-खुची पूंजी के सहारे गुजारा करता रहा। लेकिन उस कड़ाके की सर्दी में, पहने क्या ? नौकरी की तलाश मे, कम्बल ओढकर निकलना तो सम्भव नही था। धूप का यह हाल कि कभी-कभार दोपहर को सूर्य देवता के दर्शन हो जाते, वर्ना वह भी नही ! दिन के दस-ग्यारह बजे तक तो कोहरा ही छाया रहता। कोहरा भी ऐसा सर्द कि नाक-कान-मुँह से अन्दर घुसते ही, हड्डियाँ जमकर बर्फ हो जातीं।

लेकिन बाहर निकले बिना, गुजारा भी तो नही था। उसके पास जो भी कपड़े थे, उन्हे पहनकर बाहर निकल पड़ा। उसे उन कपड़ों मे देखकर उस दिन लोगों ने और चाहे जो समझा हो, लेकिन स्मार्ट नही समझा था।

वैसे जो आदमी मेहनत करने के लिए तैयार हो, उसके लिए वहाँ कामों की कोई कमी नही। गुणीदत्त को भी एक काम मिल गया—एक बहुत बड़े ऑपेरा-हाउस मे मेहतर का काम ! थियेटर को साफ-सुथरा रखने का जिम्मा उसका था। इस शहर मे एक बहुत बड़ी सुविधा यह थी कि यहाँ कोई आदमी किसी काम को छोटा नहीं

समझता था। हर किसी के सामने काम ही अहम सवाल है! कौन-से स्टैंडर्ड का आदमी, क्या काम कर रहा है वह इस बात को लेकर सर नहीं खपाते। लेकिन गुणीदत्त को जो काम मिला था, उसमें शारीरिक ताकत की बहुत जरूरत थी। वैसे मेहनत करने में, उसे कोई आपत्ति नहीं थी। काम करते हुए उसे ठंड भी कम लगती थी। बेकार, बैठे रहने से तो, उसकी देह का पोर-पोर ठंड के मारे जमने लगता था।

उसे हर हफ्ते तन्खाह के रूप में, कुल मिलाकर छः पाउण्ड मिलता था, जिसमें से एक पाउण्ड तो घर के किराए में ही निकल जाता। इतनी कड़ी मेहनत करने की वजह से, दिन भर के चार वक्त के खाने में, साढ़े तीन पाउण्ड के करीब खर्च हो जाते। एक पाउण्ड आने-जाने में निकल जाते, क्योंकि छुट्टी के बाद, जादू-मंत्रों से मुलाकात करने के लिए भी कई-कई चक्कर लगाने पड़ते थे। बाकी बचा एक पाउण्ड! जरूरी खर्चों के बाद, काफी खींच-तानकर, सिर्फ आधा पाउण्ड बचा पाता था। गरम कपड़े आखिर कहाँ से बनवाता? फिर भी, जो कुछ सस्ते में हो सकता था, वह थोड़ा-बहुत हेर-फेर कर ही लिया। किसी बड़े आदमी से मुलाकात करने के लिए, शरीफों की तरह, ढंग के कपड़े पहनना भी जरूरी था।

पहले-पहल इसी ऑपेरा-हाउस में जूली से मुलाकात और दोस्ती हुई थी।

उन दिनों वह एक्स्ट्रा आर्टिस्ट थी, महीने भर की तन्खाह के हिसाब से, कहीं बँधकर नहीं नाचती थी। कुछ दिनों एक जगह काम करती और कॉन्ट्रैक्ट खत्म होते ही, दूसरी जगह नौकरी तलाश करती। ऐसे ही बहुतेरे होटलों में नाच-गा चुकी थी। गुणीदत्त से, उम्र में, शायद दो-तीन साल छोटी ही थी। इसी जूली ने ही उसे सूचना दी थी और उसने कई एजेन्टों से मुलाकात भी की, लेकिन काम नहीं बना। दो-एक लोगों के सामने हाथ का कमाल दिखाने पर भी स्टेज पर, चांस देने के आग्रह पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। लोगों के पास इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे यह देखें कि वह किस हद तक जादू जानता है। आखिरकार, आगे उम्मीद भी छोड़ दी और हताश होकर बैठ गया।

उस वक्त भी, उसके पास जरूरत भर के गरम कपड़े नहीं थे। उस दिन किसी रेस्तरां मे लंच करते हुए, वह भविष्य को लेकर बेहद चिन्तित और परेशान था। ठीक उसी वक्त जूली एण्डरसन भी लंच के लिए पहुँची। उससे वह पहले भी, कई बार मिल चुका था। इधर-उधर की बातें करते हुए, कई बार दोनों ने साथ ही लंच भी किया, लेकिन उनकी बातों का विषय अन्तरग या व्यक्तिगत न होकर, सिर्फ काम-काज तक ही सीमित था।

उस दिन खाना खाते हुए जूली एण्डरसन ने दो-एक बार उसकी तरफ गौर से देखा, फिर अचानक ही सवाल किया, 'खाना खाते हुए भी, मुँह इतना सूखा हुआ क्यो है ?'

गुणीदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया, चुपचाप निवाले निगलता रहा। उसके प्रति कोई हमदर्दी दिखाए, यह वह सह नहीं सकता था।

जूली थोड़ी देर उसकी तरफ देखती रही फिर उसकी ठुड्डी पकड़-कर उसका चेहरा अपनी ओर घुमाते हुए, दुबारा पूछा, 'क्यो, क्या हुआ है ?'

'कुछ नहीं। मैं यहाँ से जाने की सोच रहा हूँ।'

'कहाँ—?'

'अपने देश।'

'क्यो ?'

'मैं क्या यहाँ मेहतर बनने आया था ?'

जूली एण्डरसन चुपचाप खाना खाने लगी। अचानक पूछा, 'देश मे तुम्हारा कौन-कौन है ?'

'कोई नही !'

'कोई गर्ल-फ्रेंड भी नही ?' जूली ने हँसकर पूछा।

जवाब मे गुणीदत्त ने भी हँसकर सिर हिलाने की कोशिश की। बातों ही बातों में, उसे अपने यहाँ आने की पूरी दास्तान भी सुना गया। जाने क्यों इस तेज-तर्रार, हँसमुख लड़की को अपने बारे मे बताते हुए उसे अच्छा लग रहा था।

जूली एण्डरसन चुपचाप उसकी कहानी सुनती रही और

खत्म करती रही। सस्ता खाना भी वह वेहद तृप्त भाव से गले के नीचे उतार रही थी। खाना ख़त्म करके उसने एक वार फिर मुँह खोला, 'देखो, मैं भी जव सिर्फ वारह साल की थी, तव से लेकर आज तेईस-चौवीस साल की उम्र तक, ऐसे ही भटक रही हूँ, लेकिन इसका मुझे कोई अफसोस नहीं है।' थोड़ा ठहरकर फिर पूछा, 'तुम स्वदेश जाना चाहते हो, लेकिन लौटने के लिए रुपए कहाँ है?'

'देखूं···रुपए का इन्तजाम होते ही चल दूंगा।'

'शरीफ ढंग से कमाओगे, तो इतने रुपए के इन्तजाम करने में करीव दो साल तो लग ही जाएंगे। उतने दिन हाथ-पाँव समेटकर, वेकार वैठे रहने से वेहतर है, जिस उद्देश्य से आए हो, उसी के लिए कुछ कोशिश करो।'

गुणीदत्त पर उसकी सलाह का कोई असर नहीं पड़ा, उसका लटका हुआ चेहरा देखते हुए जूली यह वात समझ गयी थी। शायद उसी दिन पहली वार उसने गौर किया कि गुणीदत्त के पास गर्म कपड़े नहीं हैं।

इस घटना के वाद भी वह लोग कई वार उस निर्जन रेस्तरां में मिलते रहे, लेकिन व्यक्तिगत समस्याओं को लेकर, फिर किसी ने, कोई चर्चा नहीं की। गुणीदत्त को ही जाने क्यों लगता रहा कि इधर-उधर की वात-चीत के वहाने, उसकी नजर उसके कपड़ों पर है, मानो वह सर्दी की तकलीफों का अन्दाजा लगाने की कोशिश कर रही हो। ऐसे में उसका क्रोध ही उसके वदन को थोडी-वहुत गर्मी दे जाता।

उन्हीं दिनों की वात है—गुणीदत्त को अचानक ही ठंड लग गयी और वह वीमार पड़ गया था। सारी देह और हाथ-पैर में वुरी तरह दर्द और ठंड के मारे कँपकपी! उसका काम पर जाना भी वन्द हो गया।

वेहद अक्खड़ और जिद्दी किस्म का आदमी होते हुए भी, अव वह मन ही मन हिम्मत हार रहा था। उसे परेशानी होने लगी, अगर वह इसी तरह वीमार रहा तो खाएगा क्या? घर का किराया कहाँ से चुकाएगा? ठंड के मारे वह दिन-दिन भर सिर से पैर तक कम्वल ओढ़े पड़ा रहता, लेकिन कँपकँपी नहीं रुकती थी। कमरा गर्म करने के लिए, उसके कमरे में गैस-हीटर भी लगा हुआ था, लेकिन उसे चालू

करने से पहले, गैस-स्लिट में छ: पेनी डालना पड़ता था। उसके पास अगर छ: पेनी होते भी, तो भी उन्हें खर्च करने की बात शायद वह नहीं सोच सकता था।

उस कड़ाके की सर्दी में, एक शाम जूली एण्डरसन उसके घर आ धमकी थी। उसीने बताया कि उस दिन उसे कोई खास काम नहीं था, अतः वह छुट्टी लेकर यह पता करने आयी है कि वह काम पर क्यों नहीं आ रहा है? उसके घर का पता उसने ऑपेरा-हाउस से ले लिया था।

थोड़ी देर दरवाजे पर खड़े-खड़े ही उसने स्थिति का अन्दाज लगाने की कोशिश की, फिर उसके सिरहाने आकर बैठ गयी। उस दिन भी गुणीदत्त अपने ऊपर ही बुरी तरह नाराज हुआ था और होठ चबाता हुआ गुमसुम पड़ा रहा। उसके आंसू पलकों की सीमा तोड़कर, वह जाने को आतुर हो उठे। यही उसकी सबसे बड़ी विवशता थी। उसने बुद-बुदाकर कहा, 'कितनी कड़ाके की सर्दी है। लगता है, जान लेकर छोड़ेगी।' वैसे यह बात खुद भी समझ रहा था कि मन की ताकत जितनी कमजोर पड़ती जा रही है, सर्दी उतनी ही बढ़ती जा रही है।

जूली एण्डरसन कुछ देर तक उसे खामोश आंखों से निहारती रही फिर एक झटके से उठी और अपने बैग में से छ: पेनी का सिक्का निकालकर गैस-स्लिट मे डाल दिया। गुणीदत्त की विस्मित-विमूढ आंखों के सामने ही एक और काण्ड कर बैठी। उसने अपना ओवरकोट उतार कर चेयर पर डाल दिया। अपनी जर्सी और हाथों के दस्ताने भी खोल डाले और कमरे मे जलती हुई रोशनी बुझा दी।

उस रात यही परायी और विदेशी लड़की जूली, उसकी बेचैन सांसों मे, बर्फ जैसी ठंडी देह मे जीवन की गर्माहट बिखेरने मे व्यस्त हो गयी थी, उसे सर्द मौत के शिकंजे से छीन लायी थी। यह पहली औरत थी, जिसने गुणीदत्त के जीवन में प्रवेश किया और जो बेहद साधारण होते हुए भी बेहद अजीब थी।

इसके वाद जूली ने कहाँ से और कैसे रुपयों का इन्तजाम किया, यह वही जाने। वह गुणीदत्त का अपमान भी नहीं करना चाहती थी, अतः उसके आगे यह वात स्पष्ट कर दी, 'ये रुपये तुम पर उधार रहे। जव सुविधा हो, लौटा देना।'

उन रुपयों से गुणीदत्त के लिए एक ओवरकोट और मोटे ऊन की एक कमीज खरीदी गयी।

उसी लड़की ने किश्तों में एक गरम पैंट वनवाने का भी इन्तजाम कर दिया।

गुणीदत्त ने महसूस किया, उसके जीवन में नयी गर्माहट भर गयी है और इसके सहारे उसने जमीन पर अपने फौलादी पाँव टिकाकर खड़े होने की कोशिश की। उसका विश्वास लौट आया। उसे लगा अव शायद वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके, शायद आगे वढ़ सके, शायद जूझ सके।

सचमुच वह एक वार फिर उठ खड़ा हुआ। उसने दुगने जोश से दौड़-धूप करके एजेन्टों से मुलाकात की। नये-नये कपड़ों में उसके चेहरे की चमक जैसे फिर लौट आयी। उसकी वात-चीत और तौर-तरीके में भी काफी फर्क आ गया। जूली एण्डरसन अपने फुर्सत के वक्त, उसके खेलों की परीक्षा लेती, मानो गुणीदत्त के अच्छे-वुरे की एकमात्र निर्णायक वही हो। उसने अपने हाथों से शहर के एजेन्टों की लिस्ट उतारी और गुणीदत्त के गले पड़कर उसे मुलाकात करने को भेजा। काम न वनने की सूचना पाकर वह कभी उदास नहीं हुई और कहीं आशा की एक किरण भी नजर आयी तो खुश हो गयी।

एडवर्ड उड के साथ गुणीदत्त की वात-चीत करीव-करीव पक्की हो गयी। उड साहव कोई कायर आदमी नहीं था, वल्कि महत्वाकांक्षी था। हिन्दुस्तान के जादू-विद्या के प्रति उसके मन में अपार श्रद्धा भी थी। दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे के विजनेस पार्टनर भी थे। गुणीदत्त को पति से अधिक पत्नी ने यानी मिसेज जेनिफर उड ने पसन्द किया। उनकी निगाहों में उसने अपार सम्भावनाओं का आविष्कार किया।

लेकिन गुणीदत्त जैसे नौसिखुए जादूगर को वह लोग भी एकवारगी

बड़े-बड़े ग्रामिजात्य रंगमंचों पर पेश करने की हिम्मत नहीं कर पाए। अगर कहीं जग-हँसाई हुई, तो जो बदनामी होगी सो तो अलग, भविष्य की सारी सम्भावनाएँ भी मिट्टी में मिल जाएंगी। अतः उसकी योग्यता परखने के लिए उन्होंने उसे एक छोटे-से शहर के रंगमंच पर तीस मिनट का प्रोग्राम देने का कॉन्ट्रैक्ट दिया। यह निहायत सस्ता-सा स्टेज था, जो विशेष रूप से वहाँ के कुली-मजदूर और मल्लाहों आदि के मनोरंजन के लिए बनाया गया था। वहाँ पर रोज ही कोई-न-कोई प्रोग्राम होता था। कोई स्टेज पर पन्द्रह मिनट का कैरिकेचर प्रस्तुत करता, कोई बीस मिनट तक गाने सुनाता, कोई आध घण्टे के लिए नाच का कार्यक्रम पेश करता—यानी वहाँ हर समय कोई न कोई प्रोग्राम चलता रहता।

उडवर्ड साहब ने उसे आश्वासन दिया। 'अपने जादू-खेलों से अगर यहाँ के दर्शकों को खुश कर सको तो बड़े स्टेज पर चांस देने की बात सोची जा सकती है।'

कॉन्ट्रैक्ट पाकर गुणीदत्त तो खुश हुआ ही, जूली एण्डरसन भी मारे खुशी के पगला गयी।

उड साहब के कथन का आशय तो उस समय समझ में आया, जब वह स्टेज पर आकर खड़ा हुआ। गुणीदत्त की आँखों में अजीब-सी दहशत थी। जूली एण्डरसन का मुँह भी सूख गया। उसे भी यहाँ नाच का प्रोग्राम देना था। इस किस्म के दर्शकों के बारे में उसे पहले से ही थोड़ा-बहुत अनुभव था। लेकिन उड साहब गुणीदत्त को शुरु-शुरु में ही ऐसे हुड़दंग मचाने वाले दर्शकों के आगे धकेल देगा, यह उसने नहीं सोचा था। अपने प्रोग्राम के बारे में उसे चिन्ता नहीं थी। वह जान चुकी थी कि उसके डांस की तारीफ भले ही न हो, उसके जवान जिस्म की चटक-मटक देखते हुए दर्शकों का मिजाज शान्त रहेगा। लोग उसका नाच देखते हुए खुश होकर सीटियाँ बजाएंगे, हो-हल्ला करेंगे, वाह-वाह भी करेंगे, लेकिन गुणीदत्त का क्या होगा?

ऐसी जगहों में टिकट की दरें भी चाहे जितनी सस्ती हों, लोग किसी न किसी तरह अपना पैसा वसूल कर ही लेंगे। जैसे चिड़ियाखाने

के गेट पर जीव-जन्तुओं को खिलाने के लिए चने-केले बिकते हैं, इन जगहों पर सड़े हुए अंडे, केले, टमाटर बिकते हैं। दर्शक हॉल में घुसते हुए ये सब चीजें अपनी जेबों में भर लाते और किसी भी कलाकार का प्रोग्राम नापसन्द हुआ नहीं कि मामला गड़बड़ ? चारों ओर से सड़े-गले अंडे, टमाटर, केलों की बौछार होने लगती। वह लोग ऐसे बोर कलाकार को स्टेज से हूट-आउट करके ही दम लेते।

अपने पहलेवाले जादूगर की दुर्दशा देखकर गुणीदत्त के तो काटों खून नहीं था।

उससे पहले एक और जादूगर दर्शकों को हँसाने-रिझाने के पूरे साजो-सामान के साथ स्टेज पर खड़ा हुआ। उसकी कोई विशेष उम्र भी नहीं थी। उसका भोला-निरीह चेहरा देखकर ममता उमड़ती थी। लेकिन किसी को भी उस पर दया नहीं आयी। वह प्रेमी-प्रेमिका की युगल भूमिका में मंच पर प्रस्तुत हुआ। उसके हाथों में दो अलग-अलग मुखौटे थे। प्रेमी की भूमिका निभाते हुए वह पुरुष का नकाब ओढ़ लेता और प्रेमिका के डायलॉग बोलते समय औरत का नकाब ओढ़ लेता—प्रेमिका के अन्तर में प्रेम का तूफान उमड़ रहा है। वह अपनी बात-चीत और हाव-भाव से, अपने प्रेमी को यह बताने की कोशिश कर रही है कि औरत का प्यार बहुत कीमती होता है। वह दिन दूर नहीं, जब देश-विदेशों में स्वर्ण-पूजा की जगह औरतों की पूजा होगी। जिस आदमी को जितनी अधिक औरतों की मुहब्बत मिलेगी, वह उतना अधिक दौलतमन्द समझा जायगा। खरा प्रेम, खरे सोने से भी अधिक दुर्लभ है। हर मर्द चाहता है कि वह सिर्फ एक औरत के सच्चे प्रेम का ही नहीं, वल्कि प्रेम के समूचे खजाने का मालिक बन बैठे। वह इसके लिए अपनी जान के अलावा बाकी सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है। उसका वश चलता तो वह प्राण भी दे डालता, लेकिन अगर जान ही नहीं रहेगी तो उस प्रेम के खजाने का उपभोग कौन करेगा ? औरत उस खजाने तक पहुँचने की राह बताती है, प्रेमिका को हथियाने के लिए, तरह-तरह के अचूक गुर सिखाती है। प्रेमी उसकी बातें सुनते हुए, हिस्टीरिया के दौरे की तरह रह-रहकर बदहवास हो उठता है।

लोगों को इस वार्तालाप पर हँसी आनी चाहिए थी। जूली तो जी खोलकर हँसती रही। गुणीदत्त को अगर अपने लिए आशंका न होती, तो शायद वह भी खूब हँसता। लेकिन दर्शकों की ओर से हँसी की कोई प्रतिक्रिया न देखकर कलाकार घबड़ा उठा। दर्शकों की प्रतिक्रिया देखने के फेर में रस की स्वाभाविक गति भी गडबडा गयी। अब चाहे इस वजह से हो या बार-बार मुखौटा उतारने-चढ़ाने के क्रम से बोर होकर, दर्शकों में से किसी ने हूटिंग कर दी और उसके चेहरे की तरफ निशाना लगाकर एक सडा हुआ टमाटर दे मारा। बाकी दर्शक भी उसकी हँसी उड़ाने में जी-जान से जुट गये। बेचारा कलाकार, संवेदना पाने की उम्मीद में कुछ देर दयनीय स्थिति में खड़ा रहा। लेकिन सड़े-गले अंडे और टमाटर की अन्धाधुन्ध बरसात ने उसे भूत बना दिया। उसे स्टेज छोड़कर भागना पड़ा। ऐसा दयनीय कौतुक, ऐसा मर्मान्तक दृश्य बहुत कम दिखाई पड़ता है। जब उस कलाकार के साथ ऐसी बीती, तो कम उम्र छोकरा-सा दिखनेवाले गुणीदत्त के साथ वे जाने कैसा व्यवहार करें।

गुणीदत्त का प्रोग्राम सबसे अन्त में था। अपने नाम की घोषणा होते ही वह गम्भीर मुद्रा में मंच पर आकर चुपचाप खड़ा हो गया। अचानक शोर-गुल थम गया। दर्शकों की युगल-आँखें उसके चेहरे पर आ टिकीं। दर्शक यह अन्दाज लगाने की कोशिश कर रहे थे कि यह आदमी क्या करेगा। बीस मिनट के प्रोग्राम में, शुरू के आठ मिनट तक धीरज के साथ कुछ सुनने या देखने में उन्हें कोई आपत्ति भी नहीं थी।

गुणीदत्त ने हैट उतारकर दर्शकों का अभिनन्दन किया। उसके बाद लोगों को खाली हैट दिखाकर दुबारा सिर पर रख लिया और एक छलांग में स्टेज से उतरकर दर्शकों के आगे आ खड़ा हुआ। एक दर्शक के सामने हैट उतारते ही उसमें से दो सड़े हुए अंडे निकले। दोनों अंडे दो आदमियों को पकड़ाकर खाली हैट को दुबारा पहन लिया। दुबारा हैट उतारते ही उसमें से सड़े हुए टमाटर निकले। उन्हें भी दर्शकों में बाँट दिया। इस बार हैट उतारते ही उसमें से सड़े हुए केले निकले। वह भी दर्शकों के हाथों पर रख दिये।

इस तरह वह जितनी बार हैट पहन और उतार रहा था, उसमें से सड़े हुए अंडे, टमाटर और केले निकलते रहे। उसने जाने कौन-सा मन्तर पढ़ा कि उस जरा-से हैट से इतनी सारी चीजें निकलती आ रही थीं। लोगों का दिमाग चकरा गया। सब के सब मुंह-बाए उसकी तरफ देखते रहे और उस हैट की उत्पादन-क्षमता देखकर उनके मुंह का आकार और बड़ा होता गया। गुणीदत्त हॉल के सारे दर्शकों में सड़े-गले अंडे, केले, टमाटर बांटकर फिर स्टेज पर लौट आया। आश्चर्य के मारे दर्शकों के मुंह से जैसे बोल नहीं फूट रहा था।

गुणीदत्त ने दुबारा झुककर सबका अभिवादन किया, फिर गम्भीर आवाज में कहा, 'आप लोग अपने साथ जितना कुछ लाए थे, वह अब तक समाप्त हो चुका होगा, अतः आप लोगों के आनन्द में व्याघात न पड़े, इसीलिए मैंने दुबारा वह सब चीजें आप लोगों तक पहुँचा दी हैं।'

हॉल भर में तालियों की धूम मच गयी। तालियों की गड़गड़ाहट थमने में तीन-चार मिनट लग गये। गुणीदत्त ने इसके बाद जो-जो खेल दिखाये, दर्शक खुशी के मारे बेहाल हो उठे।

उड दम्पति ने एक-दूसरे की तरफ देखा और इशारे में कहा, 'यह आदमी हरगिज उपेक्षा के लायक नहीं है। दर्शकों को वश में करना जानता है।'

और जूली ? वह तो खुशी के मारे बौरा उठी। उसने आवेग में आकर लोगों के सामने ही गुणीदत्त को बाँहों में बाँधकर उस पर प्यार की झड़ी लगा दी।

गुणीदत्त लगातार एक महीने तक अपने जादू के करतब दिखाता रहा और हर रोज नये-नये करिश्मे दिखाकर उसने लोगों को चकित कर दिया।

थोड़े दिनों बाद ही उसे आभिजात्य वर्ग के रंगमंच पर खेल दिखाने का मौका दिया गया। शुरू-शुरू में उसे सिर्फ एक-दो सप्ताहों का टेम्प-रेरी कॉन्ट्रैक्ट ही मिला लेकिन धीरे-धीरे जादू-खेलों की दुनिया में उसके नाम का तहलका मच गया। जगह-जगह से उसकी माँग होने लगी। उसके 'पलायनी' और छूटती हुई गोली पकड़ने के अद्भुत करिश्मों पर,

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी प्रकाशित हुए। सबसे अद्‌भुत था, उसका पलायनी जादू। जादू-खेलों के प्रशंसकों ने यह खेल पहले भी बहुत बार देखा था लेकिन गुणीदत्त का खेल बिल्कुल अनोखा था। लोग अवाक रह गये। उड दम्पति ने काफी लम्बा-चौड़ा विज्ञापन निकाला—चिर-बन्धन-मुक्त गुणीडाटा ! मुक्तिदूत गुणीडाटा—जिसे संसार का कोई बाधा-बन्धन या हथकड़ी-बेड़ी नहीं रोक सकती ! पलायनी जादूगर गुणीडाटा का पलायन निश्चित है।

गुणीदत्त को रस्सियों से जकड दिया गया है। बन्धन ज्यों के त्यों पड़े रहे, गुणीडाटा गायब ! उसके हाथ-पैर लोहे की जंजीरों से जकड़ दिए गये। उसे जेल के सींखचों मे कैद कर लिया गया, गुणीडाटा मुस्कराते हुए बाहर निकल आया। उसका हाथ-पांव बाँधकर, उसे एक बोरे में बन्द कर दिया गया और उस पर सील-मुहर लगा दी गयी, लेकिन गुणीडाटा हवा ! उसे लकड़ी के बक्से मे ठूँस दिया गया और चारों ओर से कीलें जड दी गयी। बक्सा ज्यों का त्यों पड़ा रहा, गुणीडाटा हवा की तरह भीतर से बाहर निकल आया।

गुणीदत्त के जीवन का यह अध्याय सिर्फ नाम कमाने के क्षेत्र मे ही नहीं, कठिनतम साधना का भी अध्याय साबित हुआ। स्टेज पर प्रोग्राम पेश करने के अलावा, वह इधर-उधर बहुत कम दिखाई पड़ता था। अपनी भूख-प्यास और नींद भूलकर, वह दिन-रात अपने जादू की दुनिया में डूबा रहता। उसकी कठिन साधना देखकर, उड दम्पति भी मुग्ध हो उठे। जूली एण्डरसन तो अविभूत ! अपना काम-काज भूलकर, वह अक्सर उसकी ओर अचरज भरी निगाहों से देखती हुई, सोचा करती थी कि जो आदमी इतने सारे जादू के करतब दिखाकर, दर्शकों को हँसी-खुशी मे मस्त कर देता है, वही अपनी एकान्तिक साधना मे कितना आत्मकेन्द्रित हो उठा है।

गुणीदत्त बहुत जल्दी ही उड दम्पति की आँखों का तारा बन बठा। दरअसल उन लोगों को अपने कारोबार का अनुभव था और वह आदमी की कीमत समझकर उसकी कद्र करना भी जानते थे। अगर वह लन्दन में ही स्थायी रूप मे बस जाता तो निःसन्देह उसे चौगुनी शोहरत मिलती।

लेकिन गुणीदत्त ने एक जगह जमने के बजाय एक पार्टी बनकर, गुणीदत्त के साथ शहर-शहर घूमते रहे ! मशहूर-मशहूर जादू-पार्टी ! मजिउड कम्पनी ! मिस्टर और मिसेज उड, अपनी भ्रमणशील पार्टी के साथ बेल्जियम, हालैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, पैरिस, इटली और जर्मनी आदि शहरों का दौरा करते हुए, दौलत बटोरते रहे। गुणीदत्त को भी आमदनी के हिस्से से वंचित नहीं रखा गया। उसके रहने-खाने के खर्च और मोटी तन्खाह के अलावा, अनुबन्ध के अनुसार मुनाफे की रकम में भी हिस्सा दिया गया। वे लोग जहाँ भी जाते, अपनी पार्टी के चुने हुए लोगों को ले जाते और प्रोग्राम रंगीन बनाने के लिए, वहीं के दो-चार लड़के-लड़कियों को दैनिक तन्खाह पर नियुक्त कर लेते। गुणीदत्त की जादू सहचरी होने के नाते, जूली एण्डरसन भी ज्यादातर उनके साथ जाती थी। वैसे हर जगह साथ जाना कोई जरूरी भी नहीं था। उसका जहाँ, जाने का मन नहीं हुआ, वह अड़कर बैठ गयी, 'नहीं, मैं नहीं जाऊंगी। तुम जाओ, घूम आओ !'

छः साल बाद गुणीदत्त ने उड दम्पति के आगे प्रस्ताव रखा, 'आप लोग हिन्दोस्तान चलिए। वहीं जमकर काम-धन्धा शुरू करेंगे।'

शुरू-शुरू में वह लोग सहमत नहीं हुए लेकिन उसकी जिद देखकर बाद में राजी होना ही पड़ा। गुणीदत्त ने उन्हें आश्वासन दिया, 'इण्डिया कोई छोटा-मोटा मुल्क नहीं है। वहाँ आप लोग बड़ी आसानी से हँसी-हँसी में ही इससे अधिक दौलत बटोर सकेंगे और अगर आप लोग न जाना चाहें तो मुझे अब इजाजत दें।'

मिस्टर और मिसेज उड ने आखिर अपने को तैयार कर ही लिया और उसके साथ वह भी सागर यात्रा पर निकल पड़े। आते समय जूली एण्डरसन को लेकर थोड़ी बहुत मुश्किल हुई थी। पार्टी के साथ वह भी चलने को तैयार हो गयी। उड दम्पति को भी उसे साथ ले जाने में कोई आपत्ति नहीं थी। बल्कि एडवर्ड उड तो इसी कोशिश में था कि किसी तरह वह भी साथ चलने को राजी हो जाए। किसी के लिए आपत्ति का कोई कारण नहीं था, लेकिन गुणीदत्त ने ही उसे रोकने की कोशिश की। कहा, 'एक बात समझ लो, हो सकता है कि अब मैं वापस

न आऊँ।'

'तो क्या हुआ ?'

गुणीदत्त के पास इसका कोई स्पष्ट जवाब नहीं था। पूछा, 'तो तुमने क्या सोचा है, तुम भी यहीं रह जाओगी ?'

जूली मारे हँसी के दोहरी हो गयी, 'क्यों, मेरे लौटने में कौन-सी बाधा होगी ? जब ये लोग वापस लौटेंगे तो इनके साथ मैं भी वापस लौट आऊँगी। मई, थोड़ी-बहुत तन्खाह तो तुम लोग दोगे ही, या बिल्कुल कुछ नहीं दोगे।'

बात अगर सिर्फ रुपयों की होती और वह रुपये लेने को राजी हो जाती तो वह उसे बहुत सारे रुपये दे सकता था ताकि उसकी सारी जिन्दगी मजे में कट जाती। एडवर्ड उड से कहकर वह यह इन्तजाम भी करा सकता था। लेकिन गुणीदत्त से कुछ भी करते या कहते नहीं बना। उसके साथ लौटने में उसे कहाँ और कैसी हिचक है वह अपनी जबान से यह भी नहीं बता सका।

लेकिन जूली उसकी हिचकिचाहट शायद समझ गयी। कहा, 'देखो, तुम्हारे लिए मैं क्या हूँ, यह मैं जानती हूँ। मेरे लिए तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।'

गुणीदत्त के मन में, उसकी ये बातें कहीं खट् से लगी थीं। लेकिन वह खामोश रहा। उसके सामने दरअसल कोई और ही उलझन थी। जूली के इतने बड़े अहसान के बदले वह उसे किसी तरह की दया या सहानुभूति नहीं देना चाहता था। हाँ, उसकी कृतज्ञता के बदले वह किसी तरह का छल भी नहीं करना चाहता था।

जहाज काफी देर से बीच धार में खड़ा है। यात्रियों का शोर-गुल भी अब सुनाई नहीं दे रहा था। रात भर के लिए अधिकांश लोग अपने-अपने बिस्तरों पर जा चुके थे। जो बच रहे थे, वे सोने की तैयारी में थे। गुणीदत्त ने उस घुप्प अँधेरे में ही नजरें घुमाकर देखा। कोई उसकी तरफ बढ़ता आ रहा था।

जूली उससे बिल्कुल सटकर खड़ी हो गयी, 'कमाल है तुम अभी भी इसी तरह खड़े हो ?' फिर हँसकर पूछा, किसकी मोहिनी सूरत याद कर रहे हो, बन्धु ?'

गुणीदत्त उसकी तरफ घूमकर, रेलिंग से टिककर खड़ा हो गया, फिर हँसते हुए पूछा, 'इस वक्त मुझे एक लड़की की बेतरह याद आ रही थी।'

अंधेरे में जूली की आंखें, पल भर को उसके चेहरे पर ठिठक गयीं, फिर जरा हँसकर पूछा, 'इतने सालों बाद अपने शहर लौट रहे हो तो याद तो आएगी ही। इसमें छुपाने की क्या बात है ?'

'यह सुनकर तुम्हें बुरा नहीं लगा ?'

'नन्ना ! कतई नहीं,' जूली की हँसी तेज हो उठी। कहा, 'देख रही हूँ, तुम तो बेकार डरने-डरने में ही मारे जाओगे। भई, मुझ से डरने या परेशान होने की कोई बात नहीं है। मेरी बात छोड़ो, मैं तो इतने दिनों से भटक ही रही हूँ ! आगे भी जब मन करेगा फिर चल दूंगी, खैर, छोड़ो ! तुम बताओ, तुम्हें किसकी याद आ रही थी ?'

कमल के पत्ते पर जैसे पानी का निशान नहीं पड़ता, जीवन के पृष्ठ भी ऐसे ही बेदाग रह जाते हैं या नहीं, गुणीदत्त नहीं जानता। जूली भटकने की बात करती है, लेकिन भटकने की भी तो एक उम्र होती है ? लेकिन ऐसे आखिर कितने दिनों तक भटकती रहेगी ? जूली की उम्र के २७-२८ साल तो ऐसे ही बीत गये, अब और कितने दिनों भटकना संभव है ! शुक्र है कि यह लड़की इन सबको लेकर परेशान नहीं हुई, वर्ना भटकने का यह सिलसिला कभी का खत्म हो जाता।

अचानक गुणीदत्त ने अपनी बाँहों में समेटते हुए कहा, 'दरअसल मैं इसी मुखड़े की याद में खोया हुआ था।'

जूली एण्डरसन उसकी तरफ देखकर हँसने को हुई। अचानक उसके इर्द-गिर्द बाँहों का घेरा और कस गया और किसी के तपते हुए होंठों के बीच उसकी हँसी दब-पिसकर रह गयी।

जाने कितनी देर तक वे बेसुध से इसी तरह एक-दूसरे की बाँहों में बँधे खड़े रहे। अचानक दोनों चौंककर अलग हो गये। अँधेरे में एक

धुंधली-सी आकृति, तेज-तेज डग भरती हुई विलीन हो गयी। जूली उसे नहीं पहचान पायी, लेकिन गुणीदत्त ने पहचान लिया—वह शुभेन्दु नन्दी थी, शायद उसे ही ढूंढता हुआ इधर आ निकला था।

चार

भोर होते न होते जहाज में अजब-सी चीख-पुकार और शोर-गुल मच गया। जहाज को जेटी पर लगने में अभी थोड़ी देर थी। चारों ओर अजब-सी भाग-दौड़ मच गयी। मुद्दतों बाद, मानो जेल से रिहा हुए कैदी अपनी मुक्ति का जश्न मना रहे हों।

जहाज किनारे पर लगते ही लोगों के नाते-रिश्तेदार जहाज के अंदर चले आए। गुणीदत्त यह तय नहीं कर पाया कि वह अपनी पार्टी के साथ उतरने की तैयारी करे या यहीं रुककर चांद साहब का इन्तजार करे! अगर वह जहाज छोड़कर चला गया, तो उससे फिर कहां भेंट होगी। उसे तो चांद साहब का पता भी नहीं मालूम है। उसके घर जाना भी नियम के विरुद्ध होगा। वैसे चांद साहब अगर यहां आया भी हो तो इतने बड़े जहाज में उसे फौरन ढूंढ़ निकालना आसान भी नहीं था।

एक-एक करके, बहुत से यात्री जा चुके। जाने से पहले शुभेन्दु भी उससे विदा लेने आया। गुणीदत्त को हंसी आने लगी। शुभेन्दु मारे संकोच के उससे सीधी तरह आंखें भी नहीं मिला पा रहा था।

'तो मैं चलूं! तुम कलकत्ते कब आ रहे हो?'

इधर कई दिनों की घनिष्ठता के दौरान, वे लोग 'आप' से 'तुम' हो चुके थे।

गुणीदत्त ने उसकी आँखों में देखकर मुस्कराते हुए कहा, 'देखो—अभी तो देर है। बम्बई में कई प्रोग्राम देने हैं, उसके बाद मद्रास और दिल्ली में भी शो हैं।'

'कलकत्ता पहुँचकर मुझे खबर तो दोगे ना?'

'तुम क्या चाहते हो, खबर न दूं?'

शुभेन्दु का चेहरा और लाल हो उठा। पिछली रात उस स्थिति में उसके वहाँ जा धमकने की बात गुणीदत्त जान गया है। अपनी झेंप मिटाने के लिये उसने जोर-जोर से हँसते हुए कहा, 'कलकत्ते पहुँचते ही मुझ से मुलाकात करना या खबर देना। मेरा पता ठीक से रख लिया है न, या खो दिया?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर जताया कि उसने खोया नहीं है, उसके पास है।

'गुणीडाटा! गुणीडाटा! ओ, गुणीडाटा! मेरे दोस्त! मेरे प्यारे—!'

गुणीदत्त हाथ हिलाकर शुभेन्दु को विदा दे रहा था कि चाँद साहब ने उसे पीछे से कसकर चिपटाते हुए प्यार की जैसे नदी बहा दी।

दोनों गालों पर कम-से-कम चार-पाँच बार प्यार किया और उनकी रंगी हुई फ्रेंचकट दाढ़ी उसकी ठुड्डी और सीने पर लोटने लगी। गुणीदत्त का दम घुटने लगा।

'मेरा दोस्त! मेरा दोस्त आ गया है।'

आस-पास से गुजरते हुए यात्री ठिठककर उसकी ओर देखने लगे। मिस्टर और मिसेज उड अवाक् रह गये। जूली एण्डरसन की आँखों में भी विस्मय जाग उठा। ऐसा जंगली अभिवादन उन्होंने शायद कभी नहीं देखा था।

चाँद साहब के आवेग की पहली लहर शान्त होते ही, गुणीदत्त ने अपने संगी साथियों से उसका परिचय कराया। चाँद साहब अचानक गम्भीर हो गया। उसकी गम्भीरता असली थी या बनावटी यह भी समझ नहीं आया। उसने गुणीदत्त के संगियों को छोड़कर दोनों संगिनियों की ओर गौर से देखा। उसकी परखती हुई निगाहें किसी को भी भली नहीं लगी। जूली एण्डरसन ने विस्मित आँखों से गुणीदत्त की ओर देखा,

मानो उसका हैरतअंगेज जादू देखकर भी शायद उसे इतना आश्चर्य नहीं हुआ था। उसे लगा, इस अजीबोगरीब हुलियावाले आदमी की आँखें, उसके नाक-मुह-आँख, देह के पोर-पोर को बेध डालेगी। वह मानों यह अन्दाज लगाने की कोशिश कर रहा हो कि वह किस स्टैंडर्ड की है।

जहाज से उतरने पर चाँद साहब ने एक होटल मे जा ठहराया। होटल के रजिस्टर में दोस्त के अलावा बाकी सब का नाम लिखवा दिया। गुणीदत्त ने पूछना चाहा कि वह कहाँ रहेगा, लेकिन चाँद साहब की तनी हुई भृकुटियों ने उसे बीच में ही रोक दिया। पार्टी के लोगों को होटल में ठहराकर गुणीदत्त का एक हाथ अपनी काँख मे दबाकर वह सीढ़ियाँ उतरने लगा।

कस्टम के झमट निपटाकर होटल पहुँचने में करीब दस बज गये। गुणीदत्त ने तो जहाज पर ही नहा-धो लिया था। कहा, 'चलो, पहले कहीं कुछ खा-पी लिया जाए।'

चाँद साहब ने कोई एतराज नहीं किया, लेकिन चेहरे से बेहद गंभीर बना रहा। गुणीदत्त को समझ नहीं आया कि उसे बैठे-बैठे अचानक क्या हो गया। चाँद साहब के साथ वह होटल के एक केबिन में जा बैठा और बैरे को खाना लाने का ऑर्डर दिया। फिर जाने क्या सोचकर चाँद साहब से पूछा, 'क्यों, शराब चलेगी ?'

सामने वाले ने गम्भीरता तोड़ते हुए पूछा, 'रुपये हैं जेब में ?'

गुणीदत्त होठों मे हँस दिया, फिर बेहद अदा से सिर हिलाकर हामी भरी। वेटर को दुबारा आवाज देकर उसने चाँद साहब की मर्जी मुताबिक ऑर्डर दिया।

चाँद साहब उसकी तरफ परखती हुई निगाहों से देखता रहा। मानो उसे देखकर सारे समाचार जान लेना चाहता हो, सुनने की कोई जरूरत न हो। खाना आ गया, पेय भी आ गया। चाँद साहब ने खाते-खाते ही पाँच मिनट में छ. साल का सारा समाचार जान लिया। लगा, जैसे उसका सारा उत्साह बुझ गया हो। उसने शराब की बोतल पर हाथ फेरते हुए कहा, 'कुल मिलाकर अब महीने मे एक दिन भी पीना नसीब नहीं होता। शराब तो अब करीब-करीब छूट ही गयी है।'

गुणीदत्त ने पहली बार चाँद साहब की ओर गौर से देखा। इन छः सालों में वह आदमी बूढ़ा हो गया था। गोरे रंगवाले सूखे चेहरे पर सियाह झुरियाँ पड़ गयी थीं।

उसकी देह भी झूल गयी थी। नाक के दोनों तरफ हड्डियाँ उभर आयी थीं। बड़ी सादा और यत्नों से रंगी हुई दाढ़ी में भी, अब लटें पड़ने लगी थीं। सौ बात की एक बात यह थी कि अब उसमें वह जिन्दादिली नहीं रह गयी थी।

आधा खाना खाकर, गिलास की कई चुस्कियाँ लेने के बाद, चाँद साहब में जरा ताजगी आयी, लेकिन उसके चेहरे की गम्भीरता में कोई फर्क नहीं आया।

'और वो छोकरी कौन है ?'

गुणीदत्त को यह सवाल आकस्मिक हमले की तरह लगा। पूछा, 'किसकी बात पूछ रहे हो ?'

'वही···मिस···मिस···क्या तो नाम तुमने बताया था ?'

'जूली एण्डरसन ! हमारी पार्टी के साथ आयी है।'

'ओ, वो तो मैंने सुन लिया। लेकिन दरअसल वह है कौन ?'

कैसा अजीब-सा सवाल था। गुणीदत्त और विस्मित हो उठा। चाँद साहब आज कौन-सी मूड में है ? गुणीदत्त उसकी ओर देखता रहा।

चाँद साहब बोतल का कच्चा माल गट-गट पी गया। गुणीदत्त जानता था कि शराब और स्वभाव दोनों मिल गया है, अतः कम से कम इस वक्त तो उसकी जुबान से बंगला नहीं निकल सकती।

चाँद साहब ने दुबारा पूछा, 'तुम्हारे साथ उसके दिल की साँठ-गाँठ हुई या नहीं ?'

गुणीदत्त ने विस्मय दबाते हुए, हँसकर जवाब दिया, 'अगर हो भी ही गयी हो तो क्या हुआ ?'

'नहीं, बोलो तुम।'

चाँद साहब की बातें गुणीदत्त की समझ के परे थीं, फिर भी उस उसे तीखे होने का मौका नहीं दिया। कहा, 'पार्टी की लड़की है। पार के साथ काम करने आई है। इसमें दिल-विल का कोई मामल

नहीं है।'

पल भर मे ही चाँद साहब का चेहरा खुशी से तरल होकर चमकने लगा। उसकी गम्भीरता जैसे रसातल मे खो गई। पूछा, 'सच ?'

गुणीदत्त ने सर हिलाकर सच को मंजूर किया।

अगर वह मुह न फेर लेता तो चांद साहब उसी जूठे मुह से उसे दुबारा चूम लेता। मारे खुशी के उसे जो कुछ सामने दिखा, उसी के बड़े-बड़े निवाले बनाकर मुह मे ठूँसता गया, फिर खुशी से गद्गद् होकर गट्-गट् करके गले मे शराब उडेलने लगा। दोस्त को उस बोतल में नाम-मात्र का हिस्सा दिया। ऐसी उल्टी प्रतिक्रिया देखकर गुणीदत्त फिर हैरत मे पड़ गया। इन छ: सालों में क्या कुछ घटा है, वह इसका अंदाज नही लगा पाया ? अचानक जाने क्या याद आ गया, पूछा, 'होटल मे जगह नही लेने दी, अब मैं रहूँगा कहाँ ?'

चाँद साहब ने सीना तानकर जवाब दिया, 'मेरे साथ ! मेरे गरीब-खाने मे।'

गुणीदत्त दुबारा अवाक हो उठा। चाँद साहब अपने घर मे रहने की बात कह रहा है ? चाँद साहब नशे में तो नही है ?

चाँद साहब बोतल खाली करके ठहाका मार कर हँस पड़ा। कहा, 'बहुत दिनों के बाद इतना खुश होकर खाना खाया है।'

दो-एक पल बाद ही, जैसे कुछ याद आ गया। उसके चेहरे से ही नहीं, गोरे-गोरे गालों से भी हँसी जैसे छलकी पड़ रही थी। मानो मन-ही-मन कोई बात दोहरा रहा हो। फिर पूछा, 'एक बार तुमने एक कहानी बयान की थी न कि तवारीख की किसी हूर परी को, कोई जादूगर उडाकर ले आया था ?'

'वह खुद शैतान था।'

'हाँ—हाँ, ठीक ! उसकी हँसी जैसे उमडी पड़ रही थी, और वह हूर परी कौन थी ?'

'हेलेन !'

'आ—हा ! हेलेन !' अचानक अपनी बनावटी गम्भीरता छोड़कर, वह सीधा होकर बैठ गया, 'सच ही तो, मैं भी तो एक शैतान हूँ ! जब—

दस्त शैतान ! मैं भी तुम्हें एक जादू दिखलाऊँगा । अरे, तुम क्या विला यत से जादूगर बनकर आये हो ! जरा, मेरी हेलेन का खेल देखो, तब कहना,···शिरीन—! हेलेन—!—हेलेन !—शिरीन—!,

गुणीदत्त एकटक उसकी तरफ देखता रहा । शायद वह अन्दाज लगा रहा था कि उसका दिमाग तो नहीं फिर गया है । गुणीदत्त की हैरानी जितनी बढ़ रही थी, चाँद साहब की हँसी उतनी तेज हो उठी । उसकी जिन्दगी में ऐसी मजेदार घटना मानो कभी नहीं घटी ।

गुणीदत्त ने यथासम्भव निस्पृह भाव से पूछा, 'तुम्हारी यह हेलेन कौन है ?"

'शिरीन ।···शिरीन—हेलेन । हेलेन, शिरीन—शिरीन । शिरीन! ! शिरीन ! !' चाँद साहब उठ खड़ा हुआ और अपने कहकहों के तूफान को समेटने की कोशिश की । उसने एक झटके में गुणीदत्त की शर्ट को मुट्ठी में दबाकर अपनी ओर खींचते हुए कहा, 'जरा, हमारे भी खेल देखो !'

इतिहास में बहत्तर साल की उम्र में बाईस साल की लड़की से प्रेम करने का उदाहरण भी मिलता है । कोमलांगी की प्रणय वाणी से बावन या बासठ वर्षीय लोगों को घायल होते हुए, उसने अपनी आँखों से देखा है । बंगाल के आदमी को ऐसे अनमेल उम्रवाले यौवन-लुब्ध भौंरे दो-चार की संख्या में नहीं, दो-चार दर्जन भी दिख जायें, तो भी उसे आश्-चर्य नहीं हो सकता ।

लेकिन गुणीदत्त ने तो अभी तीस की सीमा में कदम रखा है । देश-विदेश में घाट-घाट का पानी पी चुका है ।

तरह-तरह की अजीबोगरीब हवाओं से होकर गुजरने के बाद, अचा-नक कोई एक सत्रह साल की छोकरी को देखकर उसके स्वर प्रेम में चक्कर खा जाए, ऐसा कोई उदाहण गुणीदत्त को याद नहीं आया ।

गुणीदत्त भी उसे देखते ही प्यार नहीं कर बैठा । प्यार तो खैर, उसने सैकड़ों मुलाकातों के बाद भी नहीं किया ।

लेकिन यह सच था कि प्रथम दर्शन में ही वह अभिभूत हो उठा । उसके बाद भी जितनी बार देखा, मुग्ध हुआ है । दूसरों को

विस्मित करना जिसका पेशा हो, खुद उसकी ही आँखें एक अव्यक्त विस्मय के धक्के से चौंधिया उठी। चांद साहब के इस ड्रामे के लिए वह जरा भी प्रस्तुत नही था।

वह लडकी भी शायद उसके लिए प्रस्तुत नही थी।

सामने के बडे हॉल-कमरे की दूसरी ओर दीवार की तरफ मुँह घुमाए, वह चांद साहब के धुले पायजामे को खीच-तानकर तहा रही थी। एक जोडी कदमो की आहट सुनकर उसने नजरें घुमाकर देखा।

उस क्षण गुणीदत्त विस्मय के उस आकस्मिक धक्के को सम्भाल नही पाया। वह अचकचाया-सा उसकी तरफ देखता रहा। छ: साल विलायत मे रहकर जो शालीनता उसने सीखी थी, उसमे किसी लडकी को यूँ निहारते रहना सुशोभन है या नही, इसका भी होश नही रहा। नाटक का रचयिता चांद साहब कुशल जादूगर की तरह विस्मय का पर्दा खिसकाकर चुपचाप इस कौतुक का मजा ले रहा था। वैसे लडकी को शायद यह मालूम था कि चांद साहब के साथ कोई आ रहा है या आनेवाला है। कमरे मे किसी अजनबी के आकस्मिक आगमन का सकोच, उसके चेहरे पर नही था। उसकी आँखों मे उस आगन्तुक के बारे मे कोई सवाल भी नही उभरा। बस आगन्तुक की ओर एक बार आँख उठाकर देख लिया।

उसे ठीक-ठीक देखना भी नही कहा जा सकता। जैसे सपनों की दरख्त पर सोते हुए, अनाम फूलो ने आहिस्ता-आहिस्ता अपनी मुंदी हुई पँखुरिया खोलकर, उसकी ओर देखा हो।

वह जैसे अपने को भी ठीक-ठीक पहचान नही पा रही हो और पूरी तरह खुलने से डर रही हो। उसके चेहरे पर गहरे अविश्वास और संकोच भरे विस्मय का भाव था।

गुणीदत्त पल भर को अपना होशो-हवास खो बैठा। लेकिन जरा देर बाद ही उसे करीब से टटोलती हुई, अपनी दृष्टि अजीब लगी। उस लडकी की कमल पंखुरियो जैसी पलकें, जब उसके चेहरे पर से फिसलती हुई, पल भर को चांद साहब पर टिक गईं, तो उन आँखों में एक अजीब सा भाव दिखा था। अचानक वे पलकें जब दुबारा उसके चकित

विभ्रान्त-विमूढ़ चेहरे पर आकर स्थिर हुई तो उस सत्तरह वर्षीय युवती की आँखों में कोई और ही भाव था। उसकी कोमल दृष्टि में धीरे-धीरे रोष झलक आया। भोर के उगते हुए सूरज ने जवाफूल की लालिमा जैसे देखते-ही-देखते आसपास के उजालों को आत्मसात कर लेती है, ठीक वैसी ही थी उसकी दृष्टि।

चाँद साँहव मानों किसी नाटक का मौन प्रहसन देखते हुए, वेआवाज ठहाके लगाता रहा और खुश होता रहा। उसके चेहरे की लालिमा उसके थुलथुल गालों के पास और पारदर्शी हो उठी, होंठों का सुर्ख रंग भी और गौण हो आया। उसकी रंगी हुई फ्रेंचकट दाढ़ी भी जैसे आग की चिनगारियाँ छितरा रही हों। उसकी वह लाल-लाल दाढ़ी भी उस कौतुक रस की लहर में वेहद भारी-भारी दिख रही थी। उस लड़की ने गर्दन मोड़कर फिर चाँद साहव की ओर देखा और एक नजर में ही सिर-से पैर तक उसका निरीक्षण कर डाला। चाँद साहव हँसी दवाते हुए, एक दम से थमथमा उठा। फिर उससे आँखें चुराते हुए, दोस्त की तरफ देखकर, जोर-जोर से हँस पड़ा।

अचानक वह आग की लपट की तरह चाँद साहव की तरफ वढ़ी। गुणीदत्त से करीव एक हाथ के फासले पर, वह चाँद साहव के सीने से लगकर खड़ी हो गयी। चाँद साहव को मुँह फेरकर खड़ होने का मौका ही नहीं मिला। वस, जितना सम्भव हो सका उसने उसकी तरफ देखते हुए हँसने की कोशिश की। मानो उससे नजर मिलते ही सारा मजा किरकिरा हो जाएगा। उसकी हँसी की आवाज जैसे-जैसे कमजोर पड़ने लगी, उसकी हँसी का दौरा और वढ़ गया। हँसी के मारे चाँद साहव का नगाड़े जैसा पेट रह-रहकर काँप उठा।

वह लड़की चाँद साहव से करीव चार अँगुल ऊँची ही थी। उसने चाँद साहव के गालों पर हाथ रखा और दाढ़ी समेत उनका समूचा चेहरा अपनी तरफ घुमा लिया। उस लड़की की आँखों ने उसकी नशे से वोझिल पलकों में झाँककर देखा। उसकी दृष्टि चाँद साहव को वेधती चली गई। उसकी हँसी धीरे-धीरे गुम होती जा रही थी, फिर भी वह झूठ-मूठ हँसे जा रहा था।

अचानक वह उसे छोड़कर गुणीदत्त की तरफ घूमकर खडी हो गई। उसकी उन गम्भीर आँखों की काली पुतलियों से आग की एक तेज लपट गुणीदत्त के चेहरे को झुलस गयी। वह जिस तेजी से चांद साहब की तरफ झपटकर बढ़ी थी, उसी तरह तेज-तेज कदमो से कमरे से निकल कर बरामदे की तरफ चल दी।

गुणीदत्त जैसे कोई सचमुच का जादू देख रहा हो। चाँद साहब ने राहत की सांस ली। वह मानो कोई बहुत बडा अपराध करके लौटा हो और इतनी देर से वह उसी अपराध को छुपाने की कोशिश में लगा हुआ था। जबरन दबायी हुई खुशी, उसके नशे से लाल चेहरे पर दुबारा झलक उठी।

चाँद साहब ने अपनी कुहनी से गुणीदत्त की पसली छूते हुए पूछा, 'क्यो दोस्त, बिजली चमक गयी ? देखा, मेरा मैजिक ? तुम्हारी तवारीख की हूर से अच्छी है या नही ?'

शिरीन ?

'यह शिरीन कौन है ?'

'अभी बैठो तो सही ! शिरीन शिरीन है, और कौन है ?'

कमरे में एक कोने में एक छोटी-सी मेज पडी थी, जिस पर धुला हुआ मेजपोश बिछा था। शायद डाईनिंग टेबल था, क्योकि दोनों ओर दो कुर्सियाँ लगी हुई थी। गुणीदत्त ने एक बार नजरें घुमाकर समूचे कमरे का मुआयना किया। बहुत ध्यान से देखने पर कही कोई अभाव भले ही चुभता हो, लेकिन कमरे की सजावट में व्यक्त, परिष्कृत रुचि, दृष्टि को आकर्षित करती है। कमरे के दोनो किनारो पर नेवार की दो खाटें पडी थी, उस पर रंगीन साफ चादर बिछी हुई थी। दीवाल के दोनो ओर दो छोटी-छोटी खूँटियाँ भी लगी थी। एक पर चाँद साहब के दो एक पाजामे-कुर्ते टँगे हुए थे। दूसरे पर सलवार-कमीज वगैरह झूल रहे थे। घर मे और भी सामान था, जिन्हे कुशल हाथों ने सजा-सँवार दिया था।

गुणीदत्त ने दुबारा पूछा, 'तुम्हारे पास क्या यही एक कमरा है ?'

चाँद साहब को उसका यह सूखा-सा, नीरस सवाल अच्छा नहीं लगा। संक्षिप्त-सा जवाब दिया, 'एक भी जुट गया, यह क्य

फिर आग्रह भरे स्वर में पूछ बैठा, 'ये सब बातें छोड़ो, पहले यह बताओ, लड़की पसन्द आयी या नहीं ?'

गुणीदत्त अन्दर-ही-अन्दर कहीं परेशान हो उठा। चाँद साहब अपने हाव-भाव में उसे हमेशा ही सनकी लगा है। जूली एण्डरसन से मन का रिश्ता जुड़े होने का शक जाहिर करते हुए, उसकी वह मूर्ति उसे फिर याद आ गयी। इतने दिनों की घनिष्टता के बावजूद, आज उसे पहली बार अपने घर तक खींच लाना और उसके बाद उसका यह सवाल···शराब का नशा तो अब शायद उतर चुका था। मेज पर झुक-कर वह उत्सुक निगाहों से उसकी तरफ देख रहा था। गुणीदत्त के जवाब पर मानो उसका बहुत कुछ निर्भर करता हो।

'भाई, मेरी पसन्द-नापसन्द से क्या आता-जाता है ?'

'नहीं, तुम बोलो।' उसके आचरण में फिर वही बेसब्री झलक उठी।

'वाकई, बहुत खूबसूरत है। लेकिन लगता है, वह नाराज हो गयी।'

चाँद साहब ने उन्मुक्त ठहाका लगाया। मानो उसकी बहुत बड़ी चिन्ता दूर हुई हो। वह उस लड़की के बारे में शायद और कोई तारीफ भी सुनना चाहता था। उसकी हँसी के साथ-साथ उसके मन की खुशियाँ झरती रहीं। फिर हँसी रोककर, अचानक सिर हिलाते हुए कहा, 'हाँ, बहुत बिगड़ गयी है।'

'क्यों ?'

'शराब के कारण।'

गुणीदत्त फिर अवाक् हो उठा। वसन्त के मौसम में कोयल न चहके, पूनों का चाँद चाँदनी न बिखेरे और चाँद साहब शराब न पीये, ये सब एक जैसी अनहोनी बातें थीं। गुणीदत्त को याद आया कि चाँद साहब की आँखों की मणि वह सिन्धी औरत भी जब जिन्दा थी, तब भी शराब के बारे में किसी तरह की वर्जना या भृकुटी, उसकी कभी बरदाश्त नहीं की। वही चाँद साहब आज एक सत्रह साल की छोकरी की नाराजगी से डरकर, चोरों जैसा मुंह दबाकर हँस रहा था।

गुणीदत्त को अब पक्का विश्वास हो गया कि इस लड़की के बहाने चाँद साहब उससे कोई मतलब निकालना चाहता है। वर्ना यह उसे अपने घर कभी नहीं लाता। उसके सामने यह सब ड्रामा भी नहीं करता। अब उसने वाकई बेहद गम्भीर आवाज में अपना सवाल दुहराया 'यह लड़की कौन है ?'

अब तक शराब का नशा पूरी तरह उतर चुका था। चाँद साहब ने भी उसी तरह धीर-गम्भीर आवाज में बंगला में जवाब दिया, 'मेरी बेटी।'

गुणीदत्त बहुत देर से अपने सीने पर कोई वजनी बोझ महसूस कर रहा था, अचानक वह भाप की तरह हवा में उड़ गया। इस उत्तर से वह फिर विस्मित हो उठा। लेकिन इस विस्मय में किसी तरह की घबराहट नहीं थी। चाँद साहब ने बुढापे में कोई नया शिकार किया है, इस आशंका से गुणीदत्त बुरी तरह चौंक गया था।

चाँद साहब ने बेहद सशक्त आवाज में कहा, 'यह लड़की तब डेढ साल की थी। उस बात को अब १६ साल बीत गये। मैंने उसे बेटी की तरह देखा है। बेटी की तरह पाला-पोसा और बड़ा किया है। इसकी माँ ने तो बेईमानी की—मर गयी। उसके बाद भी मैं इसे अपने सीने से लगाये बैठा हूँ। वह मेरी बेटी नहीं तो और कौन है ?'

मानो गुणीदत्त ने उसकी बेटी होने में संशय प्रकट किया हो।

गुणीदत्त को अब सारा रिश्ता समझ में आ गया। चाँद साहब उस सिन्धी औरत के साथ-साथ उसकी नन्ही-सी बेटी को भी उडा लाया था, यह बात वह नहीं जानता था। इस लड़की को देखने के बाद उसकी माँ को न देख पाने का अफसोस, आज इतने दिनों बाद उसे नये सिरे से कचोट गया। उसने मन-ही-मन हिसाब लगाकर देखा उसने गलत अन्दाज नहीं लगाया था। सोलह और डेढ मिलाकर साढे सत्रह वर्ष ही होते हैं लेकिन दरअसल गुणीदत्त को उस औरत की उम्र से या खूबसूरती से कोई लेना-देना नहीं था। उसमें उसकी आँखों ने ऐसा क्या देखा, वह इसी कशमकश में था।

अतीत की तल्ख यादों में डूबे हुए चाँद साहब की आँखों में आक्रोश

झलक आया। 'जानते हो, इसे कोई मुझसे छीन न ले, इस डर से, मैं उसे लेकर कुत्तों की तरह दुम दबाये हुए भागता रहा ? तुम लोगों को छोड़ दिया, कामधन्धा छोड़ दिया, कलकत्ते से मुंह छुपाकर भाग आया। जानते हो, क्यों ? सिर्फ इस लड़की की वजह से ! तुम्हें पता है ?'

गुणीदत्त को यह सब नहीं मालूम था। वह आश्चर्यचकित-सा चांद साहब की बातें सुनता रहा। कभी इस लड़की का असली बाप ही, उससे अपनी बेटी छीन ले जाना चाहता था। उसके बाप को चांद साहब के एए दुश्मन ने खबर दी थी, जो उसे रुपया देकर शिरीन की अम्मा को खरीदना चाहता था। वह दुश्मन भी कराची का रहनेवाला था। चांद साहब से उसकी बहुत पुरानी जान-पहचान थी। उसे सारा किस्सा भी मालूम था। शिरीन की मां जब उसके हाथ नहीं लगी, तो मारे गुस्से के उसने सारी खबर उसके बाप तक पहुंचा दी। बाप ने अपनी बीबी को वापस नहीं मांगा। अब तक वह बहिश्त की मेहमान बन चुकी है, यह वह नहीं जानता था। उसने तो सिर्फ बेटी वापस करने को कहा। उसमें खुद आने की हिम्मत नहीं थी, अतः उसके मायके का ही कोई आदमी लिवा लाने को भेजा था।

उस आदमी ने चांद साहब से छुपकर मुलाकात की थी। उसका ख्याल था कि चांद साहब लड़की को रखकर करेगा भी क्या। अतः कुछ रुपये के लालच देने पर लौटा देगा। चांद साहब जब इस पर भी राजी नहीं हुआ तो उसने आंखें नीली-पीली करते हुए धमकी दी थी कि उसे मां-बेटी दोनों से हाथ धोना पड़ेगा।

उसकी धमकी सुनकर चांद साहब ताव खा गया और उसी ताव में एक भयंकर गलती भी कर बैठा। उसके मुंह से एकबारगी ही निकल गया, 'वह औरत अब खुदाताला की खिदमत में जा चुकी है। वहां से अब और किसी की बांदीगिरी करने के लिए लौटकर नहीं आयेगी।'

वह आदमी उसकी बातों को सुनकर पहले तो अवाक् रह गया; लेकिन फिर मजाक में एक ऐसी बात कह बैठा, कि चांद साहब ने उसी पर हाथ छोड़ दिया। गुणीदत्त ने देखा, इतने दिनों बाद भी उस दिन की

बातें याद करते हुए चांद साहब की बूढ़ी आँखें क्रोध से जल उठी थीं। उस आदमी ने बन्दर की तरह खीसें निपोरते हुए कहा था, 'तो यह कहो न, कि लाजवन्ती दरअसल अब नरक में पापियों की बाँदीगिरी कर रही है।'

धुन में आकर चांद साहब ने अचली बार उसके सामने उस औरत का नाम लिया था। लाजवन्ती नाम सुनकर गुणीदत्त ने मन-ही-मन अपने को तसल्ली दी थी, जो नहीं है सो नहीं है, लेकिन यह नाम भी सीने में संजोए रखने लायक है।

इसके बाद की सारी कहानी—कुछ-कुछ यूँ थी कि उस दुश्मन ने उसकी लाजवन्ती को हथियाना चाहा था। कुछ दिनों बाद वह आदमी दुबारा आया था। उसने लड़की के बाप को टेलिग्राम दिया था या जाने हवाई जहाज से कराची जाकर लौटा था। आते ही एक मोटी रकम का लालच देते हुए पूछा था, 'उतनी ज़रा-सी लड़की को रखकर तुम भला करोगे भी क्या?'

उसकी बातें सुनकर चांद साहब के दिमाग की आँतें तड़क उठीं। लड़की के बाप की बातें याद आते ही वह और भड़क उठा। बेहद तेज आवाज में जवाब दिया, 'यह लड़की जब बड़ी होगी, तो बेइन्तहा खूबसूरत होगी। उसे देखकर जन्नत की हूर परियों का चेहरा भी मंद पड़ जायेगा, इसीलिए मैं उसे पाल-पोसकर बड़ा कर रहा हूँ और इसीलिए उसे वापस नहीं दूँगा।'

लेकिन सिर्फ आँखें दिखाकर या सहज बातों से उस आदमी से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता था। वह आदमी अगर मालिक की बेटी को साथ लेकर न लौटता तो उसे अपना जान-माल से हाथ धोना पड़ता। अतः चांद साहब की नाक तले नोटों की मोटी-सी गड्डी रखकर भी देखा, काफी डराया-धमकाया भी, कि लड़की वापस दिये बिना चांद साहब को छुटकारा नहीं मिल सकता। कहीं ऐसा न हो कि ऐसे लड़की और रुपया—दोनों से ही हाथ धोना पड़े।

चांद साहब ने भी यह बात अच्छी तरह से समझ ली थी कि यह आदमी उसे बहुत परेशान करेगा। इसलिए काफी ठंडे दिमाग से सोचने—

समझने के बाद, वह लड़की वापस देने को राजी हो गया। उस आदमी से आधे रुपये एडवांस में लेकर उससे खासी दोस्ती भी पटा ली। उसे घर बुलाकर दावतें दी। दोनों ने मिलकर दो बोतल शराब से अपना-अपना गला तर किया। इसके बाद चांद साहब ने उस आदमी के आगे अपनी एक अर्जी पेश की कि अगले दिन लाजवन्ती का जन्मदिन है। कल का दिन बीतते ही वह लड़की उसके हवाले कर देगा। उनके अजीज दोस्त को सिर्फ एक दिन और इन्तजार करना होगा। लड़की को देखे बगैर लाजवन्ती की याद उसके दिल में उस तरह नहीं उमड़ेगी और यह गम उसके सीने में भीतर-ही-भीतर सुलगाता हुआ, उसे जलाकर खाक कर देगा।

वह आदमी भी इतनी शराब पी चुका था कि उसने चांद साहब पर भरोसा कर लिया।

यह कहानी सुनाते हुए चाँद साहब का हँसी के मारे बुरा हाल था।

नशे की झोंक में अपने नये दोस्त के गम में वह आदमी भी रुआँसा हो आया। उसके एक बार सिर्फ कहने भर से वह राजी हो गया। बाकी आधे रुपये में से थोड़ा-बहुत और हथियाने के ख्याल से चांद साहब के हाथ कुलबुलाते रहे। लेकिन उस आदमी को किसी तरह का शक हो जाये, इस डर से चाँद साहब ने इसके लिए कोशिश ही नहीं की।

बस फिर क्या था, चौबीस घंटों के भीतर उस चिड़िया समेत चाँद साहब हवा। चाँद साहब अपना पेट हिलाते हुए हँसता रहा, मानो यह सिर्फ दस-बारह दिनों पहले की कोई घटना हो।

गुणीदत्त की विस्मित निगाहें सिर्फ उसका चेहरा ही नहीं देख रही थीं, उसके दिल में छुपे हुए किसी अद्भुत कलाकार की विलक्षण कारीगरी को भी परखती रहीं। कभी इस आदमी का अपना घर-बार था, पत्नी और बेटे-बेटी से भरी-पूरी दुनिया थी, लेकिन उनके खो जाने का दर्द इस आदमी के चेहरे पर कभी भी, एक पल को भी नहीं उभरा। वही आदमी एक पराये शिशु को, जिससे उसका खून-पानी का कोई रिश्ता नहीं था, अपने सीने में चिपटाये हुए, धन-दौलत, घर-बार

का मोह त्यागकर बेहद सहज मन से अनपहचानी, अनिश्चितताओं के सागर में कूद पड़ा। अगर उसने यह सब उसकी माँ की वजह से किया होता तो इसे मोह की संज्ञा दी जा सकती थी। लेकिन चाँद साहब ने जो किया, आखिर उसे क्या कहेंगे ?

चाँद साहब ने अचानक टेबल का सहारा लेते हुए गुणीदत्त के चेहरे की ओर जरा झुककर कहा, 'सही-सही बताना, दोस्त ! हजारों-लाखों में ऐसी एक भी लड़की तुमने कहीं देखी है ? तुम्हारे उस विलायत मे थी, कोई इसके मुकाबले की ?'

उसने ऐसी लड़की देखी थी या नही, यह बिना सोचे समझे ही गुणीदत्त ने सिर हिलाकर कहा, 'नहो, सच ही, कही नही देखी।'

अगर उसे यह न मालूम होता कि चाँद साहब का नशा अब टूट रहा है या चाँद साहब शुद्ध बंगला मे बात न करता तो उसकी यह हँसी भी बड़ी एब्नार्मल लगती। उसके कहकहो के भीतर कही रुलाई का स्वर भी दबा हुआ था। जब यह सारी ऊपरी हँसी खत्म हो जायेगी तो तलछट मे जमी हुई रुलाई उमड़कर शायद ऊपर आ जाये।

'देखोगे कहाँ से मेरे दोस्त ?' उत्साह के मारे उसकी आवाज फिर तेज हो उठी, 'भई, बम्बई मे डेरा जमाने से पहले मैं भी कम जगहों मे नही घूमा। मेरी निगाह में भी ऐसी कोई लड़की नही आई, जो उसके आगे सिर ऊँचा करके खड़ी हो सके। और दो-चार साल बीतने दो। बता सकते हो तब वह कैसी दिखेगी ?'

गुणीदत्त सिर्फ हँस दिया।

चाँद साहब का उत्साह और बढ़ गया। उसने उमगकर पूछा, 'उसका नाम कैसा लगा ? शिरीन ! यह नाम भी मेरा दिया हुआ है, समझे दोस्त ? जब यह छ. साल की थी तब मैंने ही यह नाम दिया था। इसके पहले तुम लोगों का कोई आलतू-फालतू-सा हिन्दू नाम था। अब देखो, कितना बढ़िया नाम है—शिरीन ! शिरीन !! क्यो, बोलते क्यो नही, कैसा लगा ? और कोई नाम उसे इतना फिट बैठता ?'

गुणीदत्त ने एक दम सिर हिलाकर जताया, नही और कोई नाम उतना फिट नही बैठता। गुणीदत्त उसे खुश करना चाहता हो, ऐसी भी

बात नहीं थी। दरअसल वह नाम सुनने के बाद और किसी नाम का ख्याल ही नहीं आया।

इतना सब कहने-सुनने के बाद चांद साहब ने अपनी वर्तमान परेशानी का भी जिक्र किया। लेकिन उन परेशानियों के पीछे भी उसकी खुशी जैसे उमड़ी पड़ रही थी। वह इस लड़की को लेकर आजकल काफी मुश्किल में फँस गया है। जैसे जैसे दिन गुजरते जा रहे हैं, उसकी चिन्ता भी बढ़ती जा रही है। किसी भी रास्ते-चौराहों पर ऐसी लड़की आसानी से नजर नहीं आती। अतः शहर भर के छोकरे उसके मकान के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे हैं। वैसे इन छोकरों का भी क्या कसूर? अगर सम्भव होता तो उनके बाप-दादे भी सैकड़ों चक्कर लगाते। रात-दिन बेटी की पहरेदारी करते हुए, उसकी तो जान हलकान हो गई है। अब दोस्त आ गया है, अतः वह थोड़ा निश्चिन्त हुआ है।

गुणीदत्त मन ही मन फिर चकरा उठा। चांद साहब के कहने का मतलब अभी भी उसके सामने स्पष्ट नहीं हुआ। वैसे, हैरानी की कोई खास बात नहीं थी, लेकिन सुबह से ही चांद साहब के कई हाव-भाव और बातें बड़ी रहस्यमय लग रहे थे। उसने गौर किया चांद साहब अपनी आदत के खिलाफ कहीं से कुछ बदल भी गया है। सबसे बड़ी बात यह कि गुणीदत्त के सामने शिरीन को बेशकीमती रत्न की तरह पेश करने का उसका आग्रह, उसकी बात-बात में हर संकेत में स्पष्ट था।

गुणीदत्त ने इशारों में समझाने की कोशिश की। यहाँ कितने दिन हूँ, बहुत हुआ पन्द्रह दिन? बस।

चांद साहब की रंगी-पुती दाढ़ी हिलते-हिलते अचानक रुक गई और माथे पर कई बल पड़ गये।

उसकी खुमारभरी आँखें थोड़ी देर को उसके चेहरे पर टिकी रहीं। फिर पूछा, इतने दिनों विलायत में रहने के बावजूद, तुम वाकई इतने बेवकूफ रह गये या सिर्फ शर्म मार रहे हो?

गुणीदत्त को पहले कुछ समझ नहीं आया लेकिन उसके आखिरी वाक्य में छुपा हुआ संकेत समझकर वह शर्म से लाल हो उठा। उसे लगा कि चाँद साहब ने तो सच ही इतने सहज भाव से अपना आशय स्पष्ट कर दिया। दोस्त होने की वजह से ही, वह इतना निश्चित हो गया है, क्योंकि अब उसे अपने और अपनी बेटी के लिए, एक भरोसे लायक सहारा मिल गया है। चाँद साहब ने यही बात तो उसे समझाना चाहा था। इसके उत्तर में गुणीदत्त कोई उत्साह न दिखाकर, बुद्धुओं की तरह अपने जाने की बात छेड़ बैठा। लेकिन जाने क्यों उसका मन कह रहा था कि चाँद साहब सिर्फ इतनी-सी स्वार्थ-सिद्धि के लिए, उसे इतने आग्रह-सम्मान से अपने घर नहीं लाया। वह एक विलायती कम्पनी के साथ स्वदेश लौटा है, अपने घर लाने के पीछे यह वजह भी नहीं सच नहीं लगी। गुणीदत्त को लगा उसके इस आदर अभ्यर्थना के पीछे कोई गूढ़ स्वार्थ भाव छुपा हुआ है।

चाँद साहब ने और कुछ नहीं कहा। वह लड़की, जो नाराज होकर कमरे से बाहर चली गयी थी, फिर लौट कर नहीं आयी। तब से शायद बरामदे में ही खड़ी थी या किसी सखी-सहेली के यहाँ चुप मार कर बैठ गयी होगी।

चाँद साहब उठकर उसे खोजने चला गया।

गुणीदत्त उसे जाते हुए देखता रहा। उसने दुबारा महसूस किया कि चाँद साहब अब सचमुच बूढ़ा हो चला है। इसलिए नहीं कि उसकी उम्र अब पचपन साल की हो गयी है, वह तो सोचता था कि एक-दो युग बीत जाने पर भी, उसके भीतर कहीं कोई नाजुक-सी कोमलता जरूर बची रहेगी, जो हमेशा बनी रहेगी। उसने इस आदमी के दिल में झाँक कर देख लिया और उसकी तस्वीर अपने मन के आईने में भी उतार ली है। उसने महसूस किया, उसमें कहीं, कोई फर्क जरूर आया है लेकिन इसके बारे में, कोई सही-सही अन्दाज नहीं लगा पाया। उसे बस, यही लगा कि यह आदमी कहीं से बूढ़ा हो चला है। इतने दिनों से रंगी हुई दाढ़ी में, अब सियाह सफेद—झुर्रियाँ पड़ने लगी हैं। उसके सुर्ख चेहरे की चमकती हुई खाल अब खुरदरी और मोटी हो गई है।

बेटी की खोज में उठकर बाहर तक जाने में भी जैसे उसे बेहद तकलीफ हुई हो।

पाँच

पिछले कई दिन बेहद व्यस्त बीते। वम्बई, मद्रास, दिल्ली के शों के प्रोग्राम तो विलायत में ही निश्चित हो चुके थे। यद्यपि कोई निश्चित दिन या तारीख नहीं दी गई थी, फिर भी कौन-सी जगह, किस तारीख के लगभग प्रोग्राम दिया जा सकता है, इस बारे में आम अन्दाज से समय दे दिया गया था। इन काम-धन्धों के मामले में उड़ दम्पति काफी कुशल हैं। मेसर्स मैंजीउड कम्पनी!—इसके विज्ञापनों की वहार और पत्रों के सिलसिले को देखकर यह स्वीकार करने के अलावा और कोई उपाय भी नहीं था कि यह दुनिया की वेहद मशहूर भ्रमणशील जादू कम्पनी है। जादू रंगमंच के सर्वेसर्वा भी अगर इस सच्चाई को अस्वीकार कर देते तो आश्चर्य होता।

वम्वई में कदम रखने से पहले काफी रुपया खर्च करके वहाँ के प्रमुख अखवारों के मनोरंजन पृष्ठों पर विज्ञापन प्रकाशित किये गये। विज्ञापन में सवसे पहले मैंजीउड कम्पनी के जादूगर गुणीडाटा की तस्वीर! उसके दोनों ओर मिस्टर और मिसेज उड़ की मुस्कराती हुई तस्वीर! उसके नीचे सिर झुकाकर मुस्कराते हुए जूली एण्डरसन! ऐसे आकर्षक विज्ञापन के साथ जो मैटर भेजा गया था उसे भी सम्पादक ने बिना किसी काट-पीट के ज्यों का त्यों छाप दिया। ऐसा सिर्फ इसी देश में नहीं होता, हर देश में होता है। एक शुद्ध विदेशी पार्टी, एक हिन्दो-

स्तानी को जादू सम्राट बनाकर शहर-शहर घूम रही है, यह वाकई एक आश्चर्यजनक घटना थी। विदेशों मे तो कुछ लोगों का ख्याल था कि समचा हिन्दुस्तान ही जादू-मन्तर का देश है, अतः वे जहाँ भी गये विज्ञापनों मे उनकी तूती बोलती रही। उड दम्पति ने गुणीडाटा के नाम को प्रमुखता देकर, अपनी शोहरत का ढोल पिटवाने में कोई किफायत नहीं की।

हाँ, हिन्दुस्तान आकर उन्होंने भारतीय जादू-विद्या की दुहाई देकर कोई विलक्षण करिश्मे दिखाने का दावा नही किया, बल्कि बेहद सहज और स्वाभाविक राह अपनायी। भारत के ही एक व्यक्ति के जादू के खेलों ने पश्चिमी देशो मे कैसी हलचल मचा दी है, उसका एक विवरण यहाँ के थियेटरो मे भेज दिया गया।

चूकि जादू-खेलो के लिए, यहाँ कोई अलग मच नही है, अतः विभिन्न थियेटरो से अग्रिम अनुबन्ध जरूरी था।

यानि गुणीडाटा नामक एक भारतीय जादूगर का किसी विदेशी जादू कम्पनी का सिरमौर बनकर भारत आगमन अखबारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। बड़े-बड़े प्रतिष्ठानो से पत्रो के आदान-प्रदान के माध्यम से प्रोग्राम पक्का करने की जिम्मेदारी, मैजीउड कम्पनी की अन्यतम हिस्सेदार, मिसेज उड पर थी। वैसे यह भी प्रचार का एक अप्रत्यक्ष तरीका था। जीवन के हर क्षेत्र में औरत की अहमियत सर्व-स्वीकृत है। एडवर्ड उड भी पत्राचार का सारा भार पत्नी के कन्धो पर सौंपकर कम्पनी का बाकी सारा काम खुद करता था।

इन सब निश्चित कार्यक्रमो के बावजूद किसी नयी जगह काम शुरू करने मे बखेड़ा तो होता ही है। मंच के मालिको से मुलाकात करके प्रोग्रामों के लिए दिन और समय निश्चित करना, छोटी-छोटी चीजों का जो विलायत से लादकर नही लाये, इन्तजाम करना, स्टेज पर रंग जमाने के लिए जरूरत के मुताबिक कुछ स्थानीय लड़के-लड़कियो को नियुक्त करना, उन्हे ट्रेनिंग देना, एकाध रिहर्सल देना—ऐसे ही कई छोटे-मोटे काम भी बेहद जरूरी थे। गुणीदत्त और उसकी उड कम्पनी इन सब के इन्तजाम मे व्यस्त रहने लगी। और हिन्दोस्तान, अप देश

होने की वजह से गुणीदत्त की नैतिक जिम्मेदारी जैसे और बढ़ गई।

इन तमाम व्यवस्थाओं के बीच भी कभी-कभी एक लड़की का चेहरा रह-रह कर उसके मन में कौंध उठता है। लगता है, जैसे कोई आज भी उसकी प्रतीक्षा में बैठी हुई है। उसके सामने पड़ना अभी बाकी है। यह सब झंझट जरा खत्म हो तो फुर्सत से उस लड़की के बारे में भी कुछ सोचना जरूरी है। हाँ, वह शिरीन ही है।

वैसे उस लड़की से आमने-सामने मुलाकात बहुत कम ही होती है। सुबह आँख खुलते ही चाँद साहब को साथ लेकर वह बाहर निकल पड़ता है। बाहर ही खाना-पीना निपटा कर बहुत रात गये घर लौटता है। चाँद साहब भी हर समय उसके साथ नहीं रहता है। दिन भर में कई बार होटल और घर के चक्कर लगा आता है। वैसे उसका ज्यादा वक्त गुणीदत्त के साथ ही बीतता है। विलायत से लायी हुई चीजों को बेहद हैरत और प्रशंसा भरी नजरों से देखा करता है। प्रोग्राम जमाने के लिए इतनी लम्बी-चौड़ी तैयारियाँ देखकर वह मन ही मन तारीफ भी करता और मौका देखकर कभी-कभी अपने दोस्त की पीठ भी ठोकता है।

उन सबकी कद्र वह समझता है। जैसे सच्चे गवैयों में बुढ़ापे में गाने की क्षमता भले ही न हो, लेकिन गाने-बजाने की महफिल से, वह हिलने का नाम भी नहीं लेते, चाँद साहब की वैसी ही दशा थी। किसी जमाने में चाँद साहब भी इन सब जादुओं का मंजा हुआ उस्ताद था। देश के मशहूर जादूगर उसकी इज्जत करते और कलकत्ते में जादू के खेलों के सामान और औजार की दुकानों और कारखानों से भी वह जुड़ा हुआ था। वह ग्राहक जुटाकर दोनों तरफ से दलाली भी कमाता था। बीच-बीच में जादू के नये-नये औजारों का, जादू के नये-नये कौशल की ईजाद करके लम्बी साँस भरता। जादूगर के दिमाग में कोई नया आइडिया आते ही या पुराने खेलों को ही नया रूप देने के लिए, वे चाँद साहब के पास दौड़े आते। चाँद साहब बड़े ध्यान से उनकी योजनायें सुनते हुए उनकी जरूरतें समझने की कोशिश करता। उन्हीं के पैसों से पीता और उनकी योजनाओं पर बुद्धि दौड़ाता और फिर मिस्त्रियों के साथ कलम कागज पर हिसाब लगाने में व्यस्त हो जाता।

जादू खेलों की दुनिया के साथ इन औजार सरंजामों के धन्धे का एक खास रिश्ता है। इन दुकानों का चक्कर लगाये बिना, जादूगर बनने के सपने देखना, बगैर सीढ़ी के आकाश चढ़ने जैसा नामुमकिन है। सिर्फ कलकत्ता शहर या बंगाल प्रान्त के ही नहीं, बाहर के छोटे बड़े जादूगर के साथ उसका व्यापारिक परिचय था। अतः विदेशों से लाए हुए इन नये-नये आधुनिक सरंजामों के प्रति चाँद साहब का आग्रह नितान्त स्वाभाविक लगता है।

लेकिन इधर कई दिनों से गुणीदत्त गौर कर रहा था कि चाँद साहब अपना अधिकाश वक्त बाहर ही गुजारते हैं। घर में वह लड़की बिल्कुल अकेली पड़ गई है। चाँद साहब को थोड़ा वक्त घर पर भी देना चाहिए। लेकिन वह मुँह खोलकर कुछ नहीं कह पाती। वह लड़की मुलाकात के शुरू दिन से ही जो नाराज हुई, उसके बाद किसी दिन उससे सुलह नहीं हुई।

गुणीदत्त को चाँद साहब के यहाँ, पहली ही रात को दो बार विस्मय हुआ। रात खा-पीकर जब वह चाँद साहब के साथ लौटा तो देखा उसी कमरे के एक कोने में एक और खटिया डाल दी गई है। यानी उसके सोने का भी इन्तजाम उसी कमरे में किया गया था। गुणीदत्त को ख्याल था कि चाँद साहब ने जब उसे अपने गरीबखाने पर ठहरा ही लिया है, तो शाम तक इसी मकान में एक और कमरे का इन्तजाम भी कर लिया होगा। यह मकान भी तो खासा बड़ा था। इस छोर से उस छोर तक अनगिनत कमरे थे।

वह क्या देख रही है, चाँद साहब के अलावा गुणीदत्त भी समझ गया। चाँद साहब बेटी की ओर देखते हुए हँसता रहा, फिर उसके बिल्कुल करीब जाकर धम्म से बैठ गया। इस समय उसने एक घूँट भी गले से नीचे नहीं उतारी है, यह उसने सिर्फ समझाना ही नहीं, साबित भी करना चाहा। अपना एक हाथ बेटी की पीठ पर रखकर उसे और करीब खींच लिया और अपने दोस्त की ओर मुड़कर कहा, 'देख रहे हो, अपने बुड्ढे बाप के लिए मेरी बेटी को कितनी फिक्र है। साठ साल की पुरखिन की तरह यह सोच-सोचकर परेशान है कि बिचारा बाप मेरा जहन्नुम में चला गया—।'

उस समय गुणीदत्त कमरे में बिछे हुए तीन-तीन बिस्तरों को देख कर चाँद साहब की वज्रमूर्खता के बारे में सोच रहा था। चाँद साहब की इस सन्तान-वत्सलता से उसका मन रत्ती-भर भी नहीं पिघला। लेकिन उस आदमी को जैसे कोई होश ही नहीं था। वह अपनी लाल दाढ़ी हिला-हिलाकर हँसता रहा। कहा, 'तुम खड़े क्यों हो, बैठ जाओ न। देखो, जरा मेरी इस बेटी को! अभी भी गुस्से से लाल दीख रही है। लेकिन, अभी जरा देर में हँसेगी तो फूल झरने लगेंगे—फूल।'

उस लड़की के होंठों पर मुस्कान नहीं लौटी।

गुणीदत्त ने हँसकर कहा, 'कल देखूँगा। आज तो बेहद नींद आ रही है।'

'अच्छा, तो सो जाओ।' उसे सोने को कहकर चाँद साहब जैसे छुट्टी पा गया। उसे लगा गुणीदत्त उसी दिन जहाज से उतरा है, दिन में उसे आराम करने की फुर्सत नहीं मिली। अतः हो सकता है कि उसे नींद आ रही हो और अगर नींद आ रही है तो फिर सोने में कौन-सी हिचकिचाहट है?

गुणीदत्त उसकी ओर हैरत भरी निगाहों से देखता रहा, चाँद साहब इतना नासमझ तो नहीं था कि इतनी जरा-सी बात भी उसकी समझ में न आए। वह शायद कोई निर्णय ले चुका है और अब उसके मन में कहीं कोई द्विधा या द्वन्द्व नहीं है। चाँद साहब के हाव-भाव में अगर वाकई सहजता होती तो गुणीदत्त दोस्त की तरह ही, निःसंकोच बिछौने

घर जाकर सो रहता। लेकिन जाने क्यों वह ऐसा नहीं कर सका। बीच, तीस सालों के इन लावारिस जीवन में, खासकर इधर के छ. सालों में विदेशों में रहकर, तरह-तरह के अनुभवों से गुजरते हुए, उसका संकोची स्वभाव कभी का मिट चुका था, फिर भी जाने क्यों वह सहज नहीं हो पा रहा था।

अचानक उसकी नजर कमरे से लगे हुए बरामदे की ओर गयी। वह आकर कमरे से बाहर निकल गया और एक बार घूम-फिर कर देख गया, फिर किसी से बिना कुछ कहे, बिस्तर समेत खटिया को खींचता हुआ, कमरे से बाहर निकाल लाया।

चांद साहब ने जबर्दस्त आपत्ति की। लड़की ने भी धीरे से गर्दन घुमाकर उसकी तरफ देखा।

गुणीदत्त ने कहा, 'छः साल ठंडे देशों में और तीन सप्ताह समुद्र की खुली हवा में बिताने के बाद, यहाँ की गर्मी मे मेरी देह फुंकी जा रही है। मेरे लिए कमरे मे सोना असम्भव है।'

दरअसल गुणीदत्त उस रात सो ही नही पाया—कम से कम गहरी नींद तो नहीं सो पाया।

रात काफी बीत चुकी थी। वह अभी आधी नींद मे ही था। खाट से लगा हुआ किवाड़ अन्दर से भिड़ा हुआ था, बाहर घना अँधेरा! कमरे के भीतर बत्तियाँ बुझी हुईं। हाथों को हाथ तक दिखाई नहीं दे रहा था।

चाँद साहब की दबी हुई आवाज सुनकर उसकी आँखें खुल गयीं। इन लोगों ने शायद यह सोचा था—वह गहरी नींद मे सो रहा है।

चाँद साहब अपनी नासमझ बेटी को समझा रहा था, 'तू तो बहुत बुद्धू है। मेरा दोस्त बहुत अच्छा आदमी है। उस जैसा शरीफ आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। तुमसे अपनी इसी दोस्त के बारे में कितनी सारी बातें करता था न? देख, अब वह कितना बड़ा मैजीशियन होकर लौटा है। अब चल, कल तू उसके जादू देखना। अच्छा, एक दिन तुम्हे

ले चलूंगा। मेरे दोस्त के आने की बात सुनकर तू भी तो कितनी सारी बातें पूछती रहती थी। अब अचानक तुझे क्या हो गया है ? उस दिन मैंने शराब पी थी, इसलिए ? घत्! बोकी लड़की। अरे, वहां मेरे दोस्त ने थोड़ी पिलायी थी। वह तो मैं ही पीने को ललचा उठा, इसी से। अब इसमें उसका क्या कसूर ? अच्छा, अब मैं कभी नहीं पीऊँगा, ले, कसम खा रहा हूँ।

गुणीदत्त मारे उत्सुकता के उठकर बैठ गया, लेकिन उत्तर में किसी नारी-कंठ की आवाज तो क्या, एक उसाँस तक नहीं सुन पड़ी। अब तक उसकी आवाज तक नहीं सुन सका।

चाँद साहब की ही आवाज दुबारा सुनाई दी। वही घुमा-फिराकर अपने दोस्त की तारीफ, बिटिया का लाड़-दुलार या जिन्दगी में फिर कभी शराब न छूने की कसमें।

सच ही तो, चाँद साहब शराब न छूने की कसम खा रहा था। मुसीबत में पड़कर भूत भी जाने, राम-नाम लेता है या नहीं, लेकिन चाँद साहब को शराब न छूने की कसम खाते हुए उसने अपने कानों से सुना। उस रात वह बहुत देर तक जागता रहा। काफी दिमाग लगाने पर भी वह समझ नहीं पाया कि यह सब कैसे सम्भव है। शराब पीने के लिए इसी चाँद साहब ने कभी-कभी उस पर भयंकर जोर जबर्दस्ती की है। उस समय वह उसे बड़ा क्रूर जानवर नजर आया है। शराब के सन्दर्भ में तो उसने लड़की की माँ से भी कोई समझौता नहीं किया। उसी चाँद साहब पर ऐसा कौन-सा जादू चल गया है कि इतना बदल जाये। गुणीदत्त अवाक् होकर सोचता रहा।

अगली रात भी वह कम परेशान नहीं हुआ। दिन भर की व्यस्तता के बाद, रात को चाँद साहब उसे और शिरीन को साथ लेकर घूमने निकला। उस लड़की ने गुणीदत्त से अब तक कोई बात नहीं की थी। गुणीदत्त ने उसकी आवाज तक नहीं सुनी थी। कभी-कभी तो उसे यहाँ तक शक होने लगा है कि यह लड़की कहीं गूँगी तो नहीं है ? यह सब सोचते हुए उसे बुरा भी लगा है और कई बार वह उससे नजर बचा कर उसकी ओर गौर से देखता रहा।

सुनने में आता है कि जो गूंगे होते हैं, वे बहरे भी होते हैं लेकिन इस लड़की को देखकर तो ऐसा नहीं लगा। बातचीत के मामले में चांद साहब अकेले ही सौ आदमियों के बराबर हैं। लगातार कई घंटों तक हंसी-खुशी की बातों में तन्मय रह सकता है। लेकिन यह लड़की उसे पिछले दिन की तरह ही तटस्थ और दुरूह लगी। एक तो वह अपनी उम्र के खिलाफ स्वभाव से ही गम्भीर थी, उस शाम तो वह अपने को बेहद विवश महसूस करती, उसे लगा जैसे किसी ने उसे मोटी रस्सियों से जकड़ दिया हो और अपने साथ खींचे लिए जा रहा हो।

लौटते समय तीनों चांद साहब के मनपसन्द होटल में खाना खाने को रुक गये। गुणीदत्त ने ही चलते समय कहा था कि वे लोग अब रात को खा-पीकर ही लौटेंगे। शायद इस वजह से भी उस दिन चांद साहब अपेक्षाकृत अधिक खुश नजर आ रहा था।

बैरा खाने का लम्बा-चौड़ा आर्डर लेकर वापस चला गया। चांद साहब खुशी के मारे कई बार चटखारा लिया। आज भी उसी के मनपसन्द खाने का आर्डर दिया गया था। लेकिन उस लड़की की गम्भीरता में कहीं कोई फर्क नहीं आया। गुणीदत्त को लगा, उस लड़की को यहीं से यह अनुमान हो गया है कि इतना सारा नियोजन उसे ही खुश करने के लिये लिया जा रहा है।

गुणीदत्त अगर चाहता तो इधर-उधर के सवालों के बहाने उससे बात-चीत शुरू कर सकता था। इतनी जरा-सी छोकरी ने उसमें काम्प्लेक्स भर दिया है। यह सोचते हुए उसे शर्म आने लगी। फिर भी उसने सोचा चलो, इसी बहाने यह तो पता लगे कि वह उससे इतनी कटी-कटी-सी क्यों रहती है। गुणीदत्त को लगा इसमें जरूर कोई-न-कोई राज छुपा है, जो अपने आप उजागर हो जायेगा। चांद साहब की बातों का भरोसा नहीं किया जा सकता। हो सकता है उसके हिन्दुस्तान पहुंचने के पहले ही उसे लेकर लड़की से कुछ कहा-सुनी हो गयी हो। पिछली रात शराब के बारे में उठाई हुई कसम उसे आज तक याद होगा, इस पर उसे यकीन नहीं आया। उसे कभी-कभी यह भी लगा कि रोशन मामा की तरह इस लड़की को इतनी-सी उम्र में ही अपने रूप का अतिशय गुमान

है। चाँद साहब का इतना शह पाकर, उसका दिमाग खराब होना असम्भव भी नहीं था।

लेकिन बाद में उसका यह ख्याल भी गलत साबित हुआ। राह चलते लोगों की सीधी या दबी-निगाह अचानक उस लड़की के चेहरे पर ठिठक कर रह जातीं। होटलों की भीड़ से लेकर इस केबिन में पैर रखने तक, बहुतेरे लोगों की आँखों में तरह-तरह के अर्थभरे कटाक्ष उसने शिरीन के चेहरे पर महसूस किया।

उस पर नजर पड़ते ही एक रईसजादा मुँह का कौर चबाना भूल गया और टकटकी लगाये उसकी तरफ देखता रहा। उसकी इस बेवकूफी पर चाँद साहब की हँसी के मारे बुरा हाल! बीच में गुणीदत्त को उसकी कोहनी की मार तक सहनी पड़ी। लेकिन उस लड़की के चेहरे पर कभी कौतुक की रेखा तक नहीं उभरी। उसके होटल के भीतर जाते हुए, वह और तटस्थ और गम्भीर हो आयी।

तरह-तरह के खाने की प्लेटों से मेज भर गयी। चाँद साहब खुद ही सजा-सजाकर रखता गया और मारे खुशी के चटखारे लेता रहा।

उसने सारी प्लेटें सजाकर, खाना शुरू करने को कहने को सिर उठाया। अचानक जैसे उसे कुछ याद आ गया। उसकी निगाह दोस्त पर से फिसलती हुई बेटी के चेहरे पर आ टिकी। उसने अपनी रंगीन दाढ़ी की आड़ में अपनी खिसियानी हँसी छुपा ली—और बैरे को आवाज लगाई।

उसकी पुकार पर गुणीदत्त ने अचकचाकर पूछा : अब क्या मंगा रहे हो? लड़की ने भी अपनी गर्दन घुमाकर कमल की पंखड़ियों जैसी पलक उठाकर चाँद साहब की तरफ देखा।

बैरा आया, तो चाँद साहब ने हुक्म दिया, 'शराब—!'

यह हुक्म आग के गोले की तरह गुणीदत्त के कानों से टकराया। उसने विस्मय से उस तेज आग की तरफ देखा। वह स्थिर भाव अन्दर-ही अन्दर सुलगती हुई जान पड़ी। उस समय अगर कोई उसके करीब जाता, तो जलकर खाक हो जाता। वह उन सब से निर्लिप्त बनी बैठी रही।

बैरा शराब का नाम जानने के लिए इन्तजार में खड़ा रहा। चाँद साहब ने गुरु-गम्भीर भाव से किसी विलायती शराब का नाम लेकर, उसकी छोटी बोतल लाने का हुक्म दिया। बैरे के जाते ही, वह बेटी की तरफ मुड़ा, 'अब मूर्ति बनी क्यों बैठी हो ? खाना देखकर ही, क्या पेट भर गया ?' फिर दोस्त की तरफ मुड़ा 'क्यों, तुम्हें भी काठ मार गया ?'

इतना कहने पर भी किसी को खाने के लिए हाथ न लगाते देखकर, वह भी हाथ समेटकर बैठ गया।

गुणीदत्त मन ही मन परेशान हो उठा, चाँद साहब ने इस बिचारी लड़की का खाना जहर कर दिया। लेकिन चाँद साहब को देखकर नहीं लग रहा था कि वह कहीं से वाकई सीरियस है। उनकी लाल-लाल दाढ़ी की ओट में, उसकी हँसी जैसे फट पड़ने को थी। मौका पाते ही, वह हँसी चारों ओर से उमड़ कर झरने लगेगी।

बैरा हाथ में शराब, सोडा और गिलास लिए हुए, केबिन का पर्दा खिसका कर भीतर आया। सोडा और गिलास मेज पर रखकर वह बोतल का कॉर्क खोलने ही वाला था कि चाँद साहब ने बोतल उसके हाथ से छीन लिया और खुद ही एक झटके में खोल डाला। बोतल को नाक तक ले जाकर उसने एक जोर की साँस ली, 'आह !'

की एक बोतल और गिलास दोस्त की तरफ सरकाते हुए दूसरा गिलास बोतल ले जाने का हुक्म दिया—ले जाओ।

उसका हाव-भाव देखकर या फिर किसी और वजह से बैरा भी उसकी तरफ मुँह-बाए हैरत से देखता हुआ खड़ा रहा। जैसे उसके हुक्म का सही-सही मतलब उसकी समझ में न आया हो।

'मैंने कहा न, हटा लो—!' चाँद साहब ने उसे तेज स्वर में डाँटा।

बैरा बाकी गिलास बोतल उठाकर बाहर की ओर निकल गया और चैन की साँस ली। लड़की की तरफ देखते हुए चाँद साहब की छत-तोड़ हँसी होटल के लोगों को चौंकाती हुई, समूचे हॉल में गूँज गयी। इतनी देर बाद बेटी के गम्भीर चेहरे पर, जरा रौनक आयी। बादल छँटने पर बिजली की कौंध की तरह, उसके चेहरे पर-भी हँसी की रेखायें चमक उठीं।

अब जाकर जाकर सारा मामला समझ में आया। चाँद साहब ने शराब छोड़ दी, इसका उन्होंने एक नमूना दिखाया। यानी इसके बाद भी उसकी बेटी अगर उसकी तरफ से निश्चिन्त न हो सके, तो वह लाचार है।

अब गुणीदत्त के सामने अजब-सी उलझन आ पड़ी। जिस शराब को यह लड़की इतनी नफरत से देखती है, उसके आँखों के सामने अगर वह न भी पीता, तो भी काम चल जाता लेकिन वह अपने मन का जोर और प्रतिज्ञा का दम दिखाकर लड़की को भरोसा दिलाने के फेर में, चाँद साहब ने और किसी बारे में सोचा ही नहीं या हो सकता है कि उसकी बेटी को सिर्फ उसके पीने में एतराज था। उसके अलावा दुनिया का और कोई व्यक्ति जितना चाहे, शराब पीये उसकी बला से, यह उसका सिर-दर्द नहीं।

आज भी गुणीदत्त को पीने-पिलाने को लेकर कोई खास मोह नहीं है। इसका उसे नशा भी नहीं है। किसी ने उसके आगे रख दिया तो पी लिया, वर्ना न मिलने पर मन में कहीं कोई प्यास भी नहीं जगती। इतने सारे नाटकों के बाद गुणीदत्त के लिए उचित तो यही था कि वह

बोतल को हाथ भी न लगाता, लेकिन एक जरा-सी छोकरी की इच्छा-अनिच्छा को इतनी अहमियत देना, उसे युक्तिसंगत नहीं लगा।

तीनों ने खाना शुरू किया। गुणीदत्त खाने के साथ-साथ शराब की घूंट भी भरता रहा। चांद साहब खाना खाते हुए उसे किस्से-पर-किस्सा सुनाता रहा लेकिन रह-रहकर वह बातें भूल जाता और उसका सारा ध्यान शराब की बोतल पर अटक जाता।

गुणीदत्त के अनजाने में ही, जाने कैसी धुन सवार हो गयी। उसने फैसला किया कि उस लड़की के सामने ही वह मजे-मजे से पीते हुए, बोतल खतम करेगा। सम्भव हुआ तो यह बोतल खत्म करके दूसरी भी मँगवा लेगा। वैसे उसे पता है कि बेतहाशा पीकर भी वह कोई उल्टे-सीधे काम नहीं करता। उसका तो बस, सिर घूमने लगता है और दोनों पैरों पर निश्चिन्त होकर खड़ा नहीं हुआ जाता—इसके अलावा कहीं, कोई परेशानी नहीं होती। लड़की ने एक बार भी उसकी ओर सीधे-सीधे नहीं देखा, लेकिन गुणीदत्त जानता था कि उसने अब तक आधी बोतल खाली कर डाली है। इस ओर उसकी पूरी नजर है।

गुणीदत्त को जाने क्यों मजा आने लगा। अचानक चांद साहब पर नजर पड़ते ही, वह अवाक् हो उठा। चांद साहब कुछ खा नहीं रहा था, उँगलियों से प्लेटों की चीजों को बीन रहा था। उसकी प्यासी और करुण आँखें उस रंगीन बोतल और गिलास को एकटक निहारे जा रही थीं। मानों वह आँखों से ही पीने का स्वाद ले रहा हो।

"क्यों, कुछ खा नहीं रहे हो ?" गुणीदत्त ने उसका ध्यान बँटाने की कोशिश की।

"नहीं, खा तो रहा हूँ।" चांद साहब ने विस्मय का भाव दिखाते हुए कहा, "असल में खाना बहुत बढ़िया पकाया गया है।" फिर गले तक आयी थूक निगलकर बोतल की ओर इशारा करते हुए आहिस्ते से पूछा, "बढ़िया चीज दी है न ? आज-कल तो कभी-कभी इसमें भी मिलावट होता है···" वह अपना संशय पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर पाया।

"नहीं वाकई, बढ़िया है।" गुणीदत्त ने गम्भीर मुद्रा में जवाब दिया। मानो इतनी बढ़िया चीज शायद दो-एक बार ही पेट में गई हो। बोत-

बीच में अचानक एक-आध बार उस लड़की से भी निगाहें मिल गयीं—लगा, मानो कोई जलती हुई, छुरी रह-रह कर उसे जख्मी कर रही हो।

थोड़ी देर को चारों ओर चुप्पी छाई रही। चांद साहब ही इधर-उधर की बातों से पार्टी को जमाये रखने की कोशिश करता रहा, लेकिन उसकी बातों में कहीं कोई तारतम्य नहीं था। थोड़ी देर पहले कितनी तारीफ की थी, "क्या, लाजवाब खाना है।" और थोड़ी देर बाद कहा, "कुछ भी हो, आज-कल के लोग पहले लोगों की तरह खाना बनाना नहीं जानते। असल में इन लोगों को खाना पकाना आता ही नहीं। कीमत के नाम पर गला काटते हैं। और खाना ऐसा देते हैं कि गले से नीचे न उतरे।"

गुणीदत्त बात-चीत में कोई हिस्सा नहीं ले रहा था। बीच-बीच से सिर उठाकर उसकी बातें सुनता रहा और इसी बहाने उस लड़की की तरफ भी एक नजर डाल लेता। लड़की ने हाथ समेट लिया था। शायद उसका खाना खत्म हो चुका था। इतना जरा-सा खाकर चेहरा इतना भरा-भरा कैसे है? यह बात भी गौर करने लायक थी। गुणीदत्त ने सोचा भी कि वह एक बार पूछ ले कि उसके लिए और क्या चीज़ मँगवाया जाये। उसने कुछ खाया नहीं, इस पर भी आश्चर्य प्रकट करना चाहिए। आखिर वह उसकी मेहमान थी। लेकिन उससे कुछ भी कहते नहीं बना। थोड़ी देर पहले की वह काट खानेवाली आँखें अभी तक उसके मन को वेध रही थी। गुणीदत्त ने धीरे से हाथ बढ़ाकर बोतल उठा ली और गिलास में उड़ेलने लगा। अब बहुत थोड़ी-सी शराब बच रही थी। सोडा मिलाकर होंठों से लगाया और गट्-गट् पी गया। चांद साहब उसका मुँह ताकता रहा। उसकी ललचायी हुई आँखें गिलास पर जैसे चिपक गयी थीं।

उसने मुँह पोंछने के लिए नैपकिन उठाई और मारे अकुलाहट के, उसका एक कोना चबाने लगा। वह क्या चबाये जा रहा है, इसका उसे होश भी न था।

अचानक एक महीन-सी आवाज उसके कानों में मानो गरम-गरम

सीसा उड़ेल गयी। उसके कान तक जल उठे। शिरीन ने मुंह घुमाया। उसने कुछ कहा, गुणीदत्त को देखते हुए शायद उस से कुछ कह रही है। नहीं, वह कुछ कह नहीं रही है। आग उगल रही है, "बैठे-बैठे तब से अकेले-अकेले चढ़ाये जा रहे हो। क्यों, तुम्हारी आँखें नहीं हैं? देख नहीं रहे हो? इसमें से थोड़ी-सी अपने साथ वाले आदमी को नहीं दे सकते?"

गिलास हाथ में छूटने के पहले ही गुणीदत्त ने सम्हाल लिया। चांद साहब भी मानो नींद में, सपना देख रहा था, अचानक कठोर वास्तविकता के जोरदार धक्के से, वह मुंह के बल गिर पड़ा हो, जिसे अंग्रेजी में 'नॉक आउट' होना कहते हैं।

गुणीदत्त को पहली बार भरोसा हुआ कि वह गूंगी नहीं है। उसने पहली बार उसकी आवाज सुनी और आश्चर्य की बात यह थी कि वह शुद्ध बंगला बोल रही थी। आँखें बन्द करके सुनो तो, लगेगा किसी नन्हे बच्चे की आवाज हो। गुणीदत्त होश-हवास भूलकर उसकी तरफ विस्मय से आँखें फैलाये देखता रहा। एक क्रूर दृष्टि की तीखी कटार उस पर हमला करने को उद्यत थी।

कुछेक पलों के लिए, वक्त भी थमथमाकर ठहर गया। लड़की गुणीदत्त की तरफ ही देखे जा रही थी। वह किसी साढ़े सत्रह वर्षीया लड़की की दृष्टि नहीं थी, किसी आदिम नारी का तेजोमय व्यक्तित्व ही, मानो सुलग उठा हो और जिससे सिर्फ नफरत और विद्वेष झर रहा हो। औरत की जिस क्रुद्ध-दृष्टि से मुक्ति पाये बिना, किसी पुरुष की खैर नहीं, वह लड़की उसी गुस्से से जल रही थी।

पहले-पहल चांद साहब ही थोड़ा प्रकृतिस्थ हुआ। अपनी लड़की का गुस्सा और उसका यह चंडी-रूप सिर्फ वही पहचानता था। उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए, वह धीरे-धीरे थपककर शान्त होने का मौन आग्रह करता रहा। वह मुंह खोलकर कुछ नहीं कह पाया, सिर्फ अस्फुट स्वर में उसका नाम ले-लेकर पुकारता रहा। शायद पुकार भी नहीं रहा था। उसके नाम को आवाजें दिये जा रहा था।

शिरीन! शिरीन!—शिरीन। शिरीन। शिरीन। शिरीन।—हाँ, आग शान्त हो गयी, नफरत और विद्वेष की जलती हुई आग,

कोई शेरनी किन्हीं स्नेहमयी और परिचित हाथों का स्पर्श पाकर शान्त हो गयी हो।

उसने नजरें घुमा लीं।

थोड़ी देर बाद चाँद साहब ने ही जुबान खोली। कोमल भर्त्सना के लहजे में डाटा, 'मेरी खातिर, तू मेरे दोस्त का अपमान कर बैठी? शराब देखकर मेरे भीतर बैठा हुआ शैतान, बेईमान हो उठा था। चल, दोस्त से फौरन माफी माँग ले।"

लड़की मुंह फेरकर उसकी तरफ देखती रही। शेरनी किसी से माफी-आफी माँगने के चक्कर में नहीं पड़ती। माफी माँगना उसे शोभा भी नहीं देता।

गुणीदत्त भी नाराज नहीं हो सका। इसमें उसे कहीं से अपमान भी नहीं लगा। वह मैजिशियन था। इतना अद्भुत जादू देखकर स्तब्ध रह गया, शायद विस्मित भी। उसे जहाज से उतरे हुए अभी दो दिन भी नहीं हुए थे, उससे पहले छः साल अंग्रेजी शहरों में बिता चुका था। लेकिन ऐसा अद्भुत आश्चर्य···

पिछली रात चाँद साहब ने पूछा था, 'उस देश में शिरीन की तरह कोई लड़की देखी है!' उसने भी उसका मन रखने के लिए बिना कुछ सोचे-समझे जवाब दिया था, 'ना,···नहीं देखी।'

आज उसे लगा, उसने झूठ नहीं कहा था। आँखों को झुलस देने वाली तेज लड़कियाँ तो, बहुत देखी हैं, और वहाँ बहुत-सी लड़कियाँ उसके पौरुष से भी अभिभूत हुई हैं। जूली एण्डरसन के अनुसार ऐसी लड़कियों की संख्या अनगिनत थी। लेकिन भारत की धरती पर कदम रखते ही गुणीदत्त ने जो देखा उसकी शायद कहीं कोई तुलना नहीं थी। यहाँ साढे सत्रह साल की एक छोकरी ने उसके पौरुष को करारी ठेस पहुँचाई थी। नहीं, विदेशों में भी शिरीन जैसी लड़की उसे कहीं नहीं दिखी।

गुणीदत्त ने गिलास और बोतल एक ओर खिसका दिया। उसे दुबारा छुआ भी नहीं। बैरे को बुलाकर बिल लाने को कहा, फिर जाने क्या सोचकर उसने गिलास और बोतल सामने से हटा ले जाने को

कहा। बैरा हुक्म बजाकर चला गया। गुणीदत्त ने एक बार कोमल आवाज में उससे और कुछ लेने का आग्रह भी करना चाहा। लेकिन गिलास और बोतल हटा देने के बावजूद शिरीन ने उसकी ओर मुड़कर भी नहीं देखा। गुणीदत्त ने समझ लिया, कहना बेकार होगा।

गुणीदत्त मन में अपार विस्मय लिए घर लौटा। सोचा था कि अकेले मे चांद साहब से एक बार इस बारे मे पूछेगा कि मामला क्या है ?—लेकिन पूछने की नौबत ही नही आयी।

चाँद साहब ने ही अकेले मे अपने दोस्त के आगे असन्तोष प्रकट करते हुए, उस नासमझ लड़की को माफ कर देने को कहा। असल मे उस लड़की का स्वभाव ही ऐसा है। लेकिन उससे नाराज होकर उसने ऐसा बर्ताव नही किया। उसका असली गुस्सा तो साहबजी पर था।

शिरीन उसे 'साहबजी' कहकर पुकारती है, यह कहानी कभी चाँद साहब ने ही उसे बतायी थी। जब तक लाजवन्ती जिन्दा थी, वह भी उसे साहबजी ही पुकारती थी। चाँद साहब ने बहुत चाहा कि उनकी बेटी उन्हें 'बापू' कहना सीख ले, लेकिन अन्त में हार मान ली। बापू कहते हुए उनकी बेटी का, हँसी के मारे बुरा हाल। सच पूछा जाये 'बापू' कहना साहबजी की तरह मधुर भी नही लगता। अन्त में चाँद साहब ने ही कहा, 'रहने दे, बेटू, जिस नाम से पुकारती थी वही ठीक है।'

उसका गुस्सा साहबजी पर ही था, यह कोई अविश्वसनीय बात भी नही लगी। ठंडे दिमाग से सोचो तो यही सच भी था। लेकिन गुणीदत्त को उसके गुस्से के पीछे सिर्फ इतनी-सी वजह ही सच नही लगी। उसके आग जैसे गुस्से और नफरत की चाबुक ने जैसे उसके चेहरे पर गहरे-गहरे निशान अंकित कर दिये थे। गुणीदत्त की समूची पीठ पर जख्म का एक काला-सा धब्बा है, ग्यारह वर्ष मे भी वह नही मरा। लगता है, यह जख्म अब कभी मरेगा भी नही। आज अचानक फिर उसके दिल में पुरानी यादें हलचल मचाने लगी।

उस दिन तो उसकी सारी पीठ झुलस गयी थी। आज उसका समूचा चेहरा।

एक-एक करके दिन गुजरते रहे। गुणीदत्त हर रोज होट

लेने की सोचता था। मँजी उड् कम्पनी का सर्वेसर्वा गुणीडाटा चाँद साहब के डेरे पर कैसे मुलायम विस्तर पर रात विताता है। उड दम्पति या जूली एण्डरसन इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते। और अगर उसे कहीं देख पायें तो हैरत में पड़ जाएँ। चाँद साहब पर अनावश्यक बोझ पड़ता, इसी वजह से वह बेहद चालाकी से दोनों वक्त खाने की बात टाल गया। सुबह वह सिर्फ चाय और नाश्ता लेकर निकल पड़ता। लेकिन रहने की बात टालने की कोशिश में वह पकड़ा जाता। और अपनी गरीबी को ही इसका कारण मानकर चाँद साहब दुःखी होता। अभी भी कई चीजों की दलाली के पैसों पर ही रूखे-सूखे, किसी तरह उसके दिन कट रहे थे। उसने तो खुद ही स्वीकार किया 'कि अब इस देह में पहले जैसी ताकत नहीं रही। वैसे अभी कोई खास उम्र भी नहीं हुई, दोस्त, लेकिन अभी से हाथ-पैर थकने लगे।'

इन्हीं सब कारणों से गुणीदत्त कहना चाहकर भी कुछ नहीं कह पाया। लेकिन एक रात कमरे से सटे हुए बरामदे में बिस्तर पर लेटे-लेटे बहुत देर तक जाने कौन-सी उधेड़-बुन में पड़ा रहा। उसे यह जान कर बेहद अचरज हुआ कि वहाँ से न जा पाने की वजह यह नहीं थी कि वह चाँद साहब के प्रति अतिशय अनुराग या कृतज्ञता या इस घर के प्रति किसी अबूझ रहस्य के किनारे बैठा हुआ महसूस कर रहा था। अनजाने में ही उसके मन में जादू के नशे की तरह जिस रहस्यमयी ने घेरा डाला था, उसका पता तो मिल गया था, लेकिन उसका जाल वह अभी तक नहीं तोड़ पाया था। जादूगर हमेशा रहस्यों के ताने-बाने बुनता रहता है। लेकिन खुद किसी का गोरखधन्धा बरदाश्त नहीं कर सकता।

शायद इसी वजह से गुणीदत्त का मन भी, अनजाने में ही, वहाँ अटक गया था।

छह

उड़ दम्पति को जितनी उम्मीद थी, पहले दिन का प्रोग्राम, उससे भी अधिक आश्चर्यजनक रूप से हिट गया। हिन्दोस्तान की धरती पर, गुणीदत्त का यह पहला और बड़ा 'शो' था। इससे भी बड़ा 'शो' दिखाने का विश्वास दिलाते हुए मानो उस दिन का शो समाप्त किया। दर्शकों की रुचि में उसका गहरा विश्वास है। वह मनोरंजन के माध्यम से उन्हें विस्मय और हैरत की दुनिया मे खीच ले जाना जानता है। शुरू से लेकर अन्त तक एक निश्चित क्रम से लोगो को आश्चर्य की दुनिया मे ला खड़ा करने मे वह अतिशय कुशल भी है। इसीलिए दर्शकों को उस का हर खेल अद्‌भुत लगा। शो के शुरू मे वह ऐसे दो-चार मामूली खेल प्रस्तुत करता, जिन्हें लोग पहले भी देख चुके थे। जिनमे कही, कुछ भी नया नही जोड़ा गया था। लेकिन इन खेलो के दौरान, वह हँसी-खुशी की जो धारा बहा देता, उससे सब कुछ नया और अद्‌भुत लगता और अन्तिम तीन खेलो में तो दर्शक अभिभूत हो उठते। उसमे गुणीदत्त का 'पलायनी जादू', जिसके बारे मे मंजी उड़ कम्पनी का दावा था कि दुनिया भर मे गुणीदत्त के जोड का कोई जादूगर नही है। उन्होने घोषणा की थी—'जिसे दुनिया का कोई जड़-बन्धन बांधकर नही रख सकता, ऐसा इन्सान इस धरती पर सिर्फ एक ही है और वह है गुणीदत्त।

लेकिन दर्शक तो इससे पहले भी कई तरह के 'पलायनी जादू' देख चुके थे। गुणीडाटा ऐसा कौन अजूबा दिखाने वाला था।

गुणीदत्त ने सचमुच ही अजूबा दिखाया। स्टेज पर लोहे की सलाखों पर आठ फीट को ऊँची दीवार उठा दी गयी। दर्शकों को बुलाकर दिखा दिया गया। दीवार कही से भोकी नही है। दीवार के

एक मोटी-सी चादर तान दी गयी और कोई आदमी बाहर से अन्दर या अन्दर से बाहर न जा सके, इसकी निगरानी के लिए आस-पास दस-पन्द्रह दर्शकों को खड़ा कर दिया गया। सामने की तरफ तो अनगिनत दर्शकों का पहरा था। उनकी आँखें तो दीवार की दूसरी तरफ तक भी देख सकती थी। इसके बाद जादूगर गुणीडाटा अपने दोनों हाथों में हथकड़ी पहने एक ओर की चादर उठाकर भीतर चला गया। उसने अपने दोनों बँधे हुए हाथ ऊपर उठाकर सबको दिखा भी दिये कि वह कहाँ है। उसके बाद हाथ नीचे कर लिये। दो-एक मिनट के लिए हर ओर चुप्पी छा गयी। एक-एक पल जैसे खत्म होने को नहीं आ रहा था। आर्केस्ट्रा पर पलायनसूचक धुन समूचे हॉल में गूंजती रही। अचानक दीवाल और पर्दे के उस पार से बेड़ियाँ पहने हुए दो हाथ ऊपर उठ आए हैं और घोषणा हुई, 'मैं आ गया हूँ।'

लेकिन हथकड़ियाँ पहने हुए किसी और के हाथ भी तो हो सकते हैं और आवाज भी तो नकली हो सकती है। अतः पर्दा हटा दिया गया। सच ही तो, नकली नहीं, जीता-जागता, असली गुणीड़ाटा हथकड़ी बेड़ी समेत हँसते हुए दर्शकों के सामने खड़ा था।

दर्शक चकित! विमूढ़!! ईंटों की ठोस दीवार भेद कर कोई उस पार भी जा सकता है, ऐसा अजूबा वे अपनी आँखों से पहली बार देख रहे थे।

समूचे हॉल में तालियों की धूम मच गई।

सामने वाले कतार का एक आदमी कुर्सी से उछल कर नाचते हुए तालियाँ बजा रहा था—वह चाँद साहब था। उसकी बगल में मारे हैरत के स्थान—समय का होश खोकर, भौंचक्की-सी शिरीन खड़ी थी। खेल शुरू होने से पहले और फिर बाद में भी आस-पास के दर्शकों का ध्यान स्टेज से हटकर बार-बार उसकी तरफ ही लौट आता। जाने कब लोग आत्म-विस्मृत से स्टेज के जादुई करिश्मों में खो गये। शो का आखिरी खेल देखते हुए चाँद साहब भी अपनी बेटी का खयाल भूल गया।

साहबजी की जबर्दस्ती से ही उसे खेल देखने आना पड़ा था। खेल देखते-देखते तटस्थता की अभेद्य दीवार, जैसे टूट-फूटकर बिखर गयी।

जादुई करिश्मे दिखाने वाला यह, वही आदमी है, जो उसके घर के बरामदे मे पड़ा रहता था, यह उसे जैसे विश्वास ही नही आया। हास्य-प्रसंगों में दर्शकों के साथ कई बार वह भी मन-ही-मन हँसते-हँसते बेहाल हो उठी। अगले ही क्षण आश्चर्य से साँस रोके हुए, उसने एक बिल्कुल निराला खेल देखा। मानो हौले-हौले कोई उसे किसी आश्चर्यमयी दुनिया में खींच लाया हो।

उसकी पलकें तक झपकने का नाम नही ले रही थी।

अखबारों मे भी समालोचकों ने उसके पलायनी जादू के अलावे और दो खेलों की भी तारीफ की है। एक तो तोपों का खेल और आखिर में "पिपुल्स आफ ऑल नेशन्स"।

तोपों का खेल देखकर बहुत से लोग मारे डर के काँप उठे। शिरीन भी सहम गयी थी। चार पहियोंवाली गाडी पर एक बडी-सी तोप को खींचकर स्टेज पर लाया गया। तोप के लम्बे-चौड़े मुँह की तरफ दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया गया। जूली एण्डरसन चुस्त कपड़ों मे तोप के सामने आ खड़ी हुई। उसकी मुखमुद्रा बेहद करुण है। मानो वह किसी जल्लाद के सामने आ खड़ी हुई हो। गुणीड़ाटा ने एक झटके से उसे बाँहों मे उठा लिया और जबरन उस तोप के मुँह मे घुसेड़ दिया। उसके बाद तोप के मुँह पर एक बड़ा-सा गोला रख दिया गया।

हॉल के लोग स्तब्ध मुद्रा में बैठे रहे। संकेत पाकर ट्रिगर दबा दिया। कान सुन्न कर देने वाला एक जोरदार धमाका। गोला जरा ऊँचाई से एक धमाके के साथ स्टेज पर आ गिरा। लेकिन जूली एण्डरसन कहाँ है? वह क्या जिन्दा है?

जूली दर्शकों के बीच में एक कुर्सी पर खड़ी होकर दूर से हँसते हुए रूमाल हिला-हिलाकर, लोगों की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करके जता रही थी कि वह कहाँ है।

आखिरी खेल था "पिपुल्स ऑफ ऑल नेशन्स" गुणीड़ाटा तमाम मुल्कों के लोगों से मुलाकात कराने को प्रस्तुत हुआ। लेकिन इतने सारे आदमी, वह कहाँ से दिखायेगा? जिसमें सिर्फ एक आदमी समा सके, ऐसे एक ग्लोब के भीतर से? ग्लोब का एक टुकड़ा खोलकर दि-

दिया गया कि भीतर से खाली है। कहीं कोई नहीं है। ढक्कन फिर से लगा दिया गया। ग्लोब घुमाते हुए सबसे पहले भारत का मानचित्र सामने रुक गया। अन्दर से हाथ में हिन्दुस्तान का झंडा लिए हुए भारतीय वेश-भूषा में जूली एण्डरसन निकली। ढक्कन फिर बन्द कर दिया गया। इस बार इंग्लैण्ड का नक्शा लाया गया। ढक्कन खुलते ही अपनी जातीय वेशभूषा में, अपना जातीय झंडा लिये हुए, मिसेज जेनिफर उड बाहर निकलीं। फिर इसी तरह ग्लोब के भीतर से अलग-अलग देशों, जातियों के लोग, अपनी-अपनी जातीय वेश-भूषा में हाथों में अपना जातीय झंडा थामे हुए, एक-एक करके स्टेज पर खड़े होते गये।

दर्शक मंत्रमुग्ध-से देखते रहे और फिर मारे खुशी के अपनी सुध-बुध भुला बैठे।

कई अखबारों के रिपोर्टरों ने ईर्ष्या के मारे उस विलक्षण जादूगर गुणीडाटा के खेलों की और उसके मनमोहक शो-मैनशिप की तथा अन्य विशेषताओं पर टीका-टिप्पणी भी की। दर्शक भी आपस में एक-दूसरे से तर्क-वितर्कों में उलझे रहे। अगले दिनों की टिकटें भी उसी दिन बिक गयीं। लेकिन शो की पहली ही रात, किसी अदृष्ट रंगमंच पर एक और ड्रामा भी दिखाया गया, दर्शकों और समालोचकों को इसकी खबर ही नहीं हो सकी।

शो खत्म होने पर चाँद साहब शिरीन का हाथ थामे हुए खुशी के मारे गिरते-पड़ते ग्रीन-रूम के अन्दर चला आया। गुणीदत्त अपना बचाव नहीं कर सका। चाँद साहब के चुम्बनों और दाढ़ी की चुभन से बेहाल होकर, आखिरकार उसने अपने को शिथिल छोड़ दिया।

अचानक चाँद साहब को जैसे होश आया। उसने गौर किया, लोगों की नजर उनकी तरफ न होकर, उसके साथ जो आयी है उसकी तरफ है। एडवर्ड उड, जेनिफर उड, जूली एण्डरसन और बाकी सहायक—सबकी आँखें एकटक शिरीन की ओर ही लगी थीं।

गुणीदत्त हँसते हुए आगे बढ़ आया। अचानक उसे लगा कि वह इसी सफलता की आँस लगाये था। शायद इसी इनाम की उम्मीद में था। पहले उड दम्पति से और बाद में जूली एण्डरसन से परिचय कराते

हुए, गुणीदत्त ने बताया कि वह चाँद साहब की बेटी है। मिस्टर और मिसेज उड की विस्मित आँखें अकारण ही एक-दूसरे से जा मिलीं। मिसेज उड ने उसे बड़ी ममता से अपने पास खींचकर बिठा लिया। यह चाँद साहब की बेटी है यह जैसे निहायत अविश्वसनीय बात लग रही थी। जूली एण्डरसन की आँखों में भी कुछ देर पहले आश्चर्य का भाव था। अब वह उसे उत्सुकता से देख रही थी। वह एक हिन्दुस्तानी लड़की देखकर हैरत में पड़ गयी या कोई और वजह थी, यह भी ठीक तरह नहीं जान पायी। मिसेज उड ने उससे दो-एक बातें करने की कोशिश की, लेकिन शिरीन की आँखें घूम-फिर कर उसी जादूगर को निहारती रहीं।

गुणीदत्त का मन था कि वह चाँद साहब के साथ ही घर लौटे। लेकिन जाने क्यों, वह ऐसा नहीं कर पाया। जूली एण्डरसन की आँखों में तीखापन और व्यंग्यभरी हँसी का भाव था। इसलिए गुणीदत्त चाहकर भी साथ नहीं जा सका। वे लोग होटल लौटने की तैयारी करने लगे। वहीं पलभर को एकान्त पाकर जूली ने पूछा, "क्यों, बस, चल दिये ?"

'हाँ, तुम सब भी तो लौट रहे हो ?'

'हम लोग तो खैर, जायेंगे ही।' जूली ने उसकी तरफ कौतुक से देखते हुए कहा, "तो तुम किस बात का इन्तजार कर रहे हो ? जाओ—।'

गुणीदत्त ने हँसकर जवाब दिया, 'चला जाऊँगा। अभी थोड़ा-सा काम बाकी रह गया है।' और-अधूरा काम पूरा करने के लिए जूली की तरफ झुक पड़ा।

जूली थरथरा उठी और झटके से अपनी दोनों हथेलियों से विरोध करने की कोशिश की।

हिन्दुस्तान जैसे देश में, हर किसी की नजर के सामने यह सब शोभा नहीं देता, इतना तो वह जान ही गयी थी। सिर्फ यही क्यों, हर देश में ऐसे माहौल में इसे बेवकूफी कहेंगे। लेकिन इस आदमी की बुद्धि पर जूली को रंचमात्र भी भरोसा नहीं। अतः वह सकपकाकर दो

दिया गया कि भीतर से खाली है। कहीं कोई नहीं है। ढक्कन फिर से लगा दिया गया। ग्लोब घुमाते हुए सबसे पहले भारत का मानचित्र सामने रुक गया। अन्दर से हाथ में हिन्दुस्तान का झंडा लिए हुए भारतीय वेश-भूषा में जूली एण्डरसन निकली। ढक्कन फिर बन्द कर दिया गया। इस बार इंग्लैण्ड का नक्शा लाया गया। ढक्कन खुलते ही अपनी जातीय वेशभूषा में, अपना जातीय झंडा लिये हुए, मिसेज जेनिफर उड बाहर निकलीं। फिर इसी तरह ग्लोब के भीतर से अलग-अलग देशों, जातियों के लोग, अपनी-अपनी जातीय वेश-भूषा में हाथों में अपना जातीय झंडा थामे हुए, एक-एक करके स्टेज पर खड़े होते गये।

दर्शक मंत्रमुग्ध-से देखते रहे और फिर मारे ख़ुशी के अपनी सुध-बुध भुला बैठे।

कई अखबारों के रिपोर्टरों ने ईर्ष्या के मारे उस विलक्षण जादूगर गुणीडाटा के खेलों की और उसके मनमोहक शो-मैनशिप की तथा अन्य विशेषताओं पर टीका-टिप्पणी भी की। दर्शक भी आपस में एक-दूसरे से तर्क-वितर्कों में उलझे रहे। अगले दिनों की टिकटें भी उसी दिन बिक गयीं। लेकिन शो की पहली ही रात, किसी अदृष्ट रंगमंच पर एक और ड्रामा भी दिखाया गया, दर्शकों और समालोचकों को इसकी खबर ही नहीं हो सकी।

हुए, गुणीदत्त ने बताया कि वह चाँद साहब की बेटी है। मिस्टर और मिसेज उड की विस्मित आँखें अकारण ही एक-दूसरे से जा मिलीं। मिसेज उड ने उसे बड़ी ममता से अपने पास खीचकर बिठा लिया। यह चाँद साहब की बेटी है यह जैसे निहायत अविश्वसनीय बात लग रही थी। जूली एण्डरसन की आँखों में भी कुछ देर पहले आश्चर्य का भाव था। अब वह उसे उत्सुकता से देख रही थी। वह एक हिन्दुस्तानी लड़की देखकर हैरत में पड़ गयी या कोई और वजह थी, यह भी ठीक तरह नहीं जान पायी। मिसेज उड ने उससे दो-एक बातें करने की कोशिश की, लेकिन शिरीन की आँखें घूम-फिर कर उसी जादूगर को निहारती रहीं।

गुणीदत्त का मन था कि वह चाँद साहब के साथ ही घर लौटे। लेकिन जाने क्यों, वह ऐसा नही कर पाया। जूली एण्डरसन की आँखों मे तीखापन और व्यंग्यभरी हँसी का भाव था। इसलिए गुणीदत्त चाह-कर भी साथ नही जा सका। वे लोग होटल लौटने की तैयारी करने लगे। वहीं पलभर को एकान्त पाकर जूली ने पूछा, "क्यों, बस, चल दिये ?"

'हाँ, तुम सब भी तो लौट रहे हो ?'

'हम लोग तो खैर, जायेंगे ही।' जूली ने उसकी तरफ कौतुक से देखते हुए कहा, "तो तुम किस बात का इन्तजार कर रहे हो ? जाओ—।'

गुणीदत्त ने हँसकर जवाब दिया, 'चला जाऊँगा। अभी थोड़ा-सा काम बाकी रह गया है।' और-अधूरा काम पूरा करने के लिए जूली की तरफ झुक पड़ा।

जूली थरथरा उठी और झटके से अपनी दोनो हथेलियो से विरोध करने की कोशिश की।

हिन्दुस्तान जैसे देश में, हर किसी की नजर के सामने यह सब शोभा नहीं देता, इतना तो वह जान ही गयी थी। सिर्फ यही क्यो, हर देश मे ऐसे माहौल में इसे बेवकूफी कहेंगे। लेकिन इस आदमी की बुद्धि पर जूली को रंचमात्र भी भरोसा नहीं। अतः वह सकपकाकर दो कदम

पीछे हट गयी, फिर बनावटी गुस्से में आँखों से बरजते हुए कहा, 'यू रैस्कल' नाउ, गेट आउट।'

उस रात गुणीदत्त को घर लौटने में काफी देर हो गयी। उसके लौटते ही चाँद-साहब फिर चहक उठा। शिरीन बरामदे में थी! वह रेलिंग के सहारे खुले आसमान में आँखें गड़ाये, जाने क्या देख रही थी।

गुणीदत्त से रहा नहीं गया। चाँद साहब से पूछा, 'शिरीन वहाँ इतनी चुप-सी क्यों खड़ी है? क्या शो पसन्द नहीं आया?"

वैसे जवाब उसे मालूम था, फिर भी सुनने में अच्छा लगा। चाँद साहब ने कमरा गुंजा देने वाला ठहाका लगाकर कहा, अरे नहीं, वह मारे अचरज के गूँगी हो गयी है उसके सामने एक बहुत बड़ी उलझन आ खड़ी हुई है।'

आश्चर्य में पड़ने की तो खैर, समझ में आ गयी लेकिन उलझन में पड़ने की बात आगे समझ में नहीं आयी, उसके मौन प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। चाँद साहब अपनी दाढ़ी के झौए में जैसे कोई बहुत बड़ा राज छुपाए हुए था।

गुणीदत्त से आखिर पूछे बिना रहा नहीं गया, 'क्यों, उलझन कैसी?'

चाँद साहब की हँसी जैसे उमड़ी पड़ रही थी। 'सब्र करो, दोस्त, जरा सब्र करो! सब जान जाओगे। वैसे आज बड़ी खुशी का दिन है।'

घण्टे-भर बाद ही चाँद साहब की खुशी के खुर्राटे सुनाई देने लगे। वह आज बेहद गहरी नींद सोया था। लड़की भी शायद सो चुकी थी। गुणीदत्त का बहुत मन हुआ कि आज की रात वह एक बार उस लड़की को भर नजर देख पाये, लेकिन चाँद साहब की खुशी के ज्वार में बहते हुए उसे मौका ही न मिला।

कमरे के भीतर अँधेरा था। दरवाजे का एक पल्ला खुला हुआ था। उस खुले कपाट से चाँदनी का ज्वार आँखों में धूल झोंककर, जबरन अन्दर घुस आया था। कमरे के अँधेरे को मानो बीच से चीर दिया गया

हो।

गुणीदत्त को नींद नहीं ग्रायी। रेलिंग से टिककर वह ग्राकाश की ग्रोर देखता रहा ग्रौर सिगरेट के कश खींचता रहा। मानो वह जमीन फोड़कर ग्रन्दर तक झलकती हुई चांदनी की ग्रस्फुट काना-फूसी सुनने की कोशिश में हो। काफी देर तक वह कान लगाकर कुछ सुनने की कोशिश करता रहा।

ग्रचानक पीठ पर किसी की हथेलियों का स्पर्श पाकर वह ज्योंही चौंककर पीछे मुड़ा, विस्मय से स्तब्ध रह गया।

शिरीन! कन्धे तक एक पतली-सी चादर लपेटे हुए सामने खड़ी थी। पीठ तक झूलती हुई लम्बी-सी वेणी, सामने के कुछ बाल बेहद ग्रस्त-व्यस्त!

गुणीदत्त ग्रवाक् होकर देखता रहा। वह लड़की मानो किसी स्वप्न की दुनिया में सोयी हुई, नींद में ही वहाँ तक उसके पास ग्रायी हो। उसे ग्रपने तन-वदन का होश नहीं था। ग्राकाश से छनकर ग्राती हुई चांदनी की पर्तें उसके चेहरे को छू-छूकर बिखरती रहीं। गुणीदत्त ने बेहद विस्मय से देखा, वह नींद या बेसुधी में नहीं थी। उसके चेहरे ग्रौर ग्रांखों में एक ग्रबूझ-सा सवाल ग्रौर छटपटाहट थी।

जैसे किसी समुद्र का ग्रनचीन्हा बहाव उसे बहाये जाये आ रहा हो ग्रौर वह किनारा ढूँढ रही हो। गुणीदत्त की ग्रोर निष्पलक देखती रही। लेकिन शायद वह उसे भी नहीं देख रही थी। चाँद साहब भी किसी उलझन की बात कर रहा था। उसकी ग्रांखों में उलझन का यह कौन-सा सागर लहरा रहा था?

गुणीदत्त ने हाथ की जलती हुई सिगरेट फेंक दी ग्रौर उसके धुँए से, उसकी ग्राकुल तन्मयता टूट न जाये, इस ख्याल से ग्रपना मुँह फेरकर बाकी धुँग्रा हवा में छोड़ दिया ग्रौर फिर उसकी तरफ घूमकर खड़ा हो गया।

वह लड़की उसके हाथ, उसकी बाहें, उसका कन्धा ग्रौर सीना छू-छूकर देखती रही। कोई ऐसी स्थिति में उसे इस तरह पहली बार देखता तो, निस्सन्देह उसे पागल समझता।

गुणीदत्त ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए उसका सारा चेहरा चाँदनी की रोशनी की तरफ घुमा दिया। फिर उसकी ठुड्डी छूकर उसका चेहरा ऊपर उठाते हुए पूछा, 'तुम्हें मुझसे इतनी नफरत क्यों है ?'

अचानक उसकी तन्मयता टूट गई और उसकी विह्वलता कम होने लगी। अब जाकर उसे होश आया। वह बेहोशी से जागी और धीरे-धीरे अपने में लौटने लगी। उसकी आँखों का भाव भी बदल गया। अब वह किसी जादुई इन्सान को नहीं, सिर्फ इन्सान को ही देख रही थी। उसकी आँखों में फिर वही अविश्वास और नफरत का भाव लौट आया और उसकी दृष्टि बेहद रूखी और नीरस हो आयी।

शिरीन ने जोर का झटका देकर अपने को मुक्त किया और पलक झपकते ही अँधेरी गुफा में गायब हो गयी।

गुणीदत्त उसी तरह खड़ा रहा।

ऐसा आज ही हुआ था कि उसके आश्चर्यजनक करिश्मों ने अनगिनत दर्शकों के दिलों की धड़कन रोक दी थी। ऐसा सिर्फ आज ही हुआ था।

बम्बई में सात दिनों के लिए सात शो के बजाय लगातार तीन हफ्तों तक प्रोग्राम चलाना पड़ा। उस पर से छुट्टी के दिनों में डबल शो। इतने प्रोग्रामों के बाद भी उड़ दम्पति को शहर छोड़ने की कोई राह नहीं दिखाई दी। उन लोगों का इरादा था कि पहले भारत की तमाम जगहों का एक चक्कर लगा लिया जाये। बाजार भाव भी जांच लें और फिर अपनी सुविधा के अनुसार खास-खास जगहों पर जमकर खेल दिखाने का प्रोग्राम बनाया जाए। गुणीदत्त से भी बात हो गयी। प्लान भी इसी अनुरूप बनाया गया लेकिन सात दिनों बाद भी हिलने का नाम लेते ही, जनता मरने-मारने पर उतारू।

खैर, उनके जादू के खेलों के पीछे ऐसी दीवानगी वे चाहते भी थे। जनता की इस दीवानगी को प्रचार का माध्यम कैसे बनाया जा

सकता है, उड दम्पती को अच्छी तरह जानते थे। तार भेजकर मद्रास और दिल्ली के प्रोग्रामो को कैंसिल किया गया और उनकी जगह कोई दूसरी तारीख निश्चित की गयी। खतों के द्वारा लाचारियों की कहानियाँ प्रसारित की गयी—दर्शनोत्सुक भक्त जनता किन-किन तरीको से उन्हें रोके हुए हैं ? कैसे-कैसे अजीबोगरीब काड मचाये हुए हैं, इनकी झूठी-सच्ची कहानियाँ गढ़कर उनके अपने ही लोगो ने, बड़े-बड़े अखबारों मे खूब जोर-शोर के प्रचार करा डाला।

इसी बहाने दूसरे शहरों के लोगो मे ऐसी उत्तेजना और आकर्षण जगा दिया कि जब वे बम्बई मे ही थे, दिल्ली और मद्रास का मार्केट लगभग तैयार हो गया और कलकत्ते के थियेटर मालिकों के पास, जब उनका प्रस्ताव आया तो उनमे खलबली मच गयी, किस समय के लगभग मैजीउड कम्पनी की, कलकत्ता आने की उम्मीद की जाए ?

अगर पहले दिन से हिसाब लगाया जाये तो बम्बई शहर छोड़ने मे पूरे छ. हफ्ते लग गये। भारत पहुँचने के दो हफ्ते बाद से ही, उसके प्रोग्राम शुरू हो गये थे। बम्बई का बाजार वह अच्छी तरह समझ गये। प्रवास और सफर से लौटकर अपेक्षाकृत स्थायी प्रदर्शनों की दृष्टि से इस शहर के विभिन्न रगमंचो पर कम से कम छः महीने तक दखल जमाया जा सकता है इसके आस-पास इलाको को लें तो तीन-चार महीने के करीब लग जायेंगे।

जेनीफर उड ने अपने अगले दौरे के समय बम्बई शहर के लिए करीब साल भर की योजना नोट कर ली।

चाँद साहब का बिल्कुल मन नही था कि गुणीदत्त ऐसा जमा-जमाया क्षेत्र छोड़कर चल दे। अपने दोस्त को उसने दिन भर मे कई-कई बार फुसलाने की कोशिश की, कि अभी वह यही रह जाए। बम्बई के आस-पास के इलाकों मे घूमता रहे। उसे खुद ही लगेगा कि यहाँ एक वर्ष और रहे, लगातार दो वर्षों मे भी पूरा शहर नही समेट पायेगा। गुणीदत्त ने जैसे उसकी बातें सुनी ही नही। जब शोहरत का बाजार गर्म हो, तभी एकदम से गायब हो जाए जाने की कीमत वह जानता एक जगह जमकर बैठे रहने के बजाय घूम-फिरकर दुबारा

गुणों की कद्र और बढ़ जाती है।

चांद साहब समझ गया, उसका जाना निश्चित है। अचानक वह सुस्त हो गया। इतने दिनों में उसका ऐसा चेहरा गुणीदत्त ने इससे पहले कभी नहीं देखा। इन दिनों शिरीन के चेहरे की गम्भीरता भी जैसे और बढ़ गयी। गुणीदत्त के रवाना होने के दिन जैसे-जैसे करीब आते जा रहे थे, उसके चेहरे का तनाव और बढ़ता रहा था। यह लड़की कभी किसी दिन उससे कोमल होकर नहीं बोली, कभी कोमल दृष्टि भी नहीं डाली। चांद साहब के जोर-जबर्दस्ती से वह और भी कई दिन जादू देखने गयी। उसके खेल देखकर विस्मित भी हुई। लेकिन यह सब तभी तक जब तक उसका खेल देखती। उस समय शिरीन सिर्फ जादूगर को देख रही होती थी गुणीदत्त को नहीं। वह आदमी तो उसकी आंखों का कांटा है। फिर भी गुणीदत्त ने जाने से पहले जैसे बर्ताव की उम्मीद नहीं की थी।

उस दिन अकेले में उसने शिरीन से कहा, 'बस, अब तो कुछेक के दिन और! फिर तो यहाँ से चला जाऊँगा।' वह इतना भर ही कह पाया था कि छुरे की तेज धार की तरह उसकी दृष्टि, गुणीदत्त के चेहरे को बेंध गयी। उस दृष्टि में भय, घृणा, शत्रुता और अविश्वास के मिले-जुले भाव थे।

गुणीदत्त ने उसे आगे कुछ कहने का मौका नहीं दिया। उसके सामने से चुपचाप हट आया। वह पहले दिन की तरह अवाक् होकर अपने ख्यालों में खोया रहा। उसे यूं उखड़ा-उखड़ा देखकर जेनिफर-उड ने मजाक भी किया।

जूली एण्डरसन ने भी आवाज कसी, 'क्यों, बन्धु, किसी भी मोहब्बत में तो नहीं फँस गये ? यहाँ से चलना पक्का है न ?'

प्रोग्राम खत्म होने के अगले दिन से उन लोगों की पैकिंग शुरू हो गयी। शाम को चाँद साहब गुणीदत्त को साथ लेकर एक रेस्तराँ में जा बैठा। उसने उसे पहले से ही बता दिया था कि उसे कुछ जरूरी बात करनी है गुणीदत्त का ख्याल था कि वह अपने भविष्य के बारे कोई बात करेगा।

फिर भी उसकी गम्भीरता नितान्त स्वाभाविक नहीं लगी।

चाँद साहब ने बगैर किसी प्रकार की भूमिका के, सीधे-सीधे ही सवाल किया, 'शिरीन के बारे में तुम लोगों ने क्या फैसला किया ?'

गुणीदत्त उसका यह सवाल सुनकर चकरा गया। तुम लोग सुनकर और विस्मित हुआ, पूछा 'फैसला क्या करना था ?'

चाँद साहब अपनी चीज की कीमत बढ़ाने की अदा से मुस्कराया 'उस तरह की एक लड़की अगर तुम्हारे दल में शामिल हो जाये तो तुम लोगों को फायदा नहीं होगा ?'

गुणीदत्त कोई जवाब न देकर उसकी तरफ देखता रहा। उस दिन वह अपनी इस उलझन का जिक्र तो नहीं कर रहा था ? उस रात उस लड़की के चेहरे और आंखों में भी उसने इसी समस्या की झलक देखी थी ?

'वैसे तुम खुद वहाँ हो, इसी वजह से मैं उसे दे रहा हूँ।' कहते हुए चाँद साहब गम्भीर हो आया, 'छह साल पहले, जिस दिन तुम्हें विलायत के लिए जहाज पर चढ़ाकर लौटा था, उसी दिन उसे तुम्हारे हाथों में सौंप देने का फैसला कर लिया था और उसे उसी तरह की तालीम भी देनी शुरू की। मैंने खुद भरपेट नहीं खाया, लेकिन पैसा खर्च करके उसे अंग्रेजी, बंगाला पढ़ाया।'

गुणीदत्त थोड़ी देर विमूढ़-सा सुनता रहा फिर अचकचा कर पूछा, 'उसे यह बात बतायी है ?'

'तुम्हारे आने के पहले बता चुका हूँ। जिस दिन तुम बम्बई आए, उससे एक रात पहले, उसे सब कुछ बता दिया था।'

गुणीदत्त को लड़की के रूखे व्यवहार की असली वजह समझ में आ गयी। पूछा, 'वह लड़की राजी है ?'

'नहीं !'

'फिर ?'

'फिर भी वह जानती है कि उसे तुम्हारे साथ ही जाना होगा। वह अपनी मुसीबत समझती है, और मैं भी अब ज्यादा दिनों तक उसकी रक्षा नहीं कर सकता; यह भी वह जानती है। अभी ही कितने आलतू-

फालतू लोग बोली-आवाजें कसते हैं—।'

किस तरह के आलतू-फालतू लोग और क्या बोली-आवाजें कसते हैं; गुणीदत्त की समझ में नहीं आया। उसने पूछा भी नहीं ! कहा, 'तो उसे अकेले भेजने की क्या जरूरत है ? उसे लेकर तुम भी मेरे साथ रहना।'

चाँद साहब थोड़ी देर को चुप हो रहा। शाम के धुंधलके में उसके चेहरे का साँवलापन और गहरा उठा। उसकी लाल दाढ़ी भी अस्त-व्यस्त दिख रही थी। उसकी तरफ देखते हुए गुणीदत्त ने दुबारा महसूस किया कि यह आदमी अब भीतर से खोखला हो रहा है, यानी ढ़ह रहा है।

चाँद साहब ने आहिस्ते-आहिस्ते सिर हिलाया। मानो कोई लोभनीय प्रस्ताव अस्वीकार कर रहा हो। कहा, 'किसी के सिर पर बोझ बनकर मुफ्त की रोटियाँ तोड़ना, मेरे लिए नामुमकिन है। ऐसा मैंने कभी नहीं किया है।'

गुणीदत्त का पारा चढ़ गया, गले की आवाज तेज हो उठी, 'लेकिन तुम यह भी तो जानते हो कि मेरा सिर तुम्हारे ही कारण ऊँचा हुआ है वर्ना मैं तो आज से बारह साल पहले ही कलकत्ते की धूल-मिट्टी में मिलकर गुम हो जाता।'

'नहीं, तुम गुम नहीं हो सकते थे। खुदा ताला ने तुम्हारी नसीब में सिर उठाकर चलना लिख दिया था। तुम्हारी जिन्दगी में अगर चाँद साहब न आता तो कोई और आता खुदा की जो मर्जी थी, वह होकर ही रहती।'

गुणीदत्त से कोई जवाब देते न बना। जाने कैसा एक अजीब-सा ख्याल उफन कर बाहर आने को छटपटा उठा।

थोड़ा ठहर कर उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा "लेकिन तुम्हारा काम कैसे चलेगा ? तुमने ही तो बताया था कि इधर तुम्हारा काम-काज भी बिल्कुल ठप्प है ?'

चाँद साहब थोड़ी देर चुप रहा। फिर बेहद धीर गम्भीर आवाज में कहा, 'तुम शिरीन को खरीद लो। शिरीन के लिए मैंने अभी तक जो

कुछ किया, वह सब सोच समझ कर तुम जो चाहो दे दो।'

गुणीदत्त मानो किसी जबर्दस्त आघात से गूगा हो रहा। उसके मुह से बोल तक नही फूटा, बस, मुंह-बाये भौंचक्का-सा चांद साहब की तरफ देखता रहा।

चांद साहब उसके चेहरे के चढ़ते-उतरते भावों को गौर से पढ़ता रहा, फिर दुबारा कहा, जादू का खेल दिखाने के लिए तुम लोग कितने-कितने रुपये खर्च करके, उसके लिए सामान खरीदते हो। शिरीन मेरे हाथों से गढ़ी और तराशी हुई सबसे खूबसूरत कारीगरी है। तुम्हारे खेलों में अगर वह भी साथ दे तो तुम लोगों की नसीब और चमक उठेगी। फिर मैं उसकी कीमत क्यों न मांगू? मुझे तो उसके बहुत अच्छे दाम मिल सकते हैं, लेकिन—

गुणीदत्त समझ नहीं पाया कि वह जो कुछ सुन रहा था। उस पर विश्वास करे या न करे। एक बार तो यही लगा कि यह आदमी बना-वटी गम्भीरता ओढ़कर ठिठोली कर रहा है। लेकिन वह ऐसा क्रूर मजाक भी कर सकता है ऐसा वह सोच भी नही सकता था। किसी जमाने मे लड़की का सगा बाप ही उसे ले जाने के लिए चांद साहब को बड़ी से बड़ी कीमत देने को राजी था। यह भी क्या उसकी मनगढन्त कहानी है? गुणीदत्त ने भी रुपया ऐंठने के मतलब से एक कहानी गढ़-कर सुना दी थी? यह सब सोचते हुए गुणीदत्त अपने को बहुत छोटा महसूस करता रहा।

चांद साहब भी कोई बहुत बड़ा साधु आदमी नही था। दूसरों को फरेब देकर, छल से आज तक सैंकड़ो रुपये ऐंठ चुका है। उसकी इन कहानियों से भी वह परिचित है। लेकिन उससे रुपये लेने के लिए इस सब की जरूरत नहीं थी। गुणीदत्त उसे मुंह मांगे रुपये यूं भी दे सकता है। उसकी जिन्दगी भर की जिम्मेदारी उठाने को भी राजी है। लेकिन वह इसके बजाय यह कैसा प्रस्ताव कर बैठा?

गुणीदत्त उसकी ओर खामोश आंखो से देखता रहा। चांद साहब उसके उत्तर के इन्तजार में था। लेकिन उसके चेहरे पर का कोई आभास नही। वह तो ढले हुए दिन की तरह उदास अ

हुआ दिख रहा था।

गुणीदत्त ने अचानक खिसियानी-सी हँसी हँसने की कोशिश की। फिर धीमी आवाज में कहा, 'तुम्हारी बेहतरीन चीज तो तुम्हारे पास ही है। ऊँची कीमत मिलेगी या नीची, यह तो उस आदमी की जरूरत पर निर्भर करता है, जो खरीदेगा।'

'नहीं, यह मजाक की बात नहीं!' चाँद साहब ने बेसब्री से तीखी आवाज में कहा, 'तुम हो इसलिए लड़की को तुम्हारे हाथों सौंप कर निश्चित हो सकता हूँ। सोच लूंगा कि खुदा की जो भी मर्जी है, वही होगी। तुम्हारी जगह कोई और होता, तो इसका डबल दाम पाकर भी मैं नहीं सौंप सकता था। खैर, ये सब बेकार की बातें छोड़ो। यह बताओ, कितना दोगे?'

गुणीदत्त ने कोई जवाब देने के पहले, आखिरी बार उसकी तरफ गौर से देखा। वाकई उसे कोई गलतफहमी नहीं हुई है। चाँद साहब की बातें कहीं दुख भी नहीं हैं। वह जो कुछ सुन रहा है, वह सब सच है। शिरीन को सचमुच उसके हाथों सौंप देने को राजी है। शायद इसी वजह से जहाज में जूली एण्डरसन को देखकर वह पहले दिन ही नाराज हो गया था और शायद यही वजह थी कि जिस आदमी ने कभी किसी को अपने घर की दहलीज पर पैर रखने की भी इजाजत नहीं दी, वही उसे होटल में न ठहरा कर सीधे अपने घर ले आया। आज चाँद साहब की बहुत-सी बातों और हाव-भाव का संकेत और अर्थ गुणीदत्त के सामने स्पष्ट हो उठा।

शिरीन के बदले चाँद साहब रुपया चाहता है। भारत की धरती पर गुणीदत्त के पैर रखने से पहले ही, चाँद साहब सारे प्लान बना चुका था।

लेकिन अचरज है! उसके मन की जो तस्वीर उसने इन हफ्तों में देखी थी, वह सब क्या झूठ थी? मुखौटा ही था?

गुणीदत्त ने शान्त भाव से कहा, 'ठीक है, तुम ही बताओ, तुम्हें कितना रुपया चाहिए?'

चाँद साहब सिर झुकाये हुए थोड़ी देर सोचता रहा! लगा वह मन

ही मन हिसाब लगा रहा था, फिर जवाब दिया, 'पाँच हजार से काम चल जायेगा।'

'सिर्फ पाँच हजार से क्या होगा ?'

चाँद साहब सकपका-गया। कहा, 'चाहे कुछ हो या न हो। बस, तुम मुझे पाँच हजार दे देना।

गुणीदत्त का देह-मन एक अनजानी यन्त्रणा से ऐंठने लगा। ऐसा क्यों हो रहा है ? इसकी वजह वह खुद भी नहीं समझ सका ! उसे लगा कि उसने कोई बेशकीमती चीज खो दी हो, जिसकी कीमत पाँच हजार से कई गुना अधिक थी। लेकिन इस तीखी यातनाओं के बावजूद चाँद साहब का चेहरा देखकर, उसमें वह चाह कर भी तीखा नहीं हो पाया।

गुणीदत्त के पास रुपये हैं। पाँच हजार रुपये के लिए उसे किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना होगा। उसके पास इससे कई गुना ज्यादा रुपये हैं। लेकिन उसने ठण्डा-सा जवाब दिया, 'अच्छी बात है। मिस्टर और मिसेज उड से बात करूँगा। कम्पनी के असली मालिक तो वही लोग हैं—।'

'लेकिन अगर वे लोग एतराज करें ? अगर उसे न रखना चाहें।'

'तब तुम क्या करने को कहते हो ?'

चाँद साहब स्थिर आँखों से उसकी ओर देखता रहा। उसका साँवला चेहरा जैसे लाल हो उठा, साथ ही उसकी रंगी हुई दाढ़ी भी ! वह दबी हुई आवाज में झुंझला उठा, 'मुझे उनकी पसन्द-नापसन्द से क्या लेना-देना है ? इस लड़की को तुम्हें खरीदना ही पड़ेगा और मुझे रुपये देना ही पड़ेगा। समझ ?'

गुणीदत्त अवाक् होकर उसकी ओर देखता रहा। फिर उठ खड़ा हुआ, 'समझा ! अब चलो।'

नहीं उसे अब और कुछ नहीं सोचना है। वह रुपया देगा। लेकिन शिरीन को अपने दल में शामिल करे या न करे यह बाद में सोचेगा। आज के धक्के से उसके दिमाग की सारी नसें जैसे शिथिल हो उठी हैं। आज वह इन पर और जोर नहीं डाल सकता।

उसने मन-ही-मन फैसला किया कि घर पहुँच कर ! आज रात को ही वह और कोई ठिकाना खोज लेना। अलवत्ता जिस होटल में जूली और और लोग हैं, उसमें नहीं जायेगा।

लेकिन इतने दिनों बाद जब जाने के सिर्फ दो-चार दिन रह गये हैं, उसका जगह बदलना, लोगों की आँखों में अजीब लगेगा। और कोई चाहे न भी पूछे, लेकिन जूली एण्डरसन मारे उत्सुकता के सवालों का जाल बिछा देगी।

घर लौटने तक उसने अपना इरादा बदल दिया। इसकी वजह उसे खुद भी नहीं मालूम। उसे लगा इस तरह जाना शायद गलत होगा।

आज उसकी निगाह में यह आदमी चाहे जो हो, लेकिन गुणीदत्त ने कभी उससे बहुत कुछ पाया भी था, इसे भी झुठलाया नहीं जा सकता। जब पहले कभी उसके गुण-दोषों का इन्साफ करने नहीं बैठा, तो आज भी नहीं करेगा।

शो खत्म होने के बाद उसके हाथों में काफी वक्त बच रहा था। उस शाम वह होटल की ओर नहीं गया। उस जरा-सी छोकरी में जो अहंकार है, उसे नजरअन्दाज करना असम्भव है। उस दिन वह थोड़ी फुर्सत में था। चाँद साहब ने शायद जान-बूझकर ही उसे मौका दिया था। शाम होते ही वह कहीं बाहर निकल गया।

गुणीदत्त बरामदे की रेलिंग के सहारे टिका हुआ, सिगरेट का धुँआ छोड़ता रहा। अचानक उसने पीछे मुड़कर देखा, वह लड़की तख्त पर बैठी एकटक उसकी तरफ देख रही है।

गुणीदत्त सिगरेट फेंककर कमरे में चला आया। शिरीन की आँखें उसी तरह उसके चेहरे पर टिकी रहीं। गुणीदत्त लगभग हाथ भर के फासले पर उसके करीब आ खड़ा हुआ। शिरीन तब भी उसी तरह एकटक देखती रही। गुणीदत्त को लगा शायद वह भी कुछ पूछना चाहती है। शायद कुछ बोलना भी चाहती है।

पहले शिरीन ने ही मुँह खोला, 'यहाँ से मुझे कब चलना होगा ?'

गुणीदत्त थोड़ी देर चुप रहा फिर कोई जवाब न देकर एक सवाल

किया; 'तुम चलना चाहती हो ?'

'साहबजी ने कहा है कि मुझे जाना ही पड़ेगा।'

'कहने दो। अगर तुम्हारा मन नही है तो तुम्हें जाने की जरूरत नही है।'

शिरीन को गुणीदत्त से इस तरह के उत्तर की उम्मीद नही थी। उसकी आँखो की घनी काली पुतलियाँ, उसके चेहरे पर से फिसलती हुई अचानक स्थिर हो गई। वह यह नही तय कर पायी कि उसकी बातों का विश्वास करे या न करे। उसने संक्षिप्त-सा जवाब दिया, 'मैं चलूँगी।' और उसने नजरें घुमा ली मानो मन में उमड़ती हुई हलचल को दबाने की कोशिश कर रही हो।

गुणीदत्त ने दोनों हथेलियाँ बढ़ाकर उसका चेहरा अपनी ओर घुमा लिया। शिरीन ने भी उसकी हथेलियों से छूटने की कोशिश नही की। गुणीदत्त ने उसका चेहरा अपनी हथेलियो में थाम लिया और थोड़ा आगे की ओर झुक गया। उसकी घनी, काली आँखो में खामोशी का अथाह सागर लहरा रहा था। लेकिन उस लड़की की उम्र देखकर हैरत होती है।

'तुम चलना चाहोगी, इसका मुझे यहाँ आने पर भी यकीन नही था। चाँद साहब ने यह बात मुझे आज बतायी है। लेकिन अगर तुम्हारा मन न हो, तो कोई तुम पर जबर्दस्ती नही करेगा। तुम यही रहो—'

गुणीदत्त ने देखा, उसकी हथेलियो पर टिके हुए चेहरे ने सिर हिलाकर संकेत मे कहा, वह यहाँ नही रहेगी, उसके साथ ही जायेगी।

'तुम्हें मुझसे इतनी नफरत क्यो है ?'

यह सवाल करते हुए गुणीदत्त को लगा, इसके उत्तर मे उसकी आँखों मे वही बेरुखी झलक उठेगी, लेकिन वह चुपचाप उसकी ओर देखती रही। उस सूरत से नफरत करना सही है या गलत, मानो यह सोच रही हो। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

गुणीदत्त को याद नही पड़ता कि उसने जिन्दगी में अपने लिए कभी किसी से कोई सवाल किया हो। लेकिन उस दिन वह अपने ही बारे मे सवाल कर बैठा। उस दिन उम्र का फर्क भी उसे बहुत बड़ा नही

लगा। लेकिन यह जरूर लगा कि वह लड़की इधर कई दिनों से सिर्फ उसी को लेकर भीतर-ही-भीतर सुलग रही है। वह सोच रही है कि वह काई डाकू है, जो उसे साहब जी के से छीन ले जाने को आया है। उस दिन गुणीदत्त को लगा, अगर वह उसके आगे अपने को निर्दोष न साबित न कर पाया तो पाप होगा।

उसके चेहरे पर से अपना हाथ हटाते हुए गुणीदत्त ने फिर अपनी बात दुहरायी, 'शिरीन, तुम यकीन मानो, आज शाम से पहले चाँद साहब के इस इरादे के बारे में मैं बिल्कुल नहीं जानता था। वैसे, चाँद साहब ने मुझे बहुत कुछ दिया है, कहूँ, यह जिन्दगी भी उन्हीं की दी हुई है अगर वह न होते तो आज शायद मैं जिन्दा भी न होता। मुझे विलायत भी उसी ने भेजा था। इसीलिए जब उसने इतनी ममता से अपने घर चलने को कहा तो मैं मना कैसे करता ? लेकिन उस समय उसके मन की बात नहीं जानता था। खैर, छोड़ो, यह बात ! अगर तुम न जाना चाहो, तो तुम्हें कोई जाने को विवश नहीं करेगा ? तुम्हारे साहब जी तुमसे कुछ नहीं कहेंगे, समझीं ?'

शिरीन पहले की तरह ही उसे एकटक देखती रही। उसकी बात वह कहाँ तक समझ पायी है। उसके चेहरे से यह अन्दाज लगा पाना मुश्किल था। लेकिन उसकी आँखों में जो अविश्वास का भाव था, वह मिट गया। मानो वह परख रही हो कि इस आदमी पर कहीं बहुत ज्यादती तो नहीं कर रही। फिर शान्त भाव से धीमी आवाज में जवाब दिया, 'साहब जी राजी नहीं होंगे। वे मेरे भले के लिए ही मुझे बेचना चाहते हैं।'

गुणीदत्त ने गले तक उमड़ता हुआ आक्रोश किसी तरह सम्हाल लिया। वह ताव खाकर बोलने ही जा रहा था—'हाँ-हाँ ! सचमुच, तुम्हारी भलाई के लिए ही, तुम्हें दान करना चाहता है। और उसके बदले रुपया चाहता है। दस हजार रुपया—।' लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। शायद कह नहीं पाया। चाँद साहब के खिलाफ कुछ कहते हुए, वह आदतन ही रुक गया।

कहा, 'इसके लिए तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं। साहब जी

जिसमें राजी हो जाए। वह इन्तजाम मैं कर दूंगा। तुम क्या चाहती हो, यह बताओ। यहीं रहोगी?'

शिरीन उसकी तरफ देखती रही। वह शायद किसी सोच मे पड़ी थी। गुणीदत्त उसका जवाब सुनने को उत्सुक हो उठा। उसे लगा वह जवाब ही शिरीन का आखिरी और सच जवाब होगा।

उसकी घनी-काली आँखें उसके चेहरे पर टिकी रही। लेकिन कोई जवाब नही दिया। पहले की तरह ही सिर हिलाकर जताया कि वह यहाँ नही रहेगी, उसके साथ जायेगी।

गुणीदत्त सारी रात उस विस्तर पर लेटे-लेटे सोचने में बिता दी, टुकड़े-टुकडे मे बिखरी हुई बातें। उसे इस लडकी के अचानक इतना करीब आने के पीछे भी कोई मतलब नजर नही आया। उसे अच्छा लगा। उसके खिलाफ सोचते हुए उसे अच्छा लगा। एक नयी तरह की उत्तेजना महसूस करता रहा। लेकिन साथ ही एक अजीब-सी बेचैनी भी उसके मन को मथती रही। उसने अपने भीतर झाँककर देखने की कोशिश की। इसे ही प्रेम या कामना तथा वासना तो नही कहते? अपने इस ख्याल पर उसे हँसी आने लगी। नही, उस लड़की को लेकर, उसके मन के बन्द दरवाजों पर कही कोई हलचल नही हुई। वह अपने मन को कुरेदता-परखता रहा। आखिर वह इतना उत्तेजित क्यों हो उठा है? वह मन ही मन, यह क्यों मना रहा है कि वह उसके साथ चले, उसी के साथ चले?

उसे अपने से ही जैसे इस बात का भी उत्तर मिल गया और वह उत्तर पाकर खुशी ही हुई। बहुत दिनों पहले की बात है जब वह कलकत्ते मे था, उसके एक परिचित ने उसे एक नग दिया था। वह हीरा-मोती के किस्म का कोई कीमती नग नही था। उसकी असली कीमत वह आज तक नही जान सका। सिर्फ, इतना भर सुना था कि वह एक जानदार नग है। आदमी को तबाह भी कर सकता है और तबाही से बचा भी सकता है। देखने मे बिल्कुल अनगढ़ मामूली-सा नग लेकिन गौर से देखो तो एक अजीब-सी चमक बरबस ही आँखो को चौंधिया देती। गुणीदत्त की हालत उन दिनों बेहद खस्ता थी

बीतने के साथ वह चैन की साँस लेते हुए सोचता, चलो, एक दिन और जी लिया। उसे यह नग सोहता है या नहीं, यह जांचने के लिये उसका दोस्त वह नग उसे दे गया। गुणीदत्त ने उसे सहेजकर, अपने तकिये के नीचे रख दिया और बीच-बीच में फुर्सत के समय, बेहद भक्ति से उलट-पुलटकर वह उसे निहारा करता। नग उसे सचमुच जोरदार लगने लगा। यूं वह अति साधारण-सा नग था, जो न तो देखने में सुन्दर था, न तो लोभनीय। लेकिन इस पत्थर से उसकी तकदीर का कोई खास रिश्ता जुड़ा हुआ है, यह ख्याल वह अपने मन से किसी तरह भी न निकाल सका। शायद इसीलिए वह नग उसे अनमोल लगने लगा था। जितने दिन वह नग उसके पास था। उसने बड़ी सावधानी और आग्रह से उसकी हिफाजत की।

उसके गुम जाने की भी एक अलग कहानी है। उसकी जिन्दगी में शिरीन का आना भी मानो उस नग की तरह ही है। एक खूबसूरत लड़की उसकी पार्टी में शामिल हो रही है, इस बात को लेकर उसके मन में कोई आकर्षण या आग्रह नहीं है। उसे यही लगता रहा कि इस लड़की के साथ उसके पेशे और नियति का रिश्ता जुड़ चुका है। अत: वह उसके लिए दुर्लभ और अनमोल है। शायद इसीलिए, उसके साथ चलने की बात को लेकर वह इतना उद्वेलित और बेचैन हो उठा है। सचमुच विधाता नामक पुरुष भी अद्‌भुत जादूगर है। गुणीदत्त मन की समूची एकाग्रता और भक्ति से उसकी मर्यादा की हिफाजत करेगा। गुणीदत्त शिरीन की रक्षा का अटूट संकल्प लिए हुए बिस्तर से उठ बैठा।

अगले दिन शिरीन और चांद साहब को लेकर वह मिस्टर और मिसेज उड से मिलने उनके होटल पहुँचा। लोगों को लगा, वे लोग उनसे मिलने आये होंगे। जेनिफर उड ने उनका काफी आदर-सत्कार किया। उन्हें चाय पिलाई। जूली एण्डरसन ने भी शिरीन को पास बुलाकर उससे घनिष्ठ होने की कोशिश की। लेकिन कोई बात नहीं बनी, क्योंकि सारी बातें एकतरफा ही होती रहीं। शिरीन उसकी हर बात के उत्तर में सिर हिलाती रही, जुबान से कुछ नहीं बोली। आधा

घण्टे बाद गुणीदत्त चांद साहब और उसकी बेटी को सीढियों तक पहुँचाकर लौट आया। शिरीन का अपनी पार्टी में शामिल करना ही उसे उचित लगा।

गुणीदत्त ने लौटकर मिसेज उड़ से कहा, 'बैठिए आपसे एक जरूरी काम है।' मिसेज उड़ उम्र में गुणीदत्त से बरस-दो-बरस ही बड़ी होंगी। औरत होते हुए भी उनमे पुरुष भाव अधिक मुखर था। सही मूड में हों तो काफी हँसमुख, नहीं तो खीजी और तनी हुई मुद्रा में! लेकिन गुणीदत्त के बात करते हुए उसे अपना मूड हर वक्त ठीक रखना पड़ता है जैसे पालतू जानवर को बड़े प्यार से दुलार-पुचकार कर रखते हैं, वह भी गुणीदत्त को हर तरह से खुश रखने की कोशिश करती है। बहुत खुश होने पर या किसी बात का जवाब न मिलने पर, वह उसकी नाक पकड़ लेती या गालों पर चुटकियां लेते हुए भृकुटियां चढ़ाकर उसकी ओर देखने लगतीं।

गुणीदत्त की बात सुनकर उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा, 'कहीं, तुम यह तो नहीं कहने जा रहे हो कि तुम्हें उस लड़की से मुहब्बत हो गयी है? वैसे वह कम्बख्त है भी बेहद खूबसूरत चीज! मुझे तो पक्का विश्वास हो चला है कि एक न एक दिन तुम उसे अपना दिल दे बैठोगे।'

मिस्टर उड़ ने हँसकर सहमति जतायी। जूली एण्डरसन ने एक सिगरेट जला ली। उसकी आखों में भी कौतुक झलक आया।

गुणीदत्त ने उड़ दम्पत्ति की ओर देखते हुए कहा, 'पांच हजार का एक बेयरर चेक लिख दो, मुझे जरूरत है। अभी ही कैश करना है।'

अचानक इतनी बड़ी रकम सुनकर मिस्टर उड़ से अधिक मिसेज उड़ चौंक उठी, 'क्यों, बात क्या है।'

'उस लड़की को अपनी यूनिट मे शामिल करना है। इसके लिए चांद साहब को रुपया देना होगा।'

उड़ दम्पती से कोई जवाब नहीं बन पड़ा। जूली एण्डरसन अब घूमकर बिलकुल सामने बैठ गयी और जोर-जोर से सिगरेट के कश खींचने लगी।

एडवर्ड उड़ ने ही जुबान खोली, लेकिन उसके लिए

एडवान्स में देने की क्या जरूरत है ?

चाँद साहब से मैं वायदा कर चुका हूँ ।

उड़ दम्पत्ति चुप हो रहे। ऐसे प्रस्ताव पर झल्लाहट स्वाभाविक थी, लेकिन गुणीदत्त के सामने उसे व्यक्त करने की हिम्मत नहीं पड़ी। जूली एण्डरसन होंठों में सिगरेट दवाए हुए निर्लिप्त बनी रही और कौतुकी निगाहों से मजा लेती रही ।

जेनिफर उड़ अचानक एक सादा-सा सवाल कर बैठी । 'अब साफ-साफ बताओ कि उस छोकरी को तुम अपने लिए लाना चाहते हो या यूनिट के लिए ?

'यूनिट के लिए ।'

यह विश्वास करने लायक बात तो नहीं थी। लेकिन निहायत अविश्वसनीय भी नहीं लगी, क्योंकि अगर वह उसे यूनिट में शामिल करने की बात न सोचता तो पांच हजार रुपया तो वह अपने पास से ही निकाल कर दे सकता है। उसके पास देने लायक दराज हाथ भी है।

मिसेज उड़ ने दुबारा शंका व्यक्त की 'मेरा ख्याल है, उस जैसी सुन्दर लड़की को अपनी यूनिट में शामिल न करना ही बेहतर है। वह टिकेगी नहीं ।'

मिसेज उड़ ने भी वेहद उत्साह से मिसेज उड़ का समर्थन करते हुए कहा, 'हां ऽ—हो सकता है कि बीच में और कोई वखेड़ा उठ खड़ा हो।'

'और फिर इतनी खूबसूरत लड़की पर भरोसा भी नहीं किया जा सकता।'

गुणीदत्त उनके इस मजाक का कोई जवाब न देकर उठ खड़ा हुआ, 'भविष्य की मुझे चिन्ता नहीं है। तुम लोग रुपया नहीं दोगे, तो मैं अपने पास से दे दूंगा। लेकिन उस स्थिति में तुम लोगों को सारी बातें नये सिरे से सोचनी पड़ेगी कि शी विल कम इन मैजिक विथ यू और विदाऊट यू।'

इतना कहकर वह कमरे से बाहर निकल गया। उसका संकेत इतना स्पष्ट था कि तीनों व्यक्ति अचकचा गये। उनसे कोई जवाब भी

नहीं देते बना।

गुणीदत्त बरामदे से निकलकर ग्राधी सीढ़ियां पार कर चुका था कि पीछे से किसी को ग्रावाज सुनकर रुक गया। 'हलो—।'

जूली एण्डरसन ने दबी ग्रावाज में झुंझलाकर कहा, 'पहले, ऊपर तो ग्राग्रो—।'

गुणीदत्त लौट ग्राया। जूली एण्डरसन उसे बगल वाले यानी ग्रपने कमरे में ले ग्रायी। होठों से हँसी बिखेरती हुई भी उसकी ग्रोर क्रुद्ध दृष्टि से देखकर कहा, 'उसकी मुहब्बत में इस कदर बेहोश हो उठे हो, क्यों ?'

'नहीं—।'

'यू लायर, तुम झूठे हो। तुम लन्दन से ही मुझ से झूठ बोलते ग्रा रहे हो।'

'मैंने क्या झूठ बोला है ?'

'तुमने तो मुझ से कहा था कि यहां कोई तुम्हारी राह नहीं देख रही है ग्रौर तुम भी किसी के इन्तजार में नहीं हो ?'

'मैंने सच कहा था—।'

'फिर यह सब क्या है ? विलायत से वापस ग्राने के शुरू दिन से ही तुम वहां क्यों पड़े हो ?'

गुणीदत्त थोड़ी देर उसकी ग्रोर खामोश ग्रांखों से देखता रहा, फिर उसके सवाल के बदले उसने भी एक सवाल किया, 'तुम क्या सोचती हो, उस लड़की की कितनी उम्र होगी ?'

'उम्र चाहे जो हो, लेकिन तुम मुझ से झूठ क्यों बोले ?'

'नहीं, मैंने झूठ नहीं कहा था। उस लड़की की उम्र इस वक्त साढ़े सत्रह है। मैं छह साल पहले जब विलायत के लिए रवाना हुग्रा था तो उसकी उम्र ग्यारह साढ़े ग्यारह साल रही होगी। तुम्हें क्या लगता है कि मैं उस जरा-सी बच्ची का इन्तजार कर रहा था ?'

जूली एण्डरसन सकपका गयी फिर जोर से हँस पड़ी, 'ग्रच्छा ऽ—। तो यह नया-नया इश्क है ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर उसकी यह बात भी काट दी

लड़की के बारे में जो कुछ जानता था, संक्षेप में बता गया। फिर उस नग की कहानी का जिक्र करते हुए बताया कि उस पत्थर के मिलने और खो जाने के संयोग में और उस लड़की के मिलने में उसे कोई खास फर्क नजर नहीं आया।

जूली थोड़ी देर चुप रही, फिर भावावेग के स्वर में बोली—'सुनो, तुम उस लड़की को ले आओ। अगर ये लोग उसे नहीं रखेंगे तो हम अपनी एक अलग यूनिट बना लेंगे। तुम तो अकेले ही सौ के बराबर हो।'

गुणीदत्त मुस्करा दिया। उसके होंठों पर एक निर्मम-सा सवाल उभर आया। अभी समय रहते साफ-साफ बात कर लेना बेहतर है। पूछा, 'मैं कैसा हूँ, यह बात छोड़ो। तुम अपना इरादा बताओ। तुम क्यों इतनी नाराज हो ?'

जूली ने निहायत भोलेपन से सीधी और सच्ची बात कह डाली, 'मुझे लगा था, तुम मुझसे झूठ बोले थे। तुम मेरी नजर में छोटे होते जा रहे थे, इसीलिए नाराज थी।' बिफरकर उसकी ओर टटोलती हुई निगाहों से देखते हुए कहा, 'तुम्हें मैं जितना पहचान चुकी हूँ। उससे जरा भी कम पहचानती तो अब तक तुम्हें बिना मारे न छोड़ती। लेकिन अन्त तक मैं अपने को सम्भाल नहीं पाऊंगी, यह सोचकर मैंने ऐसी कोशिश ही नहीं की। तुम्हारी साधना मैंने देखी है। तुम्हारे हर मूड़ को भी मैं पहचानती हूँ—हारीबल। भयंकर।' उसने आँखों में अचरज भरकर कहा। फिर अचानक बेहद प्यार से उमड़ कर कोमल हो आयी, 'गुणीडाटा, जानते हो, मैं क्या चाहती हूँ ? मैं चाहती हूँ, तुम बहोत-बहोऽत बड़े आदमी बन जाओ। इसके सिवा और मैं कुछ नहीं चाहती। तुमसे सच कह रही हूँ, मैं इसी बात पर तुमसे नाराज थी।'

ऐसी बातें सिर्फ जूली ही कर सकती है। गुणीदत्त ने बाहें-बढ़ाकर उसे अपने करीब खींच लिया। उसके चेहरे तक झुककर, वह शरारत से कुछ कहने ही जा रहा था कि बाहर से आती हुई आवाज ने उसे रोक दिया, 'जाओ, भाई, जरा रुक जाओ। पहले मुझे अपना काम खत्म कर लेने दो।' मिसेज उड़ दबे पांव कमरे में चली आयी !

जूली हँसकर अलग खड़ी हो गयी।

मिसेज उड ने चेक खोलकर गुणीदत्त की आँखों के आगे कर दिया, फिर उसे मोड़कर उसकी पाकेट में रखते हुए, उसकी तरफ बनावटी गुस्से से देखा, फिर एक झटके से उसके घुँघराले बालो को मुट्ठी में भरकर उसे अपनी ओर खींच लिया और कसकर चूम लिया। उसके बाद वह जैसे आयी थी, वैसे ही खट्-खट् करती हुई लौट गयी।

जूली एण्डरसन का हँसी के मारे बुरा हाल। गुणीदत्त भी हँस पड़ा।

जूली ने मीठी-सी चुटकी ली, 'सुनते हो, मुझे तो लगता है कि वह बुढ़िया किसी दिन उस बेचारे बुढ्ढे को छोड देगी और तुम्हे हथिया लेगी ?

मद्रास के लिए ट्रेन रवाना हो चुकी। इस बीच शिरीन से गुणीदत्त की चार-पाँच बातें ही हुई होगी ? उसके हर सवाल के जवाब में उसने हाँ या ना के अलावा और कोई बात नही की। जूली एण्डरसन ने भी उससे बातें करने की कोशिश की, लेकिन वह भी हारकर चुप हो गयी। मजाक-मजाक मे उसकी हथेलियों, गालो को रगड़-रगड़ कर देखती रही थी कि उसका यह गुलाबी रंग असली है या नकली, फिर गुणीदत्त से फुसफुसाकर कहा, 'देखो इत्ती जरा-सी छोकरी जब निगाह उठा कर देखती है न, तो'''गजब की जान-मारू निगाहे हैं।'''मैंने तो पहली बार में ही हथियार डाल दिया।'

मिसेज उड, गुणीदत्त, जूली और शिरीन। बाकी लोग बगल वाले कूपे मे। मिसेज उड तो गहरी नीद मे खर्राटे भरने लगी। जूली भी सो गयी। शिरीन खिड़की से टिकी हुई, मोम की पुतली बनी बैठी रही। गुणीदत्त मन-ही-मन यह अन्दाज लगाता रहा कि इस लड़की को सहज होने मे कितने दिन लग सकते हैं। उसे चाँद साहब की बुरी तरह याद आ रही थी।

उस दिन सुबह से शाम तक चाँद साहब बेहद खुश दिख

छूटने से कुछ देर पहले, उसके कान में फुसफुसाकर सिर्फ इतना भर
ा, 'तुम्हें कसम है, खुदा की, मेरी बेटी का ख्याल रखना।'

चाँद साहब ट्रेन छूटने से पहले जितनी देर वहाँ था, शिरीन एकटक
की तरफ देखती रही। उस दिन भी चाँद साहब बेहद खुश नजर
रहा था। लेकिन गुणीदत्त को मन-ही-मन जाने कैसा खटका लगा
हा। उसे लगा, चांद साहब की यह हँसी बिल्कुल बनावटी है। हो
कता है कि इस लड़की के बदले, हाथ फैलाकर रुपया लेने की बात वह
ुला नहीं पा रहा है।

गुणीदत्त अपनी सीट से नीचे उतर आया। उस समय रात करीब
एक बजा रही थी। उसे देखकर शिरीन ने अपने पैर समेट लिए और
बिल्कुल सीधी होकर बैठ गयी।

'क्यों, नींद नहीं आ रही है?'

शिरीन चुपचाप उसकी ओर देखती रही। उसने कोई जवाब नहीं
दिया। गुणीदत्त उसके पैतावें, पीठ टिकाकर बैठ गया। बेहद कोमल
आवाज में कहा, 'तुम उदास क्यों हो? हम लोग लौटकर फिर यहीं
आ रहे हैं।'

'कब तक?'

गुणीदत्त ने उत्साहित आवाज में कहा, 'अगर तुम कहोगी तो मद्रास
का शो खत्म होते ही हम चल देंगे। मैं तुम्हें लेकर प्लेन से वहाँ का एक
चक्कर लगा आऊँगा। वह जगह यहाँ से दूर ही कितनी है?'

शिरीन ने धीरे से सिर हिला दिया, यानी इसकी जरूरत नहीं है।

गुणीदत्त ने फिर कहा, 'अभी हम लोग कितने सारे नये-नये शहर
देखेंगे। देश छोड़, विदेश भी जायेंगे। तुम देखना, दो दिनों में ही
तुम्हारी सारी उदासी दूर हो जायेगी।'

लेकिन उसकी तरफ देखकर गुणीदत्त को लगा वह बच्चों की तरह
अपनी तरफ से बोले जा रहा है। लेकिन शिरीन की बड़ी-बड़ी काली
आँखें सिर्फ उसके चेहरे पर टिकी हुई हैं। उसकी ओर देखते हुए शिरीन
ने आहिस्ते से पूछा, 'एक बात बताओगे? तुमने साहब जी को कितने
रुपये दिये हैं?'

वह एकदम से कोई ऐसा सवाल कर बैठेगी, गुणीदत्त को उम्मीद नहीं थी। उसे फौरन कोई जवाब भी नहीं सूझ पड़ा। अपने को संयमित करते हुए उसने भी सवाल किया, 'तुमसे किसने कहा ?'

'साहब जी ने ही बताया था कि वे तुमसे रुपया लेंगे।'

गुणीदत्त अवाक् हो उठा। यह बात भी चाँद साहब ने उसे बता दी ? लेकिन उस आदमी ने इस लड़की को कितनी बड़ी चोट दी है, यह सोचकर वह शायद पहली बार उसके प्रति भयंकर क्रोध से जल उठा, 'तुम्हारे बदले उसने रुपये लिए हैं, यह जानकर भी, ऐसे आदमी के लिए तुम इतनी दु:खी क्यों हो ?'

पलक झपकते ही शिरीन की निगाहें किसी तीखे आक्रोश से जल उठी, लेकिन फिर शान्त हो गयी। कहा, 'साहब जी को जुए के अड्डे के ही किसी आदमी ने मेरे बदले बहुत से रुपये देने चाहे थे। रुपये लेकर वह घर भी आया था। साहब जी उसे डंडा उठाकर मारने दौड़े थे।'

शिरीन की बातें सुनकर गुणीदत्त अजीब उलझन में फँस गया। चाँद साहब की सारी बातें पहेली-सी जान पड़ीं।

'तुमने उन्हें कितने रुपये दिये हैं ?'

अब गुणीदत्त से चुपचाप नहीं रहा गया। उसे लगा, वह सचमुच ही जानना चाहती है। बताया 'पाँऽ--च हजार।'

वह थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोली, चुपचाप सोचती रही। शायद मन-ही-मन हिसाब लगा रही थी। फिर सिर हिलाकर कहा है, 'हूँ, इतने में उनका काम चल जायेगा।'

गुणीदत्त चौंक उठा। उसे याद आया कि चाँद साहब ने भी उसकी तरह ही मन-ही-मन हिसाब लगाकर कहा था, 'पाँच हजार दे दो, तो काम चल जायेगा।' उसने पूछा था, 'उतने रुपये से क्या होगा ?'

'वे रुपये खत्म होने के पहले ही साहबजी बहिश्त के दरवाजे पहुँच जायेंगे।'

गुणीदत्त विमूढ़ आँखों से उसकी तरफ देखता रहा। अचानक उसे जोर का धक्का लगा। पूछा, 'चाँद साहब को क्या हुआ है ?'

'उसके पेट में घाव हो गया है। डाक्टर ने कहा था कि अब वह ठीक नहीं होंगे। शराब छूने को मना किया है। कहा है, परहेज से रहे तो थोड़े दिन और निकाल ले जायेंगे।'

थोड़ा रुक कर उसने फिर अस्फुट आवाज में कहा, 'साहब जी से परहेज नहीं किया जाएगा। रुपया खत्म होने के पहले ही वह शराब पी-पीकर अपने को खत्म करने की कोशिश करेंगे।'

गुणीदत्त स्तब्ध होकर बैठा रहा।

शिरीन ने धीरे-धीरे फिर जुबान खोली, 'साहब जी ने मेरे लिए सिर्फ उतने ही रुपये लिये हैं। मेरी निगाहों में गलत साबित होने के लिए ही उन्होंने मुझसे कहा—तेरे जाने से मुझे रुपये मिलेंगे! मैं अच्छी तरह अपनी दवा-दारू करा पाऊँगा। अगर तू नहीं गयी, तो तेरा खून कर दूंगा। साहब जी ने रुपये के लिए नहीं, मेरे भले के लिए ही मुझे अपने पास से भगा दिया है। मुझे पता है, आज वह बिल्कुल गले तक शराब पीकर धुत् लौटे होंगे।'

कहीं से कोई आवाज नहीं आयी। गुणीदत्त उसकी तरफ देखता रहा। शिरीन ने आंखें मूंद लीं। उसकी ठुड्डी सीने तक झुक आयी। इस लडकी का पहले दिन से लेकर आज तक का सारा व्यवहार अब साफ-साफ समझ में आ गया।

लेकिन अब गुणीदत्त क्या कर सकता है? चेन खींचकर गाड़ी रुकवा दे? इस अँधेरे में एक सांस में पीछे की तरफ दौड़ता चला जाए? उसके सीने से लेकर गले तक उमड़ती बेचैनी जैसे बाहर आने को छटपटा उठी।

कुछ देर बाद ही गुणीदत्त चुपचाप उठकर अपने बिस्तर पर लौट आया और तकिए में मुंह गड़ाकर लेट गया। रात का घना अँधेरा चीरती हुई, ट्रेन आगे की तरफ दौड़ती रही और कलेजा तोड़ देनेवाली एक असहाय आवाज, उसकी विपरीत दिशा में भागती रही, शहर के एक मकान के एक कमरे की तरफ।

'माफ करना, दोस्त, मुझे माफ करना। अपने दोस्त को माफी देना।'

सात

कलकत्ते के स्टेज पर शो प्रस्तुत करने के पहले ही, "उनकी अभूतपूर्व सफलताओं की कहानियाँ अपनी सोलहों कलाओं सहित उड़ती-उड़ती वहाँ तक पहुँच चुकी थी।

जादूगर की विलक्षण करामातों की खबर अगर एक बार जादू प्रेमियों में पहुँचा दी जाए, तो वे बहुत-से सुराखों और कमजोरियों को अपनी कल्पना से भर लेते हैं। गुणीदत्त ने स्वदेश लौटते हुए जिस स्वार्थ-वश जहाज में, अखबारों के रिपोर्टर शुभेन्दु नन्दी से दोस्ती की थी, आज काम आयी। आज शहर के हर व्यक्ति के होठों पर उसी का नाम। अतः जितनी उम्मीद की गयी थी, लोगों में उससे कई गुना अधिक आग्रह दिखाई पड़ा।

मैंजिउड कम्पनी? चबूतरों पर अड्डा मारनेवाले लड़के और किसी कम्पनी का नाम भले ही न जानते हों, लेकिन वे भी आँख मूँदकर दावा करते थे, मैंजिउड कम्पनी दुनिया की सबसे मशहूर, भ्रमणशील मैजिक पार्टी है। उस कम्पनी के कर्त्ता-धर्त्ता यानी साहब और मेमसाहब अंग्रेज हैं। और उनकी कम्पनी का चीफ-जादूगर एक भारतीय है, हिन्दुस्तानी होने के नाते यह खबर चाहे बड़ी न हो, लेकिन बंगाल के लोग उनके आगमन पर इसलिए भी उत्तेजित हो उठे क्योंकि वह जादूगर उनकी ही जाति का शुद्ध बंगाली है। इसलिए गुणीदत्त को बिना देखे-सुने ही, यहाँ के अखबारों में उसके बारे में बढ़ा-चढ़ाकर चौगुनी तारीफें प्रकाशित हुईं। गुणीडाटा का शो-मैनशिप। और उसके चाल-चलन के बारे लोगों ने निःसंकोच अपनी राय व्यक्त की। गुणीडाटा का चेहरा?

अभी-अभी पिघल जायेगा, लेकिन भीतर से फौलाद ! गुणीदत्त की आँखें ? उसकी आँखें ही तो सब कुछ हैं।

किसी-किसी शहर की लड़कियाँ तो इस कदर डर गयीं कि उससे आँख मिल जाने के डर से सामने की कतार में बैठने से इन्कार कर गयीं। हो सकता है ये सब बेकार युवकों की मनगढ़न्त बातें हों। लेकिन इस तरह की थोड़ी-बहुत बातें, बेहद सहज और स्वाभाविक रूप में शहर के सीधे-सादे, साधारण लोगों के कानों तक किसी-न-किसी तरह पहुँच चुकी हैं।

कलकत्ते में गुणीदत्त के शो के लिए मंच, वातावरण और दर्शकों का मन यानी सारी भूमिका तैयार होने पर, वह कलकत्ते के मंच पर उतरा।

पहले हफ्ते की प्रतिक्रिया देखकर उड दम्पति ने अन्दाज लगा लिया कि कम-से-कम तीन महीने से पहले यहाँ से हिलना असम्भव है।

कलकत्ते में गुणीदत्त एक आदमी से खुद मिलने गया—रिपोर्टर शुभेन्दु नन्दी से। वह सीधे उसके घर भी नहीं गया। एडवर्ड उड के साथ उसके दफ्तर पहुँचा। इस शुभेन्दु नन्दी से उसकी दोस्ती जहाज में हुई थी और उस बात को अब पाँच महीने होने को आये। शुभेन्दु जब लौटकर आया तो इस विलक्षण जादूगर के बारे में घर और दफ्तर के लोगों को ढेर-ढेर किस्से सुनाता रहा और अब सचमुच ही एक बहुत बड़ा जानकार बंगाल के जादूगर मंच पर आ रहा है, इसकी घोषणा भी शायद उसीने सबसे पहले की थी। लेकिन पिछले कई महीनों से गुणी-डाटा ने इतना नाम कमा लिया था कि अब क्या उसे जहाज की व्यक्तिगत दोस्ती याद होगी ? इसका उसे विश्वास नहीं आया।

गुणीडाटा जब खुद उससे मिलसे आया तो उसका विश्वास चौगुना होकर लौट आया। उसे देखकर शुभेन्दु नन्दी थोड़ी देर खुशी के ज्वार में डूबता-उतरता रहा, फिर अपने सम्पादक-बन्धुओं से उसका परिचय कराया। उड साहब ने उन सब को सादर आमन्त्रित किया और गुणीदत्त के संकेत पर कई अतिरिक्त कार्ड शुभेन्दु नन्दी के हाथों में थमा दिये।

गुणीदत्त के जाने से पहले शुभेन्दु ने उससे किसी दिन घर आने का

आग्रह करते हुए उसके कान मे फुस-फुसाकर पूछा, 'तुम्हारी वो कैसी है ?'

गुणीदत्त उसका इशारा समझ गया। जूली एण्डरसन। हँसकर जवाब दिया, 'अच्छी है। लेकिन वह मेरी है यह तुमसे किसने कहा ?'

शुभेन्दु झेंप गया और हँसते हुए उसका हाथ दबा दिया। गुणीदत्त की उनकी दोस्ती का मन चाहा इनाम भी दिया। अखबारों के जरिए जितना सम्भव हो सका, उसका प्रचार कर डाला। सिर्फ इतना ही नहीं अगले दो हफ्तों मे उसने जहाज मे अपनी गुणीदत्त की घनिष्ठता का जिक्र करते हुए, उसके जादू की करामातो के बारे में अपने व्यक्तिगत संस्मरण भी प्रकाशित किये। पैसे देकर प्रकाशित विज्ञापनों से, इसकी कीमत सैकड़ों गुने अधिक थी।

उस दिन कोई शो नही था। हफ्ते मे एक दिन की छुट्टी रहती थी। शुरू के दो हफ्तो मे छुट्टी के दिन वह जूली और शिरीन को लेकर घूमने निकल गया था। उसकी पार्टी के खास-खास लोग एक ही जगह ठहरे थे।

सेण्ट्रल कलकत्ते के एक संभ्रान्त मुहल्ले मे अगल-बगल के फ्लैट किराये पर लेकर उनको आपस में जोड लिया गया था। इससे यह सुविधा हो गयी कि सब इकट्ठे भी थे और अपनी-अपनी जरूरत के अनुसार एकान्त भी पा सकते थे।

तीसरे हफ्ते मे जब छुट्टी पडी तो जूली किसी कारणवश बाहर नही आयी। अतः गुणीदत्त ने शिरीन से भी चलने को नही कहा। पिछले कई महीनों से वह इस लडकी का एकान्त सान्निध्य जी रहा है, जबकि उसके प्रति न कोई कर्त्तव्य-बोध महसूस करता है, न जरूरत। शिरीन की एकमात्र सहेली ले-देकर जूली ही है। उम्र मे काफी अन्तर होने के बावजूद जूली के मन मे इस लडकी के प्रति सचमुच ममता हो आयी है। गुणीदत्त ने गौर किया, जूली शिरीन की ममतालु माँ भी बन गयी है और सहेली भी ! उसने चैन की साँस ली।

उस दिन गुणीदत्त ने फैसला किया, वह गाडी या टैक्सी से नहीं, पैदल ही घूमने निकलेगा, जैसे पहले घूमा करता था। अगर जरूर

तो ट्राम-बस का सहारा ले लेगा। कभी वह दिन भी था, जब जरूरत के वक्त भी ट्राम बस पर चढ़ पाना सम्भव नहीं था। उसने आज बहुत दिनों बाद धोती-कुर्ता पहना। धोती-कुर्ता उसके पास था नहीं, उसने कलकत्ते में आकर खरीदा था। जूली उसको इस नये रूप में देखकर बिल्कुल मुग्ध हो गयी। उस समय शिरीन भी वहीं थी। अतः एक बहुत बड़ा लोभ उसे जबरन दबा जाना पड़ा।

उन कपड़ों में जादूगर गुणीडाटा को किसी ने नहीं पहचाना। उसे देखकर राह चलते लोगों की नजर में कोई कौतुहल भी नहीं जगा। लोगों ने उसे शो में देखा था या अखबारों में उसकी तस्वीर देखी है। किसी ने उसे नंगे सिर या धोती-कुर्ते में नहीं देखा था। गुणीदत्त थोड़ी देर इधर-उधर घूमता रहा। ताजी हवा में खुलकर सांस लेते हुए वह तरोताजा हो आया। ग्यारह साल पहले भी कलकत्ते की हवा में वही स्वाद था। उन दिनों वह भी इसी भीड़ का हिस्सा बना, बेकार, फटेहाल फकीर-सा दिन-दिन भर घूमा करता था। अचानक उसे हँसी आने लगी। उपर वाले के जादुई करिश्मे ने उसे फकीर से आज वजीर बना दिया है। या इसे चांद साहब के खामख्याली का परिणाम कहा जाये ?

वह उदास होने लगा। आज सुबह से कई बार वह चांद साहब को याद कर चुका है। इधर कई दिनों से उसकी याद आ रही है। उसने हर रोज खत लिखने का इरादा किया है। लेकिन कलकत्ते पहुँचने से पहले लिख ही नहीं पाया।

गुणीदत्त अपने ख्यालों में खोया हुआ, जाने कब तक चलता रहा, दो-ढाई मील का सफर तय कर चुका। जाने क्यों उसे थकान लग रही है। पहले तो पांच मील का सफर तय करके भी पता नहीं चलता था। लेकिन अभी शाम होने में देर है। इतनी जल्दी घर लौटकर वह क्या करेगा ? शिरीन को जादू के खेलों की प्रैक्टिस करायी जा सकती है। कम-से-कम इस काम को, वह बेहद निष्ठा से करता था। लेकिन आज शायद उसमें भी मन न लगे।

अचानक उसे शुभेन्दु नन्दी की याद आयी। उसके यहाँ जाने का वादा भी किया था। लेकिन उसने अपने आने की कोई सूचना नहीं दी

थी, अतः जाने वह घर पर होगा या नहीं। फिर भी एक बार जाने में क्या हर्ज है ? उसका घर तो यहीं-कहीं उत्तरी कलकत्ते में ही है : उसने रास्ते में खड़े होकर उसका पता याद करने की कोशिश की। यूँ भी उसकी याददाश्त काफी तेज है। कोई बात अगर एक बार उसके दिमाग में घर कर जाये तो उसे कभी भूल नहीं सकता। उसे उसका पता याद आ गया। आखिर क्यों न याद आए ? शहर कलकत्ते का ऐसा कौन-सा रास्ता है, जिधर से होकर सैकड़ों बार आया-गया न हो। वह शुभेन्दु का घर खोजता हुआ, जिस वक्त उसके घर पहुँचा उस समय शाम उतरने वाली थी।

उस समय गुणीदत्त कहाँ जानता था कि यह भी अदृष्ट का ही कोई चक्कर है, जिसने अपने पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार उसे इस दरवाजे पर ला खड़ा किया है।

दरवाजा भीतर से बन्द था। कोने के कमरे में रोशनी आ रही थी। उसने दरवाजा खटखटाने को हाथ बढ़ाया ही था कि एकबारगी ठिठक गया। कोने की खिड़की से कमरे का भीतरी हिस्सा दिखाई पड़ता था। गर्मी की शाम होने की वजह से पर्दे सरका दिये थे। गुणीदत्त ने तय किया कि वहीं से किसी को आवाज देकर पूछ ले कि यह शुभेन्दु नन्दी का मकान है या नहीं, और इस वक्त वह घर पर है या नहीं।

लेकिन वह काफी देर तक चुपचाप खड़ा रहा। उससे मुँह खोलकर कुछ पूछा भी नहीं गया। उस कमरे में कई लड़कियाँ नजर आ रही थीं, जो दूर से उसे कमउम्र लगीं। शायद कुछ पढ़ना-लिखना चल रहा था। एक लड़की के हाथ में किताब थी और उसका आधा चेहरा किताब में छुपा था। बाकी तीनों लड़कियाँ बेहद तन्मयता से कुछ लिख रही थीं।

गुणीदत्त वहाँ से हट गया। अव्वल तो खिड़की के सामने खड़े होकर रास्ते से आवाज लगाना अशोभन है, दूसरे जिस काम में वे लोग इतनी मगन हैं, उसमें नाहक बाधा पड़ेगी, तीसरे पढ़ाई-लिखाई के मामले में उसके मन में एक छिपी हुई कमजोरी है। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ रही है; वह अभाव भी उतना बड़ा होकर कचोटने लगता है।

वैसे पढ़ना-लिखना उसने अब भी नहीं छोड़ा है। उसकी उस एकान्त तन्मयता की एकमात्र गवाह शायद जूली एण्डरसन है। लेकिन वे किताबें सिर्फ जादू सम्बन्धी होती हैं—यानी जादू, विज्ञान-जादू कला, जादू-साहित्य आदि की किताबें।

वह थोड़ी देर वैसे ही चुप खड़ा रहा। फिर उसने धीरे से सांकल खटखटायी। भीतर से एक लड़की ने आकर दरवाजा खोला। उसने कोई सवाल नहीं पूछा। उसे रास्ते पर खड़ा देखकर बेहद शालीनता से स्वागत किया, 'आइए, भीतर आइए न।'

गुणीदत्त भीतर रोशनी में आ खड़ा हुआ। लेकिन उस लड़की के चेहरे पर नजर पड़ते ही गुणीदत्त को एक जोर का धक्का लगा—बेमतलब लेकिन बेहद जबर्दस्त। इसकी वजह वह नहीं जानता। उसे लगा वर्षों से जमे हुए आवेगों को, जैसे कोई भीतर तक कुरेद गया। उसके समूचे देह में अजीब-सी झुर-झुरी फैल गयी, लेकिन बाहर से वह उसी तरह स्तब्ध खड़ा रहा। वह औपचारिकता भी भूल गया। वह किससे मिलने आया है, यह भी उसे याद न रहा। उसके सामने जो लड़की खड़ी थी, उसकी उम्र तेईस साल के करीब होगी। वह सुन्दर भी नहीं थी, लेकिन चेहरे पर मिठास और आकर्षण था। सुडौल तराशे हुए नैन-नक्श। लेकिन गुणीदत्त की उन सब पर नजर भी नहीं पड़ी। उसके चेहरे की तरफ देखते हुए जिस चीज पर सबसे पहले निगाह पड़ती है, वह उसे ही देख रहा है और सिर्फ उतना ही देख रहा है। चेहरे पर चमकती हुई खामोश आँखों के नीचे और ठुड्डी के ऊपर वाली जगह।

लेकिन यह सब उस लड़की के समझने की बात नहीं थी। बल्कि मुमकिन था उसने सोलहों आने गलत समझा हो। सामने खड़े एक लम्बे-चौड़े, खूबसूरत से आदमी की चमकती हुई आँखों के आकस्मिक हमले से वह अचकचा गयी। अपनी अस्त-व्यस्त साड़ी का पल्ला ठीक करती हुई कुछ गम्भीरता से पूछा; 'आपको किससे मिलना है?'

गुणीदत्त की निष्पलक दृष्टि तब भी सामने वाली की ठुड्डी पर अटकी रही।

कोई जवाब न पाकर लड़की के माथे पर झुंझलाहट की रेखा स्पष्ट

हो उठी।

लड़की की झुंझलाहट और बढ़ गयी। वह अपेक्षाकृत तेज आवाज में अपना प्रश्न दुहराने ही वाली थी कि गुणीदत्त चौंक कर सजग हुआ वह थोड़ी देर पहले जहाँ था, वहीं लौट आया। उसने हड़बड़ाकर पूछा, 'शुभेन्दु नन्दी यहीं रहते हैं?'

'जी हाँ। लेकिन इस वक्त वह घर पर नहीं है।'

'कहाँ गये हैं।'

'यह मुझे नहीं मालूम।'

'लौटने में क्या देर होगी?'

'बता कर नहीं गये।'

'अच्छा, नमस्ते!' उसने हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कहा, 'आपको परेशान किया, इसके लिए—'

लड़की ने उत्तर में सिर हिला दिया लेकिन मुँह से एक शब्द भी नहीं कहा। जाहिर था कि वह उसके व्यवहार से खीज गयी है, और उसके जाने की प्रतीक्षा में है।

गुणीदत्त ने पीछे मुड़कर, दहलीज पार करते हुए पहली सीढ़ी पर कदम रखा ही था कि रुक गया।

'उनके आने पर, उनसे कुछ कहना होगा?'

प्लीज, आप एक बार अन्दर तो आइए।'

उसका यूं उत्तेजित स्वर सुनकर और उसके संकोचभरे आमन्त्रण में गुणीदत्त ने अजब-सा मिठास अनुभव किया। अभी जरा देर पहले ही उसने जो असहनीय हरकतें की थीं, उसे याद थीं। गुणीदत्त ने मन ही मन एक दबी-सी साँस ली, मानो मैजिशियन को धन्यवाद दिया हो। लेकिन अचानक ही उसके मन में एक और विचार भी कौंध गया कि हो सकता है, शुभेन्दु घर पर ही हो और उस लड़की ने मारे गुस्से के कह डाला हो कि वह घर पर नहीं है। वह कुछ पल को अजब-सी दुविधा में वहीं खड़ा रहा। कहा, 'अगर शुभेन्दु जी घर पर नहीं हैं, तो…'

'नहीं, नहीं, वह ऑफिस से तो लौट आए लेकिन थोड़ी देर पहले फिर बाहर निकल गये। रुकिये, मैं पता लगाने की कोशिश करती हूं। आप भीतर तो आइए। दरअसल मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी। आप प्लीज अन्दर आयें—'

ऐसी सहज लेकिन विनम्र अभ्यर्थना को ठुकराना मुश्किल ही नहीं अशोभन भी था। गुणीदत्त लौट आया और उसके पीछे-पीछे भीतर आ आ गया। अभी-अभी जो आदमी स्थान और समय का ज्ञान भूलकर, एक अपरिचित की तरह उसकी तरफ दीदे फाड़कर घूरता रहा था, वह ऐसी आत्मीयता के काबिल नहीं। यह बात गुणीदत्त ने इतनी गहराई से महसूस की, कि उसके लिए एकदम से सारा संकोच मिटाना मुश्किल हो गया। सहसा इस अभ्यर्थना का अर्थ भी उसकी समझ में आ गया, लेकिन वह किस बात की कोशिश करेगी, यह समझ में नहीं आया।

लड़की की उत्सुक निगाहें उसके चेहरे पर गड़ी रहीं। उस लड़की ने भी पहली बार उसकी तरफ ध्यान से देखा, जिसे सचमुच देखना कहते हैं। कहा, 'अखबारों में आपकी तस्वीरों की भरमार रहती है। लेकिन फिर भी मैं नहीं पहचान पायी। आइए, बैठिए! भइया ने लौटकर अगर यह सुना कि आप आये थे और मैंने उनका पता लगाने की कोशिश नहीं की तो मेरी खैर नहीं।'

बातें करते-करते वह उसे लेकर बगल के कमरे में चली गयी, जहाँ पढ़ाई-लिखाई चल रही थी। जिस कुर्सी पर पल-भर पहले वह

खुद बैठी थी, उसी की ओर इशारा करके कहा, 'बैठिए—।'

कमरे की बाकी तीनों लड़कियाँ भी कमउम्र की ही जान पड़ीं। बिना किसी भूमिका के उन्हें सीधे-सीधे विदा करने के उद्देश्य से कहा, 'आज यहीं तक रहने दो। बाकी कल पढ़ लेंगे। अच्छा?' यह कहते-कहते वह लड़की फिर बगल वाले कमरे में चली गयी और कोने की दिवाल की तरफ मुँह घुमाकर खड़ी हो गयी। उस दिवाल से लगी हुई एक छोटी-सी मेज पर टेलीफोन रखा था। वह रिसीवर उठाकर नम्बर डायल करने लगी। उसका आधा चेहरा अभी भी दिखाई पड़ रहा था और ठुड्डी का वह अंश भी—।

लड़कियाँ चुपचाप कमरे से निकल गयीं। मेज पर एक खुली हुई किताब उल्टी पड़ी थी। गुणीदत्त ने किताब उठाकर देखा—'डिडक्टिव लौजिक' की किताब थी। जहाँ तक उसका ख्याल था, यह किताब इण्टर में पढ़ाई जाती थी। यही किताब तो कल पढ़ने को कहा था उसने। लेकिन यह लड़की उम्र से तो आइ० ए० की स्टूडेण्ट नहीं लगती।

दूसरे कमरे से फोन पर किसी की बातचीत की धीमी-धीमी आवाज उसके कानों में पड़ी। गुणीदत्त के कान सजग हो उठे।

'कौन बोल रहा है? कहना, मैंजिशियन गुणीदत्त आये हुए हैं। हाँ-हाँ! गुणीदत्त···। तो फिर तू भी आ जा न, लेकिन सुन, अगर भइया न मिले तो तू भी आकर क्या करेगी?' (आवाज गंभीर हो उठी) 'देख, मुझसे बकवास करने की जरूरत नहीं। आना है तो फौरन आ जा।'

उसके बाद तो उसकी आवाज और धीमी हो गयी। अगर बहुत कोशिश न की जाये तो सुनाई भी न पड़े। गुणीदत्त ने वे बातें भी कान लगाकर सुनीं और गर्दन मोड़कर बोलने वाली की तरफ देखता रहा। उसकी नजरें ठुड्डी पर से जैसे हटना ही नहीं चाहती थीं। उसका फोन पर बतियाना भी गुणीदत्त को बेहद मधुर लगा। सबसे भला लगा उसका नाम—मैं, श्रावणी! वह शहरी लड़की नहीं है, शायद इसीलिए उसे अपने नाम का अर्थ भी मालूम होगा।

मैं श्रावणी हूँ—सावन की पूनम रात।

प्लीज, आप एक बार अन्दर तो आइए।'

उसका यूं उत्तेजित स्वर सुनकर और उसके संकोचभरे आमन्त्रण में गुणीदत्त ने अजब-सा मिठास अनुभव किया। अभी जरा देर पहले ही उसने जो असहनीय हरकतें की थीं, उसे याद थीं। गुणीदत्त ने मन ही मन एक दवी-सी साँस ली, मानो मैजिशियन को धन्यवाद दिया हो। लेकिन अचानक ही उसके मन में एक और विचार भी कौंध गया कि हो सकता है, शुभेन्दु घर पर ही हो और उस लड़की ने मारे गुस्से के कह डाला हो कि वह घर पर नहीं है। वह कुछ पल को अजव-सी दुविधा में वहीं खड़ा रहा। कहा, 'अगर शुभेन्दु जी घर पर नहीं हैं, तो...'

'नहीं, नहीं, वह ऑफिस से तो लौट आए लेकिन थोड़ी देर पहले फिर वाहर निकल गये। रुकिये, मैं पता लगाने की कोशिश करती हूँ। आप भीतर तो आइए। दरअसल मुझसे वहुत वड़ी गलती हो गयी। आप प्लीज अन्दर आयें—'

ऐसी सहज लेकिन विनम्र अभ्यर्थना को ठुकराना मुश्किल ही नहीं अशोभन भी था। गुणीदत्त लौट आया और उसके पीछे-पीछे भीतर आ आ गया। अभी-अभी जो आदमी स्थान और समय का ज्ञान भूलकर, एक अपरिचित की तरह उसकी तरफ दीदे फाड़कर घूरता रहा था, वह ऐसी आत्मीयता के काविल नहीं। यह वात गुणीदत्त ने इतनी गहराई से महसूस की, कि उसके लिए एकदम से सारा संकोच मिटाना मुश्किल हो गया। सहसा इस अभ्यर्थना का अर्थ भी उसकी समझ में आ गया, लेकिन वह किस वात की कोशिश करेगी, यह समझ में नहीं आया।

लड़की की उत्सुक निगाहें उसके चेहरे पर गड़ी रहीं। उस लड़की ने भी पहली वार उसकी तरफ ध्यान से देखा, जिसे सचमुच देखना कहते हैं। कहा, 'अखवारों में आपकी तस्वीरों की भरमार रहती है। लेकिन फिर भी मैं नहीं पहचान पायी। आइए, वैठिए! भइया ने लौटकर अगर यह सुना कि आप आये थे और मैंने उनका पता लगाने की कोशिश नहीं की तो मेरी खैर नहीं।'

वातें करते-करते वह उसे लेकर वगल के कमरे में चली गयी, जहाँ पढ़ाई-लिखाई चल रही थी। जिस कुर्सी पर पल-भर पहले वह

खुद बैठी थी, उसी की ओर इशारा करके कहा, 'बैठिए—।'

कमरे की बाकी तीनों लड़कियाँ भी कमउम्र की ही जान पड़ी। बिना किसी भूमिका के उन्हें सीधे-सीधे विदा करने के उद्देश्य से कहा, 'आज यहीं तक रहने दो। बाकी कल पढ़ लेंगे। अच्छा?' यह कहते-कहते वह लड़की फिर बगल वाले कमरे में चली गयी और कोने की दिवाल की तरफ मुँह घुमाकर खड़ी हो गयी। उस दिवाल से लगी हुई एक छोटी-सी मेज पर टेलीफोन रखा था। वह रिसीवर उठाकर नम्बर डायल करने लगी। उसका आधा चेहरा अभी भी दिखाई पड़ रहा था और ठुड्डी का वह अंश भी—।

लड़कियाँ चुपचाप कमरे से निकल गयीं। मेज पर एक खुली हुई किताब उल्टी पड़ी थी। गुणीदत्त ने किताब उठाकर देखा—'डिडक्टिव लौजिक' की किताब थी! जहाँ तक उसका ख्याल था, यह किताब इण्टर में पढ़ाई जाती थी। यही किताब तो कल पढ़ने को कहा था उसने। लेकिन यह लड़की उम्र से तो आइ० ए० की स्टुडेण्ट नहीं लगती।

दूसरे कमरे से फोन पर किसी की बातचीत की धीमी-धीमी आवाज उसके कानों में पड़ी। गुणीदत्त के कान सजग हो उठे।

'कौन बोल रहा है? कहना, मैजिशियन गुणीदत्त आये हुए हैं। हाँ-हाँ! गुणीदत्त...। तो फिर तू भी आ जा न, लेकिन सुन, अगर भइया न मिले तो तू भी आकर क्या करेगी?' (आवाज गंभीर हो उठी) 'देख, मुझसे बकवास करने की जरूरत नहीं। आना है तो फौरन आ जा।'

उसके बाद तो उसकी आवाज और धीमी हो गयी। अगर बहुत कोशिश न की जाये तो सुनाई भी न पड़े। गुणीदत्त ने वे बातें भी कान लगाकर सुनी और गर्दन मोड़कर बोलने वाली की तरफ देखता रहा। उसकी नजरें ठुड्डी पर से जैसे हटना ही नहीं चाहती थीं। उसका फोन पर बतियाना भी गुणीदत्त को बेहद मधुर लगा। सबसे भला लगा उसका नाम—मैं, श्रावणी! वह शहरी लड़का नहीं है, शायद इसीलिए उसे अपने नाम का अर्थ भी मालूम होगा।

मैं श्रावणी हूँ—सावन की प्रथम रात।

उसने टेलीफोन रख दिया और मुस्कराती हुई कमरे में आकर कहा, 'भइया आते होंगे, मेरी बहन भी आ रही है। आप अब इत्मीनान से बैठिये।' मैं पापाजी से भी कह आऊँ। लेकिन पापाजी तो अभी-अभी पूजा में बैठे हैं। खैर, पूजा में उन्हें बहुत देर नहीं लगेगी।'

गुणीदत्त ने हड़बड़ाकर कहा, 'आप परेशान न हों। आप भी बैठिये न, मैंने बेवक्त आकर, आप लोगों की पढ़ाई खराब की—।'

'नहीं-नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है।' वह भी कुछ दूर पर एक कुर्सी डाल बैठ गयी।

'आप शुभेन्दु की बहन हैं ?'

'जी—हाँ।'

उसके चेहरे की ओर वह लगातार देख भी नहीं सकता था, लेकिन देखे बिना रहा भी नहीं जा रहा था। उस किताब के बारे में वह अभी भी दुविधा में पड़ा हुआ था। पूछा, 'यह किताब आप पढ़ती हैं ?'

उस लड़की ने किताब पर एक निगाह डाली उसके चेहरे पर नारी-सुलभ संकोच उभर आया। जवाब दिया, 'जी नहीं, पढ़ाती हूँ।'

'आप पढ़ाती हैं। कहाँ ?'

'एक गर्ल्स कालेज में—मैं भी वहाँ अभी नयी-नयी गयी हूँ।' गुणीदत्त पर नजर पड़ते ही वह हँसते-हँसते अचानक ठिठक गयी। उसकी निगाहें फिर उसकी ठुड्डी पर जमी हुई थीं।

अचानक फोन की घण्टी बज उठी। वह फोन उठाने के लिए बगल के कमरे में चली गयी।

गुणीदत्त ने मुँह घुमा लिया। उसने मन-ही-मन एक बुरी-सी गाली दी। यह लड़की इतनी विद्वान है कि कालेज की प्रोफेसर हो सकती है। यह वह सोच भी न सकता था।

लेकिन अन्दर-ही-अन्दर उसे यह क्या हो रहा है ? हालाँकि शक्ल-सूरत में वह किसी से नहीं मिलती। फिर भी उसे देखते ही उसकी नसों में किन्हीं यादों का तूफान लहराने लगा। नहीं, उसने ऐसा कुछ नहीं किया, जिसके कारण उसे अपने दुश्मन के सामने भी कभी शर्मिन्दा होना पड़े। लेकिन अचानक यह कैसी छटपटाहट है ? मैं

श्रावणी है—। गुणीदत्त के कानों में अभी तक वह आवाज गूंज रही थी।

सावन की सरल गम्भीरता समेटे हुए उसकी ठुड्डी के कोर पर एक गोलाकार चाँद जल रहा था। उसकी तरफ देखते हुए सिर्फ गुणीदत्त ही नहीं, किसी की भी निगाह सबसे पहले उसी पर पड़ती थी।

श्रावणी हँसते हुए दुबारा लौट आयी। कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'आप बैठिये। भइया आ रहे हैं। आपको रोक रखने को कहा है और दल-बल समेत आ रहे हैं। मेरे बहन-बहनोई भी पहुँचने वाले हैं। ये सब आपके अनन्य भक्त हैं। आपको कम-से-कम एक-एक बार सबने देखा है। मिलनी तो दो-दो बार भइया के साथ आपका मैजिक देख आयी है।'

'आपने नहीं देखा?'

उसने एक बार भी नहीं देखा, इस शर्म से वह जैसे पानी-पानी हो गयी। कहा, 'जी, नहीं, मैं अभी तक नहीं देख पायी। लेकिन अब जल्दी ही देखूंगी।'

गुणीदत्त ने भी हँसकर कहा, 'चलिये, नहीं देखा तो कोई बहुत बड़ा गुनाह नहीं किया। ये सब खेल महज हाथ-सफाई की करामात है। देखने लायक हैं भी नहीं।'

'यह आप क्या कह रहे हैं? लोग-बाग आपके खेलों की कितनी तारीफें कर रहे हैं? दरअसल, मुझे रुक जाना पड़ा।' यानी घर की पहरेदारी के लिए यह त्याग उसे ही करना पड़ा।

गुणीदत्त ने उसके कहने का अर्थ समझ लिया। उसकी नजरें फिर उसकी ठुड्डी पर अटक गयीं। वह खुद महसूस कर रहा था कि उसकी आँखें फिर किसी अशोभन तन्मयता में डूबती जा रही हैं। पूछा, 'बताइए, कब आएंगी आप?'

बेहद प्रसिद्ध होने पर भी, इस सद्यः परिचित आदमी की यह दृष्टि श्रावणी को बेहद अजीब लग रही थी। थोड़ी देर पहले जब उसे जानती नहीं थी तो उसकी इस हरकत पर नाराज भी हो गयी थी। उसने गौर से देखा तो यह भी समझ में आ गया कि [illegible]

आँखें, बार-बार कहां आकर अटक जाती हैं। श्रावणी ने अपनी ठुड्डी पर धमकते हुए लाल तिल पर अक्सर औरों की दृष्टि भी महसूस की है। लेकिन इससे पहले उसने कभी ध्यान नहीं दिया। वैसे ध्यान देने लायक ऐसी कोई बात भी नहीं थी। लेकिन वह उसे बार-बार इस तरह क्यों घूर रहा है? गुणीदत्त की निगाह उसे अच्छी नहीं लगी। उसे शो के लिए आमन्त्रित करते हुए भी उसकी आँखें उसी तिल पर ही अटकी हुई थीं।

श्रावणी के मन में हल्की-सी उत्सुकता जाग उठी। कहा, 'हाँ, किसी दिन आऊँगी। आपका शो तो अभी काफी दिनों तक चलेगा न?'

गुणीदत्त ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं। कहा, 'किसी दिन पर बात मत टालिये। बताइये, किस दिन आएँगी? और लोगों ने तो देखने के बाद तारीफ की है। लेकिन कोई देखे बगैर यूं ही तारीफ करे, तो मेरे आत्म-सम्मान को चुभता है।'

श्रावणी अवाक् हो उठी। इतने जरा से परिचय में। इतने अधिकार भरे स्वर में आज तक किसी ने बात नहीं की थी। वैसे बात ठीक ढंग से कही जाए, तो सद्यःपरिचय का ख्याल नहीं आता और बुरा भी नहीं लगता।

श्रावणी की आँखें अचानक ही गुणीदत्त से जा मिलीं। उसने आँखें फेर लीं। गुणीदत्त की आँखें उसे बेहद सरल और स्वच्छ लगीं।

'मैंने ऐसी कौन-सी तारीफ कर दी?'

'यह सब तारीफ ही तो है—मुझे बुलाकर बैठाना, लड़कियों को छुट्टी दे देना, टेलीफोन से भइया को बुलाना, फिर सारा काम-काज छोड़कर खुद भी बैठी हैं—इतनी खातिर इसीलिए तो हो रही है, क्योंकि मैं मैजिशियन हूं। और मजा यह कि अभी तक आपने हमारे जादू ही नहीं देखे।'

श्रावणी को किसी अजनबी से इतनी जल्दी इतना घुल-मिल जाने की आदत नहीं है। लेकिन इन अन्तरंगता में जैसे उसका अपना कोई हाथ नहीं था। उसने हँसकर कहा, 'आपको तो खैर, मुझे पहले ही पहचान लेना चाहिए था। भइया से आपके बारे में इतनी-इतनी बातें

सुन चुकी हूँ। जब इंग्लैण्ड मे लौटकर आये थे, तो कई दिनों तक सिर्फ आपकी ही बातें करते रहे।' यह कहते हुए उसे लगा कि इस बहाने उसने उसकी तारीफ भी कर दी और अधिकार भरे स्वर की तरफ हल्का-सा सकेत करके उसे सजग भी कर दिया।

लेकिन गुणीदत्त ने यह पहली बार महसूस किया कि जहाज के उस अँधेरे डेक पर शुभेन्दु नन्दी ने उसे जूली के साथ उस स्थिति में न देखा होता तो कितना अच्छा होता ?

उसने एक बार घडी की ओर नजर डाली। सात बज चुके थे। पूछा 'आपके भइया कहाँ से आ रहे हैं ?'

'साउथ से। लेकिन उनके पहुँचने मे अब देर नही है।'

श्रावणी को अचानक जैसे कुछ याद आया। वह उठ ही रही थी कि गुणीदत्त ने फिर प्रश्न किया, 'आप बता रही थी कि आपकी बहन भी आ रही हैं। वह भी क्या साउथ में रहती हैं।'

'जी हाँ! उसकी ससुराल उसी तरफ है। भइया भी वही गये हैं।'—

श्रावणी यह कहते-कहते रुक गयी। सामनेवाले की दृष्टि उसके चेहरे पर और गहरी हो उठी थी। छोटी बहन की ससुराल की बात सुनकर गुणीदत्त के मन में एक अव्यक्त उत्सुकता भी जाग उठी। लगा इसी कौतूहल की वजह से यह प्रसंग छेडा गया है, वर्ना छोटी बहन को खबर देने की और कोई वजह नही थी।

श्रावणी उठ गयी, 'आप बैठिये, वे लोग बस, अब आने ही वाले हैं। मैं जरा चाय-पानी का इन्तजाम कर आऊँ।' यह कहते हुए उसने कमरे मे बाहर जाने को कदम बढाया। शायद वह यह कहने जा रही थी कि 'पापाजी की भी आवाजें आ रही हैं। उन्हें भी बुला लाऊँ—'

लेकिन उसे कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला। क्षण-भर में एक अजीब-सी घटना हो गयी। श्रावणी को लगा कि एक तरल-सी दृष्टि उसके अंग-प्रत्यंग को बेधकर बिल्कुल अन्दर तक समाती जा रही है। श्रावणी घबडाकर बाहर निकल आयी और पल-भर को ठिठक गयी। उसके तन-मन में एक अजीब-सी बेचैनी भर गयी। उसे पहली बार

लगा कि यह आदमी चाहे कितना भी मशहूर क्यों न हो, लेकिन भला नहीं है।

लेकिन जाने क्यों खुद श्रावणी को ही अपनी यह राय सही नहीं लगी। कॉलेज-यूनिवर्सिटी में पढ़ी हुई लड़की का पहली मुलाकात में ही, इस तरह का सम्मोहन, उसे अविश्वसनीय लगा। ऐसी बात तो सुनने या सोचने में भी हास्यास्पद लगी। काफी उधेड़-बुन के बाद श्रावणी इस निष्कर्ष पर पहुँची कि उसके यूं निरखने के पीछे जरूर कोई गहरी बात है, जिसे वह पकड़ नहीं पायी वर्ना दरवाजा खोलकर उसके सामने खड़े होते ही, वह इस तरह अचकचाया-सा उसकी ओर क्यों देखता ? और अगर उसका सन्देह सच भी होता तो उसकी दृष्टि में अपनी इस निर्लज्जता के लिए गोपन अपराध-बोध का आभास तो मिलता।

श्रावणी का हाथ अनजाने में ही अपनी ठुड्डी पर चला गया और वह काफी देर तक सिर्फ उतनी-सी जगह पर एकदम से चीर देनेवाली रोशनी की तेज धार महसूस करती रही।

बाहर टैक्सी रुकने की आवाज आयी। श्रावणी ने चैन की साँस ली। मिलनी भी आती होगी। अभी एकदम से आँधी-तूफान की तरह कमरे में घुसेगी और उसके आते ही इस आदमी की शराफत की भी जाँच हो जायेगी। श्रावणी को कोई खूबसूरत नहीं कह सकता था लेकिन मिलनी सचमुच ही बेहद खूबसूरत थी।

श्रावणी ने उसके आने का सारा वृत्तान्त पापाजी से भी कह सुनाया फिर चाय का इन्तजाम करने चल दी। इन सब में उसे करीब बीस मिनट लग गये। जब लौटी तो पापा जी बातों में व्यस्त दीखे। सबके चेहरे खिले हुए थे। उसे लगा पापा की बातों से समूचे कमरे में उत्सुकता और खुशी की लहर दौड़ गयी हो और उनके जाते ही बिखर जायेगी।

कुछ देर में घर के मालिक यानी पापा जी उठ गये। उन्हें अगले दिन सम्पादकीय-टिप्पणी लिखने के लिए कुछ कागज-पत्र उलटने-पलटने थे पापा के जाते ही शुभेन्दु उनकी जगह पर दखल जमाकर बैठ गया

उसने गद्‌गद् भाव से अपनी जेब में सिगरेट निकालते हुए कहा, 'तुम अपने आने की सूचना तो दे सकते थे। वैसे यह सरप्राइज खूब रही।' अचानक श्रावणी की तरफ देखकर पूछा, 'एइ, सच्ची बता, यह यहाँ एक घण्टे से बैठा है ?"

श्रावणी कोई जवाब न देकर धीमे से हँस दी।

अब मिलनी के बोलने की बारी थी। कहा, 'अरे, दिदिया आ इधर, आकर बैठ जा। तूने तो इनका खेल एक बार भी नहीं देखा। वैसे अभी घण्टे भर से तो अकेले ही इनकी करतूत देख रही थी।' फिर एक जोर का ठहाका लगाते, हुए मेहमान की तरफ मुड़कर कहा, 'सुनिये, जोर-जोर से हँसना-बोलना मेरी आदत है और जो मुँह में आता है बोल जाती हूँ। आप कुछ अन्यथा न लीजियेगा।'

गुणीदत्त भी हँस दिया। मिलनी उसे बेहद खुशमिजाज लड़की लगी। वैसे खूबसूरत भी कम नहीं थी। शायद उसी वजह से उसका ब्याह पहले ही गया होगा। कहा, 'नहीं, नहीं। हँसते हुए तो आप और भी खूबसूरत लगती हैं।'

मिलनी शरमा गयी। इस बार बाकी लोगों ने जोर से ठहाका लगाया।

शुभेन्दु के बगल में लजीला-सा, चश्मा पहने जो व्यक्ति बैठा था, श्रावणी के आने से पहले ही गुणीदत्त का उससे परिचय हो चुका था। वह शुभेन्दु के जीजा जी थे। कमरे में दो लड़के और थे, जो काफी हँसमुख थे। वे शुभेन्दु के छोटे भाई थे। दोनों की शक्ल मिलनी से मिलती-जुलती है। शुभेन्दु अपनी खुशी की रौ में जहाज के किस्से छेड़ बैठा। पहली मुलाकात में गुणीदत्त ने उसे कैसे बुद्धू बनाया था यह बताता रहा। बातों-बातों में यहाँ के शो की भी चर्चा छिड़ गयी।

मिलनी ने कहा, 'सच्ची, दिदिया! कैसा अनोखा खेल था। जब तक तू अपनी आँखों से नहीं देखेगी, तुझे भी विश्वास नहीं होगा। हम लोगों का तो मारे आश्चर्य के हार्टफेल होनेवाला था।' फिर मेहमान की तरफ घूमकर कहा, 'इतनी देर से आप यहाँ थे, मेरी दिदिया को कुछ दिखाया क्यों नहीं ? अच्छा! अच्छा! अब समझी, इस वक्त

दिखाने का आपके पास कोई सामान ही नहीं होगा।'

गुणीदत्त की निगाहें उसकी दीदी की तरफ घूम गयीं।

श्रावणी ने बहन को डाँटा, 'तू जरा चुप कर तो। तेरे लिए आकाश से जादू बरसेगा न?'

शुभेन्दु ने भी छोटी बहन का पक्ष लेते हुए कहा, 'तुझे नहीं पता, श्रावणी! अपना गुणीडाटा हवा में से भी जादू की चीजें निकाल सकता है।'

मेज पर चाय नाश्ता लग चुका था। इधर कमरे में लोग गुणी-डाटा से, जाल में लाल-नीले मछली पकड़ने की कहानी सुनने में मगन थे। हवा में यूं जाल फैला दिया गया, मानो पानी में फेंका गया हो और जितनी बार खींचा उतनी बार बड़ी-बड़ी आखों वाली जिन्दा मछलियाँ भी जाल में फँसकर ऊपर आयीं। उन्हें जब भरी हुई बरनी में डाला गया, तो वे फिर पंख फैलाकर तैरने लगीं।

श्रावणी ने ये सब करिश्मे देखे तो नहीं थे, लेकिन सुनकर ही अवाक् हो उठी। ऐसा अजूबा आखिर कैसे सम्भव है?

मिलनी ने मौका पाकर श्रावणी के कान में फुस-फुसाकर कहा, 'देखा, दिदिया इस भले आदमी की निगाह कहाँ हैं? कुछ और किया, दिदिया? मानो कहीं सुदूर में खोयी हो और तब भी उनमें एक निराली चमक है?

श्रावणी उसकी बात सुनकर भी अनसुनी कर गयी। इन निगाहों की तेजी आज सबसे अधिक उसे ही झेलनी पड़ी है। मिलनी की तुलना में वह कुछ नहीं थी, फिर भी मिलनी के आने के बाद भी गुणीदत्त की आँखें बिजली की तरह रह-रहकर उसके चेहरे पर ही कौंधती रहीं।

उसे विदा देने से पहले शुभेन्दु और मिलनी ने उससे दुबारा आने का वादा पक्का करा लिया। मिलनी ने दो-चार छोटे-मोटे जादू दिखाने की फर्मायश करते हुए कहा, 'आप तो भाई! इतने मशहूर जादूगर हैं कि घर में आपकी चरणधूलि पड़ने से, हम भी मशहूर हो गये। अब लोगों के सामने हम भी जरा रौब मारेंगे।'

गुणीदत्त मुस्कराते हुए उसकी बातें सुनता रहा, लेकिन उसकी आँखें

श्रावणी की हो ओर लगी रही। आते वक्त भी उसकी आँखों ने मानो सिर्फ श्रावणी से ही विदा माँगी हो और किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया हो, लेकिन श्रावणी की निगाहों से यह छुपा नहीं रहा। लेकिन वह कुछ बोली नहीं। चेहरे पर एक मुस्कान खिलाए हुए वह चुपचाप खड़ी रही। लेकिन मन-ही-मन बुरी तरह झुंझला उठी।

गुणीदत्त ने भी महसूस किया की शुरू से लेकर अन्त तक उसकी आँखें सिर्फ एक व्यक्ति के चेहरे के उतार-चढाव को पढ़ने मे लगी रही। उस लड़की ने उसे निहायत असभ्य समझा होगा। फिर भी जो खातिर-तवज्जोह में लगी रही। वह शायद वह इसीलिए कि वह उसके भाई का दोस्त था और काफी मशहूर आदमी था। लेकिन उस वक्त गुणीदत्त का जैसे अपने पर कोई वश नहीं था। उस पर निगाह पड़ते ही खोए हुए अतीत की गहराइयों से, यादो के बगूले उड़-उडकर आँखों के आगे तैरने लगे।

उस लड़की की खूबसूरती ने उसे मोह लिया था ?

लेकिन उसे खूबसूरत नहीं कहा जा सकता। वैसे वह स्मार्ट और आकर्षक जरूर है। उसकी देह भी भरी-भरी है। लेकिन गुणीदत्त को उसके रूप ने नहीं खींचा था। रूप तो उसके घर में ही था। अगर वह शिरीन को वहाँ सामने ला खडा करता, तो कमरे की तेज रोशनी भी उसके आगे फीकी पड़ जाती। श्रावणी जैसी खूबसूरत लड़कियाँ हमने एक नहीं, हजारो देखी हैं। लेकिन गुणीदत्त को खूबसूरती की तलाश नहीं है। उसका मन तो उम्र के सोलहवें साल से लेकर उन्नीसवें साल के घेरे मे रह गया था। श्रावणी को निहारने वाला गुणीदत्त नहीं था, कोई पागल था, जिसे वह नहीं जानती और जिसकी निरर्थक तलाश कभी समाप्त नहीं होगी। आज भी जब पिछले तूफान उसे झकझोरने लगते है, तो वह पागलो की तरह सिर पटकने लगता है। गुणीदत्त जैसे अपने से ही विवश था। वैसे, सच पूछा जाय तो इसे पागलपन के सिवा और क्या कहेंगे? आज उसकी हरकतों को कोई भी समझ पाता तो उसके दि

इलाज कराने के लिए सीधे किसी पागलखाने में भेज देता। शायद इसी लिए उसने अपना यह रोग सबसे छुपाये रखा और इसे अन्दर ही अन्दर पालता-पोसता रहा।

लेकिन श्रावणी को देखते ही उसे जाने क्या हुआ? मन की यह कैसी पागल दौड़ है? दोनों के चेहरे-मोहरे से, बात-चीत या आचरण में कहीं, कोई मेल भी नहीं। स्वर्ण का रंग तो दूधिया गोरा था। श्रावणी का हद-से-हद खुलता हुआ रंग। स्वर्ण तो दोहरे बदन की थी। जब कि यह लड़की अपने पहनावे के कारण इकहरे बदन की दिखती है। स्वर्ण की आँखें भी काफी बड़ी-बड़ी थीं और उसके बाल भी काफी घने और पीठ तक फैले हुए थे। श्रावणी की आँखें यद्यपि छोटी नहीं हैं तो बहुत बड़ी भी नहीं हैं और वह बाल खुले रहने की जगह, जूड़ा बनाती है। स्वर्ण तो दूसरी क्लास तक पढ़ी थी और शहरनुमा गाँव की निहायत गरीब घर की लड़की और दूसरी एम-एस० सी० पास, कॉलेज की प्रोफेसर है। लड़की ने तो गाँव का शायद मुँह भी न देखा हो। इसकी शक्ल-सूरत पर बौद्धिकता की चमक, हाव-भाव और बात-चीत में रुचि और सौजन्यता की छाप है।

लेकिन इतने सारे अन्तर के बावजूद उसे देखते ही गुणीदत्त के दिलो-दिमाग में अजीब-सी हलचल मच गयी और जिस बात को लेकर इतनी हलचल मची थी, उस मामले में भी कहीं, कोई मेल नहीं था। उस सन्दर्भ में भी दिन और रात का अन्तर था।

इस लड़की की तरफ नजर उठाते ही उसका सबसे पहले उसकी ठुड्डी के बीच सुर्ख लाल रंग के उस छोटे से तिल पर अटक गया था। उस नन्हें से तिल की आभा में उसके गाल भी हल्के गुलाबी लग रहे थे। उसकी ओर देखते हुए, वह नहीं, किसी की भी निगाह उसके चेहरे से पहले, उसकी ठुड्डी पर चमकते हुए लाल तिल पर अटक जाती।

···स्वर्ण की तरफ देखते हुए भी निगाह उसके चेहरे से पहले कहीं और अटक जाती थी। आँखों के बिल्कुल नीचे, नाक की बायीं तरफ उभरी हुई हड्डियों पर मानो किसी ने शायद एक काला-सा मस्सा रख दिया हो। मटर के दाने से बड़ा, गहरे काले रंग का। गोरे-गोरे चेहरे

पर चमकते हुए मसे का गहरा, काला रंग और प्रमुख हो उठा था। वह जितनी बार पलकें झपकाती, उसकी लम्बी, घनी पलकें उसे छू जाती।

गुणीदत्त अक्सर मंत्र-मुग्ध-सा उसकी तरफ देखा करता। नहीं, उस समय वह गुणीदत्त नहीं था, वह गुणमय किशोर उर्फ गुणमय यानी गुणी भर था। बचपन में उसने कई बार कोशिश की कि वह स्वर्ण के उस गहरे, काले मसे की ओर न देखकर, सीधे उसके चेहरे की ओर देखे। लेकिन सीधे उसके चेहरे की तरफ उससे देखा ही नहीं गया। उसने स्वर्ण पर जब भी निगाह डाली पहले वह काला-सा मसा फिर स्वर्ण···।

आज इस लड़की की तरफ भी उसने जितनी बार देखा, स्वर्ण की तरह ही उसकी ठुड्डी का सांवला तिल पहले दिखा फिर वह। उसने बहुत चाहा, कई बार कोशिश भी की लेकिन हर बार पहले वह निशान दिखा, फिर श्रावणी।

उसने जितनी बार श्रावणी की तरफ देखा उसकी आँखों के आगे से श्रावणी का चेहरा मिट गया। गुणीदत्त भी कहीं खो गया। उसके देह की पोर-पोर में एक उन्नीस वर्षीय बीहड़, गँवार लड़के की बौख-लाहट उभर आयी। समूचे तन-मन में एक अजीब-सी बेचैनी भर गयी और डरे हुए छौने-सा, उसका मन, उस सोलह वर्षीय लड़की की ओर भागता रहा जिसके करीब जाने में बाघ से सामना होने का खतरा हो और दूर रह कर प्राण खोने की आशंका हो।

गुणीदत्त राह चलते-चलते अचानक ठिठककर रुक गया। उसके मुँह में एक सर्द-सी आह निकल गयी। सारी पीठ में एक तीखी-सी जलन फैल गयी। जैसे किसी पुराने जख्म में मुट्ठी-भर आग नए सिरे से धधक उठी हो।

गुणीदत्त रास्ते में खड़े-खड़े ही कुर्ते के ऊपर से ही अपनी पीठ सहलाने लगा। उसे लगा, वह कहीं चल दे। दरअसल उसे किसी ऐसी चीज की जरूरत महसूस हुई, जिससे वह अपनी याददाश्त खो बैठे। लेकिन इस दुनिया में सचमुच ऐसी कोई चीज है क्या, जो आदमी के

दु:ख-दर्द को भुलावा दे सके।

अचानक उसे कुछ याद आया। उसने घड़ी की तरफ निगाह डाली। अभी तो साढ़े नौ भी नहीं बजे हैं। कलकत्ते जैसे शहर में यह कोई विशेष रात नहीं हुई थी। जब वह चाँद साहब के साथ इस शहर में रहता था, तो कभी-कभी रात के एक बज जाते थे, लेकिन उसे रात के आने-जाने की खबर ही नहीं हुई। आज दिन भर में कई बार वह चाँद साहब की याद कर चुका था। उसने एक टैक्सी रोकी और इस भीड़ भरे इलाके से दूर एक अँग्रेजी रेस्तरां के सामने उतर गया। बाहर से देखकर इस होटल की शान-शौकत का कोई आसानी से अन्दाज नहीं लगा सकता था। जालियों की डिजाइनों पर बना हुआ एक विशाल तिमंजिला मकान! यहाँ शहर का आधुनिक आभिजात्य वर्ग ही आता था।

यह रेस्तराँ बेहतरीन खाने और शुद्ध शराब के लिए काफी मशहूर था।

टैक्सी छोड़कर, गुणीदत्त ने अपने चारों तरफ देखा। सब कुछ पहले जैसा ही था। लेकिन उसे लग रहा है, इतने दिनों में जैसे एक पूरा का पूरा युग बीत गया। गुणीदत्त खड़े-खड़े पुरानी यादों को पहचानने की कोशिश करता रहा। कहीं, कुछ भी नही बदला था। उसे लगा, जैसे कुछेक दिनों के लिए उसने आना-जाना बन्द कर दिया था, बस। यह जगह उसके मन पर जैसे खुद गयी है। शाम के बाद, यहाँ जब भी आओ, रात हमेशा कुछ और गहरी लगती है। मेन गेट के दोनों तरफ बन्दूकधारी सन्तरी खड़े हैं। उनके सामने एक-फटे-से पायजामे के ऊपर हजारों सुराखों वाला कोट पहनकर एक-आध-बूढ़ा-सा आदमी वायलिन पर एक मीठी-सी धुन बजा रहा है। वह शायद इस उम्मीद में वहाँ खड़ा है कि खा-पीकर तृप्त होकर जाते समय, लोग शायद उसे भी पेट भरने को कुछ दे दें।

गुणीदत्त जानता है, कुछ लोग उसे कुछ दे भी जाते होंगे। अचानक उसकी निगाह आठ-दस हाथ की दूरी पर पत्थर के एक मोटे-ताजे घुड़सवार की ओर मुड़ गयी। वह चौंक उठा। हाँ, गुणीदत्त को याद है।

कोई-कोई उस पर भी तरस खाकर थोड़ा-बहुत दे जाता था। उस वक्त उस पत्थर के घुड़सवार के नीचे कोई नहीं था। लेकिन बहुत दिनों पहले इसी धुँधली-सी रोशनी में एक उन्नीस-बीस साल का लड़का, उस मूर्ति से टिका हुआ, बहुत रात गये तक बेहद कोमल उदास धुन में बाँसुरी बजाया करता था। दरअसल वह बाँसुरी नहीं बजाता था इस बहाने अपने प्राणों में उमड़ती हुई रुलाई को मानो स्वर देता था। कभी-कभार कोई राहगीर महज कौतूहलवश या झल्लाहट में या फिर शराब के नशे में या व्यंग्य से, उसके आगे सिक्के फेंकता हुआ गुजर जाता था।

गुणीदत्त ने गेट के दरबानों की ओर एक नजर डाली! वे कोई नये सन्तरी थे। पुराने सन्तरी अब बदल चुके थे। गुणीदत्त ने पर्स निकालकर वायलिन वादक को पाँच रुपये का एक नोट निकालकर देना चाहा, लेकिन जाने क्यों रुक गया और एक रुपये का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया। वह चाँद साहब नहीं है। उसने जो दिया महज दयावश दिया है।

गुणीदत्त रेस्तराँ के अन्दर चला आया। बैरे ने सलाम करते हुए उसका स्वागत किया। उसे किसी ने नहीं पहचाना। शायद अब कोई पहचानता भी नहीं। इतने सालों बाद उस लड़के को पहचान पाना आसान भी नहीं था। इसके अलावा बहुत दिनों पहले जो लड़का यहाँ आया करता था और आज जो आया है वह क्या एक ही व्यक्ति है? आज तो गुणीडाटा आया है, गुणमय नहीं! गुणीदत्त को इस गुणीडाटा पर हँसी आने लगी। फोन पर श्रावणी ने मिलनी से कहा था, 'भई, यह डाटा—तरकारी मुझसे नहीं बोला जाता।' श्रावणी जिसकी ठुड्डी पर एक सुर्ख तिल है। स्वर्ण...जिसकी पलकों के नीचे एक काला मसा है।

गुणीदत्त एक केबिन में जा बैठा। आर्डर ले जाने के थोड़ी देर बाद ही, बैरा सब सामान सजा गया। सिर्फ एक खाली गिलास, एक बोतल और प्लेट में कोई नमकीन-सी।

गुणीदत्त ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की। वहाँ से वायलिन

की आवाज सुनायी नहीं दे रही थी। छोड़ो, अब वह पिछली बातें नहीं सोचेगा। पहले की कोई बात याद नहीं करेगा लेकिन वह किसके बारे में सोचे ?

लेकिन आखिर वह किसके बारे में सोचे ? 'मैं श्रावणी हूँ'—कानों में अभी तक घंटियाँ बज रही थीं। श्रावणी। नहीं, श्रावणी से भी पहले वह लाल तिल और उसके आस-पास का हल्का गुलाबी रंग।···

नहीं, नहीं, यह श्रावणी नहीं थी, शायद स्वर्ण थी और उसके चेहरे पर—पलकों के नीचे उभरी हुई हड्डी पर, लाल-लाल तिल नहीं, मटर के दाने के बराबर एक काला-सा मसा था। गुणीदत्त अपने में डूबा हुआ गुणमय को नहीं, गुणी को देख रहा था और उसके साथ स्वर्ण को भी······!

आठ

···कभी-कभी वह एक साल का लड़का साक्षात् डाकू की तरह उस मसे को नाखून से इस बुरी तरह खरोंचता था कि करीब-करीब खून ही निकाल देता। नौ साल की बिचारी स्वर्ण, उसकी मार के डर से जितनी देर सह पाती थी, होंठ दबाए हुए दर्द सहती रहती और जब नहीं सह पाती तो चीखकर रो देती थी। दर्द से तिलमिलाते हुए कचकचाकर दाँत काट लेती। लेकिन गुणीदत्त के मन में तिल के बारे में भयंकर कौतूहल समा गया था। उसे हमेशा यह लगा कि उस तिल को उखाड़कर मिटाया जा सकता है।

उसके ताऊ जी की कचहरी में बहुत लोगों का आना-जाना था। उसके ताऊ कचहरी के मुन्शी थे। स्वर्ण के बप्पा ही उनका कागज-पत्तर सम्भालते। उसके यहाँ दिन-दिन भर काम में डूबे रहते। उस समय भी गुणीदत्त चाहे जितना नासमझ हो, लेकिन इतना तो समझ गया था कि स्वर्ण के बप्पा उसके ताऊ के यहाँ नौकरी करते हैं। इसलिए ताऊ जो रौब अपने कर्मचारियों पर दिखाते, गुणीदत्त उसे ज्यों-का-त्यों स्वर्ण पर लागू कर देता।

अपनी माँ की सूरत तो उसने सपने में भी नहीं देखी। सुना था, उसके जन्म के दो माह बाद ही वह उसे छोड़कर भगवान के घर चली गयी। गुणीदत्त ही जैसे अपनी माँ की मृत्यु का कारण रहा हो। बाबू जी के नाम पर उसकी आँखों के आगे एक व्यक्ति का चेहरा स्पष्ट हो उठता है। जब वह पाँच साल का था, तो वे दुबारा ब्याह करने गये थे, राह में साँप ने काट खाया और वे उसी जगह मर गये। गुणीदत्त को यह सब बातें पहले मालूम नहीं थी। उसने तो कभी-कभी दादी को ही, सिर पीटकर रोते हुए ये सब कहानियाँ, सस्वर दुहराते हुए सुना था। अपनों के नाम पर, जब से उसने होश सम्भाला है। अपने ताऊ, दादी और विधवा बुआ को ही देखता आया।

बचपन में उसने यम देवता की बहुत सारी डरावनी कहानियाँ सुनी थीं। अत यम देवता की कल्पना करते हुए उसमें हमेशा अपने ताऊ का भयानक चेहरा आ खड़ा होता। ताऊ की तनी हुई भौंहें देखकर मारे डर के उसका खून पानी की तरह जमने लगता। अत मारने-पीटने की खास जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन कभी ताऊ के हाथ पड जाता तो वे मारते-मारते अधमरा कर डालते।

ताऊ के हाथों में पिटते हुए उसे छुटकारा दिलवाने को दादी या बुआ ही हमेशा आगे आतीं। वैसे उसकी ताई दादी और बुआ से डरती थी। अतः उसके खिलाफ बहुत कम शिकायतें करती थी। फिर भी कभी-कभार उस पर ताऊ के दो-एक हाथ पड़ ही जाते थे, वह भी मुहल्ले वालों के कारण। वे लोग ही बीच-बीच में जाने क्या लगाई-बुझाई कर जाते। वह भी ताऊ से जानबख्शी का वचन लेकर या ि

अपनी सुरक्षा के ख्याल से ! लेकिन इतनी-सी हिम्मत भी वह लोग बहुत मुश्किल से जुटा पाते थे।

किसी कसूर पर जब ताऊ उसे आवाज लगाते तो दादी पहले से ही उसे अपनी शरण में छुपा लेती। उसके कसूर भी तो अनगिनत थे। दरअसल वह जो कुछ करता, वह दूसरों की निगाह में अपराध बन जाता। ताऊ का गुस्सा शान्त करने के लिए दादी ही कमरा बन्द करके उसे बेहतहाशा पीटने का नाटक करती और चौगुने गुस्से से डाँटती-धमकाती, मानों मार ही डालेगी। गुणीदत्त उस बुढ़िया से डरता थोड़े था ! वह चाहता तो उसे धक्का देकर पलक झपकते ही भाग खड़ा होता। लेकिन दादी की इस मार-पीट और धमकियों का मतलब वह खुद भी समझता था। इसलिए दादी के हाथों से मार खाते हुए भी वह उनसे कसकर चिपटा रहता। ताऊ ने बहुत चाहा कि वह किसी तरह प्रवेशिका की परीक्षा पास कर ले। तो उसे अपने साथ कोर्ट ले जाया करे, लेकिन पढ़ाई-लिखाई के मामले में गुणीदत्त ने उनकी सारी उम्मीदें खाक में मिला दीं।

इस शरारती लड़के के मन में एक और खुराफात भी पल रही है, इस बात की खबर किसी की नहीं थी। कम-से-कम घर के बड़े-बूढ़ों के कानों तक यह बात नहीं पहुँची। उसके चेहरे से शरारत जैसे टपकती रहती थी। वह अगर चुपचाप भी बैठा होता, तो लोगों को लगता कि वह जरूर कोई गुल खिलाकर आया है। या फिर उसके दिमाग में किसी नयी खुराफात की योजना घूम रही है।

कई बार अपनी तरफ से बिल्कुल शान्त, गम्भीर बैठे रहने पर भी उसके ताऊ उसका कान उमेठ कर खींचते हुए ले गये हैं।

इस शरारती बच्चे के मन के किसी कोने में परी-कथाओं क काल्पनिक साम्राज्य पनपने लगा था। उन दिनों वह हर वक्त कल्पन के घोड़े पर सवार रहता। मन-ही-मन बहुत से असम्भव को सम्भ कर दिखाने के जोड़-तोड़ में डूबा रहता। अपनी कल्पना की दुनिया वह बहादुरी के साजो-सामान से लैस होकर जाने कितनी बार ताऊ व मार गिराया। उस अलौकिक जगत में वह और भी जाने कितनी अ

होनी बातें, अलौकिक कांड किया करता। इन सबका कोई लेखा-जोखा उसके पास नहीं था। उस काल्पनिक जगत में उस जरा-से लड़के का दिमाग आसमान छूने लगता। वहाँ उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं था। वह जो भी चाहता कर दिखाता।

एक बार उसके घर के पास ही एक चोर पकड़ा गया। नौसिखुआ चोर! उम्र भी बहुत कम थी। बहुत सारे लोगों ने उसे मारते-मारते बेदम कर डाला। वैसे गुणीदत्त भी मारने-पीटने या हाथा-पाई में कम उस्ताद नहीं था। अपने प्रिय शिष्य जीवन पर तो वह बेखटके हाथ चला देता था और उस रुग्रंटी लड़की स्वर्ण का भी, दिन भर में कम-से-कम एक-दो बार माथे पर उसकी उँगलियों का गट्टा खाकर हाऊ-हाऊ करके रो देने का कार्यक्रम निश्चित था। कभी-कभी जब वह ऊँची तान पर रोने का राग अलापने लगती तो बिचारा यह वीर योद्धा ताऊ के मार के डर से सिर पर पैर रखकर भाग खड़े होने को विवश हो जाता। लेकिन उस दिन उस बिचारे चोर को इतनी बुरी तरह पिटते देखकर वह मन-ही-मन जितना नाराज हुआ था, उतना ही दुःखी भी। चोरी का अपराध इतना बड़ा नहीं होता—यह बात किसी ने भी नहीं सोची। चोरी तो वह भी करता है। दूसरों के पेड़ों के फल चुराने से लेकर, दादी की पिटारी से पैसा निकालने तक। अतः चोरी करना ऐसा कौन-सा भयंकर अपराध हो गया? दरअसल अपराध तो इन लोगों का है, जो उसे इस बुरी तरह पीट रहे हैं।

लेकिन जो असली कसूरवार है, उसे कैसे सजा दे पायेगा? वह कुछ बोलने जायेगा तो लोग उसे भी दो हाथ जमा देंगे। लेकिन वह भी उन्हें सजा दिये बिना चैन से नहीं बैठ सकता था। सारे दिन मुट्ठी बाँधकर गुस्से मे उबलता रहा। फिर अचानक ही राजू की याद आते ही मारे खुशी के वह उछल पड़ा। राजू ने संन्यासी जी के बहुत सारे मन्तर सुने थे। उसे कंठस्थ भी हैं। राजू उसके घर का बच्चा-सा नौकर था। गुणीदत्त को जादू की इस अलौकिक दुनिया का पता शायद उसी ने सबसे पहले दिया था। बहुत-सी अजीबोगरीब कहानियाँ भी सुनायी थीं—जादू-मन्तर की कहानियाँ! जादू खेलों की कहानियाँ!!

अपनी सुरक्षा के ख्याल से ! लेकिन इतनी-सी हिम्मत भी वह लोग बहुत मुश्किल से जुटा पाते थे।

किसी कसूर पर जब ताऊ उसे आवाज लगाते तो दादी पहले से ही उसे अपनी शरण में छुपा लेती। उसके कसूर भी तो अनगिनत थे। दरअसल वह जो कुछ करता, वह दूसरों की निगाह में अपराध बन जाता। ताऊ का गुस्सा शान्त करने के लिए दादी ही कमरा बन्द करके उसे बेहतहाशा पीटने का नाटक करती और चौगुने गुस्से से डाँटती-धमकाती, मानों मार ही डालेगी। गुणीदत्त उस बुढ़िया से डरता थोड़े था ! वह चाहता तो उसे धक्का देकर पलक झपकते ही भाग खड़ा होता। लेकिन दादी की इस मार-पीट और धमकियों का मतलब वह खुद भी समझता था। इसलिए दादी के हाथों से मार खाते हुए भी वह उनसे कसकर चिपटा रहता। ताऊ ने बहुत चाहा कि वह किसी तरह प्रवेशिका की परीक्षा पास कर ले। तो उसे अपने साथ कोर्ट ले जाया करे, लेकिन पढ़ाई-लिखाई के मामले में गुणीदत्त ने उनकी सारी उम्मीदें खाक में मिला दीं।

इस शरारती लड़के के मन में एक और खुराफात भी पल रही है, इस बात की खबर किसी को नहीं थी। कम-से-कम घर के बड़े-बूढ़ों के कानों तक यह बात नहीं पहुँची। उसके चेहरे से शरारत जैसे टपकती रहती थी। वह अगर चुपचाप भी बैठा होता, तो लोगों को लगता कि वह जरूर कोई गुल खिलाकर आया है। या फिर उसके दिमाग में किसी नयी खुराफात की योजना घूम रही है।

कई बार अपनी तरफ से बिल्कुल शान्त, गम्भीर बैठे रहने पर भी उसके ताऊ उसका कान उमेठ कर खींचते हुए ले गये हैं।

इस शरारती बच्चे के मन के किसी कोने में परी-कथाओं का काल्पनिक साम्राज्य पनपने लगा था। उन दिनों वह हर वक्त कल्पना के घोड़े पर सवार रहता। मन-ही-मन बहुत से असम्भव को सम्भव कर दिखाने के जोड़-तोड़ में डूबा रहता। अपनी कल्पना की दुनिया में वह बहादुरी के साजो-सामान से लैस होकर जाने कितनी बार ताऊ को मार गिराया। उस अलौकिक जगत में वह और भी जाने कितनी अन-

होनी बातें, अलौकिक काड किया करता। इन सबका कोई लेखा-जोखा उसके पास नही था। उस काल्पनिक जगत में उस जरा-से लडके का दिमाग आसमान छूने लगता। वहाँ उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं था। वह जो भी चाहता कर दिखाता।

एक बार उसके घर के पास ही एक चोर पकड़ा गया। नौसिखुआ चोर! उम्र भी बहुत कम थी। बहुत सारे लोगों ने उसे मारते-मारते बेदम कर डाला। वैसे गुणीदत्त भी मारने-पीटने या हाथा-पाई में कम उस्ताद नही था। अपने प्रिय शिष्य जीवन पर तो वह बेखटके हाथ चला देता था और उस रुग्रंटी लडकी स्वर्ण का भी, दिन भर में कम-से-कम एक-दो बार माथे पर उसकी उँगलियों का गट्टा खाकर हाऊ-हाऊ करके रो देने का कार्यक्रम निश्चित था। कभी-कभी जब वह ऊँची तान पर रोने का राग अलापने लगती तो विचारा यह वीर योद्धा ताऊ के मार के डर से सिर पर पैर रखकर भाग खड़े होने को विवश हो जाता। लेकिन उस दिन उस बिचारे चोर को इतनी बुरी तरह पिटते देखकर वह मन-ही-मन जितना नाराज हुआ था, उतना ही दुखी भी। चोरी का अपराध इतना बड़ा नही होता—यह बात किसी ने भी नहीं सोची। चोरी तो वह भी करता है। दूसरों के पेड़ों के फल चुराने से लेकर, दादी की पिटारी से पैसा निकालने तक। अतः चोरी करना ऐसा कौन-सा भयंकर अपराध हो गया? दरअसल अपराध तो इन लोगों का है, जो उसे इस बुरी तरह पीट रहे हैं।

लेकिन जो असली कसूरवार है, उसे कैसे सजा दे पायेगा? वह कुछ बोलने जायेगा तो लोग उसे भी दो हाथ जमा देंगे। लेकिन वह भी उन्हें सजा दिये बिना चैन से नहीं बैठ सकता था। सारे दिन मुट्ठी बाँधकर गुस्से में उबलता रहा। फिर अचानक ही राजू की याद आते ही मारे खुशी के वह उछल पडा। राजू ने संन्यासी जी के बहुत सारे मन्तर सुने थे। उसे कंठस्थ भी हैं। राजू उसके घर का बच्चा-सा नौकर था। गुणीदत्त को जादू की इस अलौकिक दुनिया का पता शायद उसी ने सबसे पहले दिया था। बहुत-सी अजीबोगरीब कहानियाँ भी सुनायी थीं—जादू-मन्तर की कहानियाँ! जादू खेलों की कहानियाँ!! ...

ज्ञान उसने एक संन्यासी से अर्जित किया था। गाँव की आम राह पर जटाजूट-धारी तपस्वी साधुओं की कोई कमी भी नहीं थी। राजू के मुँह से उनके वारे में कहानियाँ सुन-सुनकर वह उनसे वेहद डर गया था। राजू ने कहा था, 'खवरदार! उन लोगों के पास कभी मत जाना। ये लोग तुझे चकमा देकर जाने कौन-से महाकाल की गोली खिलाकर, अल्लम-गल्लम मन्तर पढ़ देंगे और तुझको कवूतर वनाकर गायव कर देंगे या धतूरा खिलाकर ऐसा मन्तर फूंक देंगे कि तू वकरी वन जायगा और सारी जिन्दगी मिमियाता रहेगा।'

गुणीदत्त ने परियों की कहानियों में पढ़ा था। यह सव विल्कुल सच वात है। खैर, कवूतर वनकर आकाश में उड़ने में, उसे कोई एतराज नहीं था। वशर्ते वह अपनी मर्जी के मुताविक फिर से आदमी वन सके। लेकिन वकरी वनने को वह विल्कुल तैयार नहीं था। जाने कव, कौन उसे काट-कूटकर खा ले। जो भी हो, वह इन जटा जूट-धारी साधू-संन्यासियों की भयंकर शक्ति से, वुरी तरह खौफ खा गया था।

गुणीदत्त ने फैसला किया कि अगर वह भी ऐसे किसी रुद्र भैरव साधु से कोई मन्तर ले आये तो वस, वह भी जादू के कमाल दिखाए। हवा में गायव होने के अलावा और दूसरे करिश्मों के मन्तर वह राजू से इतनी वार सुन चुका था। वह सव उसे कंठस्थ भी हो चुके थे। राजू ने उसे इन जन्तर-मन्तर के सच्चे करिश्मे भी दिखाए थे। उसके सामने ही हवा में गायव होकर, घर के भीतर से जाने कितनी चीजों पर हाथ सफाई का कमाल भी दिखा चुका है। उसमें उसे भी हिस्सा दिया, और खुद भी उड़ाया-खाया है। उड़न-छू कर देने वाले इस मन्तर के लिए, उसने राजू की कितनी खुशामदें की थीं। कितने दिनों तक उसके हाथ-पाँव तक दवाये थे। राजू ने उसे वह मन्तर और उसके प्रयोग का तरीका समझा दिया, लेकिन उसने गुणी को खवरदार भी कर दिया था कि इतनी छोटी उम्र में कोई गायव नहीं हो सकता। गुणी मन मसोस-कर रह गया और अपने वड़े होने के दिन गिनने लगा। इधर ताऊ की निर्मम डाँट-फटकार से घवड़ाकर राजू भाग खड़ा हुआ, लेकिन जाने से पहले अपने जादू-मन्तर के जोर से, एक और करतव भी दिखा गया।

घर के बहुत सारे बर्तन-भांडे लेकर हवा हो गया। थाने में रिपोर्ट की गयी। उसकी बहुत खोज भी हुई। लेकिन गुणी मन-ही-मन हंसता रहा। उसकी यह निश्चित धारणा थी कि राजू जादू-मन्तर की ताकत से हवा हो चुका था। अब किसी को उसकी चुटिया तक की खबर नहीं मिल सकती।

चूंकि अब राजू नहीं था अत. कुछ समय के लिए इन जादू महात्म्य को लेकर अवल भिड़ाने के कार्यक्रम मे थोडी शिथिलता आ गयी। लेकिन आज उस चोर को इस बेरहमी से पिटते देखकर वह अत्याचारी को सजा देने के लिए भीतर-ही-भीतर गुस्से से जल उठा और ऐसे मे जादू की राह उसे बेहद आसान लगी। मानो राजू ही कहीं से आकर उसके कानों मे मन्त्र फुसफुसा गया—ऊँ ह्रीग! ह्रीग। हूंग। ऐग। लंग। लंग। ऊँ नमः स्वाहाः।

गुणीदत्त मे महसूस किया कि अब वह छोटा नही रह गया है। अब वह जादू के जोर से गायब भी हो सकता है। जिन लोगों ने उस बिचारे चोर को इस बुरी तरह पीटा है, उन सबकी अक्ल ठिकाने लगाना है अब उसके लिए दाल-भात का कौर। लेकिन सिर्फ मन्तर पढने से कुछ नही होगा। उसके लिए कई एक आनुषंगिक क्रियाओ के अनुष्ठान की जरूरत है। सबसे पहले एक कबूतर का इन्तजाम करना होगा, फिर कृष्णा व चतुर्दशी की रात को उस कबूतर का सिर काटकर उसमें राख भरकर, उस पर तिल के बीज छिडकने होंगे, फिर जमीन खोदकर उसे गाड देना होगा। कुछ दिनों तक वह मन्त्र दुहराते हुए उस जगह रोज दूध-पानी के छींटे मारने होंगे। फिर वहां धीरे-धीरे एक नन्हा-सा पौधा उगेगा। दूध-पानी की सिंचाई से एक दिन यह पेड़ बड़ा हो जायेगा और उसमें फूल खिलने लगेंगे। उस फूल को मुंह मे रखकर जब वह दुबारा मन्त्र पढ़ेगा तो एकदम से हवा मे उड़न-छू हो जायेगा। उसके बाद वह सबको देख सकेगा लेकिन उसे कोई नही देख सकेगा।

गुणीदत्त यह सब सोचते-सोचते अचानक तनकर बैठ गया। उसे राजू पर गुस्सा आने लगा। राजू के पास तो ऐसे जाने कितने फूल थे। काश, वह उसमे से दो-चार फूल उसे भी दे जाता। फिर इसने सारे

हंगामे की जरूरत नहीं पड़ती।—बस मुंह में रक्खो और गायब।

लेकिन उसके पास वह फूल नहीं है, इस ख्याल से उसने हिम्मत नहीं हारी। काफी सोच-विचार के बाद, उसने यह बात अपने शागिर्द जीवन को भी बता दी। बागची टोले के जीवन बागची को। काया के साथ जैसे छाया लगी रहती है, गुणी के साथ जीवन भी उसी तरह लगा रहता। उम्र में वह गुणी से दो साल छोटा था, लेकिन वह गुणी का सर्वगुण मुग्ध भक्त और अनुचर था। जीवन के सामने अपनी योजना जाहिर करने की एक वजह यह भी थी कि उसके घर में बहुत से कबूतर थे। उसके जरिये कबूतर का सिर मँगवाने में आसानी होगी और फिर यह उसकी बिल्कुल मौलिक योजना थी और वह अकेले इसे पचा भी नहीं सकता था।

गुणी की योजना सुनकर जीवन में दुगुना उत्साह जाग उठा। ऐसे हुनरमन्द उस्ताद की शागिर्दी करते हुए, वह सचमुच धन्य हो उठा। उसके घर में भी दुश्मनी निभाने वाले अभिभावक हैं। जादू का फूल मिल जाये तो जरूरत पड़ने पर वह उन्हें डरा-धमका सकेगा। अगली शाम वह एक नहीं, कई कबूतर लिए-दिये हाजिर हुआ। काली मिट्टी और तिल का इन्तजाम करना भी आसान था। कृष्णा चतुर्दशी किस दिन पड़ती है, उसने बेहद चालाकी से दादी से यह भी पता लगा लिया। निश्चित समय पर, मंत्रोच्चार के साथ कबूतरों के सिर, स्वर्ण के बागीचे के एक सुनसान कोने में गाड़ दिये गये।

दोनों बारी-बारी से उसे दूध और पानी से सींचते रहे। यह कार्य-क्रम कई दिनों तक निर्विघ्न रूप से दोहराया जाता रहा। दोनों उस कल्प-वृक्ष के आगमन की उम्मीद में उसे अपने-अपने हिस्से के दूध से सींचते रहे। लेकिन गुणी की बुआ बेवजह ही अपने भतीजे पर हर वक्त खार खाये बैठी रहती। बात-बात में उसे अपने गुणधर भतीजे की आँखों में शरारत की छाया नजर आती। जो लड़का दूध पीते वक्त, इतनी बुरी तरह मुंह बनाता था मानो वह कुनैन खा रहा हो, दूध के प्रति उसकी अचानक इतनी अनुरक्ति देखकर, उसे कहीं खटका-सा लगा। आजकल गुणी दूध सामने बैठकर नहीं पीता। दूध का गिलास लेकर

वह बाहर की ओर चल देता है। उसने गौर किया कि वह सीधे स्वर्ण के बगीचे की ओर जाता है। पूछने पर गुणी ने बेहद निरीह भाव से आवाज में मिठास घोलते हुए कहा, 'बगीचे में पेड़ के नीचे बैठकर, गरम-गरम दूध को, चाय की तरह चुस्की लेते हुए घूंट-घूंट में पीना अच्छा लगता है।'

बुआ ने एक दिन दोनों को रंगे हाथों पकड़ लिया। लेकिन दोनों को एक साथ पकड़े रहना मुश्किल था। गुणी तो एक झटके से बुआ से हाथ छुड़ाकर, पेड़-पौधों के बीच से होता हुआ, जाने कहाँ उड़न-छू हो गया। उस दिन तो गायब होने का मन्तर जाने बिना ही गायब हो गया। जीवन में न इतनी ताकत थी, न हिम्मत। माल समेत यानी दूध के गिलास समेत, उसकी एक बाँह बुआ की मुट्ठी में थी। गुणी के दूध का कटोरा जमीन पर लुढ़क गया था। बुआ ने उसे दूध उड़ेलते हुए अपनी आँखों से देखा था। दूध उडेलते-हुए वह कोई मन्त्र भी बुद-बुदा रहा था, उन्होंने अपने कानों से सुना था।

जीवन पर तमाचा पड़ते ही वह जोर-जोर से रो पड़ा। और दो-एक तमाचे खाकर उसने सारा राज फाश कर दिया। अपनी जान बचाने को उसने सारा अपराध गुणी के सिर मढ़ दिया। भेद खोल देने के अपराध में गुणीदा के दो-एक थप्पड और दाँत किटकिटाते हुए उसका मुँह बिगाड़ कर डाँटना, उसे बहुत बड़ी सजा नहीं लगी। इसका तो वह अभ्यस्त हो चुका था।

बाद में गुणी ने बडी मिन्नत और खुशामदों से बुआ को मना लिया। यहाँ तक कि मार खाने के लिए उसके आगे-पीछे मँडराता रहा। बुआ चाहे जितनी भी नाराज हो, वह ताऊ तक उसकी शिकायत नहीं करेगी, यह जानकर निश्चिन्त हुआ। इधर जादू के पौधे में अभी अंकुर तक नहीं हुआ, यह सोच-सोचकर उसे परेशानी हो रही थी। उसने दूध डालने में तो किसी दिन कोई कंजूसी नहीं की। अन्त में एक दिन उत्सुकतावश जीवन को लेकर वहाँ की सारी मिट्टी दुबारा खोद डाली। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कबूतर के कटे हुए सिर का कहीं कोई पता नहीं था। शायद वह मिट्टी में मिलकर मिट्टी

हो चुकी थी।

बाद में यह सोच-सोचकर अफसोस करता रहा कि हो सकता है वह अभी भी उतना बड़ा नहीं हुआ है, तभी सब बेकार हो गया है। खैर, हवा में गायब होने की सनक कुछ दिनों की मिट गयी। लेकिन मन्त्र-तन्त्र के प्रति गहरी श्रद्धा-भक्ति में कहीं शिथिलता नहीं आयी। उसे लगा दुनिया में कुछ भी होना या करना सम्भव है। बस, जब तक जादू की गुप्त चाबी प्राप्त न कर ली जाए। कुछ होना या करना असम्भव है। दरअसल अपनी अधूरी यादों को भरने के लिए वह हर जगह उस जादू की चाबी को तलाश कर रहा था, जिसे पाने के बाद कोई चाह अधूरी नहीं रह सकती। गाँव में या उसके आस-पास कहीं कोई मेला-ठेला लगते ही, दादी अपनी पिटारी के बारे में अतिशय सजग हो जाती। गुणी को अगर पैसे की जरूरत होती तो उसके सामने हाथ फैलाना पड़ता या रो-धोकर वसूलना पड़ता था। यह कहना बेकार है कि जितने पैसे उसे मिलते थे, उससे उसकी इकन्नी-भर जरूरतें भी पूरी नहीं होतीं। अतः बहुत बार वह मुँह लटकाए हुए सोचता रहता, काश, वह रुपयों का एक पेड़ लगा पाता तो कितना मजा आता। उसने बुढ़िया डाइन की कहानी में पढ़ा था कि सचमुच रुपयों का पेड़ होता है। वैसे जरूरत पड़ने पर वह भी एक रुपया चुराकर मिट्टी में रोप सकता है। लेकिन रुपयों का पेड़ उगाने वाला मन्तर ही तो उसे नहीं आता और मन्तर ही असल चीज है। गुणीदत्त को यह समझ ही नहीं आता था कि ये बुजुर्ग लोग इतने बुद्धू क्यों हैं। इन्हें रुपयों से इतना मोह क्यों है कि एक रुपया चला जाये तो हाय-तोबा मचा देते हैं। लेकिन कौन-मन्तर से रुपयों का पेड़ लगाया जा सकता है, यह पता लगाने की कभी कोशिश नहीं की।

गुणीदत्त अक्सर इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहता और अपनी कल्पना में नये-नये मन्त्र ईजाद किया करता। असली मन्त्र हाथ लग जाये तो रुपए का पेड़ भी निश्चित रूप से मिल जाए। फिर तो उस पेड़ को जितना हिलाओ रुपया ही रुपया बरसेगा। बारिश की बूंदों की तरह झम्-झम् करके रुपये झड़ेंगे। यह सब सोचते हुए गुणी को स्थान और

तमय का बोध नही रहता। उसे मन ही मन मन्द-मन्द मुस्कराते देख कर, उसका शागिर्द जीवन और बालसखा स्वर्ण अक्सर उसे हैरत-भरी निगाहों से देखा करते।

स्वर्ण ने तो दो-एक बार बहुत हिम्मत करके पूछ भी लिया, 'गुणी, तुम यूँ अकेले-अकेले क्या सोच-सोचकर हँसते हो? तुम थोड़े से पागल तो नहीं हो?'

गुणीदत्त को सिर्फ दुनियाबी चीजों की प्राप्ति की ही धुन नही थी। अक्सर हरी-भरी प्रकृति की तरफ, वह मंत्र-मुग्ध विस्मित भाव से निहारा करता और उसमे वह नये-नये रहस्यों का संकेत पाता। सुदूर-आकाश पर जब रुई जैसे मेघो को तैरते हुए देखता तो सोचता इन बादलों मे भी जान है, लेकिन किसी ने जादू-मन्तर के जोर से, उसे बेजान चट्टान बना दिया है। अगर उसे जान वापस लाने का मन्त्र मालूम होता तो वह सारी जडता तोडकर एक बार फिर जी उठता। यह सब सोचते हुए उसके मुँह से एक लम्बी-सी आह निकल जाती। उसे अफसोस होता था कि बेचारे बादल के नसीब मे अब जिन्दा होना नही लिखा है। उसे हमेशा चट्टान बनकर ही रहना होगा। उसका ख्याल था कि आसमान के उस पार तरह-तरह के रंग सजे हुए हैं। शाम होते ही देवता लोग पिचकारी से होली खेलते हैं। आसमान मे मेघ गरजते या बिजली चमकती तो उसे लगता दो राक्षस लड रहे हैं और यह बिजली उनकी तलवार है, बादलों की गड़गड़ाहट उनकी गर्जन जो जीत जाता है, वह गरजता है और जो हार जाता होगा, वह लडके-बाले नाती-पोते समेत रोता होगा। तभी तो बारिश होती है। झड़ी लगाकर रोता होगा तभी तो बारिश भी मूसलाधार होती है।

यह सब उसके अपने मन की कल्पना है। बादल क्या है, अब अगर उसे कोई परीक्षा देनी पड़े और पर्चे मे अगर यह सवाल आ जाए तो वह राक्षस वाली कहानी हरगिज नही लिखेगा। लेकिन कल्पना की उडानो के आगे इन सब नीरस परीक्षाओ का कोई मेल है? ऐसी-ऐसी मानसिक उड़ानो की परीक्षा वह बड़े गर्व से पास करता और परम सन्तोष महसूस करता।

उसे सबसे अधिक मजा आता था, अपनी मर्जी के मुताबिक बादलों के टुकड़े जोड़ने में। तैरते हुए मेघों को टुकड़े-टुकड़े जोड़कर, वह जैसा चाहता उन्हें शक्ल दे लेता। यह अजूबा उसने स्वर्ण और जीवन को भी बहुत बार दिखाया है और उन्हें आश्चर्य में डाल दिया है।

'...देख ! देख ! वोऽ—! बादल का वह टुकड़ा उस दूसरे वाले टुकड़े से जुड़ रहा है और हाथी बनता जा रहा है। देख, येस बिल्कुल ठीक जुड़ गया। वो सामने का हिस्सा हाथी का सिर, बीच वाला बड़ा-सा टुकड़ा उसका पेट और वो रहा उसका सूंड, दांत और हाथ-पैर—देखा ?"

वह दोनों बेहद हैरतअंगेज आंखों से हाथी की ओर देखा करते। गुणीदत्त उन लोगों को जो दिखाता—सिंह, बाघ ! वह लोग वही देखते। गुणी को लगा वो जो चाहे देख सकता है, दिखा सकता है। उसके वे छोटे-छोटे संगी-साथी दार्शनिक का मतलब तक नहीं समझते थे। लेकिन उनका गुणीदा दार्शनिकों की तरह पागल नहीं है। उसका दिमाग बहुत तेज है। बहुत सारी विलक्षण बातें उसके दिमाग में यूं ही घूमती रहती हैं। मंत्र-मुग्ध भक्तों की तरह, उन्हें अपने गुणीदा की बातों का पक्का भरोसा था।

इस खुराफाती लड़के की इन काल्पनिक उड़ानों की ओर ध्यान देने की किसी को फुर्सत भी नहीं थी। अगर किसी ने ध्यान दिया भी होता, तो उसकी जिन्दगी ने इसके अलावा और कोई मोड़ लिया होता, यह असम्भव था। लेकिन दरअसल किसी को उसकी तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही नहीं मिली और दुनिया में आमतौर पर ऐसा होता है।

पन्द्रह साल की उम्र में गुणी ताऊ के साथ एक बार कलकत्ते आया था। कलकत्ते में ताई का मायका था। ताई के घरवाले उसे जादू-शो दिखाने ले गये। वहाँ से लौटने के बाद गुणी कई दिनों तक नहाना-खाना तक भूल गया। पुराने ताश के पत्ते, कौड़ियों, सिक्कों, रूमाल की जगह फटे-पुराने कपड़े लेकर वह अपने मन से नये-नये जादू खेल ईजाद करता रहा। इसके अलावा राह चलते, नटों का खेल भी गौर से देखा करता।

वह जानता था, यह सब आँखों का धोखा-भर है। लेकिन वह धोखा कहाँ है, वह बैठे-बैठे इसी उधेड़-बुन में लगा रहता। गाँव लौटकर दो-एक साधु-संन्यासियों और नटों के पीछे-पीछे घूमकर, उनसे दो-एक हैरतअंगेज के खेल भी सीख लिये।

नयी उम्र की जोश में नयी-नयी विद्या को दबाकर रखना बहुत मुश्किल है। उन्हें पाँच आदमियों के सामने जाहिर न किया जाए, तो मन मे बेचैनी होती है और जब जाहिर करने का मौका आता है, तो जितना आता है उससे जरा ज्यादा ही प्रकाशित हो जाता है। स्कूल के संगी-साथियों को अपने में नये जादू दिखाकर वह बहुत जल्दी ही मशहूर हो गया। ये सब जादू वह कलकत्ते के किसी नामी जादूगर से सीख कर आया है। इसका उसने खूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार किया। उस उम्र के बच्चों मे विस्मय के प्रति एक सहज उत्सुकता होती है। उस उम्र मे वह किसी बात पर अविश्वास भी नही करते। यूँ भी अपने इस साथी के अपूर्व साहस और सामर्थ्य के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने गुणीदत्त के मुंह से ही सुना है कि एडी-चोटी का पसीना एक करने के बाद, उसने जादूगर की कृपा दृष्टि-प्राप्त की थी। कितनी तप, साधना और मिन्नतों के बाद, वह उसे दो-एक खेल बताने को राजी कर सका था। वही महान् जादूगर बाद मे अपने शागिर्द से इतना खुश हो गया कि उसे अपने साथ रखना चाहता था। वह तो ताऊ के डर से गुणी ने ही मना कर दिया।

यह सब भूमिका बाँधने के बाद उसने चुन-चुनकर कई एक हम-उम्र साथियों को इकट्ठा किया और अपने अजीबो-गरीब करिश्मों से वाकई उन्हे हैरत मे डाल दिया। दर्शकों के चुनाव की वजह यह थी कि दर्शक अगर चालाक होता तो पकडे जाने का डर जो था। लेकिन इन सब क्षेत्रों में नौसिखुआ जादूगर कभी-कभी अपनी सम्भावित मुसीबतों को जान-बूझकर दावत दे बैठता है ताकि उसकी हिम्मत और महत्त्वाकांक्षाओं को खुलने-बढ़ने का मौका मिले। ऐसे में कहाँ तक आगे बढना उचित है, यह ख्याल ही नही रहता। मैजिशियन गुणी का यही हाल हुआ। धीरे-धीरे उसके दर्शकों की और साथ ही उसके

खेलों की संख्या भी बढ़ने लगी। हम-उम्र लड़कों की यह सहज प्रवृत्ति होती है कि अपने साथी के करतबों पर मन ही मन विस्मित होते हुए भी उसकी चालाकी पकड़ पाने को बेचैन रहते हैं। वे लोग उसकी चालाकी पकड़ पाने की ताक में उसकी तरफ से आँख गड़ाये देखते रहते या अविश्वास के बहाने बहसें करते हैं। लेकिन गुणीदत्त ने अपने कुछ संकेत निश्चित कर लिए थे। यह भी तय हो गया था कि उसके लोग तटस्थ भाव से दर्शकों में बैठे रहेंगे और उसके इशारों पर रटे-रटाये शब्द लोगों के सामने दुहरा देंगे।

इन सब इन्तजामों के बाद गुणी ने कलकत्ते के महान् जादूगर के सिखाये हुए कई एक आश्चर्यजनक जादू खेलों का सूत्रपात किया। फर्ज कीजिए, दस लड़के बैठे हैं। गुणी उन्हें एक रूमाल पकड़ाकर, वहाँ से हट गया। उनमें से एक लड़के ने उस रूमाल को छुपा दिया। अब गुणीदत्त की बारी है और वह आता है और आकर फौरन बता देता है कि रूमाल किसने छुपाया है। ऐसे ही तीन डिब्बों में से एक में इमली के बीज रख दिये गये हैं। गुणी ने उन डिब्बों को बिना हाथ लगाये ही, बता दिया कि इमली के बीज किस डिब्बे में हैं। ताश के पैकेट में से एक पत्ता निकालकर सबको दिखाकर और फिर दूसरे ताशों के साथ फेंटकर रख दिया गया। गुणी ने आकर ताश का पैकेट उठा लिया और पत्तों को एक बार छुआ, फिर ताश के पत्ते फेंटते हुए लोगों को बरगलाने के लिए तरह-तरह की बातें करता रहा। जादूगरों के लिए थोड़ी वाक्पटुता भी जरूरी है, यह वह कलकत्ते में देख चुका था। सबसे आँखें बचाकर उसने जीवन की तरफ देखा। वह बेहद निरीह भाव से बाएँ अँगूठे का नाखून काट रहा था और दाहिने हाथ से पाँव का अँगूठा खुजला रहा था।

गुणी ने बेहद गम्भीर भाव से ताश के पैकेट से चिड़ी का गुलाम निकाला और दर्शकों के आगे फेंकते हुए कहा, 'ये लो—जो जिन्दगी-भर सिर्फ गुलामी करता आया हो, वह गुलाम ही तो चुनेगा—वह भी चिड़ी का गुलाम।'

दांत से नाखून का मतलब चिड़ी का पत्ता और दोनों हथेलियों की

दसों उँगलियाँ छोड़कर पाँव के अँगूठे का नाखून खुजलाने का मतलब था, उस रंग का ग्यारहवाँ पत्ता है। वह पत्ता चिड़ी का गुलाम ही होगा।

इस बार गुणी के तारीफों की सचमुच धूम मच गयी और दरअसल यह तारीफ ही उसके लिए काल बन गयी।

जादू की असली चाबी किसी और के हाथ में है और तारीफें कोई और लूट रहा है, यह बात जीवन को अखरने लगी। वह चाहता था कि गुणी के अलावा उसे भी ऐसे जादू दिखाने का मौका मिले। लेकिन गुणी के सामने यह प्रस्ताव रखने की हिम्मत नहीं पड़ी। एक दिन तैश में आकर एक और साथी के सामने वह कबूल कर बैठा कि यह सब जादू तो वह भी दिखा सकता है। अब ये सब खेल उसने सीख लिये हैं। गुणीदा को एतराज न हो तो वह भी हाथ का कमाल दिखा सकता है।

लड़कों में गलतफहमी का पहला बीज तो पड़ गया। उसी लड़के ने कई लोगों के सामने जीवन की तरफ इशारा करके गुणी से कहा, 'यह कहता है कि तेरे जादू के खेल-तमाशे वह भी दिखा सकता है।'

जीवन ने मारे संकोच और शर्म के सिर झुका लिया। गुणी ने उसकी तरफ खा जाने वाली निगाह से घूरकर देखा और फिर मुस्कराकर बात को उड़ा जाने की कोशिश की। उस लड़के की तरफ प्यार से देखते हुए कहा, 'हो सकता है कि वह समझ रहा हो कि ये सब जादू वह भी दिखा सकता है, लेकिन दरअसल ये सब खेल बहुत कठिन हैं। खैर कोई बात नहीं! अगर वह दिखा सकता है तो कल उसी को दिखाने दो।'

शाम को मौका पाकर वह जीवन को स्वर्ण के बगीचे में खींच लाया। जीवन ने सोचा कि बारी-बारी से खेल दिखाने के बारे में वह कोई समझौता करना चाहता होगा। लेकिन गुणीदत्त ने उसे बगीचे के एक कोने में ले जाकर आँखें नीली-पीली करके, उसके माथे पर दो-एक गट्टा जमा दिया और वह भी इतनी जोर का कि जीवन धम् से जमीन पर बैठ गया। उसकी आँखों में अँधेरा छा गया। माथे पर बेर जितनी

जगह सूज गयी ।

'रैस्कल कहीं का ! मैजिक दिखाने का शौक चर्राया है ?'

'तुझे जान से मार डालूंगा । बोल, अब कभी मैजिक दिखाने का नाम लेगा ?'

जीवन की दोनों आँखों से आँसुओं की धार बह चली । अपने गुरु के हाथ की मार खाकर बेआवाज रोने की आदत बन चुकी थी । जीवन ने सिर हिलाकर स्वीकार किया, 'जिन्दगी में अब फिर कभी ऐसी हिम्मत नहीं करूंगा ।'

दो-चार झटके और देकर गुणी भविष्य के सम्बन्ध में निश्चित हो गया और उसे छोड़ दिया । लेकिन अगले दिन उस छोटे-से दर्शक समूह के आगे सारा मामला गड़बड़ हो गया । जीवन का आहत अभिमान जैसे विद्रोह कर बैठा । उसके भीतर सोया हुआ पौरुष जैसे फूत्कार उठा । ताश चुन लेने के लिए, दोस्तों को पैकेट पकड़ा कर गुणी आड़ में चला गया । अभी वह लौट आयेगा और उन बावन पत्तों में से सही पत्ता चुनकर सब के सामने रख देगा ।

लड़कों को आश्चर्य में डालते हुए, किनारा तोड़कर उफनती हुई नदी की तरह, जीवन झटके-से उठकर खड़ा हो गया । दाँत किटकिटा कर बोला, 'देखूं, आज पत्ता कैसे निकालता है । मैं भी देखूंगा—'

यह कहते हुए, वह सामने वाले रास्ते से हवा हो गया । यार-दोस्त भी पल भर को विमूढ़ आँखों से उसे जाते हुए देखते रहे, लेकिन धीरे-धीरे उनकी आँखों के आगे रहस्य का पर्दा हट गया ।

ताश चुन लेने का संकेत पाकर गुणी महान् जादूगर की तरह धीरे-धीरे चलकर सबके सामने आ खड़ा हुआ । सामने की ओर नजर पड़ते ही उसके सीने पर जैसे हथौड़ा पड़ा हो । जुबान और होंठ सूखने लगे । उसे जोर की प्यास लग आयी । एक दोस्त ने ताश का पैकेट उसके आगे कर दिया । गुणी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था । वह खोजभरी निगाहों से इधर-उधर देखता रहा । उसके गले में एक अस्फुट-सी आवाज निकली, 'जीवन कहाँ गया ?'

अब तक दोस्तों को सारा मामला समझ आ गया था । उन्होंने

कहा 'तुझको जीवन म क्या लेना-देना है ? अपना मैंजिक दिखा। चल निकाल पत्ता।'

गुणी यद्यपि कोई जादू-वादू नही जानता था लेकिन दोस्तों के चेहरे पर लिखी हुई बातें पढने में उसे देर नहीं लगी। एकाएक सबको चकमा देकर वह भाग खडा हुआ! नहीं; वह डर के मारे नही भागा था। जीवन का सिर तोड़ने के लिए दौड़ गया था। जीवन को इस बात का अन्देशा पहले से था। इस घटना के बाद बहुत दिनों तक वह गुणी की छाया तक से बचता रहा। उसके माफी माँगने और गुणी के माफी देने का तो खैर अलग किस्सा है। अपने आगे बिल्कुल झुक जाने वाले शागिर्दों की कमी की वजह से ही गुणी ने अन्त मे उसे माफ कर दिया।

हाँ, यार-दोस्तो को विस्मित करके अपने को महान् जादूगर साबित करने की धुन वहीं खत्म हो गयी। सम्मान के सर्वोच्च आसन से वह मुँह के बल जमीन पर आ गिरा था। इसके बाद बहुत दिनो तक लडके उसे देखते ही जोर-जोर से सीटी बजाकर गा-गाकर चिढाया करते, 'लग-लग-लग-लग भेलकी लग मामी की अम्मा का जादू देख।'

गुणी मुँह बन्द किये हुए उनके जुल्म सहता रहा—और जब नहीं रहा गया तो मौका देखकर किसी-किसी को बुरी तरह पीट दिया या किसी को लंगड़ी मारकर मामी की अम्मा का मजा भी दिखा दिया।

कलकत्ते मे यानी ताऊ की ससुराल से लौटने पर गुणी ने उस बारह वर्षीय स्वर्ण मे एक नये रूप का आविष्कार किया। स्वर्ण के मन मे जैसे कोई संघर्ष छिड़ा हो। इसी बीच मौका निकालकर, सबकी आँखों में धूल झोंकते हुए, उसने एक-आध उपन्यास भी पढ डाले। गुणी ने बिना किसी दुविधा के स्वर्ण को ही उन उपन्यासो की नायिका मान लिया और स्वयं को नायक।

उसके जादू खेलों की पहली दर्शक भी यही स्वर्ण थी। उसकी आँखों को चकमा देने के लिए उसे जादू दिखाने के बहाने, उसके हाथ

जगह सूज गयी ।

'रैस्कल कहीं का ! मैजिक दिखाने का शौक चर्राया है ?'

'तुझे जान से मार डालूंगा । बोल, अब कभी मैजिक दिखाने का नाम लेगा ?'

जीवन की दोनों आँखों से आँसुओं की धार बह चली । अपने गुरु के हाथ की मार खाकर बेआवाज रोने की आदत बन चुकी थी । जीवन ने सिर हिलाकर स्वीकार किया, 'जिन्दगी में अब फिर कभी ऐसी हिम्मत नहीं करूंगा ।'

दो-चार झटके और देकर गुणी भविष्य के सम्बन्ध में निश्चित हो गया और उसे छोड़ दिया । लेकिन अगले दिन उस छोटे-से दर्शक समूह के आगे सारा मामला गड़बड़ हो गया । जीवन का आहत अभिमान जैसे विद्रोह कर बैठा । उसके भीतर सोया हुआ पौरुष जैसे फूत्कार उठा । ताश चुन लेने के लिए, दोस्तों को पैकेट पकड़ा कर गुणी आड़ में चला गया । अभी वह लौट आयेगा और उन बावन पत्तों में से सही पत्ता चुनकर सब के सामने रख देगा ।

लड़कों को आश्चर्य में डालते हुए, किनारा तोड़कर उफनती हुई नदी की तरह, जीवन झटके-से उठकर खड़ा हो गया । दाँत किटकिटा कर बोला, 'देखूं, आज पत्ता कैसे निकालता हैं । मैं भी देखूंगा—'

यह कहते हुए, वह सामने वाले रास्ते से हवा हो गया । यार-दोस्त भी पल भर को विमूढ़ आँखों से उसे जाते हुए देखते रहे, लेकिन धीरे-धीरे उनकी आँखों के आगे रहस्य का पर्दा हट गया ।

ताश चुन लेने का संकेत पाकर गुणी महान् जादूगर की तरह धीरे-धीरे चलकर सबके सामने आ खड़ा हुआ । सामने की ओर नजर पड़ते ही उसके सीने पर जैसे हथौड़ा पड़ा हो । जुबान और होंठ सूखने लगे । उसे जोर की प्यास लग आयी । एक दोस्त ने ताश का पैकेट उसके आगे कर दिया । गुणी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था । वह खोजभरी निगाहों से इधर-उधर देखता रहा । उसके गले में एक अस्फुट-सी आवाज निकली, 'जीवन कहाँ गया ?'

अब तक दोस्तों को सारा मामला समझ आ गया था । उन्होंने

कहा 'तुझको जीवन से क्या लेना-देना है ? अपना मैजिक दिखा। चल निकाल पत्ता।'

गुणी यद्यपि कोई जादू-वादू नहीं जानता था लेकिन दोस्तों के चेहरे पर लिखी हुई बातें पढ़ने में उसे देर नहीं लगी। एकाएक सबको चकमा देकर वह भाग खड़ा हुआ! नहीं; वह डर के मारे नहीं भागा था। जीवन का सिर तोड़ने के लिए दौड़ गया था। जीवन को इस बात का अन्देशा पहले से था। इस घटना के बाद बहुत दिनों तक वह गुणी की छाया तक से बचता रहा। उसके माफी माँगने और गुणी के माफी देने का तो खैर अलग किस्सा है। अपने आगे बिल्कुल झुक जाने वाले शागिर्दों की कमी की वजह से ही गुणी ने अन्त में उसे माफ कर दिया।

हां, यार-दोस्तों को विस्मित करके अपने को महान् जादूगर साबित करने की धुन वहीं खत्म हो गयी। सम्मान के सर्वोच्च आसन से वह मुंह के बल जमीन पर आ गिरा था। इसके बाद बहुत दिनों तक लड़के उसे देखते ही जोर-जोर से सीटी बजाकर गा-गाकर चिढ़ाया करते, 'लग-लग-लग-लग भेलकी लग मामी की अम्मा का जादू देख।'

गुणी मुंह बन्द किये हुए उनके जुल्म सहता रहा—और जब नहीं रहा गया तो मौका देखकर किसी-किसी को बुरी तरह पीट दिया या किसी को लगड़ी मारकर मामी की अम्मा का मजा भी दिखा दिया।

कलकत्ते में यानी ताऊ की ससुराल से लौटने पर गुणी ने उस बारह वर्षीय स्वर्ण में एक नये रूप का आविष्कार किया। स्वर्ण के मन में जैसे कोई संघर्ष छिड़ा हो। इसी बीच मौका निकालकर, सबकी आँखों में धूल झोंकते हुए, उसने एक-आध उपन्यास भी पढ़ डाले। गुणी ने बिना किसी दुविधा के स्वर्ण को ही उन उपन्यासों की नायिका मान लिया और स्वयं को नायक।

उसके जादू खेलों की पहली दर्शक भी यही स्वर्ण थी। उसकी आँखों को चकमा देने के लिए उसे जादू दिखाने के बहाने, उसके हाथ

पर इधर-उधर की चीज रख देता फिर जरूरत से ज्यादा देर-देर तक उसकी हथेलियाँ थामे बैठा रहता। कभी-कभी उसके हाथ बेवजह ही उसकी बाँहों तक पहुँच जाते। स्वर्ण की आँखों में धूल झोंकना आसान भी था। उन दिनों वही उसके जादू खेलों की एकनिष्ठ भक्त थी। वह बेहद खामोशी से उसकी ओर देखा करती। गुणी अक्सर उसके उस बड़े से काले मसे को छूने के बहाने उसे रगड़-रगड़कर देखता और कहता, 'रुक जा मैजिक में मेरे हाथ जरा और मँज जाएँ। जादू के जोर से इस सत्यानाशी मसे को मिटा दूँगा।'

उसके मसे को सत्यानाशी कहना स्वर्ण को बिल्कुल पसन्द नहीं था। वह चिढ़ कर कहती 'हट्ट। मेरी दादी तो कहती है कि यह तो ऐसा लगता है, जैसे चाँद में निशान। अगर चाँद में निशान न हो तो वह सुन्दर न लगे—वैसे चेहरे पर मेरा यह मसा। यह न हो तो मैं भी सुन्दर न लगूँ।'

'तेरी दादी की बुद्धि तो चरने गयी है। यह मसा क्या हमेशा—ऐसा ही रहेगा? जरा, पास आ, मैं देखूँ···' यह कहते हुए उसके चेहरे से बिल्कुल सटकर बड़े गौर से मसे की जाँच-पड़ताल करने में जुट जाता।

इन दिनों गुणी के रंग-ढंग में स्वर्ण को जाने कैसा खुटका लगने लगा। उसे ठीक-ठीक कुछ समझ नहीं आ रहा था। लेकिन वह बेहद अजीब नजरों से उसकी ओर देखा करती और गुणी की गर्म साँसें उसके चेहरे को छूने लगतीं।

स्वर्ण उम्र के तेरहवें साल में कदम रखते ही एकदम बदल गयी। उसके मन में भी परिवर्तन के चिह्न स्पष्ट थे। गुणी हाथ पकड़ना चाहता तो साफ मना कर देती। अब मैजिक भी दूर से दिखाने को कहती। अपने मसे को भी हाथ नहीं लगाने देती। बगीचे के पिछवाड़े या पोखर पार, काँटों की झाड़ियों में खींच लाता, तो भी वह बहुत देर को रुकने को राजी नहीं होती थी। और वह जरा भी बहकाने लगता तो हाथ छुड़ाकर भाग खड़ी होती। गुणी मारे गुस्से के हाथ मलता खड़ा रह जाता।

इतनी जरा-सी उम्र मे ही गुणी को रोग लग गया था—स्वर्ण का रोग !

रात को दादी के पास लेटे-लेटे उनसे फुसफुसाकर सलाह करता कि स्वर्ण का गुमान ठण्डा करने के लिये अगर उसे ब्याह कर इस घर में ले आए तो कैसा रहे। दादी उसकी बातों पर हँस देती, कभी झिड़क देती 'चुप रह, वो लोग ठहरे ब्राह्मण ! ऐसी बातें नही करते।'

दादी ने चाहे उसे डाँट दिया हो या हँसी मे बात उड़ा दी हो, लेकिन पोते की यह अभिलाषा, उसके ताऊ के कानों मे न पड़ जाए, इस ओर वह हमेशा सजग रही। उन्हें डाँटना-डपटना भी होता, तो उसे अकेले मे डाँट-फटकार लेती।

जाने वह उसके मन की जलन थी या कोई और वजह, गुणी ने तेरह साल की स्वर्ण का गुमान चूर करने के लिए एक साजिश कर डाली। उसके सामने बेहद फख्र से घोषणा की, मसा हो या कोई और दाग, उन्हे मिटाने की विद्या उसने सीख ली है। उसने सफेद और नीले रंग के कई एक पाउडर भी इकट्ठे कर लिये। वह पाउडर उसने स्वर्ण को भी दिखाया, जिससे स्याही के दाग और मसा के चिप मिट सकते थे। स्वर्ण से अब रहा नही गया। उसने ललचाकर हाथ बढ़ाया, 'थोड़ा-सा मुझे भी दो न।'

'पहले बगीचे मे चल। इस बारे मे और भी कई बातें कहनी हैं। वह सब बताने मे देर लगेगी।'

'नही, पहले मेरे हाथ मे दो।'

'तब चल, दफा हो, अपने मुखडे का कलंक लिए पड़ी रह। जब ऐसा मसा समूचे चेहरे पर निकल आयेगा तब मजा आयेगा। अगर उस समय मेरे पास आयी तो मारकर खदेड दूंगा, समझी ?'

उस दिन तो स्वर्ण चली गयी, लेकिन अगले दिन उसके पास ही मँडराती रही। इन कई सालों मे उसके मन मे भी यह बात पक्की तरह जम गयी थी कि उस मसे को उखाड़ फेंकना ही बेहतर है और जैसा कि गुणी कह रहा था, अगर सचमुच ही सारे चेहरे पर वैसे ढेर सारे मसे निकल आए, तो वाकई भद्दा लगेगा।

गुणी बगीचे में अपनी निश्चित जगह पर लगातार तीन दिनों तक बेहद निस्पृह और तटस्थ भाव से उसकी प्रतीक्षा करता रहा। मसा-नाशक-पाउडर की आशा में स्वर्ण भी काफी देर तक उसके आस-पास चक्कर लगाती रही। लेकिन चौथे दिन उसके पास आये बिना नहीं रह पायी।

गुणी के आगे होंठ बिचकाकर कहा, "हुँ-हुँ! इससे मसा खाक मिटेगा—।'

'न मिटे, मेरी बला से! चल, भाग यहाँ से। दो साल से जाने किस-किस दरवाजे चक्कर लगाकर तेरे लिए इस पाउडर का इन्तजाम किया। कोई बात नहीं, कल इसे तलैया में फेंक दूंगा।' कहते हुए उसने जेब से पाउडर के दो पैकेट निकाले, मानो अभी ही फेंक आयेगा।

'तुम मुझे दे दो न···।'

'तुझसे यह काम हो जाता, तो जरूर दे देता।'

स्वर्ण, उसके बिल्कुल पास आकर बैठ गयी, 'तुम सच कहते हो न, इससे मसा कट जायेगा?'

'हाँ, कट जायेगा।'

'दर्द तो नहीं होगा?'

'बिल्कुल नहीं।'

'जलन तो नहीं होगी?'

'नहीं, तुम बस, यहाँ बैठ जाओ।'

यानी बिल्कुल उसकी बाँहों से सटकर बैठना होगा। आखिर उसे बैठना ही पड़ा। गुणी कई मिनट तक मसा उड़ाने का मन्त्र बुदबुदाता रहा, फिर एक हाथ से उसका सिर पीछे की ओर झुकाकर दूसरे हाथ से तिल पर पाउडर रगड़ने लगा। आँखें बन्द किये रहने का ऑर्डर पाकर वह लड़की उसके बाँहों के घेरे में आँखें मूंद पड़ी रही। पाउडर कहीं आँखों में पड़ जाता, तो जलन होने का डर भी था।

लेकिन थोड़ी देर बाद ही उसने महसूस किया कि गुणी की उँगलियाँ मसे के इर्द-गिर्द घूमती हुई अचानक स्थिर हो गयी है। उसे अजीब-सी गुदगुदी होने लगी और पलकों के नीचे कुछ गीला-गीला-सा लगा। उसके

लेकिन एक पुकार पर वह आये बिना नहीं रह पाती। उस पुकार पर तो सुध-बुध ही खो बैठती थी। गुणी ने उसकी यह कमजोरी समझ ली थी।

बँसुली की आवाज पर। बाँस की बाँसुरी। जब वह ग्यारह-बारह साल का ही था, तभी से जाने कैसे बाँसुरी बजाने की धुन सवार हुई थी।

कुछेक सालों में ही वह उस शहरनुमा गाँव में सुनने लायक बाँसुरी बजाने लगा। आखिर, है तो वह अपने बाप का ही बेटा! सब लक्षण बाप के मिले हैं। उसका बाप जब बाँसुरी बजाता था तो उसकी धुन सुनकर पशु-पंछी तक भी वश में हो जाते थे।

पहले-पहल तो गुणी ने एक सेनानी से बाँसुरी की दीक्षा ली। बाद में ताऊ की आँख में धूल झोंककर यात्रा-पार्टी में आने-जाने लगा। वहाँ भी कई तरह की तालीमें प्राप्त कीं। लेकिन उसकी असली शिक्षिका, उसकी अपनी बेसब्री थी। बाँसुरी बजाते हुए अक्सर उसकी सारी बेसब्री जैसे ठंडी होकर जम जाती। जिस दिन ताऊ तगादे पर या किसी और काम से बाहर निकलते, गुणी दरवाजे पर बैठकर या कहीं आस-पास बाँसुरी फूंका करता।

स्वर्ण भी किसी न किसी बहाने वहाँ पहुँच जाती। उस वक्त उसे कभी दादी से कोई काम निकल आता या दिखाने को दो-तीन बार घाट-किनारे पानी लाने चल देती।

बाँसुरी जैसे अद्‌भुत सम्मोहन का जादू जान लेने पर वह तरह-तरह की उदास और बेचैन धुनें बजाया करता और इसी बहाने उसका स्वर्ण के अंतर-महल में ताक-झाँक करने का अधिकार भी बढ़ता गया।

जिस दिन ताऊ घर पर होते या कोई और रुकावट होती, वह बाँसुरी लेकर पहाड़ों की तरफ निकल जाता। ऐसे में पहाड़ों का सम्मोहन उसे स्वर्ग से भी अधिक खींचने लगते। वैसे रोज-रोज सात-आठ मील दूर पैदल निकल जाना भी मुश्किल था। कुछ दूर जाकर, वह किसी मनपसन्द जगह पर बैठकर बाँसुरी बजाने में मग्न हो जाता। जीवन भी उसके साथ-साथ रहता था। उसका गुण-मुग्ध भक्त होने पर भी,

कहीं से वही उसका जानी दुश्मन भी था। गुणी प्रवेशिका के इम्तहान में अब तक दो बार लुढ़क चुका था। अतः अब जीवन का सहपाठी था।

वैसे इस जीवन ने बहुत बार बहुत से कामों में दगाबाजी भी की है और फिर गुणी के हाथों बेतहाशा पिटा भी है। उन्नीस साल के गुणी के हाथों की मार से उसके साथ के तमाम साथी, यहाँ तक कि उम्र में एक-आध साल बड़े लड़के भी उससे डरते थे।

लेकिन जीवन से चाहे जिस वजह से, जितनी भी मार-पीट हुई हो, उससे बोले बिना न उसका ही मन मानता और न जीवन ही उसके पास आये बिना रह पाता था।

गुणी ने अपने प्रेम की वेदना भी इसी एक दोस्त के सामने व्यक्त की। उसे वह दर्द इतना बड़ा और तीखा लगा कि बताने के अलावा और कोई उपाय भी नजर नहीं आया। उसकी बातें सुनकर जीवन अवाक् रह गया। अपने गुणीदा की ऐसी रोनी सूरत उसने बहुत कम देखी थी। इधर कई दिनों से गुणीदा जैसे कुछ बताना चाह रहा हो, लेकिन बता नहीं पा रहा हो। उन दिनों वह बहुत कम बोलता है, जब बोलता है तो उसका गोरा रंग मारे उत्तेजना के और लाल हो उठता है, आवाज में अतिशय कोमलता आ जाती है। उसे बहुत सारी कसमें देकर, उसके राज को राज ही रखेगा, इस शर्त पर उसने संकोच छोड़ कर, अपने मन का भेद कह डाला। जीवन यह सुनकर एकबारगी सकते में आ गया। स्वर्ण को गुणी बेतरह प्यार करने लगा है। इस बेतरह प्यार का मतलब उसकी समझ में अभी तक नहीं आया। स्वर्ण की बेतरह प्यार की बात सुनकर उसके मन में हल्की-सी ईर्ष्या भी जाग उठी। गुणीदा उसे चाहे जितना मारे-पीटे, लेकिन उसके असली प्यार का हकदार वह स्वयं को समझ बैठा था। वैसे उसे यह कोई खास परेशानी की बात भी नहीं लगी, क्योंकि स्वर्ण को तो वह भी थोड़ा-बहुत चाहने लगा था।

गुणी ने ही उसे समझाया कि उसका प्यार दूसरी तरह का है। ऐसा प्यार किसी लड़के से नहीं किया जाता। जान-पहचान [illegible] लोग ब्याह से पहले जैसे अपनी होने वाली बहुरिया को प्या[illegible]

स्वर्ण के प्रति उसका प्यार वैसा ही है। ऐसे प्यार में, हर वक्त उसी की याद आती है, उसके करीब जाने का, सिर्फ उसी से बातें करने का मन करता है।

गुणी के इस तरह समझाए जाने पर जीवन को इस प्यार का कुछ-कुछ मतलब समझ में आया। तो यह बात है ! ब्याह के पहले गुणीदा स्वर्ण से उसी तरह प्यार करने लगा है। जीवन को भी अब यह मामला गम्भीर लगा। दोनों में कई दिनों तक सलाह-मशविरा चलता रहा। कभी-कभी तो वह दोनों बात-चीत में ऐसे खो जाते कि गुणी बाँसुरी बजाना भी भूल जाता। अब उसने जीवन को मारना भी छोड़ दिया। जीवन उसे अपना सच्चा हमदर्द जो लगने लगा था।

वैसे जीवन को सचमुच हमदर्दी थी। सोलह की उम्र पार करके, सत्रहवाँ साल लगने पर भी जीवन गुणी की तुलना में बहुत कच्चा था। अपने गुणीदा की यह हालत देखकर उसे मन-ही-मन स्वर्ण पर गुस्सा भी आया। उसका मन हुआ कि उसे पकड़ कर इधर-उधर से एक-दो हाथ जमा दे। लेकिन लड़की पर वह हाथ कैसे छोड़े ? वह भी जाने अभी पन्द्रह साल की हुई है या नहीं, लेकिन उसके हाव-भाव बुढ़ियों की तरह पके हुए हैं। वह तो जीवन को भी निरा बच्चा समझती है। आँखें तरेरती हुई मारने दौड़ती है। उस दिन गुणीदा से सलाह करके उसने चालाकी से स्वर्ण को बगीचे में लाने की बहुत कोशिश की। उसे इधर-उधर बहुत-से भुलावे दिये, लेकिन स्वर्ण फौरन समझ गयी कि वह उसे बहका-फुसलाकर बगीचे में ले जाने के चक्कर में है। कभी उसे देखते ही मुँह चिढ़ाकर उसे भगा दिया, कभी फजीहत करने की कोशिश की।

लेकिन जीवन अपने गुणीदा के लिए कुछ करने को जैसे उमड़ा पड़ रहा था। मानो यह उसकी भक्ति की परीक्षा हो और अगर वह उसके दिल की आग ठंडी न कर पाया, तो उसके होने की क्या सार्थकता ? और किसी ताकतवर आदमी को हिम्मत हारते देखकर, कमजोर आदमी में अपनी ताकत दिखाने की साध भी तो जाग उठती है। इन दिनों उसके गुणीदा का दिल बेहद कमजोर हो गया है। ऐसे

में उसके लिए वह कुछ कर पाया, तो गुणीदा की नजर में चढ़ जाएगा।

गुणीदा को बिना कुछ बताए, काफी उधेड़-बुन के बाद उसने एक उपाय सोच लिया। गुणीदा ने यह बात किसी को बताने को मना किया है। लेकिन स्वर्ण को बता देने में क्या हर्ज है ? वह किसी पराये को तो बताने जा नहीं रहा। उसका गुणीदा जिसे प्यार करता है, उसी को तो बताने जा रहा है। हो सकता है स्वर्ण को यह बात न मालूम हो, इसी से गुणीदा की तकलीफों का भी उस पर असर न होता हो। उसे अगर यह बात मालूम हो जाये तो वह खुश हो जायेगी और गुणीदा से सही तरीके से पेश आने लगे। कोई उसे प्यार करता है, यह सुनकर किसे खुशी नहीं होती ? जीवन को भी होती है।

उस दिन दोपहर को स्वर्ण घर पर अकेली थी। आंगन के लौकी की लतर के नीचे बाल्टी-भर पानी लिए पूजा के बर्तन मांज-धो रही थी। जीवन दबे पांव उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसके पास घुटनों के बल बैठ गया। आजकल गुणीदा के मुंह से स्वर्ण के बारे में इतनी-इतनी बातें सुनकर उसे भी वह अच्छी लगने लगी है। पूछा, 'क्यों क्या कर रही है ?'

स्वर्ण ने तिरछी निगाहों से उसकी तरफ एक बार देखा और कोई जवाब न देकर अपने काम में लगी रही।

जीवन ने मुस्कराकर कहा, 'आजकल गुणीदा क्या कहता है, मालूम है ? कहता है, तेरी जैसी सुन्दर लड़की पूरे बाकुंग जिले में नहीं है।'

बाल्टी के पानी में बर्तन डुबोते हुए स्वर्ण के हाथ एक पल को रुक गये। उसने बोलने वाले की तरफ देखा तो नहीं; लेकिन उसके कान कुछ और सुनने को उत्सुक हो उठे।

जीवन ने उसके पास आकर, आत्मीयता जाहिर करने की कोशिश की। उसे थोड़ी उम्मीद भी बंधी कि उसे बताना बेकार नहीं जायेगा। कहा, 'एक बात बतानी है तुझे, बेहद प्यारी बात ! लेकिन, पहले वचन दे कि किसी से कहेगी नहीं।'

स्वर्ण ने उसकी ओर एक बार तटस्थ भाव से देखा और फिर अपने

काम में व्यस्त हो गयी। जीवन उसकी खामोशी को स्वीकृति मानकर आश्वस्त हो गया। उसके कानों में फुसफुसाकर कहा, 'गुणी'दा तुझे बे-हद प्यार करता है; बिल्कुल दिल से प्यार करता है—समझी ?'

स्वर्ण का हाथ एकबारगी रुक गया। लेकिन उसके चेहरे को देखकर जीवन को लगा कि वह जितना चाहता था, उतना असर उस पर नहीं हुआ। उसने उसे साफ-साफ समझाने की कोशिश की। कहा, "अरे, पगली, गुणी'दा जैसा प्यार मुझे करता है, वैसा नहीं—यह बिल्कुल दूसरे तरह का प्यार है। जान-पहचान होने पर, लोग जैसा अपने होने वाली बीवी को करते हैं।'

वह और भी कुछ कहने जा रहा था कि स्वर्ण ने उस पर बाल्टी का भरा पानी उड़ेल दिया। इस आकस्मिक हमले से उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। उसकी गर्म कमीज भी बुरी तरह भीग गयी।

स्वर्ण की खिल-खिल हँसी सुनाई पड़ी। जीवन के सम्भल कर खड़े होने से पहले ही वह वहाँ से भाग खड़ी हुई। अभी भी जीवन की नाक, आँख से पानी बहता जा रहा था। वह बगीचे की तरफ भागा। इतने अच्छे काम का इतना बुरा फल उसने सपने में भी नहीं सोचा था। उसे लगा ऐसी लड़की को प्यार करने के बजाय, उसका टेंटुआ दबा कर मार डालना चाहिए। अब तो जो होना था, वह हो गया। जब उसने सारी कहानी गुणी'दा को सुनायी, तो उसने भी उसकी हालत पर रहम खाने की जगह गुस्से में आकर दो-चार तमाचे जड़ दिये। अब जीवन से सचमुच सहा नहीं गया। वह रो पड़ा।

उसे रोते देखकर गुणी शान्त हो गया। इन दिनों वह बेहद क्षमाशील हो उठा था। उसने जीवन को तसल्ली देने की कोशिश की। उसे समझाया कि वह स्वर्ण का इस तरह बिगड़ उठना, विरक्ति की नहीं अनुरक्ति की निशानी है। प्यार की बातें सुनकर लड़कियाँ अपनी खुशी इसी तरह जाहिर करती हैं। यूँ बेइज्जत होने के बाद जीवन उसका और प्रिय और विश्वस्त हो उठा।

कभी-कभी वे दोनों अपनी साइकिल उठाए, सामने दूर-दूर तक फैले हुए पहाड़ की ओर निकल जाते। सारी राह स्वर्ण के ही किस्से

स्वर्ण की ही बातें। गुणी कुछ कहते-कहते अचानक ही चुप हो जाता। सामने का सांय-सांय करता सपाट मैदान, मूक तपस्वियों की तरह खड़े पेड़, पहाड़, आकाश—सब मिल-जुलकर एकाकार हो जाते। किसी-किसी दिन वे लोग साइकिल से उतरकर, कहीं थोड़ी देर को सुस्ताने बैठ जाते और मुग्ध दृष्टि से अपने चारों तरफ के दृश्यों में डूब जाते। थोड़ी देर बाद, गुणी अपनी जेब से बांसुरी निकालकर उदास-सी धुन छेड़ देता।

अचानक एक दिन खबर मिली, स्वर्ण के ब्याह की बात चल रही है। शायद जल्दी ही उसका ब्याह भी हो जाए।

गुणी के सीने पर ये बातें हथौड़े की तरह चोट करती रहीं। सीने के भीतर अचानक कहीं कुछ टूट-फूटकर बिखर गया। स्वर्ण की एक झलक पाने की कोशिश में गुणी की आँखें दिन-रात उसके घर की ओर लगी रहतीं। कई दिनों पोखर के किनारे भी उसकी प्रतीक्षा करता रहा। दादी की खिड़की पर भी एक पांव पर खड़ा रहा। उसके दरवाजे की ओर टकटकी लगाये देखता रहा। शाम को अँधेरे में उसके घर के आस-पास कई-कई घण्टे घूमता रहा। उस समय स्वर्ण सोलह साल की थी और वह उन्नीस का! लेकिन इसी बीच स्वर्ण आँख में धूल झोंकने वाली कला में, उससे अधिक चालाक हो गयी थी।

उन दिनों जब कि वह बेहद परेशान मन.स्थिति में था। जीवन उसके लिए एक शुभ-सूचना लाया। पहाड़ के करीब एक साधु जी आये हैं, उन्होंने बहुत तरह की कठिन साधना की है। अलौकिक जप-तप भी किये हैं। यानी साक्षात् महापुरुष हैं। उनके हाथों भी क्या बेड़ा पार नहीं लग सकता? वह उनका बेड़ा जरूर पार लगा देंगे। अगर कोई गुणी को यह आश्वासन देता तो वह मरीचिका के पीछे भी दौड़ने को राजी हो जाता, फिर ये साधु जी कौन-से खेत के मूली थे? दोनों उसी समय साधु जी के पास पहुँचे, उनके चरणों में सिर झुकाए बैठे रहे—दो दिन नहीं, लगातार कई दिनों तक। अभी तो जाने

लगेंगे ? जिस दिन साधु जी खुश मूड में होते, दो-एक अलौकिक करिश्मे भी दिखाते। उन दोनों की आँखों के सामने ही चुटकी-भर धूल उठाकर मुट्ठी में बन्द कर लेते और जब खोलते तो धूल की जगह सन्देश या चीनी मिलता। साधु बाबा ने किसी की हथेली पर अपनी जटा से एक बाल तोड़ रख दिया—'जा ले जा।' उसके देखते-ही-देखते, वह बाल काली माई के चरणों पर चढ़ाया हुआ, सुर्ख जवा फूल बन गया। किसी को कोई पत्ता देकर चबाने को कहते ही, दस मिनट के अन्दर, वह आदमी नशे में बेसुध होकर झूमने लगता।

लगातार पन्द्रह दिनों तक धरना देने के बाद गुरु जी ने अपनी लाल-लाल आँखें खोलीं और उसकी ओर देखते हुए डाँटकर पूछा, 'छोकरे, तू विषय-वासनाओं का गुलाम है। जा, तू जहन्नुम में जा।'

लेकिन गुणी जहन्नुम में जाने के इरादे से नहीं आया था। डाँट खाकर उसका विश्वास और दृढ़ हो गया। पन्द्रह दिनों तक और धरना देने और अपने चेले जीवन के मारफत दादी के बक्से के करकराते नोट, गुरु जी को नजर करने के बाद भी, जब उन पर कोई असर नहीं हुआ तो उसका धीरज टूटने ही वाला था कि साधु जी की उस पर कृपा-दृष्टि हुई। उन्होंने बताया कि उसके लिए वशीकरण-लेप तैयार करना होगा। इसके लिए कुछ जरूरी सामान चाहिए। लजारों की पत्ती, किसी साधु की जटा, चौलाई का पत्ता, बहेरी, गाय का असली घी, आदि-आदि सामान लाना होगा। फिर ॐ ह्रिंग मोहनी स्वाहा। ॐ चिटी-चिटी चाण्डाली स्वाहा।

'तू इतना भी नहीं कर सकता ? तुझे इन चीजों की भी पहचान नहीं ?' साधु जी ने गुस्से में लाल-लाल आँखों से कहा, 'तो फिर जहन्नुम में जा।'

जहन्नुम से उद्धार पाने के चक्कर में दादी की पिटारी बिल्कुल खाली हो गयी। गुणी ने सोच लिया कि अगर पकड़ा गया तो आत्महत्या का डर दिखाकर दादी का मुँह बन्द कर देगा। उसे पक्का विश्वास था कि दादी जरूर डर जाएगी।

वशीकरण-वटी तैयार हो गयी। अलौकिक शक्ति-साधना से साधु

जी ने सारा सामान इकट्ठा किया। कई जड़ी-बूटी मिलाकर सन्देश जैसी चीज तैयार करके, यज्ञ और होम किया गया। साधु जी ने मंत्र पढ़ा, महाचाण्डाली फलाँ लड़की वश्य मानाए स्वाहा। ऊँ, नमः कामाक्षा देवी फलाँ लड़की वशंम् करी स्वाहा।'

फिर वह वशीकरण गुणी के हाथों में रखते हुए कहा, 'किसी छल-बल से यह बूटी उस लड़की को खिलानी होगी। इसे खाते ही वह दो दिनों के भीतर ही छाया की तरह तेरे पीछे-पीछे डोलने लगेगी और उसके माँ-बाप भी तेरी मुहब्बत में अन्धे हो जाएँगे। अगले तीन दिनों के भीतर ही यानी उतरते आषाढ़ के अनुराधा और रोहनी नक्षत्र के भीतर ही यह काम हो जाना चाहिए, वर्ना इसका असर जाता रहेगा।'

तीन दिन की जगह दो दिनो मे ही काम हो गया। ताऊ उन दिनों कचहरी के काम से शहर गये थे। चार-पाँच दिनों के पहले लौटने वाले नही थे। यह भी भगवान की मर्जी के अलावा और क्या था? गुणी स्वर्ण से अकेले में मिलने को बेचैन हो उठा। उसने उसे कितनी आवाजें दी, कितनी मिन्नतें की, कितनी कोशिशें कीं, लेकिन वह दस मिनट को भी, उससे एकान्त में मिलने को राजी नहीं हुई।

अगले दिन वह शाम ढले तक उसकी प्रतीक्षा करता रहा। अन्त मे तालाब के उस पार एक झाड़ी मे छुपकर बैठ गया और बाँसुरी पर एक मोहक तान छेड़ दी।

गुणी की बाँसुरी ने इतनी बेचैन आवाज मे उसे कभी नही बुलाया था। इस बार काम बन गया। झाड़ियो के उस पार से दबी आवाज मे स्वर्ण ने डाँटा, 'बाँसुरी बजाने को और कोई जगह नहीं मिली? वहाँ साँप-वाँप काट ले तो—?'

बाँसुरी बजती रही।

'मैं कुछ कह रही हूँ, सुनाई दिया या नही? या चिल्लाकर दादी को आवाज लगाऊँ?'

बाँसुरी थम गयी। गुणी ने झाड़ी से बाहर निकल कर पूछा, 'तुम कुछ कह रही थीं?'

'वहाँ क्यों बैठे हो? कोई साँप निकल आये तो?'

'इसीलिए तो यहाँ बैठा हूँ। मेरे बाप भी बाँसुरी बजाते थे। उन्हें भी साँप ने काट खाया। लगता है, मेरी भी किस्मत में वही है। अगर तू सचमुच ही चाहती है कि ऐसा न हो तो पाँच मिनट को मेरी बात सुन जा।'

स्वर्ण एक झटके-से आगे बढ़ी और उसे कमीज से घसीटते हुए दूसरी तरफ ले गयी। उसे धमकाते हुए कहा, 'चलो, तुम्हारे घर चलती हूँ। वहीं ददीया के सामने ही तुम्हारी बात सुनूंगी और सुन लो, अगर तुम दुबारा फिर कभी हमारी तलैया की ओर आए तो अच्छा नहीं होगा।'

गुणी ने उसके पैर पकड़ लिए। उससे अकेले में एक बात सुन लेने की मिन्नतें करने लगा। लेकिन स्वर्ण ने उसकी एक बात पर भी कान नहीं दिया। उसे कमीज से पकड़कर घसीटती हुई ले चली।

अचानक गुणी का सारा खून माथे पर जा चढ़ा। उसे दोनों बाँहों में कस कर, उसे लगभग घसीटते हुए झाड़ी की उस ओर ला गिराया और दबे स्वर में डाँटा, 'खबरदार, चोऽप। मेरी एक बात सुन लो, वर्ना कल मेरा मरा मुँह देखेगी।' मारे उत्तेजना के उसने झट से पॉकेट से वशीकरण-बूटी निकाली और उसे देते हुए कहा, 'ले, इसे अभी खाले। साधू जी ने दी है, तेरा और मेरा दोनों का मंगल होगा। यह बूटी हम दोनों के भले के लिए है ले खा ले—!'

स्वर्ण की सारी देह बिल्कुल अवश हो आयी। गुणी ने एक हाथ से उसे पीठ की तरफ से कसे हुए और दूसरे हाथ से उसकी बाँह थामे हुए वह बूटी उसके मुँह में ठूंस देने की कोशिश की। गुणी उस अँधेरे में भी उसकी डरी हुई आँखें देख पा रहा था। ऐसी नाजुक स्थिति में भी उसे समझाने की कोशिश की, 'डर की कोई बात नहीं है देख मैं भी खा रहा हूँ—।'

उसने एक बार में ही बड़ा-सा टुकड़ा तोड़कर मुंह में रख लिया और उसे दांत से चबाते हुए स्वर्ण को और जोर से कस लिया और बाकी टुकड़ा उसके मुंह में ठूंसकर कहा, 'लें, जल्दी से खा ले।'

स्वर्ण ने बुद्धुओं की तरह मुंह खोल दिया, उसने लगभग दो-तिहाई बूटी चबाकर निगल जाने की कोशिश की। गुणी दो-चार पल को उसी

तरह उसे अपनी बाँहों में कसे रहा। अँधेरे में, इतने करीब होने पर भी चेहरे पर का काला मसा दिखाई नही दिया। उसने अन्दाज से ही उस पर होंठ रख दिया, फिर उसे मुक्त कर दिया।

स्वर्ण झाड़-झखाड़ रौंदती हुई अपनी जान बचाने की हड़बड़ाहट में वह तेज कदमों से घर की तरफ दौड़ पड़ी।

गुणी थोड़ी देर उसी तरह बैठा रहा। अब उसकी उत्तेजना और सिहरन भी थम गयी। जिन्दगी मे जैसे यही काम बच रहा था, वह भी पूरा हो गया। अब थकान लग रही थी। समूचे तन-मन मे शिथिलता छाने लगी। पिछले कई महीनो से उसकी नसो मे अजब-सा तनाव छाया हुआ था। जुबान से तो साधू जी की जड़ी का स्वाद तो मिट गया, लेकिन स्वर्ण के होठो का स्वाद ज्यो का त्यों बना रहा। अब गुणी भी उसको मिटाने की बात नही सोचता। स्वर्ण की तरह उसे भी गोरे चेहरे पर चमकता हुआ मसा बेहद प्रिय लगने लगा। लेकिन अचानक गुणी की पलकें झपकने लगी। उसे शायद नीद आ रही थी। जाकर सो जाने की तबीयत हुई।

काफी वक्त गुजर गया। गुणी उठकर धीरे-धीरे घर की ओर चल पडा। लेकिन उसके दोनों पैर जैसे उठना ही नही चाहते। मारे नीद के उसकी आँखें झुकी जा रही थी। दो-तीन कदम चलकर ही लग रहा है, जैसे दस कदम चल चुका और फिर भी घर दिखाई नही दे रहा है। घर पहुँचते ही आँख और सिर पर अच्छी तरह पानी डाल कर, वह बिस्तर पर जा लेटा।

स्वर्ण के मकान की तरफ जाने कैसा शोर सुनाई दिया। लेकिन कुछ समझ मे नही आ रहा था। उसे लगा उसने जैसे किसी और का सिर लगा लिया हो। दादी कमरे में आकर कुछ कहने ही जा रही थी कि गुणी ने कहा, कि उसकी तबीयत ठीक नही लग रही है वह सोना चाहता है। कोई उसे आवाज न दे। दादी की तरफ वह पूरी तरह आँखें खोल कर देख भी नही सका। थोडी ही देर मे वह सो गया।

अगले दिन दादी और बुआ के झकझोरने पर उसकी नीद टूटी तो काफी दिन ढल चुका था। वे लोग स्वर्ण के बारे मे

लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आया। नहा-धोकर, खाना खाकर वह फिर सो गया।

वह उठा तो शाम हो चुकी थी। किसी ने बताया, स्वर्ण बहुत बीमार है। यह सुनकर गुणी को जरा भी घबराहट नहीं हुई। साधु जी ने जबर्दस्त जड़ी दी थी। कुछ-न-कुछ असर तो होना ही था। उस जड़ी की वजह से उसे भी जरा ज्यादा नींद आ रही है, लेकिन स्वर्ण को क्या हुआ? वह क्यूं बीमार है? इस बारे में कोई अन्दाज नहीं लगा सका। उसे यही खुशी थी कि स्वर्ण ने किसी को कुछ कहा नहीं कि वशीकरण-जड़ी का प्रभाव है।

उस रात भी गुणी गहरी नींद में बेहोश रहा।

तीन दिन बीत गये। किसी ने स्वर्ण के बारे में कुछ नहीं बताया। गुणी ने भी जानने की कोशिश नहीं की। चुपचाप इन्तजार करने के अलावा और कर भी क्या सकता था? उसे कुछ करने या जानने की कोई जल्दी भी नहीं थी। शाम होते ही वह अक्सर पहाड़ों की तरफ खुले मैदानों में निकल जाता और वहाँ चुपचाप बैठा रहता। अब उसने बाँसुरी बजाना भी छोड़ दिया था। एक-आध बार जीवन की याद जरूर आयी, लेकिन इधर कई दिनों से जाने क्यों वह दिखा ही नहीं। अब उसके लिए भी मन में कोई आग्रह नहीं था। उसे अकेले रहना ही भला लगता था।

जिस शाम ताऊ शहर से लौटे, वह बाहर जाने के लिए कमीज पहन रहा था। लेकिन कमीज उसके हाथ में ही रह गयी। स्वर्ण के दरवाजे पर भीड़ लगी हुई थी। उसने गौर से देखा वहाँ उसके ताऊ भी बैठे हैं। स्वर्ण के चाचा लोग पत्थर की मूर्ति की तरह गम्भीर बने खड़े थे और स्वर्ण के बप्पा रो रहे थे।

गुणी का कलेजा धड़क उठा। कमीज वहीं फेंककर वह दो कदम आगे बढ़ आया। वहाँ जो दृश्य देखा तो जमकर पत्थर हो गया। जीवन एक मोटे-से खम्भे की आड़ में मुंह छुपाये, काठ की तरह जड़ खड़ा था। दूसरी तरफ स्वर्ण बैठी थी। उसने सहमी हुई निगाहों से गुणी की ओर देखा और भाग जाने का इशारा किया।

लेकिन स्वर्ण की यह कैसी सूरत निकल आयी थी ? और वे सब लोग वहाँ क्या कर रहे हैं ? जीवन यूँ सर झुकाये क्यों खड़ा है ?

बिजली की करेन्ट की तरह खट से सारी बात उसकी समझ में आ गयी। लेकिन इससे पहले ही ताऊ कमरे में आए और उसका हाथ पकड़ कर खींचते हुए दरवाजे तक ले गये। उनकी ऐसी भयंकर मूर्ति गुणी ने कभी नहीं देखी थी।

एक अस्फुट-सा सवाल सुनाई पड़ा, 'स्वर्ण को क्या खिलाया था तूने ?'

गुणी आँख फाड़े हुए उसकी तरफ देखता रहा। ताऊ ने एक हाथ में अपनी खड़ाऊँ उठा ली। गुणीदत्त देख नहीं पाया। अचानक उसके नाक मुँह से कोई गोल-सी चीज टकरायी और चार कदम पीछे हटते हुए, उसके पाँव लड़खड़ा उठे लेकिन उसने दीवार का सहारा लेकर सम्हलने की कोशिश की। उसने पीठ घुमाकर दोनों हथेलियों से अपना चेहरा ढँक लिया।

सामने ही छाल उतारी हुई, टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी का एक चैला पड़ा था। ताऊ ने खड़ाऊँ फेंककर वह लकड़ी उठा ली। गुणी ने अपना चेहरा हथेलियों में छुपा लिया सामने की तरफ उसकी पीठ भर थी।

गुणी की आँखों के आगे मौत नाच उठी। लकड़ी के चैले की पहली मार में ही, उसकी समूची पीठ छिल गयी। उसकी सारी चमड़ी मांस काट कर अलग झूलने लगी, हड्डी तक में जलती हुई आग की लहर फैल गयी। शायद उस जलन को भुलाने के लिए ही उसने यह महसूस करने की कोशिश की कि उसके सर पर मौत नाच रही है। उसकी सारी पीठ लाल हो आयी। मुँह में भी खून का स्वाद महसूस हुआ।

एक पर एक कई दिन बीत गये। दिन रात कैसे आये, बीत गये, गुणी को याद नहीं। कई-कई दिन आँखों के आगे अड़ गये, मानो ये कभी बीतेंगे ही नहीं। बहुत-सी रातें मानो जम गयी हों—लेकिन दिन-रात हमेशा की तरह आते और बीतते रहे।

इतने सालों बाद पीठ का वह जख्म अब सूख चला है। इसके लिए कोई दवा-दारू भी नहीं की गयी, फिर भी वह भर गया है। गुणी को

अक्सर यही लगा कि वह जख्म बाहर से पुर गया है, लेकिन भीतर के हाड़-मांस में पीठ की हड्डियों के पोर-पोर में, हर समय जैसे आग का दरिया बहता रहता है।

अब तो उसकी याददाश्त भी कहीं से कमजोर पड़ गयी है अब वह कुछ नहीं सोचता, उसे कुछ याद भी नहीं। न, अब तो स्वर्ण की भी याद नहीं आती। वह उसकी पिछली-जिन्दगी की एक आयी-गयी बात भी रह गयी है।

वे तमाम बातें अब अतीत बन चुकी हैं, जो कभी जिन्दगी में होकर खत्म हो गयीं। दादी और बुआ उसके लिए रो-रोकर पागल होंगी, यह ख्याल भी उसे विचलित नहीं कर सका। ताऊ ने उसकी खोज की या नहीं इसकी भी उसे कभी चिन्ता नहीं हुई। उसने अपने मन के अन्दर भी झांक कर देखा है, वह जीवन से भी नाराज नहीं था। जो होना था, सिर्फ वही हुआ। वह मानो पेड़ का टूटा हुआ फल हो, जो अपनी डाल से टूटकर धरती पर गिर पड़ा। इस तरह टूटकर गिरना तकलीफ-देह तो था, लेकिन इसके लिए पेड़ की ओर देखते हुए विवशता भरी उसाँसें लेना निरर्थक था।

उसकी जिन्दगी के तमाम नाते-रिश्ते टूट-फूट गये। एकबारगी मिट चुके। उसकी देह में सिर्फ साँस-भर बच रही है। किसी दिन यह भी न रहे, तो उसे कोई आपत्ति या शिकायत नहीं होगी। ये साँसें अब तक टूटी नहीं, अतः बोझ लगने लगी हैं।

उस घटना के तीन माह बाद घूमते-फिरते अचानक एक दिन वह इसी इण्टरनेशनल रेस्तराँ के सामने आ खड़ा हुआ था। बाँस के एक बाँसुरी के सहारे, वह जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहा, न जाने कितनी जगह छोड़ आया।

वह रेस्तराँ के सामने इसी पत्थर के नीचे आ खड़ा हुआ। उस समय आने वाले दिनों के बारे में कोई पूर्वाभास भी नहीं हुआ था। वहाँ आते-जाते लोग उसके आगे कुछ पैसे जरूर फेंक देते थे। गुणी ने सोचा जब यहाँ पैसे मिलने बन्द हो जाएंगे, तो कहीं और चला जाएगा।

उन दिनों रेस्तराँ के गेट पर एक बूढ़ा दरबान तिरपाई डाले बैठा

रहता। ग्राहकों के आते ही उठकर खट् से सलाम ठोंकता। जाने गुणी की शक्ल देखकर या उसकी बात-चीत सुनकर। वह आदमी उससे शराफत से पेश आता। उसी ने जाने वाले पुराने ग्राहकों के बारे मे उसे सारी जानकारी देते हुए बताया था कि कौन आदमी शक्ल से दयावान लगता है—और उसका स्वभाव कैसा है।

चाँद साहब के बारे में भी उसी ने बताया था। उसी ने बताया था कि जादू का खेल दिखाने वाले लोग इस आदमी की इज्जत करते हैं। चाँद साहब नशे मे लड़खड़ाते हुए अपने साथियों के साथ रेस्तराँ के अन्दर जाते हुए एकाध बार पल भर को ठिठक गया। वहीं से खड़े-खड़े बड़े ध्यान से उसकी बाँसुरी सुनता रहा और उसकी तरफ देखता रहा। कभी-कभी एक आध चवन्नी या अठन्नी भी उसके आगे उछाल दिया। जादूगर की दुनिया उसकी बहुत इज्जत करती है। यह जानने के बाद से ही गुणी की आँखें जाने क्यों उसके प्रति अधिक सजग हो उठीं। उसे लगा इसके पीछे ऊपर वाले अदृष्ट जादूगर का कोई संकेत हुआ है। इसकी उसने कल्पना भी नही की थी। अब वह इसकी उम्मीद भी छोड चुका था। उसने अपने सामने बिछी राह की तरफ देखना भी छोड़ दिया था। लेकिन अनजाने में ही, हर आदमी के मन मे जीने की ललक होती है। यह जिन्दगी का नियम है आदमी जीने की लगन लिए तरह-तरह के जाल बुनता रहता है।

एक रात चाँद साहब को अकेले ही बाहर निकलते देखकर, उसने बाँसुरी की धुन जरा तेज कर दी मानो उसके पास मूक आवेदन भेजा।

चाँद साहब उसके पास आकर खडा हो गया। थोड़ी देर तक उसका निरीक्षण करता रहा फिर जेब मे हाथ डाला।

'पैसा देने की जरूरत नहीं है, साहब! कुछ बजाना चाहता हूँ, सुनियेगा?'

चाँद साहब उसे थोडी देर हैरत से घूरता रहा। उसने क्या देखा यह तो वही जाने, लेकिन इतने गौर से उसे कभी नहीं देखा था।

वह धम्म् से उस मूर्ति के नीचे जमीन पर ही बैठ गया। 'सुनाओ—!'

अपने मन में ही कहीं कोई हिचकिचाहट थी। कहा, 'जाओ उनसे कह दो कि इस वक्त सो जाए। उसकी बात में सुबह उठकर सुनूंगा।'

अपने कमरे में जाकर उसने दरवाजा उढ़का लिया। नशे की हालत में उस लड़की के पास जाना, उसके लिए आसान बात नहीं थी। शिरीन शराब की गन्ध तक बर्दाश्त नहीं कर सकती। किसी को शराब पीते देखकर या किसी शराबी के करीब आते ही उसकी शक्ल ही बदल जाती है।

पिछले कई महीनों से वह शिरीन को जादू-सहचरी की ट्रेनिंग दे रहा था। इसी मामले में गुणीदत्त के निष्ठा और एकाग्रता में कोई कमी नहीं आयी। शिरीन उसकी नियति थी, जिससे उसका रिश्ता, दोस्त से मिले हुए उस कीमती पत्थर की तरह था। उसने फैसला किया कि वह उसी सच्चाई से उसकी हिफाजत करेगा। उस लड़की की बुद्धि और एकाग्रता देखकर वह मन-ही-मन मुग्ध था। उसे जो सिखाया या समझाया जाता है, यह ठीक-ठीक सीख-समझ रही है या नहीं, उसके चेहरे से इसका अन्दाज लगाना मुश्किल था। लेकिन जब भी उससे खेल दिखाने को कहा जाता, वह इतने खूबसूरत ढंग से खेल दिखाती, कि उसकी तबीयत खुश हो जाती। गुणी ने कई बार उसे भी चक्कर में डालना चाहा। लेकिन वह ठिठककर एक पल उसकी ओर देखती रहती और फिर फिस्स् से हँस देती। उसके होंठों से अधिक उसकी आँखें हँसती, बीच-बीच में उसके खूबसूरत से दाँत भी रह-रहकर झिलमिला उठते।

गुणीदत्त ने अभी तक उसे स्टेज पर पेश नहीं किया था यानी दर्शकों की निगाह से उसे बचाए हुए था। एडवार्ड उड ने कई बार कहा भी, 'भई, उसे स्टेज पर उतारने में तुम्हें क्यों आपत्ति है? वह भी कोई छोटा-मोटा जादू दिखा देगी, इसमें तुम्हें क्या ऐतराज है?' गुणीडाटा के बौड़मपने पर उसे झुंझलाहट भी हुई।

गुणीदत्त ने साफ जवाब दिया, 'वक्त आने पर स्टेज पर ही उतरेगी। तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं।'

अकेले में जूली ऐण्डरसन ने भी भौंहें चढ़ाकर जवाब तलब किया,

मई, ऐसी खूबसूरत लड़की को सिर्फ तुम ही हथियाए बैठे रहो, यह बात भ्रपने मालिक साहब सह नही पा रहे हैं। उनकी तबियत भी नही खुश की गयी भ्रौर बिचारे को पैंसो का जो नुकसान उठाना पड़ रहा है वो भ्रलग। इस लड़की को देखकर दर्शकों को नशा भ्राने लगेगा! नशा!'

जूली की हँसती हुई तिरछी निगाहें उसे भ्रच्छी नहीं लगीं। लेकिन जाने क्यों जेनिफर उड ने शिरीन को स्टेज पर उतारने की कभी जिद नही की। उसने कभी कुछ नही कहा, चुपचाप उसकी ट्रेनिंग का खर्च चुकाती रही।

खेल सीखने के वक्त शिरीन, गुणीदत्त को शिक्षा-गुरु की तरह ही भ्रादर देती है। वह जो कुछ बताता है, सादर-सम्मान भ्रौर ध्यान से सुनती है। जादू-खेलो की दुनिया उसे बहुत भ्रच्छी लगने लगी है, यह भी स्पष्ट था, लेकिन किसी पार्टी या महफिल में उसे शराब पीते देखते ही उसका चेहरा भ्रगर एक बार तन जाता है, तो दुबारा सहज होने मे कुछ समय लगता है। जब वह दिल्ली मे थी, एक बार तीन दिनों तक उससे नही बोली।

गुणीदत्त ने कई बार पूछा, 'क्यों! क्या हुम्रा है?' उससे कोई जवाब न पाकर वह भुँझला उठा। लेकिन थोड़ी देर बाद ही कोमल भ्रावाज में दुबारा पूछा, 'क्या हुम्रा है तुम्हें?'

शिरीन पल भर को चुप रही, फिर पलट कर प्रश्न किया, 'तुम शराब क्यों पीते हो?'

गुणीदत्त पहले तो भ्रवाक् रह गया, भ्रचानक उसे ख्याल भ्राया, उसने जब भी शराब पी है, शिरीन इसी तरह चुप हो गयी है। यहाँ तक कि उसके पास करीब भ्राने से भी कतराती रही।

उससे कोई जवाब न पाकर शिरीन ने फिर उसी तरह, शान्त भाव से कहा, 'जानते हैं, मेरी माँ भी ऐसे ही शराब पीते-पीते मर गयी। साहब जी भी इसी शराब के कारण भ्रपनी जान से हाथ धो बैठे। दरभ्रसल शराब बड़ी दुश्मन चीज है।'

गुणीदत्त बहुत देर तक कुछ बोल नहीं पाया। फिर भी

देते हुए कहा, 'अच्छा, मैं कोशिश करूँगा कि शराब न पीऊँ।'

जूली को यह समझ नहीं आया कि आज वह शिरीन के सामने क्यों नहीं गया। वैसे इन दिनों गुणीदत्त ने शराब करीब-करीब छोड़ ही दी थी। कभी-कभार थोड़ी बहुत पी भी है तो शिरीन को पता नहीं चला। लेकिन आज गुणी का जैसे अपने पर काबू नहीं था। आज वह बेहिसाब और बेशुमार पीता रहा है। उस जरा-सी छोकरी की बातों की इतनी परवाह करना, उसे सख्त बेवकूफी लगी। फिर भी इस वक्त उसके पास जाने में हिचकिचाहट हो रही थी। उसने सोचा ऐसी हालत में उसके पास जाने की क्या जरूरत है।

लेकिन शिरीन को क्या हुआ है? जूली भी बहुत परेशान लग रही थी। उसे जूली का परेशान होना अजीब लगा। क्योंकि उस जैसी हल्के-फुल्के मूड वाली लड़की किसी तरह की चिन्ता-फिक्र को लिपट ही नहीं देती। गुणी का शिरीन से न मिलने की वजह, शायद वह समझ गयी थी। शायद इसीलिए उसने जोर भी नहीं दिया। उसे भी लगा होगा, शराब के नशे में उसके दिमाग का भरोसा नहीं, जाने क्या का क्या कर बैठे।

गुणीदत्त को हँसी आने लगी। यह सच था कि शिरीन शराब की गन्ध तक बरदाश्त नहीं कर सकती, इसीलिए इस वक्त वह उसके पास नहीं गया। लेकिन, वह चाहे जितना भी पी ले उसने अपना होश-हवाश कभी नहीं खोया। इस मामले में गुणी चाँद साहब का हमेशा कृतज्ञ रहेगा। चाँद साहब जिसका उस्ताद हो, उसे शराब पीकर लड़खड़ाने की आदत पड़ ही नहीं सकती।

घूम-फिरकर फिर वही चाँद साहब का ख्याल! गजब है! आज उसे हो क्या गया है?

वह बिस्तर पर लेटने ही जा रहा था कि किसी ने दरवाजा खट-खटाया। उसने सोचा जूली होगी, जाने अब कौन-सी नयी खबर लायी है।

"अन्दर आ जाओ।'

दरवाजा खुलते ही शिरीन अन्दर आ खड़ी हुई। संगमरमर की

गुलाबी मूर्ति की तरह। उसके हाथ में एक रजिस्ट्री लिफाफा था।

गुणीदत्त चौंक उठा, 'क्या बात है ? अन्दर आओ न। यह तुम्हारे हाथ में क्या है ?'

शिरीन एक-एक कदम चलती हुई, उसके सामने आ खड़ी हुई, एक बार उसका सिर से पैर तक निरीक्षण किया।

गुणीदत्त नर्वस हो उठा। उसके करीब आकर कन्धे पर हाथ रखते हुए पूछा, 'क्या बात है, शिरीन ?'

शिरीन ने आहिस्ते से उसका हाथ अपने कन्धे से हटा दिया। उसके चेहरे की ओर देखती रही। उसने शराब पी है, यह जानते हुए भी उसने जुबान से कुछ नहीं कहा। अजीब-सी ठंडी आवाज में कहा, 'हटो जरा, दूर जाकर बैठो।'

गुणीदत्त सकपका गया, वर्ना उसे डाँट देता। वह चुपचाप वहाँ से हटकर बिस्तर पर आ बैठा।

शिरीन ने उसी तरह ठंडी आवाज में कहा, 'साहब जी नहीं रहे।'

उसने लिफाफा सामने रख दिया और जैसे आयी थी, वैसे ही वापस लौट गयी।

गुणीदत्त को जैसे कुछ समझ ही नहीं आया। वह ब्लैंक भाव से उसे जाती हुई देखता रहा। कुछ देर बाद उसने लिफाफा उठाकर हिला-डुलाकर देखा, फिर खत खोलकर पढ़ने लगा। चाँद साहब की आखिरी इच्छा के अनुसार खत अस्पताल से लिखा गया था। चाँद साहब परसों मर गया। उसके पास जो रुपये बच रहे थे, उसके निर्देशानुसार जादूगर गुणीडाटा के नाम इन्दयोर करके भेजे जा रहे हैं।

······चाँद साहब ? यह कौन चाँद साहब हैं, जिसकी आज सारे दिन याद आती रही ? वह अगर चाँद साहब था और अगर वही अब मर चुका है, तो आज ही इतना जीवन्त होकर उसके सामने क्यों आ खड़ा हुआ है ? असली जादूगर आखिर कौन है ? चाँद साहब या गुणीडाटा ?

गुणीडाटा जादूगर है, उसका इस तरह चकित होना शोभा नहीं देता। वह तो औरों को चकित किया करता है।

रात कितनी बीत चुकी है, गुणीदत्त अन्दाज नहीं लगा पाया। वह उठकर खड़ा हो गया। उसे आज क्या हुआ है···अरे, हां, याद आया··· चाँद साहब मर गया है। हैरत है, जो आदमी उसके ख्यालों में इस कदर जिन्दा है, उसी के बारे में खबर मिली है कि वह मर गया। गुणी ने अपने चेहरे और आंखों पर अच्छी तरह पानी के छींटे मारे······चाँद साहब नहीं रहा। शिरीन को सख्त सदमा लगा है। उसकी तो सूरत ही बदल गयी। वह कल उसे समझा देगा। वह उसे बता देगा कि इन जादू खेलों के मूल में कहीं कुछ नहीं है। दरअसल यह सब आंखों का धोखा है। यह क्या उसकी समझ में नहीं आया? उसके समझाने से अब शायद वह समझ जाए।

गुणीदत्त ने अपने आस-पास नजरें घुमाकर देखा। शायद वह कुछ खोज रहा था। ओह, हां, तौलिया। लेकिन तौलिया तो यहाँ पड़ा है। दरअसल, चाँद साहब को किसी बात की अकल नहीं थी। मन ही मन इस तरह घुटना, छटपटाते रहना, कोई अच्छी बात नहीं थी।

गुणी पंखा फुल-स्पीड पर करके, बत्ती बुझाकर बिस्तर पर लेट गया और पलकें मूंद लीं।

चाँद साहब!

चाँद साहब मर गया! उसे अब सो जाना चाहिए।

नौ

जूली के अहसान बढ़ते ही रहे।

शुरू-शुरू में गुणीदत्त मन-ही-मन नाराज भी हुआ था। अभी भी

कोशिशों से, एक-एक करके लगातार दस दिनों तक बेजान और बर्फ की तरह ठंडी शिरीन को क्रमशः सजग होते देखकर वह अवाक् रह गया। अगर उसने यह सब अपनी आँखों से न देखा होता तो उसकी इस तटस्थता को लेकर अकेले में जूली के सामने शायद कोई व्यंग्य भी कर बैठता। लेकिन यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि जहाँ उसके कोरे उपदेशों और गम्भीर अनुशासन से काम नहीं बना, वहाँ जूली की एक नन्ही-सी बात असर कर गयी।

शिरीन कुर्सी पर बैठी हुई, अपलक दृष्टि से जूली की तरफ देख रही थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में नारी-सुलभ उत्सुकता की झलक थी। जूली के मुँह से अपने लिए रिमार्क सुनते हुए, उसके गाल एकबारगी लाल हो उठे, अन्त में उससे नहीं रहा गया और वह होंठ काटकर हँस दी। उसके चमकते हुए शुभ्र दाँत झलक उठे।

यूँ अति साधारण-सी घटना थी।

गुणीदत्त ने उसके मन से मौत की दहशत मिटा देने की कोशिश की। लेकिन जैसे कोई एक सौ पाँच डिग्री बुखार को जबर्दस्ती खींचतान कर उतारना चाहे, वैसे ही यह कोशिश भी असम्भव जान पड़ी। गुणीदत्त की झुँझलाहट बढ़ने लगी। इन दिनों उसके मन में ही कहीं कुछ काट-छाँट चल रही थी। उसके भी मन के आईने में किसी व्यक्ति की तस्वीर थी, जो धीरे-धीरे मिटती जा रही थी—चाँद साहब की तस्वीर। दरअसल उसे भी शिरीन की तरह यादों के तेज चाकू से, अपने मन को कुरेदते रहना चाहिए था। अगर वह भी अपने मन को कुरेद पाता तो सही ढंग से चाँद साहब की मौत पर शोक मना पाता। वह कम से कम अपने को जस्टिफाई तो कर पाता। लेकिन उसके आईने में चाँद साहब की जगह एक और तस्वीर उभर आयी—एक लड़की की तस्वीर, जिसकी ठुड्डी पर लाल रंग का मसा, नगीने की तरह झिलमिलाता हुआ। जिसकी ठुड्डी की तरफ सबसे पहले ध्यान जाता है। बड़ी-बड़ी पलकों के नीचे, मटर के दाने के बराबर काले तिल की तरह—लाल मसा।

गुणीदत्त को यह सब सोचना बेहद हास्यास्पद लग रहा था। मन के उस अजीबोगरीब बहाव की तरफ, वह लौटना नहीं चाहता। अभी

पीठ का वह जलता हुआ निशान, भावों के उन्मुक्त बहाव को अवरुद्ध कर चुका था। इसके अलावा स्वर्ण भी अब उन्नीस साल की छोकरी ही नहीं बनी होगी। अब वह भी गुणमय किशोर नहीं रह गया। अब वह गुणीडाटा है, नाम और यश के चरम सुखों में डूबा हुआ महान् जादूगर।

ज्यों-ज्यों वह अपने को लेकर उलझता जा रहा था, उतनी ही अव्यक्त तेजी से अपने चेहरे पर गुणीडाटा का मुखौटा फिट करता गया। इसीलिए शिरीन की वह चुप्पी उसे अच्छी लगने के बजाय कहीं सुई की तरह चुभ गयी। दूसरे लोगों को चाँद साहब के मरने का दुख नहीं था। लेकिन सिर्फ दु:ख से चिपके रहने से आखिर कितने दिन चल सकता है ?

उसे अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। चलना होगा, काम भी करना होगा।

गुणीदत्त को सचमुच परेशानी हुई, जब उसका आदेश पाकर शिरीन चुपचाप उठ खड़ी हुई, चलने-फिरने लगी और उसके अनुसार काम-काज भी करने लगी। यह सब करते हुए बिल्कुल मौन बनी रही, मानो वह किसी बेजान मशीन या जादू का पुर्जा भर हो। चाहे जिधर से घुमाओ-फिराओ, उठाओ या बैठाओ, जो-जो कहा जाएगा करती जाएगी। यह सब करने के बजाय अगर वह कलेजा तोड़कर रो देती, दु:ख के मारे सिर पीटती तो उसे धीरज बँधाना आसान होता। इन सब के बावजूद गुणीदत्त ने सच्चे हमदर्द की तरह उसके करीब आने की कोशिश की। उसके पीठ पर और सिर पर हाथ फेरते हुए बहुत बड़े-बड़े दुखों की कहानियाँ सुनायी थीं। उसे समझाया था, 'सुनो, सिर्फ तुम्हारे ही सिर से चाँद साहब की छाँव नहीं हटी, आज से हम-तुम दोनों ही पितृहीन हो गये।'

गुणी की इतनी बड़ी संवेदना भी शिरीन को छू नहीं पायी। शायद इसीलिए उसके दु:ख में वह अपने को बिल्कुल कटा हुआ महसूस करता रहा। फिर भी उसने शिरीन को समझाने की कोशिश की। मृत्यु के सम्बन्ध में बताता रहा। कहा, 'देखो, यह सब परमात्मा के जादू के

अलावा और कुछ नही है। दरअसल सब आंखो का धोखा है। आदमी कभी मरता नही, सिर्फ चोला बदलता है। चांद साहब भी मरा नही है। वह फिर लौट आएगा।'

शिरीन चुपचाप उसकी बातें सुनती रही, अपनी जुबान से कुछ नही कहा। उसकी बातों का कभी जवाब नही दिया। उसके चेहरे की ओर एकटक देखते हुए, चुपचाप उसकी बातें सुना करती। सुनकर चुप रहती।

गुणी को लगा, उसकी इस चुप्पी मे भी कोई और शिकायत छिपी है। कौन जाने वह शिकायतें असली थी या मनगढ़न्त। लेकिन गुणीदत्त ने उन आंखो में अनगिनत शिकायतो की झलक पायी। वह मन ही मन पछता भी रहा था, कि काश, उस रात उसने शराब न पी होती, तो बेहतर था। वैसे शिरीन को यह ख्याल है कि उसकी मां शराब पीने के कारण ही इतनी जल्दी मर गयी। उसके साहब जी का भी वही अन्त हुआ। उस रात एक अव्यक्त दर्द से छटपटाती हुई, वह उसका इन्तजार करती रही। उसके न आने पर भी उसके इन्तजार मे घड़ियां गिनती रही कि गुणी आए और वह उसके सामने बिखर जाए। शायद इसीलिए वह उसके कमरे मे भी आयी थी। लेकिन गुणीदत्त उस वक्त चाहे जितनी भी होशो-हवास मे हो, लेकिन पेट मे पडी हुई बेहिसाब शराब, शायद उसके चेहरे पर अंकित थी।

शिरीन ने उसकी आंखो में छलकता हुआ नशा तो देखा, उसके मन के भीतर उमडते हुए हाहाकार को नही देख पायी।

गुणी ने अब अपने कर्त्तव्यो और जिम्मेदारियो की ओर ध्यान देना शुरू किया। उसने दुगुने आवेग से जादू-खेलों मे डूब जाने की कोशिश की। उस समय गुणी के कमरे में शिरीन और जूली के अलावा और कोई नही होता। वह शिरीन को जो-जो समझाता, वह चुपचाप ध्यान से सुनती और जादू-सहचरी की भूमिका निभाने की भरसक कोशिश करती। लेकिन बेजान मशीन की तरह काम किए जाने पर भी कभी-न-कभी कोई गलती हो ही जाती। गुणीदत्त बुरी तरह झुंझला उठता।

अकेले में जूली उसे समझाने की कोशिश करती, 'देखो, ऐसे मूड

मत खराब किया करो। अभी उसका मन कैसे लग सकता है? न हो कुछेक दिन, यह सब रहने दो।'

गुणी और चिढ़ गया। वह मास्टर की तरह और सख्त हो उठा। इन सब बातों को प्रश्रय न देकर उसने आरीवाले डिब्बे में झाँककर देखा, उसकी जादू-सहचरी ने कहीं कोई गलती तो नहीं की और एकबारगी गुस्से से फट पड़ा।

'मन हो रहा है, इसी आरी से तुम्हारे दो टुकड़े कर दूं। क्या बात है? मैं जो कहता हूँ, ठीक से सुनती क्यों नहीं?'

शिरीन सँभल गयी। अपनी भूल सुधार ली।

सम्मोहन के खेल में अब सब ठीक हो गया। जादूगर के इशारे पर उसके अंग-प्रत्यंगों में शिथिल प्रतिक्रिया भी स्पष्ट हो उठी। लेकिन उसकी खुली-खुली निगाहों का निरर्थक खालीपन, ब्लैंक दृष्टि, गुणीदत्त धीरज खोकर खीज उठा। हाथ की छड़ी हवा में लहराकर डाँटा, 'आँखें फाड़-फाड़ कर मेरी ओर क्या देख रही हो? आँखें खोले-खोले ही सोओगी क्या?'

शिरीन ने झट से आँखें मूंद लीं।

खेल खत्म होने के बाद गुणी ने अपना गुस्सा जूली पर उतारने की कोशिश की, 'भई, तुम भी तो थोड़ी बहुत कोशिश करके उसका जी बहला सकती हो या तुम्हारा भी कोई मर गया है?'

तटस्थ लोगों में शिरीन एकमात्र जूली से ही थोड़ी बहुत हँस-बोल लेती है। इस दोस्ती में जूली ने ही अपनी तरफ से उम्र के सारे फर्क मिटा दिये। वह बहाने-बहाने से उसे हँसाती-रुलाती, कभी चिढ़ाती, कभी एक ही बिस्तर पर लेटे-लेटे गलबँहियाँ डाले हुए, उसे देश-विदेश के तरह-तरह के किस्से सुनाया करती। इधर बहुत दिनों से यह सारे सिलसिले जैसे समाप्त हो चुके थे।

गुणी के आरोप पर जूली ने एक बार उसकी तरफ बनावटी गम्भीरता से देखा, फिर जवाब दिया, 'हाँ अगर मैं चाहूँ, तो उसका जी बहला सकती हूँ लेकिन तुम्हारे लिए थोड़ा-सा त्याग करने का मन हो आया है। सुना है, आदमी दुख के दिनों में जितना करीब आ सकता है, और

किसी समय में नहीं। लेकिन तुम्हारी अक्ल को क्या कहूँ? बुद्धुओं की की तरह उससे उलझते रहते हो। इस मौके का फायदा उठाने के बजाय...।'

गुणीदत्त गुस्से में पैर पटकता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। जूली के मजाक से अधिक उसकी हँसी खल गयी। लेकिन जूली को कुछ कहना या समझाना बेकार है। कभी-कभी तो वह शिरीन के सामने ही इशारे-इशारे में उससे फूहड मजाक करने से बाज नहीं आती।

अलबत्ता यह सब शिरीन की समझ में नहीं आता था। उसके बेतुके मजाक का कोई कूल-किनारा न पाकर वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखें जूली के चेहरे पर टिका देती और उसे हँसते हुए देखकर खुद भी मन्द-मन्द मुस्कराने लगती। यही एक लडकी है जो गुणीडाटा जैसे आदमी के मुँह पर तड़-तड़ जवाब दे सकती है। शायद इस वजह से वह जूली के प्रति श्रद्धानत थी।

जूली ने गुणीदत्त के सामने, अकेले में बड़े तटस्थ भाव से अपनी राय जाहिर की, 'दरअसल, यह लडकी निहायत बेवकूफ है। लगता है, तुम्हें साधारण इन्सान नहीं कुछ और समझने लगी है।'

गुणीदत्त ने भी एक दिन उसे कसकर जवाब दे दिया, 'देखो, उसे बेवकूफ ही रहने दो। मेहरबानी करके उसके आगे अपना असीम ज्ञान-भंडार न खोलना।'

उसकी बातों में झुंझलाहट और अपमान का दंश था। लेकिन, जूली पर ऐसी बातों का असर जरा कम ही पडता था। उसकी भौंहें तन गयी। पल भर को वह गुणीदत्त की ओर देखती रही, फिर अचानक फट पड़ी, 'यू रैस्कल, बदमाश, उस बिचारी कमजोर और नासमझ लड़की पर रौब गाँठने में आसानी होती है न?'

कभी-कभी तो गुणीदत्त को यह शक होने लगता कि इन सब मन्तव्यों के पीछे उनके मन की ईर्ष्या तो नहीं है। इतना मना करने, समझाने के बाद भी शिरीन को उसकी तरफ झुकाते जाने की, उसे जैसे धुन चढ गयी है। कभी-कभी यह भी लगता कि यह सब वह अपने सहज स्वभाववश ही कहती है।

उस जैसी लड़की के मन में देह के बारे में सुचितावोध कैसे हो सकता है ? वह औरत और मर्द के बीच एक ही रिश्ते को पहचानती है।

उस दिन गुणीदत्त को लेकर वह फिर एक ऐसा फूहड़ मजाक कर बैठी, लेकिन जिससे पुराने दिनों की सारी मनहूसी धुल-पुंछ गयी।

गुणीदत्त शिरीन को 'दिक् दृष्टि' नामक जादू सिखा रहा था। वह एक बार में उस खेल को नहीं समझ सकी, अतः गुणीदत्त का मूड ऑफ होने लगा। वह कुर्सी पर चुपचाप उसी तरह बैठी रही। जूली सोफे पर लेटी हुई कुछ बुनने में व्यस्त थी। उसे जब कोई काम नहीं होता तो वह ऊन-सलाई लेकर कुछ बुनना शुरू कर देती है। ढेर सारी लाइनें बुनकर फिर उधेड़ डालती, उधेड़कर फिर से बुनती। सलाइयाँ चलाते हुए लगता जैसे उसका सारा ध्यान बुनाई में है। उस समय भी वह तटस्थ मन से अपनी ऊन-सलाई में डूबी हुई थी।

'आँखें बन्द करो—'

शिरीन ने आँखें बन्द कर लीं। स्टेज पर यह जादू प्रस्तुत करने से पहले उसकी आँखों पर चार-पाँच पर्तवाली काले रंग की पट्टी बाँध दी जाएगी।

अपनी जेब से एक रूमाल निकालकर गुणीदत्त ने पूछा, 'बताओ तो मेरे हाथ में क्या है ?'

शिरीन दो-एक पल को चुप रही, फिर जवाब दिया, 'कलम !'

गुणीदत्त ने रूमाल समेत अपना हाथ टेबल पर दे मारा, 'आँखें खोलकर देखो, यह क्या है ?'

जूली ने एक बार आँखें उठाकर देख लिया, लेकिन चुप रही।

'तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहता। मन ही नहीं लगाओगी तो याद कहाँ से रहेगा ? अभी तो एक खेल ही ठीक से याद नहीं रख पातीं, जब दो-चार सौ खेल याद रखने होंगे। तब क्या करोगी ?'

शिरीन मौन रही, जूली सलाइयाँ चलाती रही।

'चलो, फिर से आँखें बन्द करो।' अपनी जेब से सौ रुपये का एक नोट निकालकर पूछा, 'खूब सोचकर बताओ, इस बार मेरे हाथ में क्या है।'

'रुपया !'

'राइट ! खैर, रुपया तो सभी पहचानते हैं', गुणीदत्त ने सरस आवाज में कहा, मानो कल्पित दर्शकों को भुलावा दे रहा हो, 'अब इस काली पट्टी की पर्तों से अच्छी तरह झाँककर देखो, और बताओ, कितने रुपये का नोट है ?' कहते-कहते सौ रुपये का नोट उसने अपनी जेब के हवाले किया और उसके बदले दो रुपये का एक नोट निकालकर उसके आगे कर दिया। स्टेज पर खेल दिखाते समय, वह चुपचाप सामने की कतार में बैठे दर्शकों में से ही किसी से नोट लेकर, अपनी साथिन को चकमा देने की कोशिश करेगा।

शिरीन उसकी तरफ आँखें मूँदे बैठी रही, मानो कुछ सोच रही हो, फिर कहा, 'पाँच का नोट है।'

गुणी हताश-सा एक कुर्सी खीच कर बैठ गया। आहट सुनकर शिरीन ने आँखें खोल दी, उसकी ओर देखते ही अपनी गलती समझ गयी। जूली ने दो-एक बार उन दोनों की तरफ देखा और फिर अपनी सलाइयों में उलझ गयी।

नाराज होकर शायद कोई फायदा नही होगा। गुणीदत्त ने गुस्सा छोड़कर उसे फिर समझाना शुरू किया, दर्शकों के सामने अगर ऐसी भूल कर बैठे तो कितनी बड़ी मुसीबत होगी। एक आदमी की मामूली सी गलती पर सारी की सारी पार्टी उखड़ जाएगी। जिन्दगी भर की मेहनत बेकार जाएगी। दर्शक उत्सुकता के सागर में गोता लगा रहे हों तो उसमें बाधा देने वाले को वह कभी मुआफ नही करेंगे।

गुणी को लगा उसकी बातें बड़ी रूखी और उपदेशात्मक लगती हैं। अतः उसने गलतियों के बारे में एक कहानी सुनायी। जादू के खेल में साथी अगर सजग न हो तो कितनी बड़ी दुर्घटना हो जाती है, इसका एक उदाहरण भी दिया। इसी शहर का एक बहुत बड़ा जादूगर स्टेज पर खेल दिखा रहा था। साथी की जरा-सी भूल की वजह से एक आसान-सा खेल दिखाते हुए भयंकर स्थिति में फँस गया। सारा हॉल दर्शकों से भरा हुआ था। उसने सामने की कतार की संभ्रान्त महिला से उसकी हीरे की अँगूठी माँगकर खेल शुरू किया। बड़ा-सा

हीरा था, कम से कम दस-बारह हजार रुपये का। महिला ने दर्शकों के सामने ही अपनी अँगूठी एक रूमाल में बाँधकर जादूगर के करीब रखे हुए गिलास में डाल दी। वह अँगूठी वाला रूमाल खोलकर देखा गया तो अँगूठी की जगह एक कबूतर निकल आया। उसके गले के पट्टे में अँगूठी बँधी हुई थी। जादूगर ने उस कबूतर को डाँट कर कहा, 'चोरी करना बुरी बात है। जाओ, जिसकी चीज है, उसे लौटा आओ।' मतलब यह कि कबूतर जरा इधर-उधर उड़ेगा फिर जादूगर खुद उसे लेकर उस महिला के पास जायेगा और अँगूठी खोल लेने को कहेगा—यहीं गलती हो गयी। छुटकारा पाकर कबूतर उड़ा और हॉल की एक अधखुली खिड़की से अदृश्य हो गया। क्या बढ़िया तमाशा हो गया। दर्शक तो खैर, समझ नहीं पाए, लेकिन जादूगर के काटो तो खून नहीं। काले रेशमी डोरे का एक छोर उसके अँगूठे में बँधा हुआ था, लेकिन दूसरा छोर जो कबूतर के पाँव में बँधा रहना चाहिए वह खुला रह गया था। उसकी साथिन कबूतर के पैरों में डोरी बाँधना भूल गयी थी। उसके बाद उस अँगूठी को लेकर कितना कांड हुआ। अखबारों ने कैसी-कैसी धज्जियाँ उड़ायीं। गुणीदत्त ने भी यह किस्सा खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया था।

यह सब किस्सा जिसे सुना रहा था, उस पर जैसे कोई असर ही नहीं हुआ।

शिरीन उसकी तरफ देख रही थी। उसकी बातें भी सुन रही थी, लेकिन उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरा। वह जैसे चुपचाप जादू-खेलों के निर्देश-उपदेश सुना करती थी, वैसे ही यह कहानी भी सुनती रही और खामोश रही।

जूली भी कुछ नहीं बोली, चुपचाप बैठी रही। दो-एक बार दबी नजर से उन दोनों की ओर देखा भी लेकिन फिर नजरें झुका लीं। गुणी की बात खत्म होते ही लाड़ से भरकर कहा, 'एक बार स्टेज पर नाचते-नाचते मैं भी एक ब्लंडर कर बैठी थी। पूछो मत, कितनी फजीहत हुई।'

गुणीदत्त ने जुबान से कुछ नहीं पूछा, सिर्फ आग्रहभरी नजरों से

उसकी ओर देखा। शिरीन उसी तरह तटस्थ बैठी रही।

अपनी हाथ की सलाइयों पर निगाह गड़ाए हुए, उसने अत्यन्त सहज भाव से किस्सा छेड़ दिया, 'मिस्र के पौराणिक ग्रन्थों में जल देवी, मृगया देवी, अग्नि देवी, युद्ध देवी, 'प्रणय देवी, कला देवी—ऐसी ही देवियों के नाच का वर्णन मिलता है। स्टेज पर तरह-तरह की पोशाक बदल कर, वे नाच पेश करती थीं। मेरी देह पर उन तमाम देवियों के कपड़े पर्त-दर-पर्त झिलमिला रहे थे। लेकिन कौन-सी पोशाक के नीचे, कौन-सी देवी की ड्रेस है, यह दिखाई नहीं पड़ रहा था। ड्रेस की स्कर्ट में कधे के पास एक चेन लगी रहती थी, मैं नाचते-नाचते उसे खींच देती थी और वह पूरी की पूरी ड्रेस खिसककर आहिस्ते से गिर जाती। उस दिन नाचते हुए अपने एक ब्वाय-फ्रेंड की बातें याद करते-करते कितनी सारी चेन एक साथ खींच दी, यह ख्याल ही नहीं रहा। अचानक सारे के सारे कपड़े एकबारगी खिसककर गिर पड़े—यानी मेरी देह पर कुछ भी नहीं बचा। सारा का सारा खेल ही मिट्टी हो जाता, लेकिन मैंने भी एक बुद्धिमानी की—फौरन बैठ गयी। मृगया देवी की तरह पंख फैलाए भारतीय मुद्रा में प्रणाम करती हुई, उसी तरह झुकी रही। स्टेज की विंग में जो छोकरा खड़ा था, उसे कुछ समझ नहीं आया लेकिन उसने हड़बड़ा कर पर्दा गिरा दिया। उधर दर्शकों की तालियों की गड़-गड़ाहट और वाह-वाह की आवाज से सारा हॉल गूंज उठा। उन्हें नाच बहुत पसन्द आया था। दुबारा दिखाने की फर्माइश की जा रही थी।'

शिरीन बिल्कुल सामने बैठी हुई थी, अतः गुणीदत्त के कान गर्म और लाल हो उठे। वह जूली को डाँटने ही जा रहा था कि अवाक् होकर देखा, शिरीन मुँह घुमाकर जूली को निहार रही थी। जिस लड़की को चुप्पी की अँधेरी सुरंग से बाहर खींच लाने की चिन्ता में, वह इतने दिनों से परेशान था, उसकी बड़ी-बड़ी काली-काली आँखों में नारी-सुलभ हैरानी और गालों को सुर्ख होते देखता रहा।

गुणी से आँखें मिलते ही शिरीन हल्के से हँस दी। उसके श्वेत-शुभ्र दाँत झिलमिला उठे। मनचाही प्रतिक्रिया का आभास पाकर जूली ने हँसी रोक लेने की कोशिश की और निस्पृह भाव से फिर अपनी नजरें

सलाई पर केन्द्रित कर लीं। गुणी सकुचा उठा और शिरीन के साथ खिसियानी-सी हँसी हँस दिया। वह मन ही मन अवाक् होकर सोचता रहा, अपनी देह के बारे में ये लड़कियाँ कितनी सजग रहती हैं।

खैर, जूली को अकेले में बुलाकर डाँटने की बात, जैसे वह भूल ही गया। उल्टे उसके सीने से जैसे कोई भारी-सा पत्थर हट गया। उसके बाद शिरीन ने अपने काम में कभी कोई भूल नहीं की।

गुणीदत्त के मन की गहराइयों में कहीं एक और ख्याल पल रहा था, जो किसी मौन प्रतीक्षा में खामोश था। उसे उचित समय और मौके की प्रतीक्षा थी। यह सब उस इन्सान की बात है, जिसका नाम गुणीडाटा यानी गुणीमय किशोर था, जिसने कभी कोई तर्क नहीं माना, सम्भव-असम्भव का ख्याल नहीं किया, जो एक अन्धे आवेग की धुन में किसी भी पाप की ओर कदम बढ़ाने को नितान्त सहज भाव से प्रस्तुत था। वह आदत आज भी उसके व्यक्तित्व से इसी तरह जुड़ी हुई है, वह नहीं जानता था। उस दिन खुद गुणीदत्त ने ही अपने भीतर उस प्रवृत्ति का आविष्कार किया, जिस दिन शुभेन्दु नन्दी के यहाँ एक लड़की की ठुड्डी पर सुर्ख मसा देखा था।

वैसे यह सब सोचना गुणीदत्त को बेहद हास्यास्पद लगा। उसने उन बातों को हँसकर उड़ा देने की कोशिश की। अकेले उन बेसिर-पैर के ख्यालों का मजाक उड़ाता रहा। उसने बहुत चाहा कि उन ख्यालों को अस्वीकार कर दे। अस्वीकार न कर पाने की सजा वह झेल चुका था। पीठ के दाग का दर्द तो पुर गया था, लेकिन उसकी टीस ?

और फिर अब वह जादूगर गुणीडाटा है। वह इतना नासमझ या पागल भी नहीं है। किन्हीं पलकों के नीचे काले तिल और ठुड्डी पर लाल तिल का फर्क वह समझता है। किसी शहरनुमा गाँव की एक अनपढ़ लड़की और कलकत्ते की एम० ए० पास प्रोफेसर एक जैसी नहीं हो सकतीं। एक के होने या न होने में कोई फर्क नहीं था, और दूसरी के चलने-फिरने, उठने-बैठने तक में स्पष्ट अहं-बोध झलकता था। उन

दोनों को समान दर्जा देने वाला कोई पागल होगा। दरअसल दोनों में दिन और रात जितना अन्तर था।

अगले क्षण वह अपने से ही नाराज हो उठा। कही किसी समता या विषमता मे क्या फर्क पड़ता है? वह आखिर इतना सोचता ही क्यों है? इसमें इतना सोचने की क्या बात है?

गुणीदत्त ने इन ख्यालों से छुटकारा पाने के लिए इधर-उधर के कामों में व्यस्त होने की कोशिश की। अपने मन पर अंकुश लगा कर उसने कर्त्तव्य की रास खीची। उन दिनो शिरीन भी अगर खेलो के रिहर्सल मे कोई गलती कर बैठती, तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाता था। मुहर्रमी सूरत बनाकर बैठे रहने से कहीं काम चल सकता है? क्या स्टेज पर उतरने की योग्यता अर्जित किए बिना काम बन सकता है? लेकिन शिरीन के तटस्थ होते ही गुणी की उत्तेजना मे जैसे बाधा पडने लगी। उसके भीतर की बेचैनी, जो अब तक पहेली बनी हुई थी, किन्ही कदमों की आहट जैसी स्पष्ट हो उठी। गुणीदत्त को लगा, वह उसे अपने दायरे मे समेट लेने को आगे बढ़ रही हो और वह उसके आगे नितान्त कमजोर पडता जा रहा था।

उस दिन गुणीडाटा का मूड सुबह से ही ऑफ था। वह बात-बात मे खीज रहा था। इतने रद्दी इन्तजाम के लिए एडवर्ड उड को भी दो-चार खरी खोटी सुना दी। शाम को स्टेज पर पेश किये जाने वाले प्रोग्रामों की लिस्ट लेने के लिए जेनिफर उड जब कमरे मे आयी, तो वह परेशान हो उठी। खेलों की लिस्ट लिखते हुए उसने कई ऐसे खेलों की याद दिलायी, जो पिछले कई शो में नही दिखाये गये थे। यह प्रसंग छिड़ते ही गुणी झुंझला उठा, 'अब अपने खेल पेश करने के लिए क्या मुझे तुम लोगों से सलाह लेनी होगी?'

'तुम तो भई, जाने क्या-क्या मतलब निकाल लेते हो?' मिसेज उड सकपका गयी, 'इन दिनों तुमको हो क्या गया है?'

'मुझे कौन-सा खेल दिखाना है, यह मैं खुद सोच लूंगा। तुम लोगों को अपना दिमाग खर्च करने की जरूरत नही है।' गुणीदत्त ने गुस्से के दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।

मिसेज उड हारकर चुप हो जाने वाली औरत नहीं थी। वह गुणीदत्त की तरफ झुक आई और उसका चेहरा पढ़ने की कोशिश करती रही, फिर उसी रुखाई से कहा, 'खेलों के सामानों की लिस्ट तो दोगे या तुम्हारे जादू सचमुच आसमान से बरसेंगे ?'

गुणीदत्त ने गम्भीर आवाज में सामानों की लिस्ट लिखा दी। मिसेज उड भी उसी गम्भीरता से भावी जरूरत के सामान नोट करती गयी फिर कागज-कलम लिए हुए उसके सामने पलभर को चुपचाप बैठी रही और उसकी तरफ एकटक देखती रही। निर्णय के लहजे में एक जलता हुआ-सा सवाल किया, 'जरूर यह किसी लड़की का चक्कर है। कौन है वह शैतान छोकरी ?' यह कहकर जवाब की अपेक्षा किए बिना वह मालकिन की तरह गम्भीर चाल से बाहर निकल गयी।

इधर कई दिनों से जूली भी गौर कर रही है, वह बेहद अपसेट है। उसका ख्याल था कि शिरीन के नॉर्मल होते ही, वह भी खुश हो जाएगा। लेकिन यह उल्टा असर देखकर वह भी हैरान थी।

दरअसल सब लोग अपने परिचित गुणीदत्त की तलाश करते रहे, इसलिए उसे देखकर हैरान थे। गुणमय किशोर की खोज-खबर कभी किसी ने नहीं ली।

गुणीदत्त बहुत देर तक गुमसुम उसी तरह बैठा रहा, फिर उठ खड़ा हुआ। उसने टेलीफोन उठाकर एक नम्बर डायल किया। शुभेन्दु नन्दी दूसरी लाइन पर किसी से बात कर रहा है। उसने लाइन रखने को कहा। गुणीदत्त ने खट् से फोन रख दिया। शुभेन्दु की लाइन अगर खाली भी होती, तो वह बगैर बात किये फोन रख देता।

वह फोन रखकर कमरे में ही टहलता रहा। फिर दुबारा रिसीवर उठा लिया और फिर कोई नम्बर डायल किया। यह कोई दूसरा नम्बर था। फोन पर कान लगाए घंटी बजने की आवाज सुनता रहा। जाने वह इस वक्त घर पर होगी या कॉलेज में ! लेकिन आज तो शायद छुट्टी है। छुट्टी के दिन मिसेज उड अखबारों में जरा लम्बा-चौड़ा-सा विज्ञापन देती थी। गुणीदत्त तो अब विज्ञापनों की साइज देखकर ही छुट्टियों का अन्दाज लगा लिया करता था। फोन की घंटी बजती रही।

नया पता उसके भाई ही फोन उठा लें। शुभेन्दु तो इस वक्त ऑफिस में है। प्रेस वालों को बहुत कम छुट्टी मिलती है। ये स्कूल-कॉलेज भी जरा-जरा-सी बात पर बन्द कर दिये जाते हैं।

'हलो···'

फोन पकड़े हुए गुणीदत्त चौंक उठा या फिर खुशी से विह्वल हो उठा। टेलीफोन पर आती हुई आवाज बेहद गहरी और मधुर लगी। गुणीदत्त का जी हुआ, वह सिर्फ सुनता रहे। जैसे पिछले दिन सुनता रहा था। पूछा, 'मैं गुणीदत्त हूँ। आप कौन साहिबा बोल रही हैं?'

'मैं श्रावणी हूँ।'

सिर्फ ये दो शब्द सुनने के आग्रह से उसने उसका नाम पूछा था। मैं श्रावणी हूँ—यह आवाज कानों से होती हुई मन में बहुत गहरी उतरती चली गयी। मैं श्रावणी हूँ···कई दिनों का तनाव जैसे-जैसे कम होने लगा। मैं श्रावणी हूँ···।

गुणीदत्त ने सुना, वह कुछ कह रही थी, 'भइया तो अभी घर पर नहीं हैं। दफ्तर में—'

'जानता हूँ। लेकिन मुझे भइया की बहन से ही काम था।' फिर हँसकर कहा, 'सुनिए, बुरा न मानें, तो एक बात पूछूँ, आप तो एक दिन भी इस तरफ नहीं आयीं?'

दूसरी तरफ से आती हुई आवाज में संकोच का आभास मिला, 'इधर समय ही नहीं मिला, लेकिन किसी दिन आऊँगी जरूर!'

'और किसी दिन नहीं, आज ही आएँ। शाम को मैं गाड़ी भेज दूँगा। आप शुभेन्दु को खबर कर दीजिए और अपनी बहन को भी! आप जितने लोग चाहें ले आएँ।'

'लेकिन आज ही क्यों? आज तो···।'

गुणीदत्त ने उसकी आपत्ति पर ध्यान ही नहीं दिया। उसने अपनी तरफ से कोई सफाई देने का भी मौका नहीं दिया। कहा, 'नहीं-नहीं! —आज ही! इसी वक्त! देखिए, मेल अगर पसन्द न आए तो दुबारा मत आइएगा। आज दो एक खास आइटम पेश करूँगा। गाड़ी ठीक पर पहुँच जाएगी। अभी बहुत सारा काम पड़ा है, फोन रखता हूँ'

अगले उत्तर की अपेक्षा किये बिना ही, फोन रख दिया। फोन के उस तरफ के दृश्य की कल्पना करके वह मन ही मन हँसता रहा। वहाँ का दृश्य उसकी आँखों के आगे साकार हो उठा।···गालों को छूता हुआ फोन का रिसीवर उसने रख दिया है। ठुड्डी पर का तिल पलभर को ओट हो गया। चेहरे पर दुविधा और संकोच की छाप है। रिसीवर रख-कर वह धीमी चाल से बगल के कमरे में चली गयी है। उसे समझ नहीं आ रहा है कि वह क्या करे।

गुणीदत्त को पक्का विश्वास था श्रावणी जरूर आएगी, इसी भरोसे वह मन-ही-मन उसके दुविधाग्रस्त चेहरे की कल्पना करके खुश होता रहा।

थोड़ी देर बाद ही उसका बदला हुआ मिजाज देखकर मिसेज उड फिर झटका खा गयी। उसकी ओर गौर से देखती रही। बच्चों की तरह उतावलेपन से उस जादूगर ने प्रोग्राम की सूची में थोड़ा हेर-फेर किया। मानो सारे मुख्य खेल आज ही जरूरी हों। फिर अपनी खुशी का आवेग दबाकर, एक पता देते हुए कहा, 'इस पते पर ठीक समय से गाड़ी भेज दीजिएगा। मेरे कुछ मेहमान आ रहे हैं। उनके लिए सबसे आगे वाली सीट रखवा दीजिए।'

मिसेज उड ऐसे आदेशों की अभ्यस्त थी। उसके मेहमानों के नाम पर ज्यादातर सरकारी लग्गू-भग्गू या राजे-महाराजे होते थे।

'कोई औरत भी आ रही है?' मिसेज उड ने सीधे-सीधे सवाल किया।

गुणीदत्त ने अस्पष्ट-सा जवाब दिया, 'औरत-मर्द सभी आ रहे हैं—।' और वह गम्भीर भाव से कमरे से बाहर चल दिया।

श्रावणी की दुविधापूर्ण स्थिति की गुणीदत्त ने जो कल्पना की थी, वह गलत नहीं थी। इस तरह अचानक फोन पाकर अपनी आदत के अनुसार परेशान हो उठी। महज एक दिन के परिचय में इस तरह का फोन—। कॉलेज की प्रोफेसर होने के बाद उसने अपने प्रति पुरुष के व्यवहार में एक खास प्रेम और आदर का भाव अनुभव किया था। अतः गुणी के बर्ताव से वह खीज उठी, खीज से अधिक परेशान हो उठी।

अपनी इस परेशानी से बचने के लिए उसने दल-बल समेत जाने का फैसला किया। पापा से भी चलने को पूछा। लेकिन पापा ने मना कर दिया। उन लोगों को ही जाने को कहा। उसने शुभेन्दु को फोन करके फौरन घर लौट आने का आदेश देते हुए कहा, 'देख लो, अपने बन्धु की करतूत। जादू देखने आने को गाड़ी भिजवा रहे हैं।' यह कहकर लाइन काट दी। मिलनी को भी बुला लिया। मिलनी प्रशान्त के साथ हँसती हुई हाजिर हुई। उन्हें ले जाने को गाड़ी आ रही है, यह सुनकर उसकी आँखें विस्मय से फैली रह गयी, "...अरे, वाह! मगर इतनी खातिर किसके लिए कर रहा है रे दिदिया ?'

दीदी की भौंहे चढी हुई देखकर उसने होठों तक आयी हुई हँसी दबा ली। पहले तो वह दीदी से थोडा-बहुत डरती भी थी, लेकिन ब्याह के बाद बहुत सिर-चढ गयी है। श्रावणी का छोटे भाइयों को भी ले जाने का मन था, मिलनी ने ही रोक दिया, 'उस शरीफ आदमी ने बुलाने की शराफत दिखाई है तो सारा कुनबा बटोरकर ले जाना जरूरी है ? रहने दो, वे लोग और किसी दिन चले जाएँगे। वैसे भी, वे लोग एक बार देख चुके हैं—।'

वे लोग मेहमान बनकर जा रहे हैं। आमन्त्रित मेहमानो की खातिर-तवज्जोह तो सभी करते हैं, लेकिन इतना कुछ होगा, मिलनी को यह उम्मीद नही थी। इससे पहले वह शुभेन्दु के साथ भी खेल देखने आयी थी। उस बार भी उसकी अच्छी खातिर हुई थी। लेकिन इतना कुछ नहीं हुआ था। थियेटर हॉल के बाहर खुद उड-दम्पती उनकी अभ्य-र्थना मे खड़े थे। मानो उनके जैसा वी० आई० पी० और कोई न हो। उन लोगों को ले जाकर पहली पंक्ति मे बैठाया, खुद सामने खड़े होकर सॉफ्ट ड्रिंक और चाय मँगवायी।

मिलनी अचरज और कौतुक से श्रावणी की ओर देखती रही। शुभेन्दु बगल में ही बैठा था इसीलिए वह झिझक रही थी। फिर भी मौका मिलते ही श्रावणी को पास बुलाकर कानो मे कहा, 'आज हम लोगों की इतनी खातिर क्यो की जा रही है दिदिया ?'

मिलनी ने जाने कितनी बार यह सवाल किया था। उनके

गाड़ी आने की बात सुनकर भी यही बात पूछी थी। श्रावणी गम्भीर बनी रही। उसकी झुँझलाहट और बढ़ गयी। लेकिन सब की अपेक्षा वह जिस आदमी को देखने की उम्मीद कर रही थी, वह तो शो शुरू होने पर स्टेज पर ही दिखा। जादू का खेल कोई एक मिनट में तो जमता नहीं। दर्शकों का मन जमाने में कुछ समय लगता है। श्रावणी भी उसका व्यतिक्रम नहीं थी। जब तक उसका दिलो-दिमाग और आँखें विस्मय-विमुग्ध नहीं हो गयीं, उसके मन में आक्रोश बना रहा। उसे लगा दर्शकों से खचाखच भरे हॉल में एक अकेली वही उसका खेल देख रही है। ऐसी वाक्य-छटा, ऐसा हँसी-मजाक, ऐसा विलक्षण जादू, सिर्फ उसी को दिखाया जा रहा हो। कॉलेज की सीधी-सादी प्रोफेसर श्रावणी नन्दी ने भी ऐसी नामुमकिन-सी बात को प्रश्रय नहीं देना चाहा, उल्टे झुठलाने की कोशिश की। लेकिन लोगों के साथ जहाँ वह बैठी हुई थी, एक जोड़ी दुविधा-शून्य निःसंकोच आँखें अपने चेहरे पर चुभती हुई महसूस करती रही। एक जोड़ी आँखें लगातार उसे घूरती रहीं। चेहरे से ठुड्डी तक, ठुड्डी से चेहरे तक, ठुड्डी से नीचे के लाल तिल में चिनचिनाहट होने लगी। जैसा पहले दिन हुआ था। अपने अनजाने में ही श्रावणी उस लाल तिल पर अपनी उँगलियाँ फिराती रही।

उसके बाद कुछ याद नहीं रहा। उसका मन बाहरी दुनिया से सिमटकर, कब जादू के आश्चर्यजनक खेलों में डूब गया, पता ही नहीं चला। इतने सारे दर्शकों के मन को अनायास ही जैसे किसी ने जादू की जंजीर में बाँध लिया हो। और अभी एक आदमी के इशारे पर ही लोगों का जादू टूटा और सब होश में आये। लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट से सारा हॉल गूँज उठा। दर्शक मारे खुशी के वाह-वाह कर उठे। उसके बाद फिर एक और यात्रा! जादूगर आदमी के जादुई संकेतों पर सागर पार के अजीबोगरीब जादू-देश की यात्रा।

शो खत्म हो गया। कितने घंटे गुजर गये, किसी को होश नहीं रहा। श्रावणी भी नहीं जान सकी।

उनके विदा लेने से पहले, मिसेज उड ने विनम्रभाव उन्हें धन्यवाद दिया और उन्हें ग्रीन-रूम तक लिवा लायी। वैसे यह औपचारिकता

निभाते हुए उसे अच्छा नहीं लगा।

गुणीदत्त मुस्कुराते हुए आगे बढ़ आया। शुभेन्दु ने बड़े जोर-शोर से ऐलान किया कि आज का शो पहले दिन से बहुत अच्छा था।

मिलनी ने हँसकर सिर हिला दिया, यानी भाई की बात का समर्थन किया।

भीतरवाले कमरे में कलाकारों के आराम और नाश्ते का इन्तजाम था। गुणीदत्त ने अपनी पार्टी के एक-एक व्यक्ति से उनका परिचय करवाया—मिस्टर-मिसेज उड, जूली एण्डरसन, और ये हैं—शिरीन ! उड दम्पती को वे लोग पहले ही देख चुके थे। जूली को स्टेज पर देखा था। लेकिन शिरीन को इस वक्त देख रहे हैं।

जूली के चेहरे पर थकान की छाया थी। सारा दिन काम की व्यस्तता में निकल गया। किसी खास बात की तरफ उसकी नजर ही नहीं पड़ी। वैसे आज सुबह से ही गुणीडाटा का मूड बदला हुआ था। इस वक्त काफी खुश नजर आ रहा था। उसने इतना भर ही गौर किया। लोगों से जरा अलग हटकर चाय की सिप लेते हुए उसने निर्लिप्त भाव से मेहमानों की ओर देखा। उन सब में एक शुभेन्दु नन्दी ही से जहाज पर जान-पहचान हुई थी। वह एक बार यहाँ शो देखने भी आ चुका था।

मिसेज जेनिफर उड ने आज गुणीडाटा के बदले हुए रंग-ढंग की नस पकड़ ली थी। अभ्यागत मेहमानों में से दोनों आदमियों को उसने शुरू में ही छाँट दिया। उन्हें लेकर सिर दर्द बेकार लगा। इस देश की ही क्यों, विदेश की भी बहुत-सी खूबसूरत शोख लड़कियों को गुणी पर लट्टू होते देख चुकी है। लेकिन गुणीदत्त भी किसी लड़की से प्रभावित हो चुका हो, उसे याद नहीं आया। लेकिन आज उसका रंग-ढंग खास तौर से अजीब लगा। मिसेज उड के परेशान होने की खास वजह भी थी। वह तो इस फैसले पर पहुँच चुकी थी कि वह शिरीन नामक लड़की ही उसके जादूगर के मन-मन्दिर की अभिसारिका-नायिका बनकर आ खड़ी होगी। उन्होंने जूली के सामने भी अपनी राय जाहिर की थी।

मिसेज उड ने प्यार-मुहब्बत जैसी कोरी भावुकता पर कभी विश्वास भी नहीं किया। अपने देश में उन्होंने बहुत देखा है। रूप का एक स्रोत-

सा ज्वार हजारों-हजारों फौलादी व्यक्तियों को एक झटके में कहाँ से कहाँ जाता है। उसने इस बारे में कभी कोई जल्दबाजी नहीं की? उनका ख्याल था जब तक शिरीन उनकी पार्टी में है, गुणीडाटा को खोने का खतरा नहीं है। गुणीडाटा उनकी आँखों की मणि बन गया था। उन्होंने सोच लिया था, अपने जादूगर को साथ लिए हुए वे फिर अपने देश वापस लौट जाएँगे।

लेकिन अब ये लोग कहाँ से आ धमके? उन दोनों लड़कियों में से वह लड़की, जिसका नाम मिलनी है, वही अधिक खूबसूरत है। लेकिन वह तो शादीशुदा है। लेकिन चूंकि वह शादीशुदा है, अतः कोई मर्द उसकी ओर आँख नहीं उठाएगा यह सोचने की भी कोई खास वजह नहीं थी। शादीशुदा लड़कियों को भी हथिया लेने के अनगिनत उदाहरण मिलते हैं। गुणीडाटा के रंग-ढंग देखकर मिसेज उड को यह पक्का विश्वास हो गया कि उसके जादूगर के हृत-तन्त्रों की इस नूतन झंकार के लिए वह प्रोफेसर लड़की ही जिम्मेदार है। इसलिए मिसेज उड ने उसका खास तौर से आद्योपान्त निरीक्षण किया। उससे बातें करते हुए भी वह आँखों ही आँखों में उसे तौलती रही। गुणीडाटा का दिल जीतने लायक उसमें कोई खास बात नजर नहीं आयी। अलबत्ता उसकी देह भरी-भरी है। लेकिन अगर उस लड़की की सुन्दर देह ने ही गुणीडाटा को आकृष्ट किया हो, तो उससे प्यार करने में क्या हर्ज है? लेकिन गुणीडाटा ने तो बताया था कि वह लड़की प्रोफेसर है। यानी बेहद विदुषी है। उनके मुल्क में कोई ऐसा-वैसा मामूली आदमी प्रोफेसर हो ही नहीं सकता। लेकिन गुणीडाटा का शिक्षा या डिग्री के प्रति इतना मोह है, ऐसा तो उसने कभी नहीं बताया।

श्रावणी भी लौटते हुए ठीक-ठीक यही बातें न सही, लेकिन कुछ-कुछ ऐसा ही सोच रही थी।

जादू का असर तो तभी खत्म हो गया था, जब वह ग्रीन-रूम में चाय पी रही थी। उस समय भी उससे करीब-करीब दो हाथ की दूरी से एक जोड़ी उच्छृंखल आँखें, उसके चेहरे पर गड़ी रहीं—चेहरे से फिसलती हुई ठुड्डी पर, ठुड्डी से चेहरे पर। उनके परिचय को तो अभी

जुम्मा-जुम्मा साल ही दिन हुए थे। लेकिन श्रावणी वहाँ अपने को बेहद निरुपाय महसूस करती रही। उसे सारी बातें अजीब पहेली-सी लग रही थी। उसके पास तो रूप भी नहीं है। और फिर जहाँ वह गयी थी वहाँ तो एक ऐसी खूबसूरती मौजूद थी, जहाँ मिलनी भी फीकी पड जाए।— शिरीन, हालाँकि उम्र बहुत नहीं थी, लेकिन खूबसूरत ऐसी कि रूप के नये परवाने भी जलकर खाक हो जाएँ। लेकिन श्रावणी को जाने कैसे यह मुगालता हो गया था कि इस आदमी की आँखों को न खूबसूरती की चाह है, न सहज प्यार की तलाश ! वह तो सिर्फ वह है। इतना सब आयोजन महज उसी के लिए है।

यही सब सोच-सोचकर वह परेशान हो उठी थी। आज भी कुल मिलाकर चार-पाँच बातें भी नहीं हुईं। जादू-खेल उसे पसन्द आये या नहीं उसने यह भी नहीं पूछा। बस, एक अदृश्य आग्रह से वह आदमी उसे हर पल घेरे रहा। श्रावणी के लिए सहज रह पाना कठिन हो गया। लेकिन वह मेम साहब उसे ऐसे घूर-घूर कर क्यों देख रही थी ? उसकी आँखों में एक बेशर्म-सी हँसी थी।

गाडी मे भी लोग काफी उत्साहित स्वर मे चर्चा मे लगे रहे। मिलनी की राय मे यह आदमी वाकई जादू जानता है। इसके अलावा और ऐसी कोई खास बात नहीं थी उसमें। श्रावणी ने अनुभव किया, बातचीत के दौरान मिलनी की खोजभरी आँखें उसे ही पढ़ रही थीं। मानो वह यह सब बातें भी उसी को सुना रही हो। बातचीत के दौरान चाय का प्रसग भी निकल आया। मिलनी ने कहा, 'वह लड़की कितनी सुन्दर थी न। उसके चेहरे से तो आँखें जैसे हटना ही नहीं चाहती थीं। अच्छा, शिरीन इस देश का नाम है ?'

बातचीत का प्रसग विदेशी लडकियों की ओर मुड गया। शुभेन्दु इस प्रसंग का मुख्य वक्ता बना। उसके ख्याल से आज के जमाने मे सिर्फ बंगाली लड़कियाँ ही पिछड़ी हुईं और दकियानूस रह गयी थीं। बाकी और देशों की लडकियाँ बेहद जिन्दादिल थीं। उनमे जीवन है, जीवन की गति है। उदाहरण के तौर पर वह एण्डरसन की तारीफ करता रहा। पिछली बार शो खत्म होने के दो घण्टे बाद तक वह गुणीदत्त

के साथ रहा।

जूली के बारे में उसी समय थोड़ा-बहुत सुना था। गुणीदत्त ने उसे खुद नहीं बताया, उसे ही जानने का कौतूहल हो आया।

सब से नजर बचाकर मिलनी ने अपनी खुशी दबाते हुए श्रावणी को एक टोहका मारा। इसकी वजह यह थी कि विलायत से लौटने के बाद, अपने इस भाईजान को अक्सर विदेशी महिलाओं की तारीफों के पुल बाँधते देख चुकी है। उसने घर पर श्रावणी से एक बार कहा भी था, 'इतनी तारीफें किसलिए हो रही हैं, दिदिया ? ये जनाब वहाँ कोई कांड-वांड तो नहीं कर आये ?'

श्रावणी ने मिलनी को ही डाँटा था, 'हुँह, हर किसी को अपने जैसा समझ लिया है न ?'

मिलनी के कमजोर पक्ष पर हाथ रखते ही वह भाग खड़ी हुई।

आज भी श्रावणी ने पहले की अपेक्षा नरम लहजे में झिड़क दिया। शो से लौटने के बाद से वह बिल्कुल चुप बैठी थी। उनकी बातों में भी सहजभाव से साथ नहीं दे पायी। यह बात खुद उसे अखर गयी। उसने महसूस किया, उसकी अस्वाभाविक चुप्पी की ओर हर किसी की निगाह है। अतः सब का ध्यान बँटाने के लिए श्रावणी ने मिलनी पर ही वार किया, 'मुझे क्यों कुहनी मार रही है, जो कहना है भइया के सामने ही कह दे न।'

मिलनी ने संकोच के मारे चार अंगुल की जीभ निकाल दी। शुभेन्दु भी उसका इशारा समझकर खिसियानी-सी हँसी हँस पड़ा। अगली सीट से संकोची प्रशान्त ने भी सिर घुमाकर पीछे की तरफ बैठे हुए लोगों की तरफ देखा।

इतनी देर बाद श्रावणी सहज हो पायी। उसने राहत की साँस ली।

दस

समूचे कलकत्ते भर मे सिर्फ एक ही घर है—शुभेन्दु का घर। जिसे गुणी दोस्त का घर कह सकता था। शुरू-शुरू मे उस घर के लोगों के लिए वह बेहद गर्व और आत्म-प्रशंसा का पात्र बना रहा। लेकिन बाद में अक्सर उनके घरेलू परिवेश मे शामिल होकर, बिल्कुल घर और अन्य आत्मीयो को भी बुलाकर जादू दिखाता है और वहाँ के घरेलू परिवेश मे जादूगर गुणीडाटा का दूसरा ही रूप होता है। रूमाल, घड़ी, अंडे, अँगूठी या ग्लास के छोटे-मोटे खेल देखकर लोगों में हुल्लड़ मच गया है। गुणीदत्त उनकी खुशी देखकर मुग्ध होकर मुस्कराता रहा। यहाँ वह वचनवागीश नही है। इस जमघट मे मिलनी ही सबसे अधिक विस्मित और परेशान हुई है। कभी हँसते हुए लोट-पोट हो गयी है। कभी होठों तक आयी हुई हँसी दबाकर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा है, 'आप मुझे क्यों छेड़ते रहते हैं ? दिदिया को क्यों नही तंग करते ?'

मौका पाकर गुणीदत्त ने एक दिन जवाब दे डाला, 'जब मैं स्कूल मे पढता था, तो मास्टरो के पीटे जाने के डर से उनसे सात हाथ दूर रहता था। मेरा वह डर अभी तक गया नही है।'

कभी-कभी जादू-खेलों के अलावा गप्प-शप्प की महफिल भी जमती। विदेश की कहानी सुनाते हुए गुणीदत्त ने बताया था कि कैसे एक भले-मानस ने उसे चाय पर बुलाकर, कमरे मे धकेल दिया और दरवाजे पर डबल ताला लटका दिया। कहा, 'आप तो पलायनी जादू जानते हैं—चिरमुक्ति-दूत है। जरा, मैं भी देखूं, आप कैसे मुक्ति-दूत हैं।' गुणीदत्त के काटो तो खून नही। आखिर उपाय सूझ ही गया। उसने गले की आवाज बदल कर मानो बहुत दूर से चीख कर कहा, 'मैं निकल आया हूँ आप लोग दरवाजा खोलकर देख लीजिए' और दरवाजा खोलते ही वह सब लोगों को धकेल कर बाहर निकल आया और दे छूट सिर पर पाँव रख कर भाग खड़ा हुआ।

वैसे ही एक और फजीहत की कहानी सुनकर श्रावणी भी जी खोल-

कर हँसे बिना नहीं रह पायी। विलायत के एक मशहूर पहलवान ने उसे एक कमरे में कैद कर दिया। पहलवान ने बिना किसी हिचकिचाहट के उससे अनुरोध किया, 'एक अहसान करना होगा। यह काम वही कर सकता है। अगर वह नहीं करेगा तो वह भला आदमी खुदकुशी कर लेगा।' उसने गुणीदत्त से यह वायदा भी किया कि अगर वह उसका काम कर देगा तो वह उसे दो हजार पाउण्ड देगा और आजन्म उसका खरीदा हुआ गुलाम बन कर रहेगा। उस पहलवान ने उसे अपना सारा दुखड़ा भी सुनाया कि उसकी पत्नी की वजह से उसका जीवन जहर हो उठा है। पत्नी जीते-जी उसे चैन नहीं लेने देगी। अतः उसे हवा में गायब कर देना होगा।

उन दिनों स्टेज पर गुणीदत्त की धूम मची हुई थी। यह मुसीबत कहाँ से आ खड़ी हुई है, गुणीदत्त को समझने में देर नहीं लगी। उसने उसे बहुत तरह से समझाने की कोशिश की, उसके लिए यह सम्भव नहीं है। दरअसल उसे कोई जादू-वादू नहीं आता, लेकिन वह भला आदमी तो जैसे उसके पीछे ही पड़ गया था। अन्त में उसने नाराज होकर कहा, 'तुम्हें जादू-वादू नहीं आता, यह कैसे कहते हो ? मैंने हर रोज अपनी आँखों से देखा है कि तुम अच्छी-भली जिन्दा औरत को हवा में गायब कर देते हो।'

बिचारे गुणीदत्त को बताना ही पड़ा, 'भाई, उसी महिला को दर्शक तो हर रोज देख रहे हैं। उसे ही हर रोज हवा में गायब कर देता हूँ। फिर अगले दिन दुबारा उसे ही स्टेज पर पेश करता हूँ और फिर हवा में गायब कर देता हूँ। फिर उसके अगले दिन दुबारा उसी को स्टेज पर पेश करता हूँ।'

उन सज्जन ने जोर-जोर से सिर हिलाकर कहा, 'जी नहीं, लौटा लाने की जरूरत नहीं। उसे तो आप हमेशा के लिए गायब कर दें।' अन्त में गुणीदत्त पर पहलवान साहब मारे गुस्से के लाल हो उठे और धमकाते हुए कहा, 'वह अगर उनका काम नहीं करेगा, तो उसकी खैर नहीं।' अन्त में गुणीदत्त ने हामी भरकर किसी तरह अपनी जान बचायी।

मैजिक की चर्चा करते हुए उसने बहुत-से किस्से-कहानियों के बहाने

दार्शनिक बातें भी की हैं। हालांकि ये सब कहानियाँ उसने बहुत-से लोगो के बीच सुनायी हैं, लेकिन दरअसल वह सिर्फ उसको सुनानी चाही है, जो उसकी बातें सुनने को सबसे कम उत्सुक थी—यानी श्रावणी को। जादू-विद्या कोई खिलवाड़ नही है, इसके लिए जबर्दस्त याददाश्त की जरूरत है, यह बताने का लोभ भी वह संवरण नही कर पाया। इतना सब बताने के पीछे एक और वजह भी थी। श्रावणी एम० ए० पास है, काफी पढ़ी-लिखी है, कॉलेज की प्रोफेसर है—गुणीदत्त के अवचेतन मन मे इन सच्चाइयों को लेकर कोई-न-कोई प्रतिक्रिया तो थी ही। मन मे पलती हुई यह ग्रंथि निहायत तकलीफदेह थी। अत. वह भी पढ़ा-लिखा है, पढ़ने-लिखने के मामले में वह कभी नॉन-सीरियस भी नही रहा, यह बताने का आग्रह टाल पाना गुणीदत्त के लिए आसान भी नही था। पढाई-लिखाई के मामले मे वह किताबी ज्ञान बघारने से भी बाज नही आया। किसी जमाने मे जादू-विद्या प्राप्त करना कितनी इज्जत की बात समझी जाती थी, इस बारे में उसने एक कहानी भी सुनायी थी। पुराने जमाने के ज्ञानी और साधु-सज्जन लोग परोपकार के लिए ज्ञान-चर्चा किया करते थे और सम्मानित भी होते थे। हम लोग आजकल उसी को भोज-विद्या या जादू-विद्या कहा करते हैं। इसके पीछे जो कहानी है, वह भी कम गौरवपूर्ण नही है—सदियो पहले शाक द्वीप मे ब्राह्मण इस विद्या के आदिगुरु थे। सूर्य आदि ग्रहो की पूजा-आराधना के द्वारा लोक-मंगल के लिए बहुत-सी अलौकिक साधना किया करते थे। उन्ही की एक शाखा हिन्दुस्तान मे भोज के नाम से मशहूर हुई। इसी से इस देश मे इसका नाम भोज-विद्या पड़ा। इन्ही की एक शाखा फारस मे और मिस्र मे जा बसी थी। वहाँ उनका नाम पड़ा मैजाई और इसी से मैजिक शब्द बना। मिस्र के ऋषि डेनियल डेरायुस ने इन्हें बड़े आदर सहित ग्रहण किया। इन्होने काफी साधना भी की। इस तरह भारत से पश्चिम एशिया तक और वहाँ से समूचे यूरोप मे एक दार्शनिक सम्प्रदाय का विस्तार हुआ। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी।

गुणीदत्त ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और विश्वासों की भी विचित्र-

विचित्र कहानियाँ सुनायी हैं। उसके अनुसार मारीच का माया हिरण कालियादमन, हरक्यूलिस के वीरतापूर्ण अविश्वसनीय क्रिया-कलापों की कहानियाँ—सब भोज-विद्या यानी जादू-विद्या के अन्तर्गत ही आती हैं। इन कहानियों पर अगर मेहनत की जाए तो आज भी वह सब जादू खेल दिखाना सम्भव है। उसका तो दावा है कि धीरे-धीरे वह खुद भी उन माया के खेलों के रहस्योद्घाटन में सफल हो जाएगा।

इन सब बातों के मूल में अपनी विद्वत्ता साबित करने की चाह ही मुख्य थी। सिर्फ शुभेन्दु, मिलनी या उसके भाइयों को ही नहीं, देश-विदेश घूमे हुए इस विलक्षण जादूगर की जुबानी, ये सब पौराणिक किस्से-कहानियाँ सुनना श्रावणी को भी अच्छा लगता है। इन सब के बीच कम से कम उसके एम० ए० पास होने के गुमान की झलक तो नहीं मिली।

गुणीदत्त यही तो चाहता था। उसने गौर किया, वह जो कुछ कहता है, श्रावणी बड़े ध्यान से सुनती है। उस पर अपनी बातों का इतना असर होते देखकर वह खुश भी हुआ। घर लौट कर इस आत्म-प्रशंसा की विपरीत प्रतिक्रिया हुई है। आखिर वह इतना बढ़-चढ़कर क्यों बोलता है? अपने को व्यक्त करने की इतनी जल्दबाजी क्यों है? वह जो कुछ दिखाता है, इससे अलग कहीं एक बूंद भी अधिक नहीं है। जीवन में जो कुछ करना था, वह सीधी-सच्ची तरह से कर गुजरा। वह कभी यूँ छुपकर टेढ़ी-मेढ़ी राहों से होकर नहीं गुजरा, इसके लिए अपने को कभी-कभी बहुत छोटा भी महसूस किया है।

अपने को अभिव्यक्त करने के हीन भाव को उसने मिटा देने की कोशिश की।

मिलनी ने हँसी-हँसी में ही एक-दो बार कहा भी, लेकिन इस घर में उस जादूगर के इतने अन्तरंग लगाव के पीछे कोई गहरा अर्थ है। इस बात पर शुरू-शुरू में श्रावणी के अलावा और किसी ने गौर नहीं किया। अब तो उसे पक्का विश्वास हो गया है कि उसकी ठुड्डी के उस लाल तिल से या किसी और निशान से उस आदमी की जिन्दगी का कोई गहरा सम्बन्ध है। वह सिर्फ इसी आकर्षणवश यहाँ आता है।

उसने सुना है, जिस दिन श्रावणी उस जमघट में शामिल नहीं होती, उस दिन महफिल भी उखड़ी-उखड़ी रहती है। श्रावणी ने इस आदमी से बचने की भरसक कोशिश की। लेकिन उसके सामने पड़ते ही या उससे नजरें मिलते ही, वह अपने को अवश महसूस करने लगती है। दरअसल यह आदमी जरूरत से ज्यादा देखता है, बिल्कुल भीतर तक पैठता चला जाता है। कभी-कभी तो उसे यह भी शक हुआ कि उसकी आँखों में भी कोई जादू तो नहीं है।

श्रावणी इस बात को लेकर बुरी तरह परेशान हो उठी। उसे लगा घर में इतने सारे लोगों से घिरे होने पर भी कोई उसे बरबस ही अपनी ओर खींच रहा है। वह किसी और की इच्छाओं में बँधती जा रही है। उसका अपना व्यक्तित्व कहीं गुम होता जा रहा है।

इस बीच कई बार उसे गुणीदत्त के शो में भी जाना पड़ा। हर बार एक नया विस्मय लिए लौटी है। सचमुच अपने जादू के जोर से वह जो चाहे कर सकता है। उसने बहुत बार निर्णय लिया, अब वह नहीं जाएगी। वैसे भी ये सब जादू के खेल आदमी कितनी बार देख सकता है ? लेकिन गुणीदत्त फोन पर जब अनुनय-विनय करने लगता है तो उसे जाना ही पड़ता है। वह नहीं आ सकेगी, यह कहने के बावजूद वह गयी है, जाए बिना रह नहीं पायी है। इतना निःसंकोच, अलमस्त आग्रह भी उसने जीवन में कभी नहीं देखा।

'कब आ रही हैं ?'

'आज ? आज तो नहीं आ पाऊँगी, काम है।'

'...मैं इन्तजार कर रहा हूँ, फौरन आइए।' और गुणीदत्त ने टेलीफोन रख दिया, श्रावणी को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया है। फोन की घण्टी बजते ही श्रावणी का दिल धड़कने लगता। सारे तन-बदन में अजीब-सी सिहरन दौड़ जाती। फोन पर किसी और की आवाज को सुनकर वह मानो चैन की साँस लेती है, लेकिन फिर शिथिल हो आती है और अगर वह प्रतीक्षित आवाज सुनाई देती है, तो वह बिल्कुल जड़ हो आती है—सिर्फ दोनों कान सजग हो उठते हैं।

'आज एक नया खेल पेश करूँगा। आ जाइए !'

'लेकिन आज तो...'

'देखिए, आपके आये बगैर मैं शो शुरू नहीं कर सकता। फौरन पहुँचिये।'

उसकी कोई बात नहीं सुनी गयी। फोन रखने के बाद श्रावणी बहुत देर तक अपने से लड़ती रही है। उसे अपने पर ही खीज हुई है और जो यूँ आवाज देता था, उस पर दुगुनी खीज हुई है। उस पर नाराज होती हुई भी, उसके पास गये बिना रह नहीं पायी है। उसे जाना पड़ा है। उसकी पुकार पर अपनी तरफ से किया हुआ हर फैसला कमजोर पड़ गया है। अपने पर ही गुस्सा आया है। परेशानी की स्थिति में उसने अपने को ही तकलीफ दी है।

जिस दिन देर से लौटी है, भाइयों ने पूछा है, 'कहाँ गयी थी?'

श्रावणी ने किसी दिन कोई इधर-उधर का जवाब देकर टाल दिया, किसी दिन चुपचाप बगल से कतराकर निकल गयी। अकेले में अक्सर कसमें खायी हैं, अब कभी नहीं जायेगी। लेकिन फिर भी जाना पड़ा है।

धीरे-धीरे घर के और लोग भी जान गये। वह कहाँ जाती है, सबको पता चल गया। शुभेन्दु को उस दिन पहली बार खटका लगा, जिस दिन गुणीदत्त श्रावणी के कहने पर उसके कॉलेज के एक मामूली-से जलसे में, अपना खेल दिखाने को राजी हो गया।

श्रावणी ने यूँ ही कहा, 'कॉलेज में सब लोग मेरे पीछे पड़े हैं कि आपको जादू दिखाना होगा। अपनी सामर्थ्य-भर आपको पारिश्रमिक देने को राजी हैं। लेकिन मैंने कह दिया है कि आप कहीं आते-जाते नहीं।'

गुणीदत्त ने उस वक्त कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ हँस दिया। शुभेन्दु ने भी यही अन्दाज लगाया कि वह नहीं जायेगा। अखबारों में विज्ञापन देखकर बहुत-से पैसे वाले क्लबों, प्रतिष्ठानों ने उसे काफी मोटी रकम देकर अपने यहाँ बुलाना चाहा। कितने लोग तो शुभेन्दु के भी पीछे पड़े थे कि वह उसे राजी कर ले, लेकिन गुणीदत्त ने उनकी बातों पर कान ही नहीं दिया।

मिलनी ने भी कई वार मचलकर आग्रह किया, 'आपके जादू-खेलों के किस्से सुनकर मेरे मुहल्ले की लड़कियों ने मेरा दिमाग चाट डाला है। एक दिन मेरी ससुराल आइये ना—।'

गुणीदत्त उससे वादा करके भी उसके यहाँ जाने का समय नहीं निकाल पाया।

श्रावणी के कॉलेज में गुणीदत्त के खेल दिखाने की खबर शुभेन्दु ने भी सुनी। उसके बाद से ही गुणीदत्त उसकी नजर में खटक गया। उसे याद आया कि श्रावणी के बारे में उसने कई वार सीधे उसी से कई सवाल किये थे। उसने इतना साफ-साफ पूछा होता तो शायद उसे खटका लगता। लेकिन इतनी सादगी से पूछा कि उसका कौतूहल समझकर उसने जवाब भी दे दिया। इन दिनों उसे अचानक ही लगा कि वे जवाब उसने खुद नहीं दिये थे। गुणीदत्त ने दोस्ती के बहाने जाने कैसे वे बातें उससे कहलवा ली थीं। शुभेन्दु को तो अब यह भी याद नहीं कि उसने मिलनी के ब्याह की कहानी क्यों बतायी थी। शुभेन्दु की अपनी सगी बहन सिर्फ श्रावणी ही है। मिलनी और उसका छोटा भाई दोनों उसके सौतेले भाई-बहन हैं। प्रशान्त के साथ पहले श्रावणी की ही शादी होने वाली थी। प्रशान्त शुभेन्दु का दोस्त था। प्रशान्त ने इस रिश्ते पर कोई एतराज तो नहीं किया। लेकिन शुभेन्दु ने गौर किया कि मिलनी के साथ वह ज्यादा हिलमिल गया है। वह श्रावणी के सामने चुप-सा बैठा रहता है। उसने कई वार मिलनी को प्रशान्त के साथ बाहर घूमते हुए भी देखा, लेकिन मिलनी ने यह बात घरवालों को नहीं बतायी। श्रावणी ने भी उन्हें एक शाम को पार्क में बातें करते हुए देखा था। लेकिन मिलनी यह बात भी घरवालों से छुपा गयी।

अचानक एक दिन श्रावणी ने खुद ही भाई के सामने प्रस्ताव रखा, 'भाई, प्रशान्त से मिलनी का ही ब्याह कर दो।'

ना, श्रावणी को जरा भी तकलीफ नहीं हुई थी। क्योंकि प्रशान्त को दिल दे बैठने लायक स्थिति, उसके सामने कभी आयी ही नहीं। प्रशान्त को तो पापा और भाई ने पसन्द किया था, अतः उसने भी हामी भर दी। श्रावणी इस बात को लेकर आहत भी नहीं हुई, बल्कि

वाद में इस प्रसंग को लेकर वहन को खूब चिढ़ाया भी है।

शुभेन्दु को अचानक ही लगा कि श्रावणी के सम्बन्ध में उसने इतनी सारी वातें जान-बूझकर नहीं वतायीं, अनजाने में ही कह डालीं।

कॉलेज में गुणीदत्त के खेल दिखाने की वात तो उसने वाद में सुनी। श्रावणी ने ही उसे वताया, क्योंकि उसे लगा कि यह वात दूसरे के मुँह से सुनकर शायद उसे वुरा लगे।

गुणीदत्त को कॉलेज के प्रोग्रामों के लिए दुवारा याद नहीं दिलाना पड़ा। उसने खुद ही एक दिन पूछा, 'आपके कॉलेज में किस दिन खेल दिखाना होगा? वताया नहीं—'

श्रावणी ने उसकी ओर विस्मय से देखा। उसने सोचा भी नहीं था कि वह चलने को राजी हो जायेगा। उसने अविश्वास से भरकर पूछा, 'आप क्या वाकई आएँगे?'

मानो श्रावणी को इस उत्तर की अपेक्षा नहीं थी। उसे लगा वह मना कर देता तो वेहतर होता। लेकिन अगले दिन जव कॉलेज पहुँची तो यह खवर दिये विना नहीं रह सकी। उसके कहने भर की देर थी, छात्राएँ और प्रोफेसरों में अजव-सा उत्साह भर गया। उनके जोर देने पर, उसे कॉलेज से ही फोन करना पड़ा। उसके सामने पड़ने के वजाय, उसे फोन करना वेहतर लगा। दिन-तारीख निश्चित हो जाने पर उसने संकोच छोड़कर पूछ ही लिया, 'ये लोग जानना चाहती हैं कि आपको क्या देना होगा? यानी ये लोग यह जान लें कि आप जैसे महान् जादूगर को वुलाने का दम उनमें है या नहीं।'

गुणीदत्त ने गम्भीर स्वर में जवाव दिया, 'अगर कुछ अधिक भी देना पड़े तो क्या है? मुझे तो खैर वुलाना ही पड़ेगा।'

यह कहकर उसने फोन रख दिया। वात करते-करते वीच में ही फोन रख देना मानो उसकी आदत हो। लेकिन असल में अपनी तरफ से वह सारी वात कह गया था। इसी वजह से श्रावणी कुछ उलझन में पड़ गयी।

गुणीदत्त निश्चित दिन, नियत समय पर उसके कॉलेज में पहुँच गया। कई एक जादू के खेल दिखाए।

जलसे का सारा इन्तजाम जिस प्रोफेसर के जिम्मे था, उसने मौका देखकर श्रावणी को टहोका मारते हुए पूछा भी, 'उन्हें कितना देना होगा, यह तो तुमने बताया नहीं।'

श्रावणी शर्म से गड़ गयी। वह सुकुचायी-सी बोली, 'भाई, तुम लोग ही पूछ देखो। भइया के गहरे दोस्त हैं, अतः मेरे पूछने पर शायद कुछ न लें।'

लेकिन जलसा खत्म होने पर भी गुणीदत्त ने उनको कोई जवाब नहीं दिया। उनके सवाल पर हँसकर सिर्फ सिर हिला दिया और श्रावणी को भेज देने का आग्रह किया।

गाड़ी में श्रावणी ने कहा, 'उन लोगों ने मुझसे बहुत बार पूछा कि आप कितना लेंगे। लेकिन आपने कुछ बताया ही नहीं। आप आ गये, यही बहुत बड़ी बात है लेकिन आप अपने रोजगार में नुकसान क्यों सहते हैं?'

गुणीदत्त हँस दिया, 'अच्छा, मुझे जो मिला है, उन्हें नहीं मालूम! मुझे उन लोगों से कुछ मिलेगा, मैं इस उम्मीद में यहाँ आया था?'

श्रावणी चाहकर भी हँस नहीं पायी। रात के घने धुंधलके में प्यार का आईना उसे और भी छोटा लगा। वह अपने आस-पास नहीं देख रही थी, लेकिन उसने महसूस किया कि एक जोड़ी आँखें उसके समूचे तन-बदन को निरख रही हैं। उससे उसके खेलों की तारीफ भी नहीं की गयी। गाड़ी किस रास्ते से होकर, किस तरफ जा रही है इसका भी उसे ख्याल नहीं रहा। वह मानो किसी सशक्त पुरुष की आकांक्षाओं की डोर में बँध चुकी थी। उस वक्त वह अगर उसे अपने बिल्कुल करीब भी खींच लेता तो भी, बाधा देने की ताकत उसमें नहीं थी। उसे तो ख्याल था कि आज वह उसकी ओर हाथ जरूर बढ़ाएगा।

गुणीदत्त अचानक एक जगह गाड़ी रुकवाकर अकेला ही उतर गया। सामने बड़ी-सी बालकनीवाला एक बड़ा-सा मकान था। मकान के नीचे एक कतार से सजी हुई दुकानें।

उस वक्त सारी दुकानें बन्द हो चुकी थी। उनमें ताला लटक रहा

बाद में इस प्रसंग को लेकर बहन को खूब चिढ़ाया भी है।

शुभेन्दु को अचानक ही लगा कि श्रावणी के सम्बन्ध में उसने इतनी सारी बातें जान-बूझकर नहीं बतायीं, अनजाने में ही कह डालीं।

कॉलेज में गुणीदत्त के खेल दिखाने की बात तो उसने बाद में सुनी। श्रावणी ने ही उसे बताया, क्योंकि उसे लगा कि यह बात दूसरे के मुँह से सुनकर शायद उसे बुरा लगे।

गुणीदत्त को कॉलेज के प्रोग्रामों के लिए दुबारा याद नहीं दिलाना पड़ा। उसने खुद ही एक दिन पूछा, 'आपके कॉलेज में किस दिन खेल दिखाना होगा ? बताया नहीं—'

श्रावणी ने उसकी ओर विस्मय से देखा। उसने सोचा भी नहीं था कि वह चलने को राजी हो जायेगा। उसने अविश्वास से भरकर पूछा, 'आप क्या वाकई आएँगे ?'

मानो श्रावणी को इस उत्तर की अपेक्षा नहीं थी। उसे लगा वह मना कर देता तो बेहतर होता। लेकिन अगले दिन जब कॉलेज पहुँची तो यह खबर दिये बिना नहीं रह सकी। उसके कहने भर की देर थी, छात्राएँ और प्रोफेसरों में अजब-सा उत्साह भर गया। उनके जोर देने पर, उसे कॉलेज से ही फोन करना पड़ा। उसके सामने पड़ने के बजाय, उसे फोन करना बेहतर लगा। दिन-तारीख निश्चित हो जाने पर उसने संकोच छोड़कर पूछ ही लिया, 'ये लोग जानना चाहती हैं कि आपको क्या देना होगा ? यानी ये लोग यह जान लें कि आप जैसे महान् जादूगर को बुलाने का दम उनमें है या नहीं।'

गुणीदत्त ने गम्भीर स्वर में जवाब दिया, 'अगर कुछ अधिक भी देना पड़े तो क्या है ? मुझे तो खैर बुलाना ही पड़ेगा।'

यह कहकर उसने फोन रख दिया। बात करते-करते बीच में ही फोन रख देना मानो उसकी आदत हो। लेकिन असल में अपनी त से वह सारी बात कह गया था। इसी वजह से श्रावणी कुछ उल पड़ गयी।

गुणीदत्त निश्चित दिन, नियत समय पर उसके कॉलेज गया। कई एक जादू के खेल दिखाए।

जलसे का सारा इन्तजाम जिस प्रोफेसर के जिम्मे था, उसने मौका देखकर श्रावणी को टहोका मारते हुए पूछा भी, 'उन्हे कितना देना होगा, यह तो तुमने बताया नहीं।'

श्रावणी शर्म से गड़ गयी। वह सकुचायी-सी बोली, 'भाई, तुम लोग ही पूछ देखो। भइया के गहरे दोस्त हैं, अत. मेरे पूछने पर शायद कुछ न लें।'

लेकिन जलसा खत्म होने पर भी गुणीदत्त ने उनको कोई जवाब नही दिया। उनके सवाल पर हँसकर सिर्फ सिर हिला दिया और श्रावणी को भेज देने का आग्रह किया।

गाडी में श्रावणी ने कहा, 'उन लोगों ने मुझसे बहुत बार पूछा कि आप कितना लेंगे। लेकिन आपने कुछ बताया ही नही। आप आ गये, यही बहुत बड़ी बात है लेकिन आप अपने रोजगार मे नुकसान क्यो सहते हैं?'

गुणीदत्त हँस दिया, 'अच्छा, मुझे जो मिला है, उन्हें नही मालूम! मुझे उन लोगों से कुछ मिलेगा, मैं इस उम्मीद मे यहां आया था?'

श्रावणी चाहकर भी हँस नहीं पायी। रात के घने धुंधलके में 'प्यार का आईना उसे और भी छोटा लगा। वह अपने आस-पास नहीं देख रही थी, लेकिन उसने महसूस किया कि एक जोड़ी आँखें उसके समूचे तन-बदन को निरख रही हैं। उसमे उसके खेलों की तारीफ भी नही की गयी। गाड़ी किस रास्ते से होकर, किस तरफ जा रही है इसका भी उसे ख्याल नही रहा। वह मानो किसी सशक्त पुरुष की आकांक्षाओ की डोर में बँध चुकी थी। उस वक्त वह अगर उसे अपने बिल्कुल करीब भी खीच लेता तो भी, बाधा देने की ताकत उसमें नही थी। उसे तो ख्याल था कि आज वह उसकी ओर हाथ जरूर बढ़ाएगा।

गुणीदत्त अचानक एक जगह गाड़ी रुकवाकर अकेला ही उतर गया। सामने बड़ी-सी बालकनीवाला एक बड़ा-सा मकान था। मकान के नीचे एक कतार से सजी हुई दुकानें।

उस वक्त सारी दुकानें बन्द हो चुकी थी। उनमे ताला लटक रहा

था। दुकान के सामने की सीढ़ियाँ काफी चौड़ी थीं, जिन पर कई लोग सो रहे थे।

श्रावणी अवाक् हो उठी। वह वहाँ यूं चुपचाप खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है, वह समझ नहीं पायी। थोड़ी देर बाद जब वह लौटा तो उसने प्रश्नभरी निगाहों से उसकी ओर देखा।

ड्राइवर को चलने को कहकर गुणीदत्त हँस दिया। कहा, 'जरा, इस जगह को देख रहा था…।'

श्रावणी ने अपनी मौन, जिज्ञासु नजरों से उसकी ओर देखा।

गुणीदत्त हंसता रहा, फिर बताया, 'इन सीढ़ियों पर बांसुरी बजाते हुए और नल का पानी पी-पीकर, मैंने बहुत-सी रातें काटी हैं। इतने सालों बाद भी यह जगह नहीं बदली, वैसी की वैसी ही है।'

श्रावणी के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसकी खामोश आँखें गुणीदत्त के चेहरे पर टिकी रहीं। मन की परेशानी, आशंका जाने कहाँ गायब हो गयी, उल्टे उसका मन हुआ कि वह उसके और करीब सरक आए। लेकिन वह उसके करीब भी न आ सकी।

…श्रावणी ने उस रात शुभेन्दु से बातों-ही-बातों में अपने कॉलेज में गुणीदत्त के मैजिक दिखाने की बात बतायी। शुभेन्दु चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। उसने अपनी कोई राय जाहिर नहीं की। अपने चेहरे पर आये हुए विस्मय को छुपा लेने की कोशिश की। अपने सामने अखबार के पन्ने खींचकर अगले दिन की सम्पादकीय टिप्पणी के लिए मसाला ढूंढ़ने लगा। उसकी आँखें अखबार के पन्ने पर ही गड़ी रहीं।

श्रावणी को उसकी यह चुप्पी बेहद अस्वाभाविक लगी। इधर कई दिनों से वह गौर कर रही थी कि भाई के चेहरे पर एक अजीब-सी तटस्थता झलकने लगी है और इसकी कोई खास वजह उसकी समझ में नहीं आयी। लेकिन उसकी यह तटस्थता-गम्भीरता उसी को लेकर है, यह स्पष्ट था।

उसे लगा कि शुभेन्दु उससे कुछ कहना चाहकर भी, जान-बूझकर

चुप है। सम्भवतः वह गुणीदत्त से इतना मिलने-जुलने को मना करना चाहता हो।

श्रावणी अपने कमरे मे लौट आयी और बहुत देर तक चुपचाप बैठी रही। उसे कैसे समझाए कि वह अपनी इच्छा से किसी से मेल-जोल नही बढ़ा रही है अगर यह मेल-जोल बन्द भी हो जाए, तो श्रावणी शायद नाखुश भी नही होगी। जिसके आगे आदमी इस तरह अपनी सुध-बुध भूल जाए, उसके सामने पड़ने की साध किसे होगी? और श्रावणी तो इन सबकी अभ्यस्त भी नही थी।

लेकिन भाई का यह रुख उसे अच्छा नही लगा। अगर उसकी आशंका सच भी हो तो भी उसका यह रवैय्या क्यो है? अभी थोड़े दिनो पहले तक घर के हर आदमी का यही ख्याल था कि इस आदमी की कही कोई तुलना नहीं है। वह विलक्षण है, बेमिसाल है।

अगले कुछ दिनों मे घर का सारा माहौल ही बदल गया। श्रावणी ने भी मन-ही-मन जैसे कोई फैसला कर लिया, लेकिन भाई से वह अब भी नाराज थी।

काम-काज से अवकाश पाकर श्रावणी ही शुभेन्दु की किताबें, कागज-पत्र की देखभाल करती थी। इधर उसने बहुत दिनो से उसकी मेज साफ नही की थी। उस दिन उसकी सफाई मे जुट गयी। अचानक एक किताब में से विदेशी मुहर लगा हुआ एक रजिस्ट्री खत फिसल कर गिर पड़ा। श्रावणी उसे उलट-पुलट कर देखती रही। उस पर लन्दन की मुहर थी। शुभेन्दु ने अपनी बहन से कभी कोई बात नही छुपायी, अत. छुट्टी के दिन उसकी चिट्ठी-पत्री फाइल करने का काम भी वही करती थी। उसने लिफाफा खोल कर देखा। अंग्रेजी मे छपा हुआ विवाह का एक कार्ड भेजने वाली का नाम रमा खादानी था—उसी के ब्याह का निमन्त्रण था।

उसने वह लिफाफा जहाँ का तहाँ रख दिया। अभी वह मेज साफ कर ही रही थी कि मिलनी और प्रशान्त के आने की सूचना मिली। वह उनके नाश्ते का इन्तजाम करने चली गयी। अभी उनके भाई लोग भी आने वाले हैं। हर कोई अपनी-अपनी जरूरत के लिए, अपनी इसी

दिदिया पर निर्भर करते हैं। स्पष्ट था कि श्रावणी अपने को व्यस्त रखना चाहे, तो उसके लिए कामों की कमी नहीं।

लेकिन इन दिनों कोई काम शुरू करने पर भी बहुत देर तक उसमें मन नहीं लगा पाती।

अगले दिन वह क्लास खत्म करके दो बजे ही घर लौट आयी। चार बजे तक उसे फुर्सत-ही-फुर्सत है। जो लड़कियाँ उसके घर में ट्यूशन लेने आती हैं; इधर कई दिनों से नहीं आयी थीं। उसने आज इनको भी बुलाया है। लेकिन वे लोग भी पाँच-साढ़े पाँच बजे तक आएंगी।

श्रावणी अपने कमरे में अकेले चुपचाप बैठी रही।

पापा बाहर से लौट आए। श्रावणी ने आहट लेने की कोशिश की। वे शायद अकेले नहीं थे। साथ में कोई और भी था। अगले ही क्षण वह चौंक उठी। फिर अचानक ही गम्भीर हो गयी।

पापा गुणीदत्त के साथ कमरे में घुसे। कहा, 'देखो, इनकी करतूत। ये साहब शुभेन्दु के लिए गली की नुक्कड़ पर खड़े थे। वह क्या अभी लौटने वाला है? चलो, बैठो, यहाँ···।'

पापा अभी-अभी बाहर से लौटे हैं, श्रावणी को उठना चाहिए, लेकिन उसे जैसे यह ख्याल ही नहीं रहा। वह उसी तरह जड़ बनी बैठी रही। गुणीदत्त को बैठते देखकर उसे होश आया। वह धीरे से कुर्सी छोड़कर उठ खड़ी हुई।

पापा थोड़ी देर उसी कमरे में बैठे रहे। अखबार की नौकरी में हजार तरह के झमेलों का रोना रोते रहे। उसके जादू खेलों की चारों तरफ धूम मची हुई है, यह बताते हुए उसकी तारीफ भी करते रहे। उनके घर के लोग भी उसके जादू के पीछे पागल हैं यह भी बताते रहे।

पिछले दिनों से यह जादू-चर्चा बन्द हो चुकी है, इसकी उन्हें खबर नहीं थी। श्रावणी पत्थर की बुत बनी खड़ी रही। पापा के सामने भी गुणीदत्त की असंयत दृष्टि रह-रहकर उसके चेहरे पर फिसलती रही। आज पहली बार उसे गुणीदत्त के प्रति गहरी वितृष्णा हुई। आज उसके खिलाफ सोचने की कोशिश की। वह बहुत दिनों से किसी ऐसे मौके की प्रतीक्षा में थी, जब वह उसकी कमजोरियाँ ढूंढ़कर उसे अपनी जिन्दगी

से निकाल बाहर कर सके । गली की नुक्कड़ पर खड़े होना कोई खास बेशर्मी की बात नही है, उससे अधिक दुच्ची बात है, पापा के आगे झूठ-मूठ के बहाने गढ़ना ।

पापा को कहा वह भाई के लिए खड़ा है । दरअसल पापा निहायत सीधे आदमी हैं, वर्ना उसी समय पकड़ा जाता । भाई घर पर होने का उसने पता किया था या नही, यह पूछते ही उसकी चोरी पकड़ी जाती । श्रावणी के लिए कैसी शर्मनाक स्थिति होती ।...लेकिन इस आदमी को उसकी किसी स्थिति से शायद कोई मतलब नही ।

पापा उठकर बाहर चले गये । जाने से पहले गुणीदत्त के लिए चाय-नाश्ता लाने की याद दिला गये । उनके बाहर जाते ही गुणीदत्त का जो संकोच बच रहा था, वह भी मिट गया ।

'बैठिए न...।'

अचानक श्रावणी का मन हुआ, एक बार वह भी उससे आँखें मिलाकर देखे । उसे अच्छी तरह समझा दे कि उस पर उसके सम्मोहन का कोई असर नही होगा । लेकिन उसके लिए यह सम्भव नही था । पापा के जाते ही अपने पर लगाया हुआ अंकुश अपने-आप ही ढीला पड़ने लगा । कहा, 'जी नही, अभी बैठने का वक्त नही है । पापा अभी-अभी लौटे हैं । आप बैठिए ।'

'तो फिर जाइए, उनके नाश्ते का इन्तजाम कर आइए । मेरे लिए कुछ मत भेजिएगा । मैं बस, अभी चला जाऊँगा ।'

श्रावणी ने पलटकर उसकी तरफ एक बार देखा, और बिना कुछ कहे, कमरे से बाहर चली गयी ।

थोड़ी देर मे हाथ मे चाय की प्याली लिए हुए लौट आयी ।

'बिचारा, शरीफ आदमी कमरे मे अकेला बैठा है' पापा ने उसे मीठी-सी झिड़की देकर गुणीदत्त के पास भेज दिया ।

गुणी ने प्याली उठा ली । उसके मना करने के बावजूद जब वह चाय लिए लौटी तो उसे खुशी ही हुई ।

श्रावणी बैठ गयी ।

चाय का सिप लेते हुए, गुणीदत्त ने कहा, 'मैं करीब दस मिनट से

बाहर खड़ा था...'

'भाई के लिए...?'

'नहीं। अन्दर आऊँ या वापस लौट जाऊँ, यही सोच रहा था।'

'पापा तो कह रहे थे, आप भाई के इन्तजार में खड़े थे?'

चाय की प्याली नीचे रखते हुए गुणीदत्त की आँखें श्रावणी के चेहरे पर जमी रहीं। जवाब दिया, 'मुझे खड़ा देखकर, उन्होंने यही अनुमान लगा लिया।' वह जरा हँसा, 'मैं आपके लिए आया था, दरबान ने बताया कि आप घर चली गयी हैं।'

श्रावणी समझ गयी वह पापा के सामने झूठ नहीं बोला था। लेकिन इसके साथ ही उसने जो एक और वाक्य जोड़ा, उसे सुनकर वह स्तम्भित रह गयी। कई क्षणों तक विमूढ़-सी उसकी ओर देखती रही। यह थाह पाने की कोशिश करती रही कि उसका निश्छल और दुविधा शून्य भाव सचमुच असली है या बनावटी। उसे ठीक-ठीक समझ नहीं आया। अभी थोड़ी देर पहले वह यह सोचकर कमरे में घुसी थी कि वह उसके सामने सहज रहेगी और सहज भाव से दो-चार बातें करके उसे विदा कर देगी —ऐसी सहजता जिसमें न शराफत का अभाव हो और न कोई प्रोत्साहन।

काफी देर बाद उसने बहुत जोर लगाकर एक सवाल किया, 'आप बाहर क्यों खड़े थे?'

यह सवाल पूछते हुए श्रावणी नर्वस हो उठी। इस सवाल का भी वह अगर कोई और मतलब निकाल ले तो?

लेकिन गुणीदत्त का बेहद स्पष्ट और निःसंकोच जवाब मिला, 'दर-असल घर पर आना अच्छा नहीं लगता...।'

श्रावणी अब क्या करे? क्या बोले? गुणीदत्त ने चाय की प्याली मेज पर रख दी। उसका जी हुआ, वह किसी काम के बहाने उठकर भीतर चली जाए। लेकिन यह आत्म-प्रतारणा की स्थिति तो अधिक खीज देती है। एक जोड़ी अशोभन दृष्टि बेहद तन्मयता से उसे परखती हुई उसके चेहरे पर घूमती रही।

मानो वह दृष्टि न होकर जीवन्त स्पर्श हो, जिसकी सरसराहट

समूचे चेहरे पर महसूस की जा सकती हो। श्रावणी का दुबारा मन हुआ कि वह थोडी देर उसकी ग्राँखो में देखती रहे, फिर एकदम से पूछ बैठे कि वह हर वक्त उसके चेहरे ग्रौर उसके मसे की ग्रोर क्यों देखता रहता है ? इसमें उसे ग्राखिर क्या मिलता है ?'

लेकिन श्रावणी से कुछ भी पूछते नही बना। दरग्रसल इन सब बातो, सवालो की वह अभ्यस्त नही है। गुणीदत्त ने मानो जान-बूझकर उसे बचने का मौका दिया। ग्रचानक उसने हड़बड़ाकर ग्रपनी घड़ी पर नजर डाली, 'ग्ररे, समय हो गया। जल्दी से तैयार हो जाइए।'

श्रावणी ने उसकी ग्रोर प्रश्न भरी निगाहो से देखा।

'शो ठीक छह बजे शुरू होता है।'

श्रावणी के कान गरम हो उठे। वह कहने जा रही थी, 'इससे उसे क्या फर्क पडता है ?' लेकिन उसने ग्रपने को सम्भाल लिया। कहा, 'नहीं, ग्राज मुझे काम है।'

गुणीदत्त के चेहरे पर ग्राग्रह भारी बेसब्री झलक ग्रायी। वह कुर्सी छोड़कर उठ खडा हुग्रा, पूछा, 'ऐसा भी क्या काम है ?'

श्रावणी को समझ नही ग्राया कि उसके इस प्रश्न पर वह विस्मित हो या नाराज। लगता है इस ग्रादमी को शराफत छू तक नही गयी। उसकी इस ग्राश्चर्यजनक, बेवकूफाना बातें उसे परेशान कर गयी। कहा, 'बहुत से काम हैं। इसके ग्रलावा ग्रभी मेरी स्टूडेण्ट्स भी पढने ग्रा रही होंगी।'

गुणी की ग्रावाज मे विस्मयभरी निराशा झलक ग्रायी, '···ग्रच्छा, स्टूडेण्ट्स को पढाना तुम्हारे लिए ज्यादा ग्रहम हो गया ?'

इतनी देर बाद श्रावणी का ग्रपना व्यक्तित्व-बोध मानो लौट ग्राया। उसने गुणीदत्त के ग्राग्रह को नकारते हुए सहज-सयत स्वर में जवाब दिया, 'जब मेरा काम ही यही है, तो इसे कमतर मानना गलत होगा······'

गुणी ने फिर एक बार घडी की ग्रोर निगाह डाली फिर जरा हँस कर कहा, 'ठीक है, ग्राप मुझे लौटा तो रही हैं, लेकिन मुझे ग्रकेले भेजकर ग्रापका भी पढाने मे मन नही लगेगा, कहे देता हूँ। ग्रच्छा, मैं चलता

हूँ। फिर मुलाकात तो होगी ही—।'

उसने हँसते हुए विदा ली। कमरे से बाहर सीढ़ियों से उतरने की आवाज आयी, फिर गली में उसके कदमों की आहट सुनाई पड़ी और फिर धीरे-धीरे वह आहट भी गुम हो गयी।

श्रावणी उसके जाने के बाद जाने कितनी देर तक कमरे में पत्थर बनी बैठी रही।

रात को खाने मेज पर शुभेन्दु ने भी गुणीदत्त के आने की खबर सुनी। उसे कोई खास बात नहीं लगी। इन दिनों वह अक्सर इस घर में आने-जाने लगा है लेकिन आज खास बात यह लगी कि शाम को चार बजे वह गली के नुक्कड़ पर उसके इन्तजार में खड़ा था।

पापा ने तो बेहद सरल भाव से कहा, 'वह तो कहो, मुझसे मुलाकात हो गयी, वर्ना तेरा इन्तजार करते-करते वह शायद वहीं से लौट जाता।'

श्रावणी को लगा, इस खबर से सिर्फ शुभेन्दु को ही नहीं, बाकी और भाईयों को भी हैरानी हुई है। वह उन्हें चुपचाप खाते हुए देखती रहीं। पापा जिस आदमी की बात कर रहे थे, वह भाई की गैरहाजिरी में इस घर में पहले भी बहुत बार आया है, महफिल जमायी है।··· लेकिन श्रावणी को कभी किसी तरह का संकोच नहीं हुआ। आज पहली बार उस आदमी की इच्छा को ठुकराकर उसे लगा उसकी ताकत बढ़ गयी है। उसे लौटाकर उसने अपने को नार्मल और सहज महसूस किया।

खाना खाकर शुभेन्दु ने उसे अपने कमरे में आने को कहा, 'तुझसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं। जरा, मेरे कमरे में आना।'

उसे क्या बातें करनी हैं, श्रावणी समझ गयी। शुभेन्दु के मन में कोई बात हो तो श्रावणी को बताए बिना उसे चैन नहीं मिलता। इधर ही कुछ दिनों से वह आपके सामने बिल्कुल चुप रहने लगा है।

श्रावणी के आते ही शुभेन्दु ने कहा, 'आ बैठ—।'

श्रावणी बैठ गयी। भाई का गम्भीर चेहरा देखकर उसे मजा भी आ रहा था। कहा, लगता है बात भयंकर रूप से गम्भीर है।

'ये बातें तेरे भले के लिए है। मैं चाहता हूँ···नही, तुझे कुछ बातें बता ही दूं।'

'तो फिर भूमिका छोड़कर सीधे-सीधे कह डालो।'

शुभेन्दु ने मुस्कराने की कोशिश की, "ऐसी कोई बात नही है मैं गुणीदत्त के बारे में तुझे कुछ बताना चाहता था। देख, श्रावणी, वह आदमी विलक्षण है, अद्‌भुत जादूगर है!···यह सब तो ठीक है, लेकिन हम लोगों के साथ उसका इस तरह से घुल-मिल जाने का आग्रह, जाने क्यों मुझे भला नही लग रहा है। दरअसल, जहाज पर जूली ऐण्डरसन जैसी मामूली-सी लड़की साथ में उसको जिस स्थिति में देख चुका हूँ, उसके बाद······।' इतना कहते-कहते उसके कान लाल हो उठे।

श्रावणी स्थिर भाव से उसकी ओर देखती रही। भाई क्या कहेगा या किस बारे मे कहेगा, इस बारे मे उसने थोड़ा-बहुत अन्दाज जरूर लगाया था। लेकिन इतने स्पष्ट संकेत की उसे आशा नही थी। हालांकि उसने जिस ओर इशारा किया है, वह झूठ भी नही है, यह उसने भाई के चेहरे से ही जान लिया।

फिर भी श्रावणी की मौन आँखें थोड़ी देर उसे तौलती रही, फिर अचानक बेहद ठण्डी आवाज मे पूछा, 'और ये रमा खादानी कौन है?'

शुभेन्दु अचकचा गया, 'क्या—?'

'किताब मे उनके ब्याह का टेलिग्राम देखा इसीसे पूछ लिया। तुमने उन्हें शुभकामनाओं का तार भेजा या नही?'

'भेज दिया है—।'

श्रावणी की आँखों से उसका उतरा हुआ चेहरा छुपा नही रहा। एक और हल्का-सा सवाल किया, 'तुम जब विलायत मे थे, तो उसने तुमसे ब्याह करने का वादा किया था?'

शुभेन्दु के कान-मुंह पहले से अधिक लाल हो उठे। जवाब में चिढकर कहा, 'क्या बकवास लगा रखी है। मैं तुझसे किस बारे मे बातें कर रहा था और तू है कि······'

'अच्छा, अब ये बात रहने दो।' श्रावणी ने भी बात का रुख बदल दिया। जरूरत पड़ने पर अपने इसी भाई पर तो वह अनायास ही बड़प्पन

झाड़ सकती है। वैसे यह बात अलग है कि अपने बड़े होने का रौब वह बहुतों पर गालिब करती है। इस बारे में सिर्फ एक आदमी ही अपवाद रहा है। कहा, 'तुम जो कह रहे थे कह डालो। अभी थोड़े दिनों पहले ही तुम्हारे मुंह से उसी जूली ऐण्डरसन की खूब-खूब तारीफें भी सुनी हैं।'

शुभेन्दु का आक्रोश अभी मिटा नहीं था। कुछ देर पहले वह बेवजह ही बुरी तरह घबरा गया था। कहा, 'इस वक्त भी मैं उसकी बुराई नहीं कर रहा हूँ। खुद गुणीदत्त ने ही मुझे बताया है कि अगर वह न होती तो उसका जादूगर बनना नामुमकिन था।···लेकिन हमें इन सबसे क्या लेना-देना कि वह होटलों में नाच-गाकर रुपये कमाती थी और गुणीदत्त विलायत में उसी के साथ रहता था। असल में, मैं तेरे लिए चिन्तित हो उठा हूँ। इसीलिए यह सब तुमसे बता रहा हूँ। इसके बाद, जो तुझे बेहतर लगे, करना।'

श्रावणी कुर्सी छोड़कर धीरे-से उठ खड़ी हुई। सिर हिलाकर जताया कि उसे जो बेहतर लगेगा, वही करेगी। उसे आश्वस्त करने के ख्याल से अस्फुट स्वर में कहा, 'तुम अब परेशान मत हो।' और निर्लिप्त भाव से कमरे से बाहर निकल गयी।

लेकिन वह मन-ही-मन बेहद परेशान हो उठी। बिस्तर पर लेटने के बाद भी बहुत देर तक वह बेचैनी से करवटें बदलती रही। शुभेन्दु भाई उसे प्यार करता है। उसका भला चाहता है। उसने उसे सच बात बता कर ठीक ही किया। ऐसे आदमियों से जितनी कम घनिष्ठता हो, बेहतर है। लेकिन शुभेन्दु उससे बात करने के बजाय सीधे उस आदमी से ही कोई फैसला कर आया होता या उसे अपने घर आने से मना कर देता और उसके बाद श्रावणी को बुला कर समझा देता कि उसकी भलाई के ख्याल से ही ऐसा इन्तजाम किया है। तो उसे कहीं से कुछ बुरा नहीं लगता। शुभेन्दु इस मामले में अगर मर्यादा और पौरुष दिखाता तो और बात होती। लेकिन सात हजार मील दूर से एक लड़की के ब्याह की सूचना पाकर जो आदमी अपने को इस कदर परिव्यक्त महसूस कर रहा हो। आकर ऐसी मिनमिनाती हुई आवाज में सतर्क

करना उसे अच्छा नही लगा।

लेकिन शुभेन्दु को दरअसल क्या बुरा लगा है, श्रावणी ने उसे नजरअन्दाज करने की भरसक कोशिश की। इतना सब सुनने के बाद अगर वह उस व्यक्ति को दुबारा फेस करने की उलझन न होती, तो वह राहत महसूस करती। लेकिन शाम को जिस व्यक्ति को लौटाकर वह अपने को जबर्दस्ती नार्मल बनाए रखने की कोशिश कर रही थी, उसमे कही कोई सुराख जरूर था।

इस वक्त भी, अगर वह अचानक आ खड़ा हो तो वह हमेशा की तरह अवश नही हो जाएगी, अपने पर उसे इतना भी भरोसा नही रह गया है।

उसने जाते-जाते कहा था, 'मुझे यूँ अकेले लौटाकर आपको भी अच्छा नही लगेगा।'

लेकिन अच्छा लगने के लिए उसे अपने से कितनी बुरी तरह जूझना पड़ा है।

ग्यारह

'तुम्हे कुछ दिखेगा कहां से ? तुम जानोगी भी कैसे ? तुम अपने होश मे हो ? इधर कितने दिनो से देख रही हूँ तुम तो जैसे हवा मे उड रहे हो।' मिसेज उड अपनी बात समाप्त करते हुए तैश मे आ गयी।

'तुम्हारे पास न आंखे हैं, न कान। आंख-कान बन्द करके तुम जाने किस भावुकता के चक्कर मे भटक रहे हो,चलो मान लिया कि तुम्हें हम लोगों के बारे मे सोचने की फुर्सत नही है। लेकिन इतना तो

झाड़ सकती है। वैसे यह बात अलग है कि अपने बड़े होने का रौब वह बहुतों पर गालिब करती है। इस बारे में सिर्फ एक आदमी ही अपवाद रहा है। कहा, 'तुम जो कह रहे थे कह डालो। अभी थोड़े दिनों पहले ही तुम्हारे मुँह से उसी जूली ऐण्डरसन की खूब-खूब तारीफें भी सुनी हैं।'

शुभेन्दु का आक्रोश अभी मिटा नहीं था। कुछ देर पहले वह बेवजह ही बुरी तरह घबरा गया था। कहा, 'इस वक्त भी मैं उसकी बुराई नहीं कर रहा हूँ। खुद गुणीदत्त ने ही मुझे बताया है कि अगर वह न होती तो उसका जादूगर बनना नामुमकिन था।···लेकिन हमें इन सबसे क्या लेना-देना कि वह होटलों में नाच-गाकर रुपये कमाती थी और गुणीदत्त विलायत में उसी के साथ रहता था। असल में, मैं तेरे लिए चिन्तित हो उठा हूँ। इसीलिए यह सब तुमसे बता रहा हूँ। इसके बाद, जो तुझे बेहतर लगे, करना।'

श्रावणी कुर्सी छोड़कर धीरे-से उठ खड़ी हुई। सिर हिलाकर जताया कि उसे जो बेहतर लगेगा, वही करेगी। उसे आश्वस्त करने के ख्याल से अस्फुट स्वर में कहा, 'तुम अब परेशान मत हो।' और निर्लिप्त भाव से कमरे से बाहर निकल गयी।

लेकिन वह मन-ही-मन बेहद परेशान हो उठी। बिस्तर पर लेटने के बाद भी बहुत देर तक वह बेचैनी से करवटें बदलती रही। शुभेन्दु भाई उसे प्यार करता है। उसका भला चाहता है। उसने उसे सच बात बता कर ठीक ही किया। ऐसे आदमियों से जितनी कम घनिष्ठता हो, बेहतर है। लेकिन शुभेन्दु उससे बात करने के बजाय सीधे उस आदमी से ही कोई फैसला कर आया होता या उसे अपने घर आने से मना कर देता और उसके बाद श्रावणी को बुला कर समझा देता कि उसकी भलाई के ख्याल से ही ऐसा इन्तजाम किया है। तो उसे कहीं से कुछ बुरा नहीं लगता। शुभेन्दु इस मामले में अगर मर्यादा और पौरुष दिखाता तो और बात होती। लेकिन सात हजार मील दूर से एक लड़की के ब्याह की सूचना पाकर जो आदमी अपने को इस कदर परित्यक्त महसूस कर रहा हो। आकर ऐसी मिनमिनाती हुई आवाज में सतर्क

करना उसे अच्छा नहीं लगा।

लेकिन शुभेन्दु को दरअसल क्या बुरा लगा है, श्रावणी ने उसे नजरअन्दाज करने की भरसक कोशिश की। इतना सब सुनने के बाद अगर वह उस व्यक्ति को दुबारा फेस करने की उलझन न होती, तो वह राहत महसूस करती। लेकिन शाम को जिस व्यक्ति को लौटाकर वह अपने को जबर्दस्ती नार्मल बनाए रखने की कोशिश कर रही थी, उसमें कहीं कोई सुराख जरूर था।

इस वक्त भी, अगर वह अचानक आ खड़ा हो तो वह हमेशा की तरह अवश नहीं हो जाएगी, अपने पर उसे इतना भी भरोसा नहीं रह गया है।

उसने जाते-जाते कहा था, 'मुझे यूं अकेले लौटाकर आपको भी अच्छा नहीं लगेगा।'

लेकिन अच्छा लगने के लिए उसे अपने से कितनी बुरी तरह जूझना पड़ा है।

ग्यारह

'तुम्हें कुछ दिखेगा कहां से ? तुम जानोगी भी कैसे ? तुम अपने होश में हो ? इधर कितने दिनों से देख रही हूँ तुम तो जैसे हवा में उड़ रहे हो।' मिसेज उड अपनी बात समाप्त करते हुए तैश में आ गयी।

'तुम्हारे पास न आँखें हैं, न कान। आँख-कान बन्द करके तुम जाने किस भावुकता के चक्कर में भटक रहे हो,चलो मान लिया कि तुम्हें हम लोगों के बारे में सोचने की फुर्सत नहीं है। लेकिन इतना तो

बता सकते कि आजकल तुम्हारा यह चक्कर क्या है ?' अपनी बात समाप्त करते हुए जूली ऐण्डरसन हँस दी। व्यंग्य किया था।'

दो अलग-अलग लोगों से एक जैसी शिकायत और फटकार सुनकर गुणीदत्त थथमथा गया। उन्नीस साल के उस बीहड़, खब्ती लड़के की तरह वह आज भी हवा के पंखों पर सवार है और किसी घोर भावुकता के झोंके में बहा जा है ?

शिरीन के बारे में चर्चा हो रही थी। जिस शाम वह श्रावणी के कॉलेज में जादू दिखाकर लौटा, उस शाम को ही यह प्रसंग सामने आया था। उसके बाद जिस शाम एक दुर्दमनीय आकर्षणवश वह श्रावणी की गली के नुक्कड़ पर आ खड़ा हुआ था और उसके बुलाने पर भी श्रावणी ने आने से इन्कार कर दिया था, उस रात शो के बाद शिरीन के बारे में दुबारा चर्चा छिड़ गयी। पहली बार जब मिसेज उड ने शिरीन के बारे में कहा तो उसने ध्यान नहीं दिया। उसने सोचा था इस बारे में बाद में सोच लेगा लेकिन फिर याद ही नहीं रहा। हालांकि वह भूलने वाली बात नहीं थी। जेनिफर उड ने ही शिरीन के बारे में उससे बात करनी चाही थी। शिरीन को लेकर जो समस्या उठ खड़ी हुई है, उसका जिक्र करते हुए मिसेज उड ने कहा, 'तुम्हारी उस दुलारी लड़की को फिर कुछ हो गया है। इन दिनों न वह किसी से बात करती है, न हँसती है। अच्छी तरह खाती-पीती भी नहीं। बस, दरवाजा बन्द किए, अपने कमरे में बैठी रहती है। आवाज देने पर नाराज हो जाती है। उसे क्या हुआ है। जरा पता करना ?'

इन दिनों सचमुच गुणीदत्त के पास न आँखें थीं, न मन। शायद इसीलिए वह फिर सब कुछ भूल गया। यहाँ तक कि इतनी गहरी दोस्ती भी।

उस दिन खेल दिखाते हुए अचानक ही उसने गौर किया, शिरीन वहाँ नहीं है।

मिसेज उड से पूछने पर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने पल भर को उसकी ओर गुस्से से देखा, फिर उनके गले से एक गहरी आवाज निकली, 'हुँह !'

गुणीदत्त ने आश्चर्य से जूली की ओर देख कर पूछा, 'बात क्या है ?'

जूली ने गम्भीर स्वर में जवाब दिया, 'बात बहुत गहरी है। लेकिन अभी अगर उस सब मे दिमाग लगाओगे तो जादू का खेल दिमाग से निकल जाएगा। आज तुम कौन-कौन-सा खेल दिखाओगे, बेहतर है। इस बारे मे सोच-विचार करो।'

गुणीदत्त रात को जब घर लौटा तो शिरीन का दरवाजा खुला हुआ था। उस सँकरे बरामदे का पहला कमरा जूली का था। कुछेक कदम आगे परले सिरे पर शिरीन का कमरा पडता था।

शिरीन तख्त से पीठ लगाये बैठी थी। किसी के कदमों की आहट सुनकर उसने गर्दन घुमाकर देखा। गुणीदत्त को देखकर सीधी होकर बैठ गयी। चेहरा तीखा होकर तन गया। चाँद साहब की मौत के बाद जैसी खामोशी उसके चेहरे पर दिखी थी यह चुप्पी वैसी नही थी। मन ही मन गुस्सा और क्षोभ पाते हुए शिरीन का चेहरा हमेशा की तरह तमतमा उठा। बम्बई मे वह जब उससे पहली बार मिला था या जब होटल मे चाँद साहब के सामने शराब लेकर बैठा था, तो उसका चेहरा जैसा तमतमाया हुआ था, आज भी उसी दिन की तरह मानो भरी बैठी थी।

गुणीदत्त उसकी बगल मे बैठ गया, 'क्या हुआ है ?'

शिरीन ने कोई जवाब नही दिया।

गुणीदत्त थका हुआ था। किसी वजह से उसका मूड भी ठीक नही था, उसने बेसब्र स्वर मे अपना प्रश्न दुहराया, 'क्या हुआ है, भई ?'

शिरीन ने सिर हिलाकर बताया कि कुछ नही हुआ है।

'शो मे क्यो नही गयी ?'

शिरीन ने कोई जवाब नही दिया।

'देखो वह कोई तफरीह की जगह नही है कि जब तुम्हारा मूड हो या मर्जी हो आओ-जाओ। वहाँ तुम्हे नियमित रूप से जाना चाहिए। अभी तुम्हें बहुत कुछ देखने और सीखने की जरूरत है। बताओ तो सही, तुम गयी क्यो नही ?'

'मुझे अच्छा नही लगता।'

जवाब बिल्कुल स्पष्ट था। गुणीदत्त बिल्कुल अवाक् रह गया। उस बोल्ड लड़की की बातों में भय का लेशमात्र भी नहीं था। हालाँकि वह जो कुछ कह रही है उस में भी एक बूंद सच्चाई नहीं है, यह भी वह समझ गया। उसकी बुद्धि और एकाग्रता देखकर पिछले दिनों वह मन ही मन खुश और सन्तुष्ट था। इधर ही कुछ दिनों से उसकी ओर ध्यान देने का समय नहीं निकाल पाया। खेल सिखाने में भी कई दिन नागा किया है। अतः हो सकता है यह उसका अभिमान हो। उसे कुछ समझ नहीं आया।

'क्यों, यह सब सीखने में अब मन नहीं लगता ?'

शिरीन ने फिर सिर हिला कर जताया—उसका मन नहीं लगता। कहा, 'अब यहाँ रहना भी अच्छा नहीं लगता। मुझे कहीं और भेज दो। मैं यहाँ नहीं रहना चाहती।'

उसका यह झुँझलाया हुआ जवाब पाकर गुणीदत्त थोड़ा अश्वस्त हुआ। जाहिर था वह नाराज है। उसने चालाकी से नाराजगी की वजह जाननी चाही, 'अच्छा, बात क्या है, पहले यह सुन लूं, फिर कोई इन्तजाम कर दूंगा।'

लेकिन शिरीन का गुस्सा नहीं उतरा। वह कुछ कहेगी इसका भी लक्षण नजर नहीं आया।

समझ में नहीं आयी । कई बार पूछने पर भी, वह ढीठ बनी, मुँह फुलाए बैठी रही ।

जूली अभी तक नहीं लौटी थी । गुणीदत्त मिसेज उड के कमरे में चला आया । मिसेज उड आराम-कुर्सी पर हाथ-पाँव फैलाए आराम कर रही थी । इधर उनकी देह पर धीरे-धीरे मुटापा बढ़ने लगा है । अतः जरा-सी में थक जाती हैं । उस वक्त शायद अपने कमरे में बिल्कुल अकेली थी । स्टेज का सारा सामान समेटकर ठीक से रखने, बन्द करने में एडवर्ड साहब को अक्सर रात हो जाती है ।

गुणीदत्त ने पूछा, 'शिरीन को क्या हुआ है, आप जानती हैं ? मिसेज उड ने अपने पैरों के पास पड़े मूढ़े की तरफ एक बार देखा यानी आनेवाला अगर चाहे तो उस पर बैठ सकता है । लेकिन गुणीदत्त बैठा नहीं । उसके और जरा करीब आकर खड़ा हो गया । मिसेज उड सिर झुकाए-झुकाए ही उसकी ओर ठण्डी निगाहों से देखती रही । फिर उसके हवा में उड़ने को लेकर ताना कसा । गुणीदत्त के प्रति यह तोहमत मिसेज उड की ही थी । शिरीन ने अपनी जुबान से कुछ नहीं कहा था । जो उनके मैजिक या उनके काम-काज के साथ जुड़ा न हो, ऐसा कुछ गुणीदत्त को अपनी तरफ खींचे, यह बात उसे बिल्कुल पसन्द नहीं थी ।

मिसेज उड को ख्याल था कि उसके सवाल का जवाब नहीं दिया है । अपनी बात समाप्त करके वह दो-एक पल को सोचती रही । फिर सीधी होकर बैठ गयी । हाथ बढ़ाकर गुणीदत्त को शर्ट से खींचते हुए अपने बिल्कुल करीब झुका लिया और धीमी आवाज में कहा, 'इन दिनों तुम किसी और लड़की के चक्कर में घूम रहे हो, कहीं उसे यह तो पता नहीं चल गया ? आर यू श्योर इटस् नाट जेलसी ? यह जलन का मामला तो नहीं है ?'

गुणीदत्त एकदम से अचकचा गया । उसे ऐसी किसी सम्भावना का ख्याल भी नहीं आया था । उस तरह से झुककर खड़े होने में उसे तकलीफ हो रही थी अतः वह उनके पैरों के पास वाले मूढ़े पर बैठ गया ।

मिसेज उड ने अपने घुटने से उसके घुटनों को ठुनकाते हुए कहा,

'मुझे तो लगता है यही बात है, तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

गुणीदत्त क्षणभर को विमूढ़ बना रहा। मिसेज उड उससे सहानुभूति जताने का मौका पाकर प्रसन्न हो उठी।

'बेकार की बात रहने दीजिए। जूली क्या कहती है ?'

मिसेज उड की झुंझलाहट छुपी नहीं थी। अतः उसे जूली का ख्याल आया। इधर कई दिनों से वह जूली का व्यंग्य और हाव-भाव भी गौर कर रहा था। जूली ने कई बार मुंहफट की तरह, शिरीन को उसकी तरफ धकेलने की भी कोशिश की है। कौन जाने, उसीने तो उसका दिमाग नहीं खराब कर दिया ? हमउम्र होने के नाते दोनों में काफी घनिष्टता भी थी। कम से कम जूली के मन में जो आता, बकती चली जाती है। कुछ कहने-सुनने में कहीं उसकी जुबान भी नहीं अटकती।

'जूली—', मिसेज उड मानो उसकी बुद्धि का अन्दाज लगा रही हों, 'भई, तुम इस घर में रहते भी हो ? उनकी दोस्ती तो कब की टूट चुकी है। वह लड़की मुझसे तो दो-एक बातें कर भी लेती है। लेकिन जूली को तो वह देख भी नहीं सकती। जूली को क्या पता होगा ? उस दिन जूली ने शिरीन का हाथ थामकर जाने क्या कह दिया। शिरीन ने मेरे सामने ही जोर से उसका हाथ झटककर, उसके गाल पर चट् से एक तमाचा जड़ दिया। वह तो जूली ही थी, जो तमाचा खाकर भी ही-ही करके हँसती रही—और कोई होती, तो रणचंडी बन जाती। कुछ भी कहो भईया, तुम्हारी वह शिरीन भी कम मर्दमार नहीं है। बाद में मुझसे आकर कहने लगी, कि उसका कमरा बदल दिया जाए। वह जूली के कमरे के सामने नहीं रहेगी। उसकी वह सूरत तक नहीं देखना चाहती।

गुणीदत्त के मुँह से जैसे बोल ही नहीं फूटा। उसके सामने अभी भी सारा मामला अस्पष्ट बना रहा। लेकिन थोड़ी देर पहले जो शक दिमाग में उठा था, वह जैसे पक्का हो गया। जरूर जूली ने ही उसे दुखाया होगा या कुछ उल्टा-पल्टा समझाया होगा। वर्ना मिसेज उड को यह शक क्यों होता कि शिरीन के मन में ईर्ष्या जागी है। उन्हें यह शक कैसे होता ?

किसी के पैरों की आहट सुनकर उसने दरवाजे की तरफ मुड़कर देखा। गुणी डाटा को साधक-भक्त की तरह किसी औरत के पैताने ध्यानमग्न बैठा देखकर एडवर्ड साहब विस्मय से ठिठक गया। मिसेज उड ने आरामकुर्सी से सिर टिकाए हुए, उसकी तरफ देखा और आंख दबा दी।

'अन्दर आने से पहले, आवाज देकर आया करो, मिस्टर! वर्ना तुम्हारा कत्ल हो सकता है।'

एडवर्ड उड की स्वभाव-सुलभ चचलता और झेंपी हुई आकृति की ओर गुणीदत्त की नजर नही पड़ी। वह उठकर कमरे से बाहर निकल गया।

जूली के कमरे मे अभी लाइट जल रही थी। दरवाजा उढकाया हुआ था। गुणीदत्त उसी तरफ बढ गया।

'हलो···कम इन! अभी जरा देर पहले, मिसेज उड के पास मुँह फुलाए हुए क्या कह-सुन रहे थे···?'

उसकी अभ्यर्थना मे जूली अपने बिस्तर पर ही उठंगकर बैठ गयी। यूँ तो अपने कमरे मे कोई भी सिर से पाँव तक कपड़े लादकर नहीं सोता इसके अलावा कोई इस वक्त भी उसके कमरे मे आ सकता है, शायद इसके लिए वह तैयार नही थी। लेकिन गुणीदत्त चूँकि उस वक्त उसके खिलाफ सोच रहा था, अत. जूली की थकी-सकुचायी आकृति उसकी आँखो को चुभ गयी। कलकत्ते लौटने के बाद से ही उसकी छ साल की विदेशयाफ्ता दृष्टि भी अब धीरे-धीरे बदल रही थी।

गुणी ने कोने में रखी हुई चेयर खीच ली और जूली के करीब बैठते हुए पूछा, 'अभी से सोने की तैयारी? खाना-पीना हो गया?'

'एडवर्ड के साथ बाहर खाकर आयी हूँ।'

'ओ ऽ···और शिरीन ने खाना खाया या नही, पता किया?'

जूली की आँखों और चेहरे पर हल्का-सा विस्मय उभर आया। विस्मय से अधिक शायद कौतूहल हुआ। मीठे व्यंग्य-भरे लहजे मे पूछा, 'अच्छा? यह सब पता करने की जिम्मेदारी सिर्फ मेरी है? तुमने ही पता कर लिया होता।'

'मुझे तो लगता है यही बात है, तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

गुणीदत्त क्षणभर को विमूढ़ बना रहा। मिसेज उड उससे सहानुभूति जताने का मौका पाकर प्रसन्न हो उठी।

'बेकार की बात रहने दीजिए। जूली क्या कहती है ?'

मिसेज उड की झुंझलाहट छुपी नहीं थी। अतः उसे जूली का ख्याल आया। इधर कई दिनों से वह जूली का व्यंग्य और हाव-भाव भी गौर कर रहा था। जूली ने कई बार मुंहफट की तरह, शिरीन को उसकी तरफ धकेलने की भी कोशिश की है। कौन जाने, उसीने तो उसका दिमाग नहीं खराब कर दिया ? हमउम्र होने के नाते दोनों में काफी घनिष्टता भी थी। कम से कम जूली के मन में जो आता, बकती चली जाती है। कुछ कहने-सुनने में कहीं उसकी जुबान भी नहीं अटकती।

'जूली—', मिसेज उड मानो उसकी बुद्धि का अन्दाज लगा रही हों, 'भई, तुम इस घर में रहते भी हो ? उनकी दोस्ती तो कब की टूट चुकी है। वह लड़की मुझसे तो दो-एक बातें कर भी लेती है। लेकिन जूली को तो वह देख भी नहीं सकती। जूली को क्या पता होगा ? उस दिन जूली ने शिरीन का हाथ थामकर जाने क्या कह दिया। शिरीन ने मेरे सामने ही जोर से उसका हाथ झटककर, उसके गाल पर चट् से एक तमाचा जड़ दिया। वह तो जूली ही थी, जो तमाचा खाकर भी ही-ही करके हँसती रही—और कोई होती, तो रणचंडी बन जाती। कुछ भी कहो भईया, तुम्हारी वह शिरीन भी कम मर्दमार नहीं है। बाद में मुझसे आकर कहने लगी, कि उसका कमरा बदल दिया जाए। वह जूली के कमरे के सामने नहीं रहेगी। उसकी वह सूरत तक नहीं देखना चाहती।

गुणीदत्त के मुंह से जैसे बोल ही नहीं फूटा। उसके सामने अभी भी सारा मामला अस्पष्ट बना रहा। लेकिन थोड़ी देर पहले जो शक दिमाग में उठा था, वह जैसे पक्का हो गया। जरूर जूली ने ही उसे दुखाया होगा या कुछ उल्टा-पल्टा समझाया होगा। वर्ना मिसेज उड को यह शक क्यों होता कि शिरीन के मन में ईर्ष्या जागी है। उन्हें यह शक कैसे होता ?

किसी के पैरों की आहट सुनकर उसने दरवाजे की तरफ मुड़कर देखा। गुणी डाटा को साधक-भक्त की तरह किसी औरत के पैताने ध्यानमग्न बैठा देखकर एडवर्ड साहब विस्मय से ठिठक गया। मिसेज उड ने आरामकुर्सी से सिर टिकाए हुए, उसकी तरफ देखा और आँख दबा दी।

'अन्दर आने से पहले, आवाज देकर आया करो, मिस्टर ! वर्ना तुम्हारा कत्ल हो सकता है।'

एडवर्ड उड की स्वभाव-सुलभ चंचलता और झेंपी हुई आकृति की ओर गुणीदत्त की नजर नहीं पड़ी। वह उठकर कमरे से बाहर निकल गया।

जूली के कमरे में अभी लाइट जल रही थी। दरवाजा उढ़काया हुआ था। गुणीदत्त उसी तरफ बढ़ गया।

'हलो···कम इन ! अभी जरा देर पहले, मिसेज उड के पास मुँह फुलाए हुए क्या कह-सुन रहे थे···?'

उसकी अभ्यर्थना में जूली अपने बिस्तर पर ही उठंगकर बैठ गयी। यूँ तो अपने कमरे में कोई भी सिर से पाँव तक कपड़े लादकर नहीं सोता इसके अलावा कोई इस वक्त भी उसके कमरे में आ सकता है, शायद इसके लिए वह तैयार नहीं थी। लेकिन गुणीदत्त चूँकि उस वक्त उसके खिलाफ सोच रहा था, अतः जूली की थकी-सकुचायी आकृति उसकी आँखों को चुभ गयी। कलकत्ते लौटने के बाद से ही उसकी छः साल की विदेशयाफ्ता दृष्टि भी अब धीरे-धीरे बदल रही थी।

गुणी ने कोने में रखी हुई चेयर खींच ली और जूली के करीब बैठते हुए पूछा, 'अभी से सोने की तैयारी ? खाना-पीना हो गया ?'

'एडवर्ड के साथ बाहर खाकर आयी हूँ।'

'ओ ऽ···और शिरीन ने खाना खाया या नहीं, पता किया ?'

जूली की आँखों और चेहरे पर हल्का-सा विस्मय उभर आया। विस्मय से अधिक शायद कौतूहल हुआ। मीठे व्यग्य-भरे लहजे में पूछा, 'अच्छा ? यह सब पता करने की जिम्मेदारी सिर्फ मेरी है ? तुमने ही पता कर लिया होता।'

गुणीदत्त जूली के इस लहजे से परिचित था। अगर उसने सचमुच अब तक खबर न ली होती तो, एकदम से उठ खड़ी होती और उन्हीं कपड़ों में शिरीन के कमरे की ओर दौड़ जाती, लौटकर फिर कोई ऐसी ही फुलझड़ी छोड़ती। गुणीदत्त मन ही मन उसके तीखे होने का बहाना खोजता रहा। वह थोड़ी देर चुप रहा, फिर गम्भीर आवाज से कहा, 'मिसेज उड से तुम्हारे बारे में ही बातें हो रही थीं। शिरीन को क्या हुआ है?'

जूली ने चेहरे पर निरीहता ओढ़ते हुए जवाब दिया, 'हो सकता है, शिरीन को कुछ हुआ हो। लेकिन मुझे तो कुछ नहीं हुआ।'

'शिरीन को क्या हुआ है?'

जूली ने उसकी तरफ असहाय दृष्टि से देखकर कहा, 'सो मैं क्या जानूं? पास जाओ तो वह मारने दौड़ती है।' जूली कुहनी के सहारे हथेलियों पर चेहरा टिकाकर उसकी तरफ घूमकर बैठ गयी। पूछा, '···लेकिन, अचानक तुम्हारी शक्ल को क्या होता जा रहा है? इन दिनों जो तुम्हारा रवैया है, मैं तो सोच रही थी कि पूछ देखूं कि यहाँ शिरीन नाम की एक लड़की रहती है, और उसके प्रति तुम्हारी कोई जिम्मेदारी है, यह तुम्हें याद है या यह भी भूल चुके हो?'

जूली के इस तरह घूमकर बैठने से गुणीदत्त जैसे और सकपका गया। जूली का ब्रेसियर खिसक गया था। मोम की तरह उजली, अनावृत बाँहें! कन्धे! गर्दन! जिम्मेदारी के प्रसंग में जूली मानो उसी की कही हुई बातें दुहरा रही हो। जूली के सामने उसने अक्सर जिम्मेदारियों की बात दुहरायी है। और यह बात भी सच है कि इन दिनों वक्त कितनी तेजी से खर्च हो रहा है, इसका भी कोई हिसाब नहीं था। स्टेज पर खेलों का प्रदर्शन ही बन्द नहीं हुआ था, वर्ना और किसी तरफ या किसी की ओर ध्यान देने का उसे होश नहीं था। मिसेज उड ने भी इस बात को लेकर ताने कसे थे, लेकिन जूली की बात उसे चुभ गयी। शिरीन को क्या हुआ है या क्या हो सकता है, यह बात जूली के अलावा और कोई नहीं जानता, इस बारे में कोई शंका नहीं रह गयी।

गुणीदत्त ने अपनी खीज छुपाने की कोशिश नही की। झुंझलाकर पूछा, 'बकवास बन्द करो। मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि शिरीन के दिमाग मे तुमने तो कोई उल्टी-सीधी बातें नही भर दी ?'

जूली गम्भीर हो उठी लेकिन आँखों की कोरों मे अब भी कौतुक झलक रहा था। वह कुछ देर सोचती रही, अचानक जैसे कोई बात याद आ गयी, निर्लिप्त आवाज में कहा, 'हाँ, हो सकता है कि मेरी ही वजह से उस लड़की का दिमाग खराब हो गया हो।'

गुणीदत्त उसे प्रश्नभरी निगाहो से देखता रहा।

उसकी उत्सुकता के उत्तर मे, जूली ने बनावटी संकोच से फुसफुसाकर कहा, 'इतनी रात गये वह एकदम से दरवाजा खोलकर मेरे कमरे में आ जाएगी, मुझे क्या पता था ? यहाँ एडवर्ड को देखकर वह एक मिनट को अचकचाकर बिल्कुल जड हो गयी, फिर अपने कमरे की ओर दौड गयी। उसके अगले दिन से ही रानी साहिबा का मिजाज बिगड़ा हुआ है।'

बिना किसी आशा-आश्वासन के लन्दन के उन निराधार, सम्बलहीन दिनो की मुसीबत में, कलेजा कँपा देने वाली भयकर सर्दी की उस बर्फीली रात मे, यही जूली ऐण्डरसन कितनी खूबसूरत, कितनी अद्भुत लगी थी। गुणीदत्त की आँखो मे उसके प्रति तीखी नफरत झलक आयी। वह इतनी टुच्ची और गलीज कभी नहीं लगी थी। कैसा हँस-हँसकर बखान कर रही है कि इतनी रात गये, एडवर्ड को उसके कमरे में देख कर वह लड़की अचकचा गयी और जड हो गयी।

उसके कहने का मतलब था एडवर्ड उस समय उसके कमरे मे ही नहीं, बल्कि उसके साथ उसके बिस्तर पर सोया था।

गुणीदत्त ने अपने को संयत किया। वह उचित-अनुचित के बारे मे एक शब्द भी नही कहेगा। उसका उपदेश सुनकर जूली हँस देगी और मुमकिन है, अपनी तरह उसे भी किन्हीं गन्दी और गलीज स्मृतियों के घेरे में खींच ले जाए। कभी वही उसकी नितान्त अपनी थी, इस बात को लेकर शायद कोई व्यंग्य भी कर बैठे। इससे बेहतर है कि वह काम की बात करें। सीधे-सीधे काम की बात। कहा, 'सुनो, जूली, शिरीन

ने मिसेज उड से कहा है कि उसके लिए कोई और कमरे का इन्तजाम कर दिया जाए। लेकिन अभी यह सम्भव नहीं है। उसके भविष्य को लेकर मैं किसी से कोई समझौता करने के लिए भी राजी नहीं हूँ। मेरा ख्याल है तुम ही अपने लिए कहीं एक कमरा ढूंढ़ लो।'

जूली का मनोभाव बदल गया। उसके होंठों से हँसी गायब हो गयी। वह भौंहें सिकोड़कर थोड़ी देर उसकी ओर देखती रही, फिर बेहद गुस्से से कहा, 'तुम जैसे ईडियट के पल्ले पड़ी हूँ, अब जा भी कैसे सकती हूँ ? तुम उस लड़की के बारे में लम्बे-चौड़े दावे तो करते हो, लेकिन उसकी जिम्मेदारी नहीं निभा सकते। तुम उसकी जिम्मेदारी ले लो न। मैं यह मकान ही क्यों, तुम्हारा यह मुल्क छोड़कर चली जाऊँगी। अगर मैं यहाँ से निकल पाऊँ, तो बच जाऊँ—।'

गुणीदत्त को उसकी बातें पहेली-सी जान पड़ीं। उसकी बातों में कहीं कोई सस्तेपन का आभास नहीं था, कहीं सच्चाई की आँच थी। जूली उठकर बैठ गयी और गले तक चादर खींच ली। उसकी आँखों से स्पष्ट था कि उसका अगर वश चले तो वह उस जैसी अनाड़ी को पकड़कर झकझोर देती। उसने झुँझलाकर कहा, 'तुम्हारे दिमाग में बुद्धि नाम की भी कोई चीज है या नहीं ? मेरे दरवाजे से शिरीन का दरवाजा कितनी दूर है ? उस दिन एडवर्ड का इरादा इस कमरे में आने का नहीं था। उसकी निगाह तो शिरीन के कमरे पर थी। वह उस कमरे में जाने का मौका ढूंढ़ रहा था। उसी रात उसे अगर मैं अपने यहाँ न रोकती, तो तुम जैसे बुद्धू उससे पार नहीं पा सकते थे।'

गुणीदत्त आँखें फैलाए उसकी तरफ देखता रहा। अब उसके लिए कोई बात पहेली नहीं रह गयी।

सारी बातें उसके सामने स्पष्ट हो गयीं। थोड़ी देर वह अवाक् और विमूढ़-सा उसके चेहरे की ओर देखता रहा। अचानक उसे होश आया। धीरे-धीरे उसके चेहरे का रंग बदलने लगा। उसके चेहरे पर एक-एक कर कई एक गहरी लकीरें उभर आयीं। जूली एकटक उसके चेहरे के बदलते भावों को पढ़ती रही, मानो उसका यह भाव परिवर्तन उसके लिए कोई मजेदार अनुभव हो। फिर सजग होकर कहा, 'देखो, तुम

ताव मे आकर जंगली की तरह, उससे जूझने मत चल देना । उसे तो मैं ही सम्भाल लूंगी । तुम बीच मे पड़ोगे तो बेकार एक फसाद उठ खडा होगा । वह हर बात मे खार खाए रहेगा । उसे जितना डराना था, मैंने डरा धमका दिया ।'

उसकी आंखों में झांकती हुई वह हल्के-से हँस पड़ी । गुणीदत्त को उसकी हँसी पहले की तरह सस्ती नहीं लगी ।

लेकिन जूली की झुँझलाहट अभी नही गयी थी । उसी तरह तीखी आवाज में बोली, 'और उस बिचारे को भी क्या दोष दूं ? आखिर मरद आदमी ठहरा । और तुमसे भी ज्यादा इडियट मार्का वह रानी साहिबा हैं, जो सिर्फ रुपये गिनने मे लगी हैं और बैठी-बैठी मुटिया रही है, इन सब चक्कर मे···कौन-सी चीज खोती जा रही है, इसका होश ही नहीं है ।'

गुणीदत्त उसकी हंसी में साथ देने लायक मन.स्थिति मे नही था । पूछा, 'तुमने ये बातें इतने दिनों मुझे बतायी क्यो नही ?'

जवाब मे जूली ने भी वही बात दुहरा दी, जो इधर वह खुद महसूस कर रहा था ।

जूली ने कहा, 'तुमसे क्या कहती ? इन दिनो आंख-कान रहते तुम क्या कुछ सोच सकते हो ? तुम तो होश-हवास खोकर जाने किस धुन में मगन हो ।' कहते-कहते जूली की आंखों में कौतुक झलक आया, मानो उसे भी कुछ जानने की उत्सुकता है । कहा, 'खैर, हमारी बातों से सिर-दर्द करने के बजाय, तुम्हारा यह क्या चक्कर है, बताओगे ?'

जादूगर गुणीदत्त ने अपनी जिन्दगी मे भी कम जादू नहीं देखे । इन घटना के माध्यम से उसने जो देखा, वह कोई बहुत बड़ा जादू नहीं थी । लेकिन छोटी-बड़ी बातों का फैसला तो वह मन करता है न जो सिर्फ ऊपर-ऊपर से देखता है, वह तो उसे जीवन की [illegible] घटना भर मान लेता है ।

अगले दिन गुणीदत्त जब शिरीन को खोजता हुआ उसके कमरे मे आया तो वहां जूली भी बैठी थी । हाथों मे सलाई और खाट पे ऊन का गोला पड़ा था । शिरीन सामने के तख्त पर पैर लटकाए हुए गुनगुन

बैठी थी। उसका ध्यान वहाँ न होकर मानो कहीं और था।

कदमों की आहट से आगन्तुक का अंदाज लगाते हुए, उसने पीछे मुड़कर देखा। गुणीदत्त शिरीन की आँखों और चेहरे पर ताजे आक्रोश की झलक देखी, मानो सारे अपराधों की जड़ अचानक ही उसकी पकड़ में आ गयी हों।

'क्या बात है ?'

'तुमने जूली को यहाँ से चले जाने को कहा है ?'

शिरीन के सवाल पर गुणीदत्त के लिए चुप होने के अलावा और कोई राह नहीं थी। जूली के चेहरे पर निर्लिप्त गम्भीरता थी।

तीखी आवाज में शिरीन ने अपना आखिरी फैसला सुनाया, 'मैंने इससे कह दिया है, यह जाएगी तो मैं भी साथ जाऊँगी। अगर जाना पड़ा तो हम दोनों साथ जाएँगी।'

अगर सम्भव होता तो गुणीदत्त हँस देता। हँसने लायक बात ही थी। शिरीन की नाराजगी देखकर वह जैसे हल्का हो आया। पिछली रात की बेरुखी के लिए उसे जूली से माफी माँगने की जरूरत नहीं पड़ी। गुणीदत्त ने जूली की तरफ देखा। जूली गम्भीर भाव से सलाई चलाने में लगी रही और मन ही मन उसकी हैरानी का मजा लेती रही। शिरीन को सम्बोधित करते हुए गुणीदत्त ने फैसला सुनाने के लहजे में कहा, 'तो फिर दोनों में से किसी को भी जाने की जरूरत नहीं है।'

एडवर्ड से मुलाकात होने पर भी गुणीदत्त ने उससे कुछ नहीं कहा। कुछ कहने का मतलब होता सबके बीच गलत फहमियाँ पैदा करना। अगर यह बात फिर से उठायी गयी तो मिसेज उड के कानों तक भी पहुँचेगी। अतः मामूली-सी बात बहुत बड़ा रूप ले लेगी। बेहतर है कि इसे जूली ही संभाल ले। जूली चाहे तो बहुत कुछ कर सकती है। अपनी जिन्दगी तक आसानी से कुर्बान कर सकती है। उसे कुचलकर या तोड़-मोड़कर तहस-नहस कर डालो, वह हँसती रहेगी। यह सब झेलते हुए अपने होंठों पर शिकायत का एक शब्द तक नहीं लाएगी।

गुणीदत्त अपनी ही नजर में कहीं से छोटा पड़ गया। कई दिन तक उसके सामने पड़ने से भी बचता रहा। उस रात उसने जूली ऐण्डर-

में सबके सामने जो राह है, वह सीधी न सही, स्वाभाविक तो थी। उसकी सारी परेशानी अपने को लेकर है। एडवर्ड की तरह अगर वह अपने भीतर भी कोई कमजोरी खोज पाता, तो उसे कहीं कुछ अस्वाभाविक नहीं लगता। लेकिन हर इन्सान की भूख-प्यास शायद अलग-अलग होती है। उसके मन में तो इसकी याद भी नहीं जागती। उसमें और दूसरे लोगों में कहीं कोई फर्क जरूर है और वह फर्क, बाहरी परिवेश में न होकर, कहीं मूल में ही है।

इन्हीं सब उलझनों में कई दिन गुजर गये। वह क्या सचमुच किसी भ्रष्ट आकर्षण के मोह में बँधता जा रहा है? जेनिफर उड का ख्याल था। वह हवा में उड़ रहा है। जूली ने भी पूछा था, आखिर वह किस मुगालते में भटक रहा है? लेकिन सचमुच यह सब क्या सिर्फ हवाई बातें या मुगालता भर है? किसी जाहिल गँवार को अचानक आइना दिखाओ, तो वह भी द्विविधा में पड़ जाता है। अपनी परछाई देखकर मूरख भैंस भी ठिठक जाती है गुणीदत्त ने भी एक पल को जूली और जेनिफर की बातों के आइने में अपने को देखने की कोशिश की। सचमुच ही क्या वह सदियों पुरानी कब्र से उठकर मुर्दा अतीत में भटक रह है? गुमशुदा लावारिस यादों की दीवार से सिर टकराता हुआ व किसी तरह चल रहा है? अच्छा, वही है न मशहूर जादूगर, जिं दुनिया गुणीडाटा के नाम से जानती है? उसे क्या सचमुच नहीं मालू कि श्रावणी—श्रावणी है, स्वर्ण नहीं?

कई दिन बीत गये वह किसी निश्चित फैसले की कोशिश में, शह के फुटपाथों पर भटकता रहा। लोगों की भीड़ में अनचिह्ना-सा खो रहा। अगर इज्जत और शोहरत का ताज उतारकर निकलो, तो सड़ की स्टेज पर लोगों की निगाहों से बच निकलना बेहद आसान हो जाता धोती-कुर्ते और नीले रंग के चश्मे में सीधे-साधे गुणीदत्त को कोई पहच भी नहीं पाया अतः उसे कोई दिक्कत भी नहीं हुई। दरअसल उसे एक ही व्यक्ति ने पहचाना था और अपने एकाग्रनिष्ठा से उसे र वर्तमान गुणीडाटा की भूमिका में जा खड़ा किया था वह व्यक्ति ग़ु डाटा शायद खुद था। इन दिनों अक्सर वह उन रास्तों के चक्कर लग

रहा है, जिन पर हाथ में बांसुरी लिए हुए जिन्दगी की ताकत बटोरने की धुन यहाँ से वहाँ भटकता रहता था। इधर कई दिनों से लगातार घूमते हुए थकान के मारे पैर जैसे टूटने लगे। आज उसने पिछले दिनों की तरह चलते रहने की कोशिश नहीं की। वहीं थककर बैठ गया। शहर भर के उन तमाम होटल-रेस्तराओं के भी चक्कर लगा आया, जहाँ वह कभी खाली जेब खड़ा रहता था और आँखों से सिर्फ देखने का सुख लिया करता था। शहर के पार्कों और मैदानों में बैठे-बैठे वह मौन दर्शक की तरह नयी उम्र के लोगों को हसरत से देखा करता, जो एक-दूसरे से सटकर प्यार-मुहब्बत के ड्रामे किया करते।

गुणीदत्त ने बेहद ईमानदारी से अपने मन की थाह लेने की कोशिश की है कि पिछली यादों ने उसका कितना कुछ छीन लिया। उसे कितनी देर तक मिटा डाला है लेकिन उसे कहीं, कुछ नहीं मिला। उसे लगा कि कहीं से कुछ खोया भी नहीं है। जो बीत गया, वह सब सच था। उसने इसी बिन्दु से यात्रा शुरू की थी। लेकिन भरपूर वेग से उमड़ती नदी के बीच धार में, जैसे किनारे अस्पष्ट हो उठते हैं, उसके जीवन में भी अतीत की धुंधली याद भर ही बच रही है इससे अधिक कुछ नहीं—कुछ भी नहीं !

गुणीदत्त का मन इतना महसूस करते हुए भी स्थिर नहीं हो पा रहा है। उसने मिसेज उड को सूचना दी कि वह एकाध दिन को बाहर जा रहा है। वह कहाँ जा रहा है या किसके पास जा सकता है, इस बारे में कोई अन्दाज नहीं लगा पाया।

गुणीदत्त ने सबसे पहले बाँकुड़ा की तरफ रुख किया। वह सीधे बाँकुड़ा अपने गाँव पहुँचा। ढेर-ढेर यादों बसे, अपने गाँव। उस गाँव की मिट्टी, हवा-आकाश, पेड़-पौधे यहाँ से वहाँ तक सटी हुई शैल मालाएँ ! वही चिर परिचित परिवेश ! लेकिन यह सब भी तो दूर से दिखनेवाली यादों के धुंधले तट भर ही तो थे। इससे अधिक कहीं कुछ नहीं—कुछ भी नहीं !

जिस वक्त वह गाँव पहुँचा, बिल्कुल फिट बाबू मानो साहबी वेश-भूषा में था। कोई उसे पहचान भी नहीं सका। उसका नाम सुनकर

लोगों ने सिर हिला दिया, लेकिन किसी ने भी उसे पहचानने की कोशिश नहीं की। उसके साहबी पोशाक और दबदबे को देखकर लोगों ने धुँधली पड़ी यादों को एक बार पीछे मुड़कर देख भर लिया। इससे अधिक कुछ नहीं—कुछ भी नहीं !

गाँव में प्रवेश करते हुए, घर पहुँचने से पहले जीवन का घर पड़ता है। उसके घर वालों को यह देखते ही पहचान गया, लेकिन अपना परिचय उसे खुद देना पड़ा। जीवन को मरे हुए हुए बहुत दिन हो गये। एक दिन जोर का बुखार चढ़ा और फिर सन्निपात हो गया। इसके बाद सिर्फ दो दिन जिन्दा रहा और सब खत्म। यह सब क़िस्मत का फेर है, गुणीदत्त ने गहरी साँस ली।

जीवन नहीं रहा उसकी चर्चा छिड़ने पर उसके घरवालों के लिए भी सिवाय उसाँसे भरने के और कुछ भी नहीं बचा था।

गुणीदत्त अन्दर तक खाली हो आया। बेहद खाली मन से अपने घर की ओर कदम बढ़ाया। पिछली यादों ने उसका कहीं से, कुछ नहीं बिगाड़ा। अब वह गुणमय नहीं, गुणीडाटा है। अगर वह गुणमय होता तो जीवन की मौत की खबर उसे अन्दर से हिला जाती। अब तो वह भी एक साँस भरकर इतना भर कह सकता है—बेचारा। उसकी वर्तमान जिन्दगी में जीवन की मौत, एक सूचना भर है हाँ, चाँद साहब नहीं रहा—जीवन की तुलना में यह ख्याल सैकड़ों गुणा अधिक दंश देती है।

ताई अचानक उसे देखकर पहले तो चकरा गई। फिर उसके पास आ बैठी। बहुत हिम्मत करके दो-एक बार उसकी सारी देह-पीठ पर हाथ फेरती रही। गुणीदत्त ने सुना दादी और बुआ को मरे हुए एक जमाना बीत गया। वे दोनों गुणी के लिए बहुत रोती थीं। यह सब बताते हुए ताई की आँखों में भी दो-एक बूँद आँसू झलक आए। लेकिन गुणीदत्त ने जिस तटस्थ भाव से जीवन की मौत की सूचना सुनी, उसी तरह ये खबरें सुनता रहा। वह जो कुछ सुन रहा है, वह सब बीते हुए जमाने की बातें हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं। ताऊ को देखकर वह जरूर अचकचा गया। ताऊ को हुक्का गुड़गुड़ाते हुए, उनकी आँखों में

झलकते हुए बुढ़ापे को देखता रहा। उनकी इस जड़ता के पीछे संकोच ही नहीं, एक अनजान भय भी झलक आया।

उनका यह दीन-हीन रूप, मानो यह समझना चाहता हो कि वह अब महज अनुकम्पा के पात्र हैं।

गुणीदत्त के माथे की तनी हुई नसें शिथिल होने लगी। उसे यह महसूस करते हुए अच्छा लगा। अब तक उसके मन मे ताऊ के खिलाफ कही, कोई तीखा आक्रोश जिन्दा था, आज वह जैसे भाप की तरह उड़ गया जिसके प्रति उसका आक्रोश था, वह कोई और था—धुंधली यादों में बसा हुआ इन्सान। यह जर्जर क्षीण, असहाय बूढा तो कोई और है। गुणीदत्त का मन हुआ, वह वहाँ से भाग जाए। एक बार उसने अपने चारों ओर निगाहे दौडाकर देखा—हर ओर हहराती हुई मनहूसी, मानो उसे निगल जाने को आतुर हो।

ताई उससे घुमा-फिराकर पूछती रही कि वह इतने दिनों तक कहाँ रहा। वह दुनिया का कोना-कोना छान आया। यह जानकर उनकी आँखों में हैरानी झलक उठी। ताऊ जैसे और सिमट गये। ताई अंतरंगता दिखाते तरह-तरह के सवाल करती रही। उनका भतीजा अब तक जरूर बहुत बड़ा आदमी बन गया होगा। अब तक उसने कितना पैसा इकट्ठा कर लिया और आज यहाँ क्यों आया है, उन्हे शायद यही जानने की उत्सुकता थी।

गुणीदत्त अपने को और बडा साबित करने के मूड मे नही था। उनके सवालो को हँसी मे टालते हुए कहा, 'ऐसा कोई खास पेशा नही है, ताई'' गुणीदत्त का मन हुआ कि एक बार स्वर्ण के घर भी हो आए। लेकिन उन लोगो का प्रसंग उठाते ही ताई का चेहरा गम्भीर हो आया। पिछली वारदात के लिए वह मन ही मन शायद इसी घर को जिम्मेदार ठहरा रही थी।

गुणीदत्त ने सुना, स्वर्ण कलकत्ते के आस-पास ही कहीं रहते हैं। ताई ने जगह का नाम शायद जान-बूझकर नही बताया।

'खैर, जाने दो' उनके यहाँ नही जाएगा। उसने सोचा [illegible] स्वर्ण के माँ-बाप भी जाने क्या अर्थ लगा बैठें। [illegible]

जरूरत नहीं। गुणीदत्त उठकर वगीचे की तरफ निकल आया। वही पुराना चिरपरिचित बगीचा, अब तो बगीचे की जगह, झाड़झँखाड़ से भरा जंगल उग आया था। गुणीदत्त चुपचाप पिछली यादों को खुली आँखों से देखता रहा और मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। यही तो वह जगह है जहाँ हवा में गायब हो जाने का टोना पढ़ते हुए कबूतर का सिर गाड़ दिया था और उस पर दूध चढ़ाया करता था। यह रहा वह पेड़, जिसके नीचे वह स्वर्ण के गाल का मसा मिटाने की कोशिश किया करता था।

आखिरी बात याद करते हुए गुणीदत्त जाने कहाँ खो गया। इस बीमारी की असली जड़ कहाँ है? खास उलझन कहाँ है, यह पता लगाने के लिए वह अपने को ही जाँचता परखता रहा। इसीलिए तो वह कलकत्ते से भागकर यहाँ चला आया है। इसीलिए तो पिछली यादों की वादियों में भटक रहा है।

वह टहलते हुए, तालाब के किनारे चला आया और झाड़ी के करीब आ खड़ा हुआ। अपने को कुरेद-कुरेद कर परखता रहा। एक अजीब सी भावुकता उसके मन को कचोट गयी। अचरज है! अपने दीन-हीन ताऊ को देखकर भी जो ख्याल उसके मन में नहीं आया, वह यहाँ खड़े होकर धीरे-धीरे महसूस कर रहा है, उसकी पीठ पर का जख्म अचानक टीस उठा है। समूची पीठ पर अजीब-सी चिनचिनाहट फैल गयी।

गुणीदत्त के पास अपनी आँखें हैं, देखने की दृष्टि है। नहीं, उसे कोई बीमारी नहीं है। पिछले दिनों की यादें उसका कहीं से, कुछ भी नहीं बिगाड़ सकीं। सिर्फ एक मामूली-सी बात को लेकर बस, जरा-सी उलझन। बस, एक जगह थोड़ी-सी भावुकता जमी हुई है, यह बात जादूगर गुणीडाटा भी जानता है। लेकिन इन सबको ऐसी खुली आँखों से, इतना स्पष्ट नहीं देख पाया था। यहाँ आकर हर बात बिल्कुल साफ और स्पष्ट हो उठी। अब इस उलझन को सुलझाना आसान है। आँखों के सामने स्वर्ण की तस्वीर नहीं उभरी, पलकों के नीचे किसी मसे की भी याद नहीं आयी। उसकी जगह श्रावणी का चेहरा और उसकी ठुड्डी पर चमकता हुआ लाल तिल स्पष्ट हो उठा।

गुणीदत्त अचानक ही बेहद हल्का हो आया, मानो किसी निश्चित फैसले पर पहुँच गया हो।

गुणीदत्त के लौटने से पहले, बातचीत के दौरान ताई ने पूछा भी कि उसने ब्याह-ब्याह किया या नहीं।

गुणीदत्त ने अनायास ही जवाब दिया, 'न, अभी तक तो शादी नहीं की, लेकिन बहुत जल्दी ही करने वाला है।'

बारह

उड दम्पति ने अन्दाज लगा लिया कि कलकत्ते में जितने प्रोग्राम बुक हैं, वह महीने भर से पहले खत्म नहीं होंगे। हिन्दोस्तान के तमाम बड़े-बड़े शहरों का चक्कर लगाते हुए अन्त में फिर विदेश निकल जाने का कार्यक्रम भी निश्चित हो चुका है। अभी तो इस बात का सफर तय करने में कम-से-कम दो साल लगेंगे।

कलकत्ते में ही तीन महीने की जगह, जब चौथा महीना भी खत्म होने को आया, तो उन्होंने मन-ही-मन यह स्वीकार कर लिया कि अभी यहाँ और कई महीने टिके रहना जरूरी है। यहाँ से और कहीं न जाकर अपना सामान बटोर कर वे मुल्क लौट पाएँगे या नहीं इस बारे में भी वे अब तक निश्चिन्त नहीं हो पाये।

उन लोगों को भी गुणीडाटा के अजीबो-गरीब रवैय्ये का ही कोई ओर-छोर नहीं मिल रहा है।

गुणीदत्त ब्याह कर रहा है—श्रावणी नन्दी के साथ!

वैसे यह रिश्ता किसी को पसन्द नहीं आया। मिस्टर और मिसेज उड को तो खैर, अपने स्वार्थ से कारण यह रिश्ता नापसन्द था। गुणीदत्त को यह भी समझ नहीं आया कि इनकी और जूली की नापसन्द की वजह एक है या नहीं। अपना फैसला उसने सबसे पहले जूली को ही सुनाया था। बाँकुड़ा से लौटकर आते ही, उसने जूली को सब कुछ

जरूरत नहीं। गुणीदत्त उठकर बगीचे की तरफ निकल आया। वही पुराना चिरपरिचित बगीचा, अब तो बगीचे की जगह, झाड़झँखाड़ से भरा जंगल उग आया था। गुणीदत्त चुपचाप पिछली यादों को खुली आँखों से देखता रहा और मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। यही तो वह जगह है जहाँ हवा में गायब हो जाने का टोना पढ़ते हुए कबूतर का सिर गाड़ दिया था और उस पर दूध चढ़ाया करता था। यह रहा वह पेड़, जिसके नीचे वह स्वर्ण के गाल का मसा मिटाने की कोशिश किया करता था।

आखिरी बात याद करते हुए गुणीदत्त जानें कहाँ खो गया। इस बीमारी की असली जड़ कहाँ है? खास उलझन कहाँ है, यह पता लगाने के लिए वह अपने को ही जाँचता परखता रहा। इसीलिए तो वह कलकत्ते से भागकर यहाँ चला आया है। इसीलिए तो पिछली यादों की वादियों में भटक रहा है।

वह टहलते हुए, तालाब के किनारे चला आया और झाड़ी के करीब आ खड़ा हुआ। अपने को कुरेद-कुरेद कर परखता रहा। एक अजीब सी भावुकता उसके मन को कचोट गयी। अचरज है! अपने दीन-हीन ताऊ को देखकर भी जो ख्याल उसके मन में नहीं आया, वह यहाँ खड़े होकर धीरे-धीरे महसूस कर रहा है, उसकी पीठ पर का जख्म अचानक टीस उठा है। समूची पीठ पर अजीब-सी चिनचिनाहट फैल गयी।

गुणीदत्त के पास अपनी आँखें हैं, देखने की दृष्टि है। नहीं, उसे कोई बीमारी नहीं है। पिछले दिनों की यादें उसका कहीं से, कुछ भी नहीं बिगाड़ सकीं। सिर्फ एक मामूली-सी बात को लेकर बस, जरा-सी उलझन। बस, एक जगह थोड़ी-सी भावुकता जमी हुई है, यह बात जादूगर गुणीडाटा भी जानता है। लेकिन इन सबको ऐसी खुली आँखों से, इतना स्पष्ट नहीं देख पाया था। यहाँ आकर हर बात बिल्कुल साफ और स्पष्ट हो उठी। अब इस उलझन को सुलझाना आसान है। आँखों के सामने स्वर्ण की तस्वीर नहीं उभरी, पलकों के नीचे किसी मसे की भी याद नहीं आयी। उसकी जगह श्रावणी का चेहरा और उसकी ठुड्डी पर चमकता हुआ लाल तिल स्पष्ट हो उठा।

गुणीदत्त अचानक ही बेहद हल्का हो आया, मानो किसी निश्चित फैसले पर पहुँच गया हो।

गुणीदत्त के लौटने से पहले, बातचीत के दौरान ताई ने पूछा भी कि उसने ब्याह-व्याह किया या नहीं।

गुणीदत्त ने अनायास ही जवाब दिया, 'न, अभी तक तो शादी नहीं की, लेकिन बहुत जल्दी ही करने वाला है।'

बारह

उड दम्पति ने अन्दाज लगा लिया कि कलकत्ते में जितने प्रोग्राम बुक हैं, वह महीने भर से पहले खत्म नहीं होंगे। हिन्दोस्तान के तमाम बड़े-बड़े शहरों का चक्कर लगाते हुए अन्त में फिर विदेश निकल जाने का कार्यक्रम भी निश्चित हो चुका है। अभी तो इस बात का सफर तय करने में कम-से-कम दो साल लगेंगे।

कलकत्ते में ही तीन महीने की जगह, जब चौथा महीना भी खत्म होने को आया, तो उन्होंने मन-ही-मन यह स्वीकार कर लिया कि अभी यहाँ और कई महीने टिके रहना जरूरी है। यहाँ से और कहीं न जाकर अपना सामान बटोर कर वे मुल्क लौट पाएँगे या नहीं इस बारे में भी वे अब तक निश्चिन्त नहीं हो पाये।

उन लोगों को भी गुणीडाटा के अजीबो-गरीब रवैय्ये का ही कोई ओर-छोर नहीं मिल रहा है।

गुणीदत्त ब्याह कर रहा है—श्रावणी नन्दी के साथ!

वैसे यह रिश्ता किसी को पसन्द नहीं आया। मिस्टर और मिसेज उड को तो खैर, अपने स्वार्थ से कारण यह रिश्ता नापसन्द था। गुणीदत्त की यह भी समझ नहीं आया कि इनकी और जूली की नापसन्द की वजह एक है या नहीं। अपना फैसला उसने सबसे पहले जूली को ही सुनाया था। बाँकुड़ा से लौटकर आते ही, उसने जूली को सब-कुछ

बता दिया। वैसे जूली को अगर यह पता चलता कि यह फैसला अभी एकदम एक-तरफा है, तो शायद और हैरान होती कि जिससे ब्याह करने का फैसला किया है, उसकी राय अभी पूछी ही नहीं गयी। वैसे गुणी अगर यह बता भी देता तो वह उस पर अविश्वास भी नहीं करती। उसे यह असम्भव भी नहीं लगता। गुणीडाटा की मर्जी की ताकत वह जानती थी।

जूली थोड़ी देर उसे खामोश निगाहों से देखती रही। पिछले कई महीनों से उसके अजीबोगरीब रवैय्ये पर गौर कर रही थी। इन दिनों श्रावणी को भी बहुत बार देखा है। मौका मिलने पर उसे लेकर हँसी-मजाक किया है। गुणीदत्त उसकी छेड़-छाड़ पर हमेशा की तरह सहज-भाव से हँस देता था, लेकिन इन दिनों वह बदल गया है, जूली की निगाहों में यह बात भी छुपी भी नहीं थी। उसकी आँखों ने गुणी के यश, चेहरे-मोहरे, आँखों के आकर्षण में बहुत-सी लड़कियों को आकर्षित होते देखा है। लड़कियों के मन में उसके लिए छुपी हुई बेचैनी भी देखी है। लेकिन गुणीदत्त को उन सबके प्रति बेहद तटस्थ और उदासीन पाया है। वह तो इधर ही कई महीनों से सारी बात बदल गयी है। किसी रोशन शमा के आगे मानो कोई पतंगा सिर धुन रहा हो। जूली तो अब भी यही सोच रही थी कि यह आदमी किसी अंधे आवेग में बहा जा रहा है।

'तुमने क्या कहा, तुम ब्याह कर रहे हो? कहीं मैंने गलत तो नहीं सुना?'

'हूँ! ठीक ही सुना है।'

'ओऽ—तो शिरीन के बारे में मन पक्का कर लिया?'

गुणीदत्त ने उसकी ओर विस्मय से देखा, 'इसमें मन पक्का करने को क्या है?'

'कहीं फिर पछताओगे तो नहीं?'

गुणीदत्त मन-ही-मन झुँझला उठा। इस लड़की को वह अपनी बात कभी नहीं समझा पाया। कहा, 'शिरीन को मैं किस नजर से देखता हूँ, तुम जानती हो—वह मेरा भाग्य निर्देश करने आयी है, मेरा

घर बसाने नहीं।' शिरीन के बारे में वह कुछ भी बात सुनने-सहने को तैयार नहीं था। कहा, 'तुम्हारा मन हर किसी के बारे में इतना विकृत होकर क्यों सोचता है?'

जूली थोड़ी देर चुप रही फिर कहा, 'देखो, उस लड़की को मैं भी बहुत अच्छी तरह परख चुकी हूँ। तुम उस लड़की को ब्याह करने जा रहे हो, तो उसमें जरूर कोई खास बात देखी होगी। उसमें ऐसा क्या दिखाई दिया तुम्हें?'

गुणीदत्त ने अनमने भाव से सिर हिलाकर जताया कि उसे नहीं मालूम कि उसमें क्या देखा है।

जूली एक बारगी हँस दी, फिर मजाक के लहजे में कहा, 'लेकिन अब मैं क्या करूँ, बोलो तो—मेरे लिए तो तुमने एक समस्या खड़ी कर दी है।'

'कैसी समस्या?'

'अब मेरा यहाँ मन नहीं लगता, यह सच है। तुम साल-दो-साल में शिरीन को सम्भाल लेने की मनःस्थिति में हो जाओगे, तो मैं विदा लूंगी। उसी उम्मीद में मैं अपने मन को बाँधे हुए थी। उस लड़की की अभी उम्र उन्नीस साल है। मेरा ख्याल था तुम्हारा मन जमने में हद से हद दो साल लगेगा। अब मेरे लिए मुश्किल हो गयी न?'

गुणीदत्त ने उसके मजाक पर ध्यान दिये बगैर, शान्त भाव से जवाब दिया, 'मेरा ख्याल है, इस बार का टूर खत्म होने तक तुम रुक जाओगी। वैसे अगर बिल्कुल ही मन उचट गया हो, तो शिरीन का वास्ता देकर मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा।'

जूली फिर हँस दी, 'तुम्हें किसी का वास्ता देने की जरूरत नहीं है, बन्धु! कमबख्त अपना मन ही वास्ता देने लगा है। मुझे जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि बाद में तुम पछताओगे, लेकिन उस वक्त तुम्हारे लिए कोई राह नहीं होगी।' कहते हुए जूली ने गुणीदत्त की आँखों में झाँककर देखा, मानो वह किसी अबोध बच्चे को देख रही, एक बात बताओ, तुमने उस लड़की को कभी ध्यान से दे
और वह जोर से हँस पड़ी।

गुणीदत्त को जूली की यह बात-चीत और हँसी बेहद तीखी लगी। मारे गुस्से के वह कमरे से बाहर जाने को उठा ही था, कि जूली की आवाज का लहजा बदल गया। अब उसकी हँसी उसके होठों से खिसक-कर समूचे चेहरे पर फैल गयी। कहा, 'सुनो, बन्धु ! तुमसे एक बात कहूँ। शुरु-शुरु में तुम्हारी शिरीन मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी और जब अपनी अट्ठाइस साल की उम्र में, उस अठारह साल की छोकरी से होड़ लेने का मन हुआ तो वह बुरी लगने लगी, वर्ना बहुत दिन पहले ही मैं तुमसे विदा लेती। जानते हो, एक दिन बातों ही बातों में शिरीन ने कहा कि उसे अपनी माँ की अच्छी तरह याद है। उसकी माँ भी यूँ ही ढेर सारी तकलीफें सहती रही और हँसती रहती थी। मैं भी उसे अपनी माँ जैसी लगती हूँ—बिल्कुल माँ जैसी ! और सहेली जैसी भी। उसकी इसी बात पर मैं कुर्बान हो गयी। अब कभी-कभी अफसोस होता है, गुणीडाटा, कि काश मैं भी दो-एक बच्चे की माँ होती।'

अपनी बात पूरी करते हुए जूली एकबारगी हँस दी। हँसते-हँसते फिर कहा, 'नाउ, गेट आउट ! अब तुम सिर्फ अपनी चिन्ता करो ! बहरहाल शिरीन को लेकर तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।'

इसके बाद गुणीदत्त ने भी एक शब्द भी नहीं कहा। उसका मन हुआ कि वह कहे, शिरीन की चिन्ता करने को वह काफी है, और उसके बारे में सोचने का मन भी होता है लेकिन इस वक्त उसने कुछ नहीं कहा। उल्टे वह काफी निश्चिन्त हो आया। ऐसे ही जाने कितने मौके आये, जब जूली की इन्हीं छोटी-छोटी बातों ने उस प्रवीण जादूगर की बन्द आँखें खोल दी हैं। ऐसे मौकों पर गुणीदत्त उस पर बुरी तरह झुँझला उठा है। लेकिन बाद में खुद को ही अपराधी महसूस करता रहा। लेकिन आज तो उसके मन में अपराध—बोध भी नहीं जगा। इस जूली ऐण्डरसन के खिलाफ उसने जाने क्या-क्या सोचा था। उसने शर्म से अपना चेहरा छुपा लेना चाहा। गुणीदत्त बहुत बड़ा जादूगर है। लोगों की निगाह में महान् आदमी। उस महान् आदमी ने इस अदनी-सी लड़की के आगे दोनों हथेलियाँ फैलाकर ढेर-ढेर लेता रहा है और देने के नाम पर कभी, कुच्छ नहीं दिया। अब वह लाख छुपाने की

कोशिश करे, लेकिन इस कटु सत्य को, अपने से आखिर कैसे छुपा पाएगा ?

गुणीदत्त जो फैसला कर चुका है वही होगा। यानी वह व्याह करेगा, घर बसाएगा, यायावर आदमी मे जैसे अचानक घर बसाने की साध जागती है। वैसे ही वह भी घर बसाएगा। उस घर मे श्रावणी छायी रहेगी। जाने यह सपना पूरा भी होगा या नही। श्रावणी को पा लेना सम्भव भी है या नही, इस बारे मे उसने एक बार भी नही सोचा। इस बारे मे उसे कोई परेशानी भी नही है। वह जो चाहता है, वही होगा, इसमे जैसे कही कोई शंका ही नही थी। इस बारे मे वह इतना निश्चिन्त इसलिए है कि यह फैसला उसका नही ऊपर वाले उस अदृश्य नियामक का है जिसके हाथों में उसकी किस्मत की डोर है। यह सकल्प उसी ऊपर वाले का है। इसमे गुणीदत्त का अपना कोई हाथ नही। दरअसल यह सम्बन्ध पूर्व-नियोजित था; उसने तो उसे जाना या महसूस भर किया है। वर्ना छः साल के दौरान विलायत मे ही बहुतेरी श्रावणी उसकी जिन्दगी मे आ जाती। अगर ऊपरवाले की मर्जी न होती, तो जहाज मे शुभेन्दु नन्दी नामक किसी यात्री से उसकी मुलाकात ही नही होती। कलकत्ते मे कदम रखते ही उसकी मुलाकात ऐसी किसी लडकी से नही होती, जिसे देखकर मिसेज उड को लगा कि वह हवा के पखों पर सवार है या जूली को लगा, वह किसी अन्धे आवेग मे भटक गया है।

गुणीदत्त भाग्य को मानता है। इतने सालो की जिन्दगी में वह किस्मत के बहुतेरे खेल देख चुका है, किस्मत के जादू के आगे जादूगर गुणीडाटा के जादुओ ने भी हार मान ली है।

लेकिन आदमी सब कुछ किस्मत के भरोसे छोडकर रखकर तो नही बैठता। गुणीदत्त भी निश्चल नहीं बैठा उसके घर आता है, अभी तो उसे भी इसकी खबर उसके इरादे से बिल्कुल अनजान हो, ऐसा भी नहीं

पक्का विश्वास है कि मन की लगाम अव्यक्त बातें दूसरे मन तक जरूर पहुँचती है। लेकिन फिर भी श्रावणी को बुलाकर उससे भी बात कर लेना जरूरी है। इसके लिए मौका देखकर अकेले में मिलने की जरूरत है। टेलीफोन पर सारी बातें करना हास्यस्यपद लगा। फिर भी उसे फोन किये बिना नहीं रह सका। कभी खबर मिलती श्रावणी घर पर नहीं है, कभी श्रावणी ही फोन उठाती, उसके कुछ कहने के पहले बेहद विनम्र होकर कहती, उसे बहुत काम है, वह नहीं आ सकती। जो लड़की कॉलेज में प्रोफेसर है, उसमें इतना सौजन्य-बोध तो अपेक्षित ही है।

गुणी लगातार दो दिनों तक उसके घर पर गया। श्रावणी उसे घर पर मिल भी गयी। लेकिन उस दिन घर में और भी बहुत से लोग जमा थे। शुभेन्दु, छोटे भाई लोग, मिलनी, प्रशान्त और भी दो-चार बाहरी मेहमान। सब बाहरवाले कमरे में बैठे थे। गप-शप के बाद चाय नाश्ते का दौर अभी-अभी समाप्त हुआ था। चाय की प्यालियाँ अभी भी वहीं पड़ी थी।

वहाँ जो लोग इकट्ठे हुए थे, सब पढ़े-लिखे थे। सबमें व्यवहार-ज्ञान-और सुरुचि बोध भी है। गुणीदत्त के पहुँचने पर, उसकी अभ्यर्थना में कोई कमी नहीं की गयी। शुभेन्दु ने हँसकर स्वागत किया। मिलनी उसे देखकर मुस्करा दी। प्रशान्त ने हाथ जोड़ दिए। श्रावणी ने उसे देखकर भी हमेशा की तरह निर्लिप्त दिखने की कोशिश की। लेकिन पहले और इस बार की अभ्यर्थना में कहीं, कोई अन्तर जरूर था, जिसे सिर्फ गुणीदत्त ने ही महसूस किया। किसी में पहले जैसा उत्साह नहीं जगा। उसे देखते ही शुभेन्दु नन्दी खुशी के मारे उछल नहीं पड़ा। मिलनी भी सिर्फ मुस्कराकर रह गयी, पहले की तरह उसने बातों की झड़ी नहीं लगायी।

गुणीदत्त इस परिवर्तन को भी बहुत मजे में एन्ज्वाय करता रहा। जो कुछ होने जा रहा है, उसमें इस तरह के छोटे-छोटे बाधा-विघ्न नीरस भी नहीं लगते। हाँ, बाहरी मेहमानों से परिचय कराया गया तो उनके चेहरे चमक उठे। गुणीदत्त ने महसूस किया वे लोग इस अपेक्षा में है, कि वह कोई जादू दिखाएगा।

बात-चीत के बीच में ही श्रावणी उठ खड़ी हुई। गुणीदत्त समझ गया, वह कहाँ गयी है? वहाँ बैठे हुए सभी लोगों ने समझ लिया कि वह तटस्थ है यानी उसके लिए चाय-नाश्ते की औपचारिकता निभाने गयी है। यह डिपार्टमेंट सिर्फ उसी का है।

गुणीदत्त हँस दिया। इतनी देर में ही दो-एक जादू दिखाने का लोभ दबा नहीं पाया। उसके चेहरे पर व्यस्तता के भाव उभर आये। उसने सब से पहले मिलनी की तरफ, बाद में शुभेन्दु की तरफ देखकर पूछा, 'मेरा ख्याल है कि तुम लोग तो आज नहीं चल सकोगे।' मानो वह सबको 'शो' में लिवा जाने के लिए ही आया था। शुभेन्दु ने सिर हिलाकर जताया, 'नहीं, आज तो नहीं जा सकेंगे। ये लोग आए हुए हैं। तुम बैठो न, तुम्हारे लिए चाय।

मिलनी को रोकने का मौका ही नहीं मिला। गुणीदत्त तब तक दरवाजे के बाहर निकल चुका था। वह बेहद शराफत से उठ खड़ा हुआ और व्यस्तता दिखाते हुए सहज भाव मे विदा ली। कहा, 'नहीं, भाई, दूसरे दिन डबल चाय पी लूँगा। अभी यहाँ चाय पीने बैठ गया, तो वहाँ सब चौपट हो जाएगा।

जैसे कोई नाटक हो रहा हो। गुणीदत्त ने जितना सोचा था, उसकी भाव-भंगिमा उससे अधिक नाटकीय हो उठी। श्रावणी जब नाश्ता लिए हुए कमरे में आयी तो देखा, जिसके लिए वह प्लेट लायी थी, वह कमरे में नहीं है। उसने ईषत् विस्मय से भाई की तरफ देखा।

गुणीदत्त इस तरह उठकर चल देगा, शुभेन्दु ने भी नहीं सोचा था। लेकिन उसके लहजे में अगर झुँझलाहट न होती, तो सारी बातें सहज लगतीं। उसने झुँझलाकर कहा, 'देखो न, आखिर चला ही गया। कह रहा था, बहुत जल्दी मे है। तू भी तो उससे बिना कुछ कहे-सुने चली गयी?'

श्रावणी को लगा उनकी बात-चीत सुनकर और इतनी निर्लिप्तता से नाश्ता लाते देखकर, लोगों के मन में उसके प्रति सहज आग्रह जाग गया होगा। फिर भी उसने मन की खीज चेहरे पर अभिव्यक्त नहीं होने दी। भाई के चेहरे पर आँखें टिकाए हुए, उसने बेहद सादगी

पूछा, 'इसमें बताकर क्या जाना था ? जब आए थे, तो चाय तो···
तुम उन्हें बैठा तो सकते थे ।'

वह मानो यह कहना चाह रही हो, कि उस आदमी को लेकर तुम्हारे मन में विकृतियाँ पलने लगी हैं, इसीलिए आत्मीयता मिट गयी है। जिससे बात कही गयी थी, उसके अलावा और किसी ने उसकी बात नहीं समझी। शायद मिलनी को भी थोड़ा आश्चर्य हुआ। मेहमानों में से एक ने किंचित् झुंझलाहट से कहा, 'इनका भी क्या दोष है ? वह तो जैसे हवा पर सवार आए थे, वैसे ही सर्राटे से उठकर चल दिए। हम लोगों ने भी सोचा कि अब मजा आएगा लेकिन वह भले आदमी तो सिर्फ सूरत दिखाकर चल दिए—'

श्रावणी चाय-नाश्ता लिए हुए वापस लौट गयी। उसकी बातें भाई और मिलनी को बुरी लगी हैं, यह महसूस करते हुए उसे खीज होने लगी। इस वक्त मन ही मन वे लोग जाने क्या-क्या सोच रहे होंगे। इतनी सीधी-सी बात उनकी समझ में नहीं आयी। इस आदमी को लेकर अगर सच ही उसके मन में कहीं कोई आग्रह होता, तो उसके जाने की बात सुनकर वह चुप ही रहती। दरअसल उसके मन में ऐसा कोई आग्रह नहीं है। तभी तो वह यूँ बोल पायी। वैसे मन ही मन वह यह भी जानती थी कि इतनी छोटी-सी बात पर इस तरह झुंझला उठना उसके स्वभाव में नहीं है। हाथ में नाश्ते की प्लेट देखकर भाई ने क्या सोचा, क्या नहीं सोचा, इसे लेकर सिर खपाए बिना भी काम चल सकता था। अतः घूम-फिरकर सारी खीज उस व्यक्ति पर उतरी, जो इस तरह आया और लौट गया। वह किसके लिए आया था और हठात् व्यस्तता का बहाना ओढ़कर, फौरन चला क्यूँ गया, यह बात श्रावणी ही नहीं, उसके भाई को भी मालूम है। दरअसल वह यहाँ अड्डा मारने नहीं आया था, यहाँ दस लोगों से मिलने भी नहीं आया था।

श्रावणी की अध्यापकीय बुद्धि प्रखर हो उठी। उसे लगा, यह हद दर्जे की बेशर्मी अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकती। लेकिन जाने यह निर्लज्जता ही है या कुछ और, गुणीदत्त की बातों से तो यह भी जाहिर नहीं होता। इस तरह के दुहरे अतर्कित वार से वह जितनी क्रुद्ध नहीं

हुई, उसमें अधिक निरुपाय हो आयी। जैसे किसी तेज लहर पर पैर टिकाए खड़े रहने के दावे के बावजूद पैर टिका पाना मुश्किल लग रहा हो।

कई दिनों बाद गुणीदत्त फिर आया। उसे सूचना मिली, श्रावणी घर पर नहीं है, लाइब्रेरी गयी है। उसने उसकी लाइब्रेरी का पता माँगा। श्रावणी का घर पर न मिलना उसे अच्छा लगा। गाड़ी फिर दौड़ पड़ी। शहर के निर्जन एकान्त में बसी हुई लाइब्रेरी! जो देश का गौरव-प्रतीक है। ज्ञान का अक्षय समोए है। वहाँ लोग ज्ञान के मणि-माणिक बटोरने जाते हैं। गुणीदत्त को भी लाइब्रेरी के भीतर जाते हुए अच्छा लगा। वह भी तो एक रत्न की उपलब्धि के लिए ही इतनी भाग-दौड़ कर रहा है।

लाइब्रेरी का विशाल हॉल—हॉल के बीचोबीच इस किनारे से उस किनारे तक जुड़ी हुई मेजें। मेज के दोनों ओर सैंकड़ों लड़के-लड़कियाँ सिर झुकाए हुए अपनी-अपनी पढाई में ध्यान-मग्न।

गुणीदत्त ने एक बार चारों ओर नजर दौड़ाकर देखा, फिर धीरे-धीरे आगे बढा। आगे बढते हुए उसे सकोच भी हो रहा था। उसके पाँवों की हल्की-सी आहट से लोगों की एकान्त-तन्मयता डिस्टर्ब न हो जाए, इस ख्याल से वह सकुचा उठा।

अचानक वह रुक गया। सामने की मेज पर आमने-सामने दो लड़कियाँ किताबों में खोई हुई थीं। उनमें एक वह है, जिसकी तलाश में वह आया था। उसके साथवाली लड़की को पहले भी कहीं देखा हो, उसे याद नहीं आया।

गुणीदत्त उसके पास आकर खड़ा हो गया। उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट झलक आयी।

दोनों लड़कियों ने चौंककर सिर उठाया तो अवाक् रह गयीं। हालांकि उनके विस्मय का कारण अलग-अलग था। दूसरी लड़की श्रावणी के कालेज की ही प्रोफेसर थी। अभी कई दिन पहले ही तो गुणीदत्त उसके कालेज में खेल दिखाने आया था। उसे न पहचान पाने लायक कोई बात नहीं थी। उसने उठकर हँसते हुए नमस्ते किया। लाइब्रेरी के भीतर

जोर से बात करना नियम के खिलाफ होता, अतः दबी आवाज में पूछा, 'अरे, वाह ! आप यहाँ ? मैजिक की किताबें पढ़ने आए हैं, शायद।'

उसे यहाँ देखकर यह अन्दाज लगाना स्वाभाविक भी है। गुणीदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया, बस मन्द-मन्द मुस्कुराता रहा। उस महिला का परिचय पाने के आग्रह से उसने श्रावणी की तरफ देखा। इसके पहले श्रावणी की सहेली ने खुद ही अपना परिचय दे डाला, 'मैं इसकी दोस्त हूँ। कालेज में आपसे मिल चुकी हूँ, आप भूल गये ? उस दिन आपका खेल हम लोगों को बहुत पसंद आया था।'

श्रावणी यहाँ भी किसी मित्र के साथ होगी, गुणीदत्त ने नहीं सोचा था। अपनी तारीफ सुनकर भी उसे कोई खुशी नहीं हुई। उसके चेहरे पर एक विनम्र-सी हँसी खेलती रही। अपनी सहेली के सामने श्रावणी भी सहज दिखने की कोशिश करती रही। उसका गम्भीर होना शायद उसकी सहेली को भी अजीब लगेगा। लेकिन उसके लिए सहज बने रहना, मुश्किल हो गया। उसने एक चिट फाड़ कर, किसी किताब का नम्बर लिखा और कैटलॉग देखने को उठ खड़ी हुई। अपने चेहरे पर एक सायास मुस्कान लाने के लिए, उसे बहुत जोर लगाना पड़ा।

गुणीदत्त ने एक बार घड़ी की तरफ निगाह डाली फिर दोनों की ओर देखकर पूछा, 'आप लोग क्या अभी यहाँ देर तक ठहरेंगी ? देर न हो तो चलिए, मैं आप लोगों को छोड़ दूंगा।' श्रावणी ने सहेली के सामने अपनी आवाज को सायास स्वाभाविक बनाते हुए उत्तर दिया, 'नहीं, हमें यहाँ देर लगेगी और फिर इसकी कार भी है।'

एल्कोव में से निकाल कर, वह किताबों की सूची देखने चल पड़ी। वैसे वह यह बात अच्छी तरह समझ रही थी कि वहाँ से इसलिए उठ आयी, क्योंकि वहाँ रहना खतरे से खाली नहीं था। वहाँ अगर और कुछ देर ठहरती तो हो सकता था, वह और कुछ कहता या फिर एकटक उसकी सूरत निहारता रहता। जाहिर था कि अब वह आदमी उसके पीछे-पीछे वहाँ भी पहुँचेगा। लेकिन जान-पहचान के लोगों की नजर से बचने के लिए, श्रावणी के पास वहाँ से हट आने के अलावा और कोई चारा भी नहीं था !

गुणीदत्त ने मुस्कराते हुए उसकी सहेली को हाथ जोड़ दिये और मन ही मन उसकी गाड़ी को कोसता हुआ, वह भी किताबों की कोठरी से बाहर निकल आया। पहले की अपेक्षा एक छोटे हाल में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुए डेस्कों के एक ओर खड़े होकर श्रावणी ने एक ड्रायर खींचकर किताबों की सूची देखनी शुरू की। गुणीदत्त उसके पीछे आ खड़ा हुआ। श्रावणी एक पर एक कार्ड उलटती रही। गुणीदत्त पीछे से उभककर देखते हुए मुस्कराता रहा। कहा, 'सुनो, जिस चीज की जरूरत न हो, उसको खोजने बठो तो वह आसानी से नहीं मिलती।'

श्रावणी उसी तरह झुकी हुई कार्ड देखती रही, फिर धीरे-धीरे सीधी खड़ी हो गयी। उसका हाथ अचानक रुक गया और कान गरम हो उठे। लोग अब भी इधर-उधर आ-जा रहे थे।

दो एक लोगों ने गर्दन घुमाकर उनकी तरफ देखा। श्रावणी गुणीदत्त की ओर घूमकर खड़ी हो गयी। उसकी तरफ धीर-स्थिर आँखों से देखने की कोशिश की। लेकिन उसकी तरफ देखना भी कोई आसान बात नहीं थी।

गुणीदत्त ने बेहद सादगी से कहा, 'तुम्हारे घर गया था, वहाँ पता चला तुम यहाँ हो। इसलिए यहाँ चला आया।'

'मुझ से कुछ कहना है ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर जवाब दिया, सचमुच उसे कुछ कहना है। उसकी आँखें श्रावणी के चेहरे और ठुड्डी पर अटकी रहीं। श्रावणी को गुस्सा आने लगा। लेकिन इस स्थिति में वह अपने को बेहद असहाय महसूस करती रही! गुणीदत्त मानो उसकी यह कमजोरी जान गया और शायद इसीलिए उसकी आँखों में हँसी झरती रही। 'तुम्हे और कितनी देर लगेगी ?'

श्रावणी ने कोई निश्चित समय न बताकर, सिर्फ इतना कहा, 'देर लगेगी।'

'उसके बाद क्या करोगी ?'

'घर जाऊँगी।'

'तो फिर मैं अपनी बात कब कहूँ ?'

श्रावणी ने निर्लिप्त गम्भीरता से उसकी तरफ देखा। यहाँ ऐसे खड़े-खड़े बातें करना उसे कितना जहर लग रहा होगा, उसे इसका भी होश नहीं है! वह शायद जान-बूझकर यह सब नाटक कर रहा है।

गुणी ने फिर एक बार घड़ी पर निगाह डाली। बीच-बीच में यूँ घड़ी देखते रहना उसकी आदत है। कहा, 'मुझे तुमसे कुछ कहना है। बेहतर यही है कि तुम फौरन से पेश्तर मेरी बातें सुन लो। वर्ना भविष्य में सारी स्थिति शायद इससे भी अधिक अजीब लगे।' यह कहते हुए, वह फिर हँस दिया, 'अच्छा, तो आज मैं चलता हूँ।'

सामने बड़ा-सा हॉल। उसके आखिरी छोर पर बाहर जाने का दरवाजा। गुणीदत्त जितनी दूर तक दिखा, श्रावणी घूमकर उसकी तरफ देखती रही। वह क्या और क्यों देख रही है; यह शायद वह खुद भी नहीं जानती।

कई दिन बाद दोनों की फिर मुलाकात हो गयी। पिछले दिन श्रावणी ने बिल्कुल फैसला कर लिया था कि यह उसकी आखिरी मुलाकात होगी। वह अपना दिल कड़ा करके समाप्ति के लिए तैयार होकर ही आयी थी। लेकिन वह आखिर आयी ही क्यों, उसे इसी बात पर हैरत हो रही थी। उसे यह भी मालूम था कि उस दिन कोई न कोई बात जरूर होगी। उसे कुछ कहना है, तभी तो इतने आग्रह से बुला गया है। आज सारी बातों का फैसला हो जायगा। श्रावणी को भी जो कहना है, कह डालेगी। उसके बाद शायद फिर कभी बात-चीत या मुलाकात भी नहीं होगी। लेकिन अगर उसे सिर्फ बात ही करनी है, तो वह तो टेलीफोन पर भी निपटायी जा सकती थी। लेकिन उसे बातों के साथ-साथ मुलाकातों का सिलसिला भी खत्म करना है। वह आखिर आयी ही क्यों? सच पूछा जाए तो उसे अपनी बात सुनाने के लिए जोर-जबर्दस्ती ही लाया गया है। शायद शो खत्म होने के बाद वह अपनी बात कहे यानी आज उसे फिर घर लौटने में देर होगी। पापा जगे होंगे। घर में घुसते ही पापा आवाज देकर पूछेंगे, 'आज तुझे लौटने में

इतनी रात क्यों हो गयी ?"

शुभेन्दु भाई और बाकी भाई उसकी ओर कनखियों से देखेंगे। श्रावणी को अपने पर ही झुंझलाहट होने लगी। गुणीदत्त के बुलाने पर वह आने को राजी ही क्यों हुई ? उसके बुलाने पर वह झट से फोन रख देती तो, मिलने-जुलने की बात ही खत्म हो जाती। इतने दिनों से वह उससे जो बात कहना चाहती है, वह स्पष्ट हो जाती। दरअसल आदमी अपनी मुक्ति कभी नहीं चाहता। अपनी गलती समझने पर नाराज भी नहीं होना चाहता। श्रावणी ने अपने को जस्टीफाई करने की कोशिश की—ऐसा करना शायद असभ्यता होती। उससे शराफत से पेश न आने की कोई वजह नहीं है।

गुणीदत्त के कई खेलों के बाद एडवर्ड उड स्टेज पर आया और दर्शकों के सामने गुणीडाटा के पलायनी जादू के बारे में कौतूहल जगाने वाली भूमिका बांधता रहा। श्रावणी ने उस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। उसकी भूमिका भी नहीं सुनी। उसकी बगल वाली कुर्सी खाली थी—वह आराम से पैर टिकाकर बैठ गयी।

स्टेज पर लकड़ी का बड़ा-सा बक्सा लाया गया। दर्शकों के आगे उसे अच्छी तरह घुमा-फिराकर, ठोक-बजाकर दिखाया गया—नहीं, कोई चालबाजी नहीं है। बक्से में कहीं एक छोटा-सा सुराख भी नहीं है।

गुणीदत्त के हाथ-पांव बाँधकर दर्शकों से परीक्षा कर लेने को कहा गया। परीक्षा के बाद उसे बक्से के भीतर ठूंस-ठूंकर भर दिया गया। और बक्से का ढक्कन बन्द करके, उसमें कई एक ताले भी जड़ दिए गये। ताले की चाबी दर्शकों को दे दी गयी। उसके बाद दर्शकों ने ही उस बक्से को चारों ओर से मोटी रस्सी से जकड़ दिया। मिस्टर उड ने उत्तेजित आवाज में लोगों को चेतावनी दी, 'भई, जरा जल्दी कीजिए। तीन मिनट से ज्यादा हो गया तो घुटकर मर जाएगा। बक्से में एक छेद भी तो नहीं है। जल्दी कीजिए···जल्दी।'

उस बक्से पर एक और ढक्कन डाल दिया गया। दर्शक साँस रोक कर देखते रहे। तीन मिनट तो बीत गये—अब क्या उस बक्से से एक लाश निकलेगी ? समूचे वातावरण में एक अजब-सा तनाव छा

श्रावणी के दिल की धड़कन भी तेज हो उठी। उसने भी यह खेल इससे पहले कभी नहीं देखा था।

एडवर्ड ने धीरे से ढक्कन हटाया। रस्सियों की गाँठें खोल दी गयीं। दर्शकों के हाथ से चाबी लेकर ताले खोले गये। उसके बाद धीरे-धीरे एडवर्ड ने बक्से के ऊपर की तख्तियाँ हटायीं। हॉल के दर्शक अचानक ही सनाका खा गये, लोगों के दिल धड़क उठे। श्रावणी भी बुरी तरह डर गयी। उसने जरा उचककर बक्से के भीतर झाँकने की कोशिश की। अचानक अपनी पीठ पर किसी का स्पर्श पाकर उसने चौंककर पीछे की ओर देखा।

'डरो मत, माई डीयर। आई एम हीयर।' कहते हुए गुणीदत्त घूमकर खड़ा हो गया। समूचे हॉल की रोशनी तेज हो उठी। गुणीदत्त ने दर्शकों को चौंकाते हुए खुश-खुश आवाज में कहा, 'आई एम हीयर, लेडीज ऐण्ड जेन्टलमेन! ···यहाँ, इन महिला के साथ।'

दर्शकों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। लोग मारे खुशी के उल्लसित हो उठे। श्रावणी को जैसे काठ मार गया। गुणीदत्त का एक हाथ उस वक्त भी उसके कन्धे पर था।

आधा घण्टे बाद उन दोनों को लिए हुए कार चल पड़ी। उसी दिन दोनों के बीच की दूरी और कम हो गयी। श्रावणी दरवाजे से बिल्कुल सटकर बैठी थी। लेकिन अगला आदमी अगर इतना करीब आने की कोशिश करे तो वह क्या कर सकती है। गुणीदत्त की सिगरेट के धुएँ से उसकी नाक-मुँह और आँखें कड़वा आयीं। बस, थोड़ी देर बाद ही यह रिश्ता हमेशा-हमेशा के लिए टूट जाएगा। उसे किसी तरह की चोट पहुँचाए बिना, बेहद शान्त भाव से वह अपने को हटा लेगी। वह घर से ही यह फैसला करके चली थी लेकिन उसके सामने मन का वह जोर-संकल्प कहाँ गुम हो गया? श्रावणी को अपने पर ही गुस्सा आने लगा। उसने अपने को झिंझोड़कर सजग करने की कोशिश की।

गुणीदत्त ने सहज-सा प्रश्न किया, आज का पलायन खेल कैसा लगा।

श्रावणी अपनी समूची ताकत लगाकर सहज दिखने की कोशिश

कर रही थी। होंठो पर सायास हँसी लाकर कहा, 'वाकई आप पलायन के खेल मे माहिर हैं।'

गुणीदत्त ने हाथ की सिगरेट बाहर की ओर फेंक दी और उसकी ओर घूमकर बैठ गया। फिर हँसकर कहा, 'ये बात और कोई भले ही कह ले, लेकिन तुम नही कह सकती। कलकत्ते कदम रखने के बाद पलायन मैं भूल चुका हूँ।'

'तुम' शब्द पारे की तरह कानो की राह श्रावणी की देह की नस-नस मे फैल गया, मानो किन्ही अनजान हाथो के स्पर्श की बेचैनी भर गया।

श्रावणी अचानक सजग हो उठी, बेहद शान्त भाव से कहा, 'आप कुछ कहना चाहते थे? क्या कहना था।'

उसकी इतनी ठंडी आवाज सुनकर या फिर और किसी वजह से गुणीदत्त के चेहरे पर हैरानी झलक उठी। 'मैं क्या कहना चाहता हूँ तुम नही जानती ?'

'जानती हूँ। लेकिन मेरे ख्याल मे अब ये बातें रहने दें। इसमे भाई को आपत्ति है। घर के और लोगों की भी मर्जी नही है ?'

'और तुम्हारी मर्जी ?'

श्रावणी ने कोई जवाब नही दिया। उसकी ओर देखा भी नही।

गुणीदत्त थोडी देर को चुप रहा। शुभेन्दु की आपत्ति की वजह वह जानता है। वजह है जूली। अपनी बहन को प्यार करने वाले भाई का आपत्ति उठाना वाजिब भी है। कहा, 'तुम्हारे भाई को आपत्ति क्यो है, इसकी वजह शायद तुम भी जानती हो ?'

तुम! तुम! तुम्हारा! तुम भी!—श्रावणी क्या करे? दरवाजा खोलकर, चलती हुई गाड़ी से कूद पडे? वह निरुत्तर-सी बैठी रही—यानी वह जानती है।

कई पलो तक चुप्पी छायी रही। गुणीदत्त ने फिर एक सिगरेट सुलगा ली, लेकिन जरा देर बाद ही फेक दी। ड्राइवर को अचानक ही अपने घर की ओर गाड़ी घुमा लेने का आदेश दिया!

श्रावणी ने विस्मय से भरकर कहा, 'मेरे लिए इस वक्त घर

लौटना जरूरी है।'

'चली जाना। मैं पहुँचा दूंगा।'

सारी बातें वहीं रुक गयीं। श्रावणी के सीने पर जैसे हथौड़े पड़े हों! इस वक्त वह अगर चाहे तो एक तीखा-सा व्यंग्य कर सकती है, गाड़ी रोकने का हुक्म दे सकती है, उतरकर जा सकती है, लेकिन उससे कुछ भी नहीं हो सका।

गुणीदत्त उसे लेकर सीधे दुमंजिले पर, अपने कमरे में चला गया। जूली को भी बुला भेजा। जूली थोड़ी देर पहले ही बाहर से लौटी थी। अपने कमरे में हाथ-पैर फैलाकर आराम कर रही थी। गुणीदत्त की आवाज सुनकर वह उसके कमरे में चली आयी। गुणीदत्त और श्रावणी के चेहरों पर नजर पड़ते ही वह अवाक् रह गयी।

गुणीदत्त ने कहा, 'बैठो जूली! मैंने तुम्हें बताया था न, मैं इनसे ब्याह करने जा रहा हूं।' श्रावणी की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'तुम्हारी क्या राय है?'

श्रावणी का जूली से परिचय बहुत पहले ही हो चुका था। गुणीदत्त के सवाल पर, आँखें फैलाकर वह श्रावणी की ओर परखती हुई निगाहों से देखती रही, मानो उसे नये सिरे से देख रही हो। फिर गुणी की ओर मुड़कर आँखों में बनावटी गुस्सा भरकर कहा, 'यू ब्लडीफूल! इतने दिनों तुम क्या कर रहे थे? झख मार रहे थे, या घास छील रहे थे?' फिर आगे बढ़कर श्रावणी का एक हाथ थामकर झकझोरते हुए कहा, 'कांग्रेचुलेशन्स! हजारों-लाखों मुबारकें।' जाने कैसे वह समझ गयी कि इस वक्त उसे क्यों बुलाया गया है, श्रावणी के कानों तक मुँह ले जाकर फुसफुसाते हुए कहा, 'सुनो, मुझे लेकर किसी गलतफहमी में न पड़ना। मैं बेहद खुश हूँ···गो अहेड।'

श्रावणी उसी तरह गूंगी और जड़ बनी बैठी रही।

जूली ने और धीमी आवाज में फुसफुसाते हुए कहा, 'यह आदमी रतन है! रतन! असली रतन! ऐसे बेशकीमती रतन के प्रति बहुतों को लोभ होता है। इसे सम्हालकर रख सको, तो कोई परेशानी नहीं होगी।' फिर अपने गुणीदत्त की ओर मुड़कर पुरखिन की तरह गम्भीर

उपदेशात्मक लहजे मे कहा, 'यह शुभ काम कल ही कर डालो, बेटा !'' और वह हँसते-हँसते बाहर निकल गयी ।

गुणीदत्त ने उसे आवाज देकर उनका खाना कमरे मे ही भिजवा देने को कहा !

श्रावणी उसी तरह पत्थर की मूर्ति बनी बैठी रही । गुणीदत्त थोडी देर उसे खडा-खड़ा देखता रहा, फिर बिना कुछ कहे, हाथ-मुंह धोने चला गया ।

खाना खाते हुए उसने आत्मलीन की तरह जूली ऐण्डरसन के बारे में कुछ बुदबुदाकर कहा । श्रावणी ने अब तक कुछ नही खाया था, सिर्फ उँगली मे इधर-उधर छितरा रही थी । गुणीदत्त ने उससे कुछ भी छिपाने की कोशिश नही की । श्रावणी ने भी अपने दोनों कान सजग रखकर, उसकी बातो को ध्यान से सुनने की कोशिश की । लेकिन, दरअसल, सिर्फ दो-एक बातें ही उसकी समझ मे आयी । वह जो कुछ कह रहा था, उसका बहुत कम हिस्सा उसके कानों मे जा रहा था । वह मन-ही-मन इस अनजानी बेहोशी से उबरने की कोशिश करती रही ।

अचानक ही ठुड्डी के करीब जाने कैसी चिनचिनाहट होने लगी ! गुणी की आँखें उसी पर गड़ी हुई थी ! अभी कुछ ही पल मे ये आँखें धीरे-धीरे उसके चेहरे पर आ टिकेंगी—श्रावणी यह बहुत बार देख चुकी है, *शायद हजारों बार* ! बेहतर है कि वह इससे पहले ही वहाँ से उठ जाए । यहाँ वह सुरक्षित नही है ! उसके लिए अगर अब भी कुछ सोचना-समझना बाकी है, तो वह बाद मे सोच लेगी । अभी अपने ख्यालों पर उसका दखल नही है ! वह उठ खड़ी हुई, अस्फुट स्वर मे कहा, 'अब जाऊँगी'''!'

गुणीदत्त भी उठ खड़ा हुआ । लेकिन उसकी जलती हुई दृष्टि एकटक श्रावणी के चेहरे पर गडी रही । वह उसके बिल्कुल करीब चला आया । अचानक दोनों हाथ श्रावणी के कन्धो पर आ पडे और इसके साथ ही श्रावणी की सारी दृढता ढह गयी ।

गुणीदत्त ने एक हाथ से उसकी ठुड्डी उठाते हुए उसके उस लाल तिल को छूकर देखा । श्रावणी की समूची देह दहक उठी । एक जोड़ी

मजबूत बाँहों के घेरे में कसी हुई, अपने होठों पर किसी के तपते हुए होठों का उद्दाम स्पर्श पाकर, वह जैसे सारी सुध-बुध ही गँवा बैठी। वह सचमुच ही किसी नशीले आवेग में डूब गयी। उसके पैरों की समूची ताकत ही जैसे जवाब दे गयी।

इसी स्थिति में जाने कितने पल बीत गये। गोया एक पूरा युग ही बीत गया। श्रावणी को कुछ पता नहीं चला।

गुणीदत्त ने ही बात शुरू की, 'देखो, मेरे काम में बहुत हर्ज हो रहा है। मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकता। मुमकिन हो तो कल ही रजिस्टरी-आफिस में शादी के लिए दरखास्त भेज दो।'

तेरह

—और उनका ब्याह हो गया !

इस ब्याह में न शुभेन्दु की सहमति थी, न मिलनी की, यहाँ तक कि श्रावणी भी नहीं चाहती थी, फिर भी ब्याह हो गया। और वह भी इतनी अफरातफरी में कि बाकी तमाम लोगों की तरह खुद श्रावणी भी भौचक्की रह गयी। चौबीस सालों की अभ्यस्त जीवनचर्या, परिवेश, शिक्षा-दीक्षा, इन सबके बावजूद कोई अचानक डाकू की तरह आया और उसे छीन ले गया। किसी को कुछ सोचने-विचारने या निर्णय लेने का अवकाश ही नहीं दिया।

श्रावणी ने यह खबर सब से पहले अपने भाई को दी। लेकिन घर-वालों ने शायद कुछ कहने के पहले ही थोड़ा-बहुत समझ लिया था। उससे पूछा भी गया, 'इन दिनों तुझे हुआ क्या है, बताएगी नहीं ?'

उसे क्या हुआ है, वह नहीं बता सकी। जाने क्यों नही बता पायी। इसमें कही कुछ अस्वाभाविक नहीं था, उदास होने की भी कोई बात नही थी, लेकिन फिर भी वह मन-ही-मन इतनी बेचैन क्यों हो उठी, वह समझ नही पायी। दरअसल उसका सहज मन अपने ही विचारो के ताने-बाने में उलझ गया। अपनी जिन्दगी मे इस सबल पुरुष के आगमन को वह झुठला नहीं पायी। लेकिन अगर वह ऐसा नही कर पायी, तो भी क्या हुआ ? सिर्फ झुठला देने से क्या फर्क पड़ता ? इसकी जरूरत भी क्या थी ? हर लडकी के मन मे चाह होती है कि उसकी जिन्दगी मे एक सबल पुरुष आए।

श्रावणी ने अस्पष्ट रूप से महसूस किया कि उसकी जिन्दगी में गुणीदत्त का आगमन नितान्त स्वाभाविक भी नही कहा जा सकता। दरअसल, उसके पास कोई खुद नही आया, बल्कि उसे ही अपनी तरफ जबरन खीच ले गया है। वह खुद ही किसी की वासना-लिप्सा के नाम पर अपनी आहुति देने को आगे बढ आयी है। उसकी यह चाहत अगर मन के सहज प्यार से उपजी होती, तो कोई द्वन्द्व या दुविधा नही होती। मुलाकात के पहले दिन से ही, एक अनावृत आकर्षण उसे मोहपाश में बाँधे हुए है। इस मुआमले में मत देने-लेने की न किसी को फ़ुरसत थी, न जरूरत।

उसके पास भी अगर मिलनी की तरह खूबसूरती होती, तो भी इस आकर्षण का कोई मतलब समझ मे आता। लेकिन वह तो खूबसूरत भी नही है। उसने जिसके पास जाने का फैसला किया है, उसे तो वह जानती-पहचानती भी नही। लेकिन फिर भी वह जा रही है, क्योंकि वह जाने को विवश है। श्रावणी मानो किसी अनचाहे अँधेरे मे छलांग लगाने को प्रस्तुत हो उठी हो।

लेकिन श्रावणी अब और कुछ नही सोचना चाहती। जो होना था, हो चुका। घर-भर के मौन-कौतूहल का सामना करना अब उसे अच्छा नहीं लगता। जो कुछ होना है, हो जाए, फिर देखा जाएगा। बाद मे जान-पहचान भी हो जाएगी ! भाई से सिर्फ इतना ही कहा, 'मैंने इस ब्याह मे सहमति दे दी है। तुम पापा को बता दो।'

उसका मन स्थिर होता, तो अपनी बातों की प्रतिक्रिया में भाई की अचकचाहट देखकर वह मजा लेती ! उसकी बात सुनकर, उसकी तरफ बुद्धुओं की तरह आँखें फाड़कर देखने के बजाय अगर वह जोर-जोर से अपनी खुशी जाहिर करता, तो भी अच्छा लगता, लेकिन उसकी यह निर्वाक् विमूढ़ता श्रावणी को बेहद असहनीय लगी !

शुभेन्दु ने एक बार यह भी नहीं जानना चाहा कि वह किससे ब्याह करने को राजी हो गयी है । विस्मय का पहला धक्का सम्हाल लेने के बाद, वह सोचता रहा कि उस दिन उसने गुणीदत्त और जूली के सम्बन्ध में जो इशारा किया था, वह क्या श्रावणी के सामने अच्छी तरह स्पष्ट नहीं हुआ था ? उस दिन उसकी बातों का मतलब क्या श्रावणी की समझ में नहीं आया था ?

इतना सफल और बुद्धिमान सम्वाददाता होते हुए भी अजब-सा बचपना कर बैठा । अपने शब्दों को चबाते हुए, धीमे स्वर में कहना शुरू किया, 'देख, यूँ तो सब ठीक ही है ! उसका इतना नाम और यश है !' अच्छी-खासी आमदनी भी है···फिर भी मैं कह रहा था, जरा और जाँच-बूझ लेना क्या उचित नहीं होता ? तूने एकदम से हामी भर दी ?'

श्रावणी ने अगर सचमुच स्वेच्छा से हामी भरी होती, तो शायद उसे इतना गुस्सा न आता । उससे राय लेने का तो कोई सवाल ही नहीं उठा, यह बात वह कैसे बताए ? उसे भाई की बात-चीत का तौर-तरीका भी बुरा लगा । कहा, 'रजिस्ट्री-आफिस में दरख्वास्त भी दी जा चुकी है, तुम पापा से कह देना ।'

यह कहकर वह कमरे से बाहर निकल आयी । एक पल को टेलीफोन के सामने ठिठककर रुक गयी, उसका जी हुआ फोन उठाकर एक नम्बर डायल करे और उसे बुलाकर बेहद सहज भाव से पूछे—'अच्छा ब्याह तो कर रहे हो, लेकिन क्यों कर रहे हो यह सोचा है ? मुझमें तुम्हें ऐसा क्या दिखा ? क्या मिला तुम्हें ? मुझसे तुम कौन-सी उम्मीद लगा बैठे हो ?'

यह सब वह अगर कह पाती तो शायद हल्की हो जाती । लेकिन

वह अच्छी तरह जानती थी कि वह कुछ नहीं कर पाएगी !

शुभेन्दु ने पापा से कुछ नहीं कहा। मिलनी को ही घर आने को कह आया। उसके आने पर सब से पहले उसी को कहा। इन दिनों मिलनी भी महसूस कर रही थी कि गुणीदत्त की इतनी घनिष्ठता भाई को पसन्द नहीं आ रही है। लेकिन एकदम से ब्याह की बात सुनकर पहले-पहल वह भी अचकचा गयी। उसे समझ नहीं आया कि इस बात पर वह खुश है या दुखी। शुरू-शुरू में उसे भी यही लगा था कि वह भला आदमी है और लोगों को वश मे करना जानता है। चलो, अच्छा ही हुआ। लेकिन पर दुबारा गौर करने पर सारी बातें जाने क्यों अजीब लगने लगीं। उसकी प्रोफेसर बहन किसी जादूगर की बीवी बने, जैसे यह बड़ी बेतुकी बात हो। लेकिन पापा को जब यह सूचना देने गयी, तो मारे खुशी के छलकी पड़ रही थी। शुभ संवाद ही तो था। जब ब्याह हो ही रहा है, तो यह भयंकर सुखद बात है। पापा को अवाक् होते देखकर वह सकपका गयी। मारे हड़बड़ाहट के वह गुणीदत्त की प्रशंसा का पुल बाँधने लगी, 'पापा, उसके जैसा आदमी आजकल मिलता कहाँ है ? दुनिया में ढूंढने जाओ तो बड़ी मुश्किल से दिखाई देते हैं। वह आदमी अगर असाधारण न होता, तो दिदिया जैसी लड़की उसे अपने करीब फटकने देती ? वह कोई मामूली आदमी है ? उसे तो दुनिया का बच्चा-बच्चा पहचानता है।...'

रात खाने की मेज पर पापा ने पहली बार इस बारे में बात-चीत की। श्रावणी ने कालेज से लौटकर उन्हें बेहद परेशान देखा था ! मिलनी को देखकर थोड़ा-बहुत अन्दाज लगा लिया। मेज पर खाना रखते हुए उन्होंने शुभेन्दु को सम्बोधित करके, अपनी राय जाहिर की, 'चलो, अच्छा ही हुआ, लड़का विद्वान है, अपनी कोशिश से आदमी बना है। लेकिन सिविल मैरेज की क्या जरूरत थी ? घर पर ही यह शुभ काम हो जाता। इसमें कौन-सी असुविधा थी ?'

उनके प्रश्न का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

अन्त में उन्होंने श्रावणी से पूछा। औरों की तरह श्रावणी के पास भी इसका कोई जवाब नहीं था। दरअसल उसे बेकार के धूम-धड़ाके

पसन्द नहीं हैं, लेकिन पापा के पूछने पर वह भी आपत्ति की कोई खास वजह नहीं बता पायी।

गुणीदत्त उनके यहाँ, इसके वाद, कई वार गया है। उसी तरह हँसमुख, सहज-सरल भाव। उसे अपने पौरुष का दम्भ न सही, अहसास जरूर था।

शुभेन्दु भी उससे आत्मीय की तरह हँसकर मिला और अन्तरंगता दिखाने की कोशिश की। उसने छद्म गम्भीरता से यह अधिकार भी जाहिर किया कि वह लड़की का वड़ा भाई है, इस नाते गुणीदत्त को उसकी पूरी इज्जत करनी होगी। उस समय अगर मिलनी वहाँ न होती तो शायद कोई हल्का-फुल्का-सा मजाक भी कर वैठता। लेकिन सायास कही गयी वातों और सहज अभिव्यक्ति में थोड़ा-वहुत फर्क तो होता ही है। शुभेन्दु अपने भावी रिश्तेदार की एक जोड़ी स्वच्छ और सूक्ष्म दृष्टि के सामने जाने कैसा संकोच महसूस करता रहा। सामने खड़े व्यक्ति की कौतुकी आँखें, जैसे उसे भीतर तक कुरेदकर देख रही हों। और उसकी सकुचाहट का मजा ले रही हों।

शुभेन्दु उठकर वाहर चला गया। उसे किसी राजा साहव का इण्टरव्यू लेने जाना था।

उसे जाते देखकर गुणी ने मिलनी की तरफ हँसकर देखा, 'देखो, भागना पड़ा न !' इससे पहले मिलनी ने भी उसकी तरफ कभी इतनी आग्रह-भरी दृष्टि से नहीं देखा था।

गुणीदत्त की दृष्टि में पहले की तरह ही सहज भाव था। लेकिन सहजता के साथ-साथ अन्य भाव भी था। मिलनी को गुणीदत्त में यह परिवर्तन महसूस करते हुए अच्छा लग रहा था। गुणीदत्त के आखिरी वाक्य पर वह विस्मित हो उठी लेकिन उसके सन्दर्भ में कुछ असम्भव भी नहीं लगा। उसने आँखें वड़ी-वड़ी करते हुए पूछा, 'क्यों, इसमें भागने की क्या वात है ?'

गुणीदत्त होठों में ही हँसता रहा।

मिलनी जैसे उससे कमर कसकर वैठ गयी। कहा, 'सुनिए, दिदिया को आपके आने की खवर तो भेज दी गयी थी, लेकिन वह अभी तक

नहीं श्रायी।'

'मेरी बदकिस्मती…! क्या करूँ, जनाब, इसीलिए तो दूध पीने की साध को छाछ के सहारे मिटाने की कोशिश कर रहा हूँ।'

'श्रोऽ, यह बात है।' मिलनी कुर्सी छोड़कर खड़ी हुई, 'श्रच्छा, मोशाय, बैठिए। देखूँ, श्रापके लिए दूध का इन्तजाम कर पाती हूँ या नहीं।' जाते-जाते फिर घूमकर खड़ी हो गयी, श्राग्रह-भरी श्रावाज में पूछा, 'सचमुच श्रापने कमाल का जादू दिखाया। लेकिन यह तो बता दीजिए कि दिखाया कैसे ?'

गुणीदत्त ने भी छूटते ही जवाब दिया, 'तुम्हें क्या बताना ? तुम तो इस जादू में मुझसे श्रधिक माहिर हो। मैंने तो सुना है, तुम बहुत पहले ही यह कमाल दिखा चुकी हो।'

मिलनी मारे शर्म के भाग खड़ी हुई। श्रावणी रसोई के छोटे-मोटे कामों मे व्यस्त थी। फ़ुरसत के समय रसोई का थोड़ा-बहुत काम वह खुद ही निपटा डालती थी।

मिलनी ने श्राते ही कहा, 'इतनी देर से तू यहाँ बैठी-बैठी कर क्या रही है ? उस कमरे में एक कप चाय भी नहीं भिजवाते बनी ?'

श्रावणी ने कोई जवाब नहीं दिया। वह जानती थी, मौका मिलते ही मिलनी की हँसी-ठिठोली शुरू हो जाएगी।

मिलनी ने कहा, 'भइया भी चला गया। बिचारा भला श्रादमी तब से तेरी श्रास लगाए बैठा है।'

श्रावणी ने कहा, 'तू तो वहाँ थी ही !'

मिलनी ने उसी ढिठाई से जवाब दिया, 'श्ररे, छाछ से काम नहीं चलने का, उन्हें दूध की जरूरत है।'

श्रावणी को नाराज होने का भी मौका नहीं मिला, इससे पहले ही मिलनी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी। कहा, 'श्रब तू चाहे जो कह, दिदिया, तू एक जादूगर से ब्याह करने जा रही है, यह सुनकर शुरू-शुरू में जाने कैसा तो लग रहा था, लेकिन श्रब श्रच्छा लगने लगा है। सच-मुच यह महाशय काफ़ी जोरदार हैं।'

श्रावणी फिर गम्भीर हो उठी। श्राँखों मे कृत्रिम हैरानी भरकर

पूछा, 'तुझे अच्छा लगा, यह तो गड़बड़ मामला है। वैसे, अगर तू सचमुच सीरियस है, तो मैं प्रशान्त बाबू से एक बार बात कर देखूँ...।'

मिलनी हँसते हुए कमरे से बाहर निकल गयी। सीढ़ियों पर धम्-धम् पैर पटकती हुई ऊपर चली गयी। मानो उसे जता गयी कि वह ऊपर जा रही है और बाहर के कमरे में कोई अकेला ही बैठा है।

श्रावणी का हाथ रुक गया। कमरे में अगर कोई न हुआ, तो वह किसी से बिना कुछ कहे-सुने चल देगा। वह उठ खड़ी हुई। बाहरी बरामदे से होती हुई अन्दर कमरे में आयी।

गुणीदत्त ने उत्साह से स्वागत किया, 'आओ, तुम अगर और दो मिनट देर से आती, तो मैं ही, किस्मत के भरोसे अन्दर चला आता। बैठो न!'

श्रावणी अब यह मानने से इन्कार नहीं करेगी कि उसकी बातें आज बुरी नहीं लगीं। स्टेज पर जो आदमी शुद्ध साहबी शानो-शौकत से पेश आता था, वही इस वक्त कैसा बुद्धू लग रहा था। उसमें कहीं किसी बनावटीपन की झलक नहीं थी। लेकिन श्रावणी बैठी नहीं, दोनों हाथों से पास वाली कुर्सी का सहारा लेकर खड़ी हो गयी।

उसके होंठों पर मुस्कान झलक आयी।

'क्यों, मैंने आकर कोई गुनाह कर डाला?'

श्रावणी ने बेहद सहज भाव से सिर हिलाकर जताया, 'नहीं।'

गुणीदत्त के चेहरे और आँखों में शरारत झलक आयी। उसने अनुनय-भरी आवाज में पूछा, 'तो फिर इजाजत है न? दिन-भर में एकाध-बार यहाँ का चक्कर लगा जाया करूँ?'

श्रावणी के होंठों की हँसी गहरी हो आयी। कहा, 'नहीं।'

'क्यों, न आया करूँ?'

उसकी निराशा के बावजूद, श्रावणी ने अस्वीकृति में दुबारा सिर हिलाकर फिर उसकी आँखों में झाँकते हुए बेहद सहज भाव से कहा, 'कुछ ही दिनों की तो बात है, फिर तो खुद ही आ रही हूँ।'

श्रावणी सचमुच, उसके साथ चली आयी। उनका ब्याह हो गया।

अगले तीन महीने, एक गहरे नशे में गुजर गये। गुणीदत्त के तन-बदन में असंयम का मानो तूफान उमड़ आया हो, और उसकी उद्दाम प्यास की एक-एक लहर श्रावणी की देह-यष्टि से टकराती रही। उसकी नसों में मानो कोई तूफान जाग उठा हो।

श्रावणी के शिक्षित और रुचि-सम्पन्न मन ने अनजाने में ही उसे बरजना चाहा। गुणीदत्त की ज्यादतियाँ और भी बढ़ती गयीं—बिल्कुल विद्वेष की सीमा तक। श्रावणी के आत्मबोध को कसकर थामे रहने के फौलादी निर्णय को तोड़-फोड़कर, चूर-मार कर देने में, गुणीदत्त जैसे कुशल लुटेरे को कितना वक्त लगता? वह भी आखिर कब तक लड़ती? उसके लिए अपने को उस तूफानी ज्वार में विशेष भाव से समर्पित कर देने के अलावा और कोई राह नहीं थी। उसे लगा समर्पण में ही उसकी मुक्ति है। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि इस आत्म-समर्पण के बाद उसका तन-मन भी अजब तरह से हल्का हो आया और उसने राहत की साँस ली।

लेकिन अकेले में इस पुरुष का संकोचहीन अहंबोध उसके मन को आहत करता रहा। उसे गुणीदत्त का हर व्यवहार बेहद स्थूल और अनावृत लगा। वह पढ़ी-लिखी लड़की है। किसी कालेज की प्रोफेसर है। उसकी अपनी एक अलग सत्ता है! वह गीली मिट्टी या धूल नहीं! यौवन के दिवालियापन की स्वीकृत मजबूरी को छुपाने के लिए कोई आड़ लेना बेहद जरूरी है। थोड़ा-बहुत समय-बोध भी जरूरी है। शुरू-शुरू में श्रावणी दो-एक बार अचानक ही अपने पापा के घर चली आयी। हर बार गुणीदत्त से कहकर आयी कि अब वह कुछ दिनों पापा के यहाँ रहेगी। गुणीदत्त ने भी कोई एतराज नहीं किया, किसी-किसी दिन उसके चेहरे की ओर देख कर सिर्फ हँस दिया और कभी-कभार उसे झूठमूठ का डर भी दिखाया है, 'देखना, जब तुम लौटकर आओगी तो सुनोगी मैं कहीं भाग गया—वैसे, यह बात अलग है कि भागकर सीधे ससुराल पहुँच जाऊँ।'

एक दिन तो उसने यहाँ तक कह डाला, 'जैसे मुँह लटकाकर जा

रही हो, लगता है साल-भर का धक्का है। लेकिन यह बात तुम समझ लो, मैं बहुत हुआ तो दो दिन धीरज रख सकूँगा। तुमने अगर उससे ज्यादा देर की, तो समझ लो कि लंका-कांड और सीता-उद्धार मेरे हाथों निश्चित है !'

श्रावणी कमरे से बाहर निकलते हुए अचानक ठिठक गयी ! होठों तक आयी हँसी को दबाते हुए कहा, 'उसके बाद सीता का पाताल-प्रवेश जरूरी हो जाएगा, क्यों ?'

गुणीदत्त निरुत्तरित हो गया ! बनावटी क्रोध से आँखें दिखाते हुए कहा, 'एई देखो, मैं तुम्हारी तरह एम० ए० पास नहीं हूँ, जो हर बात का फौरन-फौरन जवाब देता जाऊँ ? जाओ, भागो ! दो दिनों की छुट्टी में से दो मिनट कट गये।'

श्रावणी हँसते-हंसते बाहर निकल गयी। लेकिन सचमुच ही वह कभी भी एक दिन या हद से हद दो दिनों से अधिक नहीं रह पायी। घूम-फिरकर उसे अपने पर ही अकारण क्षोभ और झुंझलाहट होती रही। अपने मन को ही वश में न रख पाने की लाचारी से मन ही मन खीजती रही। उसके छोटे भाइयों ने भी उसके इस परिवर्तन को लक्ष्य किया। उसकी असली स्थिति का भी अन्दाज लगा लिया। इस बारे में पापा या भाइयों ने अगर कहीं कुछ पूछ लिया तो मारे शर्म के उसके कान लाल हो उठते।'

'तूने तो कहा था कि कुछ दिन यहाँ रहेगी ? अब इतनी जल्दी क्यों जा रही है ?'

मिलनी होठ दबाकर सीधे-सीधे मजाक करती, 'दिदिया, इधर कुछ ही दिनों में तेरी सूरत बिल्कुल बदल गयी है।'

श्रावणी बेहद उत्सुकता से उसके अगले वाक्य का इन्तजार करती। अगर वह सुनती कि सूरत बिगड़ गयी है, तो शायदखुश होती। लेकिन मिलनी खिलखिलाकर कहती, "तू तो मुझ से भी अधिक सुन्दर और ताजी लगने लगी।'

देख, बकवास करने की जरूरत नहीं है ? श्रावणी गुस्से में उठकर बाहर चली आयी। दरअसल वहाँ से भाग आयी, क्योंकि मिलनी की

राय एकदम से झूठ भी नहीं थी। श्रावणी के आने पर मिलनी उसे फोन पर भी छोड़ने से बाज नहीं आयी, 'अरे माई, तू आयी ही क्यों? कल फिर भागने की रट लगाएगी?'

श्रावणी पापा के यहाँ से लौटकर अपने पर ही दुगने वेग से झल्ला उठती, जो आदमी उसकी जिन्दगी में अचानक ही इतने अधिकारपूर्वक घुस आया है, वह बहुत चाहती है कि उसे अब सादर अभ्यर्थना सहित स्वीकार भी ले। लेकिन वह अपने को बिल्कुल खोलकर उसे नहीं स्वीकारना चाहती। वह तो उसे वैसे ही स्वीकार करना चाहती है, जैसे एक अलग इकाई जीती हुई एक औरत, किसी पुरुष को स्वीकार करती है—लेकिन इस आदमी को वह कभी स्वीकार नहीं कर पायी, वही उसे क्रमशः ग्रास करता जा रहा है। और उसकी इस ग्रासवृत्ति से बचने के लिए ही, श्रावणी जैसे बहाना ढूंढती फिरती है। हालांकि दो दिन बीतते न बीतते वह फिर लौट आती है। वह क्या करे—उससे आये बिना रहा नहीं जाता।

गुणीदत्त हँस दिया, 'लौट क्यों आयी?'

श्रावणी भी लाज-शर्म छोड़कर हँस देती। फिर पूछती, 'क्यों, मेरे आने से हुजूर को कोई तकलीफ हो रही है?'

यहाँ की जीवनचर्या श्रावणी को बिल्कुल पसन्द नहीं आयी। बहुत कुछ होटल के कमरे-सा इन्तजाम! यहाँ सब लोगों की सब से गहरी दोस्ती है, लेकिन सिर्फ काम के मामले में या फिर किसी स्वार्थ के कारण! कहीं, कोई किसी से बँधा हुआ भी नहीं है। ब्याह से पहले, जो लड़की समूचे घर की मालकिन बनी घूमती थी, उसकी दृष्टि में यहाँ की जीवनचर्या कहीं से खाली-खाली तो लगेगी ही। दोनों वक्त का खाना, नीचे होटल से आ जाता—वह भी हर रोज नहीं! कहीं से, कुछ पेट में डाल लेना ही काफी था।

वैसे श्रावणी यह भी जानती थी कि इन्हें किसी पारिवारिक परिवेश में ढालने की कोशिश करना भी हास्यास्पद होगा। मिस्टर और मिसेज उड ठहरे अंग्रेज आदमी! यहाँ वे सिर्फ पैसा कमाने आए हैं। फायदे

के दिन खत्म होते ही वे वापस लौट जाएँगे। जूली ऐण्डरसन भी यहाँ पर घर बसाने नहीं आयी है, सिर्फ रुपये कमाने आयी है। अगर इन लोगों के घर अलग-अलग होते, तो वह भी अपना छोटा-सा घर बनाकर अपनी दुनिया सँवारने में मन लगाती। यहाँ जो लोग हैं, उनमें से एक शिरीन ही अपनी दुनिया के लायक लगी थी। गुणीदत्त ने शिरीन के बारे में उसे सब कुछ बता दिया था। शिरीन के बारे में बताते हुए चाँद साहब का भी जिक्र किया था। अपनी मुसीबत और दुर्दिन में चाँद साहब की मेहरबानियों की कहानी, उनके शराब पीने की कहानी भी सुनायी थी। लाजवन्ती के बारे में बताते हुए, शिरीन को लेकर चाँद साहब के बम्बई भागने का किस्सा, गुणीदत्त को विलायत भेजने और विलायत से लौटने पर चाँद साहब की मृत्यु की कहानी भी दोहरा गया।

श्रावणी अवाक् होकर ये कहानियाँ सुनती रही, और मन-ही-मन अचरज करती रही कि जिसकी जिन्दगी में इतनी सारी कहानियाँ हैं, उसका घर बसाना भी कम अजीबोगरीब बात नहीं। इतने आकस्मिक भाव से वह उसकी जिन्दगी से आखिर कैसे जुड़ गयी ?

श्रावणी ने चाँद साहब और शिरीन की बातें बड़े ध्यान से सुनी थीं। चाँद साहब के प्रति वह श्रद्धा-विनीत हुई है। उनका दुखद अन्त सुनकर अक्सर उदास भी हुई है। लेकिन वह आदमी इस कदर शराबी होते हुए भी इतना दुर्धर्ष और उदार था, अपनी ब्याहता पत्नी और पुत्र को इतनी आसानी से छोड़ दिया, लेकिन परायी औरत के प्रति इतना प्रेम-विभोर ! अपनी सन्तान को बेदर्दी से त्याग दिया और प्रेमिका की बेटी के प्रति इतनी अन्धी पितृ-वत्सलता—यह सब सुनते हुए, इन असंगतियों पर मन-ही-मन बेहद अचम्भित हुई। शिरीन के दिप्-दिप् करते रूप के कारण, लोगों की निगाहों में उसकी और ही तस्वीर थी। लोग अगर उसे, उसके पिछले इतिहास से जोड़कर देख पाते, तो उसकी स्वतन्त्र सत्ता और अधिक स्पष्ट हो उठती। कम से कम उसे एकबारगी ही किसी प्यार की डोर में बाँध लेना इतना आसान नहीं था !

शुरू-शुरू में श्रावणी भी शिरीन को लेकर कम परेशान नहीं हुई।

उसके पास खड़े होते ही, उसके अप्रतिम रूप के साथ ही, उसका असाधारण अतीत भी सामने आ खड़ा होता। यह लड़की जाने क्या कुछ बन सकती थी, लेकिन उसकी बदनसीबी! वैसे हंस के पंख कभी गीले नहीं रहते, हरसिंगार के फूलों पर पानी का दाग नहीं पड़ता—यह लड़की भी बिल्कुल वैसी ही है, मानो वह जो है, बस, वही है! वह सिर्फ शिरीन है। उसे किसी के प्यार-ममता की जरूरत नही है। उसे देखकर किसी को सवेदना प्रकट करने की जरूरत नही! श्रावणी के मन मे भी उसे देखकर न सही, उसके बारे में सोचते हुए, उसके अतीत-वर्तमान का जोड़-तोड़ मिलाते हुए, उसके प्रति गहरी ममता जाग उठी है।

श्रावणी ने अपनी इस जिम्मेदारी को बेहद सहज भाव से स्वीकार कर लिया। वह जिस व्यक्ति का घर बसाने आयी है, उसका इस लडकी के प्रति गहरा लगाव है, यह बात उसे प्रभावित न करे, इसकी कोई खास वजह भी नही दिखी। शिरीन के अच्छे दिन लौट रहे हैं, यह चर्चा उसके कानों तक भी गयी! उसकी आँखों के आगे भी आने वाले दिनों की तस्वीर खींचने की कोशिश की गयी। लेकिन शिरीन का जादू-सहचरी का सार्थक रूप उसकी आँखों को अच्छा नही लगा। गुणीदत्त ने उसके रूप को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की कोशिश की। श्रावणी को वह इतनी खूबसूरत नही लगी! हो सकता है कि उसे गुणीदत्त की दृष्टि से देखना ही न आया हो। कहा, 'यह सब तो ठीक है, लेकिन उसकी शादी-व्याह नही करोगे?'

गुणीदत्त ने अपने उत्साह के आगे नीरस गद्य-शैली में प्रस्तुत की गयी समस्या की ओर ध्यान नही दिया। श्रावणी की जगह अगर कोई और इस तरह के सवाल करता तो वह शायद चिढ जाता। लेकिन श्रावणी से सिर्फ इतना ही कहा, 'अरे, वह सब देखा जाएगा। यह कौन बड़ी बात है?'

थोड़े दिनों पहले जो आदमी उसे एक भरे-पूरे घर से डाकू की तरह उठा लाया था, उसकी इस निलिप्त प्रतिक्रिया पर श्रावणी के मन में कौतूहल जाग उठा।

गुणीदत्त से कहीं नया घर लेने को कहना उसे अशोभन लगा।

अतः उसने ऐसा आग्रह भी नहीं किया। इसके अलावा इन सब में दिमाग भी नहीं लगाया। हाँ, जिसके प्रति वह उत्तरदायित्व महसूस करती थी, उसी की तरफ थोड़ा-बहुत ध्यान देने की कोशिश की। वह शिरीन का पूरा-पूरा ख्याल भी रखने लगी। शिरीन उसे लुक-छिपकर, निहारती रही लेकिन उससे आँखें मिलते ही शरारती बच्चों की तरह होठ काटते हुए, हँस देती। श्रावणी के इशारे पर वह उसके करीब आ जाती। कुछ पूछने पर, सिर हिलाकर जवाब देने की गुंजाइश हो, तो वह मुँह भी नहीं खोलती। वह श्रावणी की ओर देखती हुई, मन्द-मन्द मुस्करा देती।

गुणीडाटा की दुल्हन को देखा करती।

गुणीडाटा की बहुरिया! श्रावणी ने जब पहले-पहले उसके मुँह से अपने लिए यह सम्बोधन सुना, तो कानों को बेहद मधुर लगा। शुरू के चार-पाँच दिनों तक लोगों के आने-जाने का, उसे देखने का सिलसिला जारी रहा। शिरीन उसे दूर-दूर से ही देखती रही। उसकी दृष्टि में उत्सुकता से अधिक विस्मय था। मानो कहीं कोई अजूबा घटा हो। कई दिनों तक श्रावणी को भी उसे अकेले में बुलाकर बातें करने की फुरसत नहीं मिली। उन दिनों घर का मालिक भी हर समय घर में ही बना रहता।

लेकिन एक दिन श्रावणी को मौका मिल ही गया—

शिरीन उसके कमरे के सामने से होकर आगे बढ़ रही थी और गर्दन मोड़कर खुले दरवाजे से, भीतर की तरफ हैरत-भरी दृष्टि से झाँकते हुए पकड़ ली गयी।

'शिरीन, जरा सुनो तो—'

शिरीन एक-एक कदम चलती हुई, श्रावणी के कमरे में आयी।

'बैठो न! कई दिनों से देख रही हूँ तुम मुझे दूर-दूर से ही देखकर खिसक लेती हो। क्या समझती हो, मैंने देखा नहीं?' श्रावणी ने हँसते हुए पूछा, 'मैं कौन हूँ, अब तो पहचान गयी न?'

दो बड़ी-बड़ी स्नेहिल आँखें उसके चेहरे पर आकर टिकीं। उसने सिर हिलाकर जताया—हाँ, पहचान गयी है।

'मैं कौन हूँ, बोलो तो।'

उसके पतले-पतले होठ गुलाबी हो आए। उसने शरारत-भरी नजरों से देखते हुए जवाब दिया, 'गुणीडाटा की बहुरिया।'

श्रावणी के कानों में ये शब्द बहुत देर तक रुनझुन करते रहे—'गुणीडाटा की बहुरिया।' फिर बनावटी विस्मय से श्रावणी ने पूछा, 'तुम क्या मुझे गुणीडाटा की बहुरिया कहकर बुलाओगी ?'

'अच्छा, तो फिर मिसेज दत्त कहूँगी।'

श्रावणी को इतने औपचारिक वार्तालाप की अपेक्षा नहीं थी। लेकिन कोई राय न देकर, फिर एक सवाल किया, 'मिसेज दत्त कहना किसने सिखाया ?'

'जूली ने।'

'जूली से तुम्हारी बहुत दोस्ती है न ?'

शिरीन इसका क्या जवाब देती ? उसके होंठों पर हँसी की एक महीन-सी रेखा उभर आयी।

शुरू-शुरू में शिरीन ही नहीं, प्राय. सभी लोग, उसे परखती हुई निगाहों से टटोलते रहे। सब बेहद आग्रह से उसकी बातें सुनते और उसके तौर-तरीके का अन्दाज लगाने की कोशिश करते। मिसेज उड तो निजी स्वार्थ के कारण उसका ध्यान रखती है। शो की सफलता-असफला की सारी जिम्मेदारी गुणीडाटा के कन्धों पर है। उन्हीं कन्धो का सहारा लिए हुए, जो लड़की उसका घर बसाने आयी है, गुणीडाटा के जीवन पर उसका कितनी दूर तक प्रभाव है, यह जान लेना जरूरी था। एडवर्ड उड ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था, जो इस ब्याह से सचमुच खुश हुआ था। उसकी खुशी की वजह सिर्फ जूली और गुणीदत्त जान सकते थे। जूली के मन में श्रावणी के प्रति सिर्फ कौतूहल-भर था। इससे अधिक और कुछ नहीं। उसका ख्याल था, गुणीडाटा दरअसल अजीब जन्तु है। लेकिन वह आदमी जिसे पत्नी की हैसियत से सीधे अपने घर लिवा लाया, उसे अति साधारण समझ लेना भी उसके लिए मुश्किल था। श्रावणी उसे साधारण लगी भी नहीं थी। अत: श्रावणी के प्रति उसके मन में सहज कौतूहल-भर था।

गुणीडाटा की बहुरिया का शिरीन से अन्तरंग होने का

शुभ लक्षण लगा। उनकी दोस्ती पक्की कराने के इरादे से उसने भी श्रावणी के यहाँ आना-जाना शुरू कर दिया। शिरीन के लिए उसके मन में, शायद कहीं, कोई भय भी था। जैसे अजीब और झक्की स्वभाव की लड़की है, शुरू-शुरू में ही कोई गुल न खिला बैठे। गुणीडाटा का ब्याह हो जाने के बाद, उसके साथ किस तरह चलना-फिरना चाहिए, कैसे बातचीत करनी चाहिए, इस बारे में जूली ने शिरीन को बहुत सारे उपदेश दे डाले। वैसे उसने खुद भी महसूस किया कि शिरीन को कुछ सिखाने की कोशिश करना बेकार है।

श्रावणी की सैकड़ों बातों के उत्तर में, शिरीन को मुंह सिए हुए देखकर, जूली ने श्रावणी का मान रखते हुए शिरीन को डाटा, 'ऐ, लड़की, अब गूंगी बनी क्यों बैठी है ? इतने दिनों बाद एक काबिल व्यक्ति मिला है, जो तेरी अक्ल ठिकाने लगा देगा।' कहते-कहते वह शिरीन के करीब खिसक आयी मानो उसकी पीठ पर मुक्का जमाने जा रही हो।

शिरीन की गैरहाजिरी में श्रावणी ने आगे सफाई देते हुए कहा, 'दरअसल उसने कहीं से सुन लिया है कि तुम प्रोफेसर हो। इसीलिए उसकी जुबान बन्द है, वर्ना तुम देखती कैसी कतरनी···'

'अरे, प्रोफेसर हूँ तो क्या हुआ ?'

जूली ने आँखें नचाते हुए कहा, 'भाई, प्रोफेसर होना कोई मामूली बात है ? हमारे मुल्क में प्रोफेसरों की भयंकर इज्जत है। मैंने तो अपनी जिन्दगी में तुमसे पहले, कोई महिला प्रोफेसर देखी नहीं।'

श्रावणी हँसी पड़ी, 'लगता है, प्रोफेसर होने का डर उसे तुमने ही दिखाया है ?'

श्रावणी का अनुमान गलत नहीं था। जूली भी हँस पड़ी, कहा, 'शिरीन किसी से डरने वाली लड़की ही नहीं है। असल में अभी वह तुम्हें परख रही है। कुछ दिन ठहर जाओ, फिर उसकी ढिठाई देखना।' और अगले ही क्षण उसकी तारीफों का पुल बांधते हुए कहा, 'वैसे वह जितनी सरल है उतनी ही फुर्तीली भी। वह सचमुच बहुत अच्छी लड़की है। उसे प्यार किए बिना कोई रह ही नहीं सकता। हाँ, जब बिगड़ जाती है, तो जरा मुश्किल होती है। बड़ी फितूरी लड़की है···'

'अच्छा, छोड़ो। उसे मैं समझ लूँगी।' शिरीन से हटकर श्रावणी ने जूली की ओर रुख किया, 'तुम अपनी बातें करो न। मैं तुम्हारे बारे मे सुनना चाहती हूँ।'

'अपनी बातें ?' जूली के चेहरे पर परेशानी झलक उठी, 'मेरी क्या बात हो सकती है ! मैं बहुत बुरी हूँ, बस।'

श्रावणी ने बेहद निरीह भाव से पूछा, 'अच्छा, तो तुम यह बताना चाहती हो कि तुम्हारे साथ जितने भी लोग हैं, वे सब भी बुरे हैं।'

'नहीं, वे लोग क्यों बुरे होने लगे ?'

'अगर वह लोग भले होते, तो उनके बीच एक बुरी लड़की कैसे टिक पाती ?'

जूली बेतहाशा हँस पड़ी, 'भाई, मान लिया, तुम प्रोफ़ेसर लोगों की माया ही अलग होती है।'

जूली ने अपने बारे में कभी कोई बात नहीं बतायी। उसने एक बार भी यह नहीं कहा कि अगर वह न होती तो गुणीदत्त नामक कोई जादूगर पैदा ही नहीं होता। बहुत दिनों पहले ही ठंड और बरफ में जमकर दम तोड देता।

यह सब बातें गुणीदत्त ने ही श्रावणी को बतायी थीं। उसके पास ले-देकर दो ही लोगों की बातें तो थीं—शिरीन और जूली।··· शिरीन के सन्दर्भ मे उसका विशेष आग्रह देखकर, उसने उसे चाँद साहब की कहानी भी विस्तार से सुनायी थी। शायद वह शिरीन के प्रति उसके कर्त्तव्य-बोध को सजग करना चाहता हो। लेकिन जूली का प्रसंग बहुत थोड़े मे ही समाप्त कर दिया। जूली ने बेहद ठंड और मुसीबत के दिनों मे उसकी मदद की थी। इस सन्दर्भ मे अपनी कृतज्ञता जाहिर करने के अलावा और कुछ नहीं कहा।

गुणीदत्त अगर श्रावणी को सब कुछ बता देता, तो शायद बेहतर होता। श्रावणी ने भी अपनी तरफ से उसके बारे मे कभी कोई सवाल नहीं किया, लेकिन मन ही मन वह उसके बारे मे बेहद उत्सुक थी और यह स्वाभाविक भी था। जिस व्यक्ति के आकर्षण में बँधकर, उसने नयी जिन्दगी में कदम रखा है, उसके आस-पास के लोगों की

तरह समझ लेने का मन होता है। इसके अलावा इस लड़की के बारे में शुभेन्दु के मन में अजीब-सी शंका घर किए हुए है। ब्याह से पहले, उसने इस ओर संकेत भी किया था। अगर वह गुणीदत्त की ब्याहता पत्नी न होती, तो इस बात में वह इतना सिर भी नहीं खपाती। खैर, सिर तो वह अब भी नहीं खपाती। लेकिन, जब ब्याह हो ही गया, तो जिसके घर आयी है, उसे लेकर किसी के मन में कोई शंका हो, यह भी उसे भला नहीं लगा।

श्रावणी ने जानबूझकर इस ख्याल को झटक दिया। गुणीदत्त ने जब अपनी तरफ से कुछ नहीं बताया तो लगा, कहने लायक शायद कोई बात ही नहीं होगी। वैसे भी, अतीत को कुरेदने से क्या फायदा? अब जो वर्तमान है, वह सच बना रहे, यही काफी है। लेकिन शुरू में ही, सिर्फ इसी सन्दर्भ में श्रावणी को जाने कैसा खटका लगा था। कभी-कभी अपना यह वर्तमान भी जादू-खेलों की तरह आँखों का बहुत बड़ा धोखा लगा है। उसने बहुत कोशिश की कि इस आदमी को पूरी तरह जान-समझ ले। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। इससे पहले ही किसी और तस्वीर की झलक पाकर, वह अन्दर ही अन्दर, जाने कहाँ खोती जा रही थी। ब्याह से पहले की तरह आज भी उसे यही लगता है कि वह जैसे कहीं से खाली होती जा रही है।

इसके बाद तो श्रावणी के लिए देखने-समझने का मौका भी खत्म हो गया। मोह-ममताहीन पुरुष का उन्मत्त कसाव उसे बेहद निर्मम लगा।

श्रावणी की आँखें अकेले में गुणीदत्त को अपलक निहारती रहती हैं। उस समय उसका अपने पर बस नहीं रहता। जब गुणीदत्त सजग होता है या दर्शकों को चौंकाकर हतप्रभ कर देता है, या फिर जब उसे अपनी बाँहों में भरकर, अपने करीब खींच लेता है, उस वक्त भी श्रावणी की खोज-भरी आँखें अपलक उस चेहरे पर टिकी रहती हैं। गुणीदत्त जब गहरी नींद में खोया होता, श्रावणी की आँखें उस वक्त भी निहारती रहती थीं। वह जाने कौन-सा कूल-किनारा पाना चाहती थी।

बेहद स्थिर मन से उसके चेहरे, सीने, गर्दन और कन्धों पर उँगलियाँ फेरते हुए जाने क्या खोजती रहती। इसमें सचमुच रहस्य है या नहीं, यह समझने की कोशिश करती। दरअसल वह जादू का पुतला तो नहीं है, यह पता लगाने की कोशिश करती।

उस दिन भी नींद में बेखबर इस आदमी को निहारते हुए एक-बारगी चौंक गयी। वह जब सोता है, तो गहरी नींद में खो जाता है। उसके बदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए, उसका हाथ, अचानक उसकी बनियान के नीचे, उसकी पीठ तक जा पहुँचा। उसके हाथ गुणीदत्त की पीठ की टेढ़ी-सी लकीर पर ठिठक गये। उस जगह हाथ पड़ते ही बड़ा अजीब लगा। उसने बनियान हटाकर देखा। समूची पीठ पर करीब एक अंगुल चौड़ा चोट का एक बदसूरत निशान उभरा हुआ था।

श्रावणी हतबुद्धि-सी थोड़ी देर चुपचाप बैठी रही। उसने बनियान खींचकर ठीक कर दी। लेकिन उसकी आँखें उसी निशान पर गड़ी रहीं।

उस जख्म पर इससे पहले कभी नजर नहीं पड़ी, उस पर कभी हाथ भी नहीं पड़ा, यह सोच-सोचकर वह अचम्भित होती रही। उस जगह तक अपना हाथ न पहुँचने की वजह वह खुद भी जानती है। गुणी जब उसको अपनी बाँहों में कस लेता है, तो उसके पास अपना कहने को बच क्या रहता है? लेकिन हैरत है कि इस जख्म पर उसकी नजर क्यों नहीं पड़ी? काफी सोचने पर उसे ख्याल आया, दिन के उजाले में ही नहीं, रात की रोशनी मे भी उसे कभी खाली बदन नहीं देखा। उसने सोचा भी था कि किसी दिन उससे पूछेगी, लेकिन फिर भूल गयी। हर दिन शाम होते न होते धी की हड़बड़ी मच जाती। उस रात भी वह पूछना भूल गयी। अगले दिन अचानक याद आया।

वह लेटी हुई थी। बहुत देर से अपनी ठुड्डी पर किसी की अँगु-लियों का स्पर्श महसूस करती रही। उसके प्रति जितना कुछ प्यार उमड़ता था, वह उसी जगह पर। शुरू-शुरू में श्रावणी को बहुत अजीब भी लगा। उसके होंठ के दबाव, दाढ़ी के खुरदरे बाल, दाँतों की चुभन में जाने कैसी जलन महसूस करती! ब्याह के कई दिनों बाद ही

था, 'अच्छा, तुम्हें इस तिल पर ही इतना प्यार क्यों आता है ?'

लेकिन गुणीदत्त की तरफ से हँसी के अलावा और कोई जवाब नहीं मिला। कभी जवाब भी दिया, 'तुम्हारी ओर देखते हुए सब से पहले उसी पर नजर पड़ती है न, इसी से।'

उस रात श्रावणी गुणी के सीने, पीठ में गुदगुदी करते हुए उसे दूर हटाने की कोशिश कर रही थी कि अचानक ही उसकी पीठ पर हाथ पड़ते ही, वह ठिठक गयी। उसका हाथ यद्यपि बनियान के ऊपर था, उसे जैसे कुछ याद आ गया।

उसके झौवा जैसे बालों को अपनी मुट्ठियों में जकड़कर उसका चेहरा ऊपर उठाया, 'एई, तुम्हारी पीठ पर यह इतना बड़ा और गहरा-सा दाग कैसा है ?'

श्रावणी ने उसे पहली बार चौंकते हुए देखा। पानी की मछली को मानो किसी ने धोखे से कसकर ऊपर नाव में खींच लिया हो, उसी तरह वह कुछेक पल को छटपटा उठा। श्रावणी ने महसूस किया कि उसे जवाब देने में थोड़ी देर लगी।

'पिटाई का।'

श्रावणी ने हैरानी से पूछा, 'इतनी बुरी तरह किसने पीटा था ? कब पीटा था ?'

'करीब बारह साल पहले। काठ के चैले से बड़का बाबू ने बेदम मारा था।'

श्रावणी का चेहरा दर्द से सिकुड़ आया। अनजाने में ही उसका हाथ बनियान के नीचे, पीठ पर के उस दाग को सहलाता रहा, मानो अभी-अभी चोट लगी हो। पूछा, 'क्यों मारा था ?'

गुणीदत्त को इसकी वजह बताने में बहुत देर नहीं लगी। यूँ भी उसने कुछ छुपाने की कोशिश नहीं की।

उसकी बातें सुनकर श्रावणी थोड़ी देर को विमूढ़ बैठी रही। मोहिनी मंत्र की पुड़िया खिलाने के लिए, एक लड़की को झाड़ी में खींच ले जाने की बात सुनकर वह खूब हँसी। लेकिन बाद में कुल मिलाकर इस मामले में हँसने लायक कोई बात नहीं लगी। उसकी पीठ पर उस जख्म

का दाग देखकर, वह चुप हो गयी। इसके बाद उसने कई बार उसकी तरफ कनखियों से देखा। वह आदमी उसके बेहद करीब होते हुए भी मानो किन्हीं और ख्यालों में खोया हुआ था।

श्रावणी ने स्वर्ण के बारे में इधर-उधर के कई सवाल किए, लेकिन असल में वह सिर्फ एक सवाल पूछना चाहती थी और उसके लिए मन ही मन ताकत बटोरती रही। फिर बेहद सरल भाव से पूछा, 'तुम्हारी उस स्वर्ण की ठुड्डी पर तिल भी था न ?'

किसी और के ख्याल में दूर-दूर भटकता हुआ गुणीदत्त अचानक जैसे वापस लौट आया। वह थोड़ी देर उसके चेहरे की ओर देखता रहा फिर उसकी ठुड्डी पर होंठ फिराते हुए, भीगी हुई आवाज में कहा, 'नहीं, तिल तो सिर्फ हमारी श्रावणी की ठुड्डी पर ही है। और किसी की ठुड्डी पर कहीं कुछ नहीं था।'

श्रावणी अपनी ठुड्डी झुकाए हुए, लेटे-लेटे ही उसके चेहरे को सही-सही पढ़ने की कोशिश करती रही। उसने गुणीदत्त की बात पर अविश्वास नहीं किया। उसे लगा, यह आदमी कभी झूठ बोल ही नहीं सकता। अगर उसे झूठ बोलना होता, तो पीठ के जख्म का भी और कोई कारण बता सकता था। थोड़ी देर पहले तक जो ख्याल उसे बेचैन किए था, वह मिट गया। मानो कोई आशंका थी, जो दूर हो गयी। श्रावणी के मन में खुशियों की हिलोर-सी उठी। उसने खुशी से उमड़कर उसे अपनी बाँहों में जोर से बाँध लिया। श्रावणी ने पहली बार उसे अपनी तरफ से बाँहों में कसकर प्यार किया।

गुणीदत्त चौंक उठा। उसे एकदम से लगा, सारी बात बताने में, जाने कहाँ कोई गलती कर बैठा। वह चाहकर भी सच बात नहीं बता पाया।

चौदह

अचानक उस गलत वीज का परिणाम वेहद नाटकीय ढंग से, एक दिन सामने आया। इतने दिनों में गुणीदत्त के दिमाग से यह वात जैसे उतर ही गयी थी।

महीने-भर के भीतर वे लोग वहाँ से चल देंगे। मिसेज उड ने तो उसे कुछ भी कहना या याद दिलाना छोड़ दिया। जूली इस वात पर वहुत हँसी थी। कभी-कभी श्रावणी को भी छेड़ते हुए कहा, 'विचारी, उड अजीव उलझन में है कि वह अपना काम-धन्धा वन्द ही कर दे या यूँ ही कुछ दिन और घसीटती रहे।'

श्रावणी ने उसके हँसी-मजाक में कभी हिस्सा नहीं लिया। उसके सौजन्यपूर्ण व्यवहार में कभी कोई त्रुटि भी नहीं हुई।

लोग तो वहुत पहले ही चल दिए होते, लेकिन श्रावणी की वजह से ही रुकना पड़ा। गुणीदत्त के साथ कभी वह चलने को राजी हो जाती और कभी उसे अकेले ही घूम आने को कहती।

श्रावणी के सामने सचमुच एक समस्या उठ खड़ी हुई। जिस आदमी के साथ वह वँधी है, उसका काम ही ऐसा है कि वह एक जगह टिककर नहीं रह सकता। इस वारे में उसने पहले कभी सोचा ही नहीं। वैसे पहले अगर सोचती भी, तो क्या फर्क पड़ता? कितनी भी प्रतिष्ठित कम्पनी क्यों न हो, जादू-पार्टी के साथ उसे भी यूँ ही घूमना-भटकना होगा, यह सोचते हुए भी उसे वेहद अजीव लगा। वह चाहती थी कि गुणीदत्त शहर में घर लेकर स्थायी रूप से रहे और वीच-वीच में दो-चार महीनों के लिए वाहर का 'टूर' लगा आए।

गुणीदत्त ने हँसते हुए, उसे आश्वासन दिया कि वैसा ही होगा। लेकिन, आठ-दस साल वाद। इससे पहले यह जरूरी है कि सारा हिन्दुस्तान मैजीशियन गुणीडाटा को जान जाए और उसके सिर पर नोटों की वरसात होने लगे।

श्रावणी भी अजीव उलझन में थी। उसे अचानक ही एक झटका लगा और तव मन थिर करके कोई निर्णय लेना आसान हो गया।

उस शाम भी हमेशा की तरह शो चल रहा था। गुणीदत्त ताश का एक पैकेट लिए हुए, दर्शकों के बीच घूम-घूमकर, अपनी मन पसन्द ताश खींच लेने का आग्रह कर रहा था। खेल दिखाते हुए वह सिर्फ ऊँची टिकटों वाले दर्शकों के पास ही नहीं जाता, बड़े कौशल से समूचे हॉल का चक्कर लगा आता है। कम दामों के टिकट खरीदने वाले दर्शकों को वह नजर अन्दाज नहीं करता। वे लोग भी तो आखिर पैसा देते हैं।

गुणीदत्त पत्ते बाँटते हुए हॉल के बिलकुल पिछली सीट तक चला आया। लौटते हुए, अचानक उसके दोनों पैर जमीन से जैसे चिपक गये। कई पलों को वह साँस रोके जड़ बना खड़ा रहा।

सामने की सीट पर स्वर्ण बैठी थी, उसकी बगल में करीब दस साल का एक दुबला-पतला लड़का भी था। स्वर्ण तो इतनी दुबली नजर आ रही थी कि उसे पहचानना मुश्किल था। लेकिन जो उसकी खास पहचान थी, उस पर नजर पड़ते ही वह फौरन पहचान गया। उसके नाक के पास की हड्डियाँ और उभर आयी थीं अतः वह तिल और उभरा हुआ जान पड़ा।

'स्वर्ण…।'

स्वर्ण सकुचाकर अपने आस-पास देखने लगी। उसने एक बार बेटे की ओर भी नजर डाली। अगल-बगल की उत्सुक निगाहें भी उन पर आ टिकीं। स्वर्ण ने मुस्कराने की कोशिश की, कुछ ही पलों में पसीने से नहा उठी।

अचानक किसी महिला के सामने यूँ खड़ा होना, अनुचित लगा। दर्शकों में से कई लोग झुककर, कई लोग गर्दन घुमाकर, कई कनखियों से उनकी तरफ ही देख रहे थे। ताश का पत्ता देने के बहाने गुणीदत्त ने स्वर्ण की तरफ झुककर कहा, 'शो खत्म होते ही चली मत जाना। यहीं मेरा इन्तजार करना।'

उसे लौटने में देर होते देखकर श्रावणी ने भी पीछे घूमकर देखा। वह किसी से बातें कर रहा था। लेकिन जब लौटकर, स्टेज पर आया, तो वह अवाक् रह गयी। उसकी शक्ल देखते ही उसने जान लिया, उ

कुछ हुआ है। इसके बाद जितनी बार वह ग्रीन-रूम से लौटा, श्रावणी को उसकी मनःस्थिति बेहद ऐबनॉर्मल लगी। उसका चेहरा उखड़ा हुआ और बेजान लगा। खेल दिखाते हुए उसकी आवाज में वह दम भी नहीं था।

श्रावणी ने बीच में एक बार पूछा भी, 'क्या हुआ ? कहीं तुम्हारी तबीयत तो नहीं खराब है ?'

'नहीं।'

अधिक कुछ पूछने का मौका भी नहीं मिला। वह हड़बड़ाता हुआ फिर स्टेज की तरफ चला गया।

शो छूटते ही गुणीदत्त बाहर निकल आया। स्वर्ण अपने बेटे का हाथ थामे हुए, दीवार के एक कोने में सटी हुई, उसी के इन्तजार में खड़ी थी। गुणीदत्त उसे अपने साथ लिवा ले गया। स्वर्ण बेजान कठपुतली की तरह उसके पीछे-पीछे चलती गयी। गुणीदत्त उसे ग्रीनरूम से सटे हुए एक छोटे कमरे में ले आया। स्वर्ण का लड़का भौचक्की निगाहों से जादूगर गुणीडाटा को देख रहा था, इतने बड़े जादूगर से उसकी माँ की जान-पहचान है, यह देखकर उसके विस्मय का ठिकाना नहीं था।

गुणीदत्त की निगाह स्वर्ण के चेहरे पर जमी थी।

स्वर्ण उसकी तरफ देखकर हँसी, 'इतने दिनों बाद भी तुम पहचान लोगे, यह नहीं सोचा था।'

गुणीदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया।

स्वर्ण ने फिर बात शुरू की, मेरा बेटा कई दिनों से तुम्हारा जादू देखने की जिद मचाए हुए था। तुम तो अब बहुत मशहूर आदमी हो गये हो न। स्कूल के लड़कों से तुम्हारे जादू के किस्से सुन-सुनकर, जादू देखने की फरमाइश कर बैठा। मैंने तो पहली बार उसी के मुँह से तुम्हारे बारे में सुना। तुम्हारे चर्चे सुनकर मेरा भी मन हो आया कि देखूँ तो सही, तुम कितने बड़े जादूगर बन गये हो।'

गुणीदत्त को अब बोलना ही पड़ा, 'मुझे देखने का मन हुआ, इसीलिए टिकट खरीदकर मुझे देखने आयी थी ?'

'हाय माँऽ ! टिकट नहीं खरीदती, तो क्या करती ?

पता था कि तुमसे यूँ मुलाकात हो जाएगी, और अगर होगी भी तो तुम पहले की तरह···।'

स्वर्ण की बात अधूरी ही रह गयी, कमरे में एक और व्यक्ति की तरफ उसकी निगाह पड़ी। वह भी अन्दर आते-आते उसे देखकर ठिठक गयी।

वह श्रावणी थी। वह तो यह देखने आयी थी कि वह कमरे में जाकर लेट तो नहीं गया। कमरे के अन्दर एक लड़के का हाथ पकड़े हुए, एक औरत को देखकर, ठिठककर रुक गयी। वह लौट जाए या रुके यह निश्चित करने के पहले ही उसकी निगाह उसके चेहरे पर जम गयी। उसका लौटने का मन नहीं हुआ। वह उसी तरह खड़ी रही।

स्वर्ण ने गुणीदत्त से पूछा, 'ये कौन हैं ?'

गुणीदत्त ने गर्दन घुमाकर देखा। श्रावणी कमरे में चली आयी। उसके होंठों पर मुस्कान झलक उठी। गुणीदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे जैसे किसी बात का होश नहीं था।

श्रावणी ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया, फिर मुस्कराते हुए कहा, 'देखिए, जब आ ही गयी हूँ, तो वापस नहीं जाऊँगी।···आप ही बताइए न, मैं कौन हो सकती हूँ ?'

'भा-भी—' स्वर्ण ने जरा सकुचाते हुए लेकिन उत्फुल्ल आवाज में कहा।

'जी हाँ।···और आप स्वर्ण हैं न ?'

स्वर्ण अचकचा गयी। 'मुझे आपने कैसे पहचाना ? गुणीदत्त ने कहा होगा ?' कहकर वह हँस पड़ी। फिर बोली, 'देखिए, कैसे अच्छे मौके से चली थी। इतने दिनों बाद भी गुणीडाटा मुझे पहचान लेंगे, यह सोचा नहीं था।'

श्रावणी होंठ दबाकर हँस दी। लेकिन उसकी दृष्टि उसके चेहरे पर ही जमी रही। बोली, 'भाई, हम या आप हजारों की भीड़ में भी गुम नहीं हो सकते। आपका वह तिल और मेरा यह···।' उसने अपनी ठुड्डी की ओर इशारा किया।

स्वर्ण की निगाह उस पर पहले ही पड़ चुकी थी। लेकिन श्रावणी ने गौर किया कि बाकी बातों पर वह सकुचा उठी है। सामने वाला व्यक्ति उन दोनों की ओर खामोश विस्मय से देखता रहा।

श्रावणी हँस दी, 'लेकिन आप यहाँ क्यों खड़ी हैं। हमारे साथ घर चलिए न, हम लोग बस अभी निकलने ही वाले हैं।'

स्वर्ण हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई। कहा, 'नहीं, घर में लोग फिक्र करेंगे। आज अब चलूं।'

श्रावणी ने आपत्ति भी की, 'एक मुद्दत के बाद तो आप लोग मिले हैं, अभी क्या जाएँगी ? अच्छा, आइए, फिर यहीं बैठें।'

स्वर्ण को बैठना पड़ा। श्रावणी ने लड़के को अपने करीब खींच लिया और खुद भी बैठ गयी। फिर गर्दन घुमाकर सहज कौतुक से गुणीदत्त से कहा, 'और तुम चाहो तो खड़े रह सकते हो जी।'

गुणीदत्त बैठ गया। श्रावणी के इस सहज लेकिन प्रगल्भ परिवर्तन को सिर्फ वही पहचान सकता था। जो आदमी सैकड़ों-हजारों दर्शकों को एकबारगी मंत्रमुग्ध कर सकता था, दूसरों की या खुद अपनी गलती को सम्हालकर तरह-तरह के अजीबोगरीब करिश्मे दिखाते हुए चौंका सकता था, वही व्यक्ति अचानक महसूस करने लगा है कि वह एकदम से जड़ हो गया है। वह जाने क्यों बेचैन हो उठा।

स्वर्ण ने ही बात शुरू की, 'भाभी, आपको पता है, अपना गुणी कितना मशहूर आदमी हो गया है। देखने वालों की भीड़ टिकट खरीदने को टूट पड़ती है। यही गुणीदत्त बचपन में अपना जादू दिखाने के लिए हम लोगों की गर्दन पकड़कर जोर-जबर्दस्ती ले जाता था—'

श्रावणी ने हँसते हुए हैरानी से पूछा, 'अच्छा, बताइए तो, कौन-सा जादू बेहतर लगा ? यहाँ का, या बचपन का ?'

स्वर्ण का संकोच धीरे-धीरे दूर हो रहा था। फिर भी उसके इस ख्याल पर वह फिर सकुचा उठी। अचानक उसे गुणीदत्त के तिल-उन्मूलन प्रसंग की याद आ गयी और शर्मा गयी। उसने संक्षिप्त-सा जवाब दिया, '···अरे, वह कोई मैजिक था ? उस समय अगर कोई इन बाबू साहब का झूठ पकड़ लेता था, तो मारे गुस्से के लाल हो जाता था।

एक बार जीवन 'दा ने इन्हें पकड़ा दिया। बाप रे, बाद में उसकी क्या धुलैया हुई।' कहते-कहते अचानक ही उसे जाने क्या याद आया, पूछा, 'जीवन मर गया। तुमको पता है, गुणी 'दा ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर बताया, वह सुन चुका है। श्रावणी सोच रही थी कि अगर वह स्वर्ण को बता दे कि बचपन में वशीकरण पुड़िया का जादू दिखाने के लिए, उसे झाड़ियों तक खींच ले जाने की कहानी भी वह जानती है, तो क्या हो ? लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। ऐसी बातें करने की उसे आदत नहीं है। लेकिन जाने क्यों, उसका बहुत मन हुआ कि वह उसे बता दे।

स्वर्ण का लड़का बार-बार ग्रीन-रूम की तरफ ताक-झाँक कर रहा था। वह बड़े गौर से जादू के सरंजामों को लाते-ले जाते देख रहा था। वह शायद यह सोच रहा था कि जादू के जो खेल उसने देखे हैं, उनके रहस्यों का सुराग उस कमरे में जाने भर से पता लग सकता है। श्रावणी उसके मन की बात समझ गयी। वह उसका हाथ खींचते हुए खड़ी हो गयी। कहा, 'उस कमरे में कौन-कौन-सा सामान है, यह यहाँ बैठे-बैठे कैसे समझ पाओगे ? आओ, चलो, तुम्हें दिखा लाऊँ।'

लड़का खुशी-खुशी चला गया। गुणीदत्त को लगा, वह जान-बूझकर उनके बीच से उठकर चली गयी है। अच्छा होता अगर वह न जाती।

स्वर्ण उसकी तरफ घूमकर बैठ गयी। कहा, 'भाभी तो बहुत अच्छी है। तुमने ब्याह कब कर डाला ?'

गुणीदत्त ने बता दिया।

'हाय माँ !···अभी हाल में ही शादी हुई है ? यहीं जान-पहचान हुई थी शायद !'

गुणी ने सिर हिलाकर हामी भरी।

स्वर्ण ने कहा, 'तुम्हारी सारी कहानी सुनने का मन हो रहा है। लेकिन बहुत रात हो गयी, घर में लोग चिन्तित होंगे। मैंने तो सोचा था, तुम्हारा शो देखकर लौट जाऊँगी। तुमसे मुलाकात नहीं होगी।··· लगता है, तुम गाँव की सारी बातें भूल चुके हो गुणीदत्त ! क्यों ?

'अभी कुछ ही दिनों पहले मैं वहाँ गया था।'

'बाँकुड़ा गये थे ? हमारे घर भी गये थे ?'

'नहीं, वहाँ बहुत दिनों के लिए रुका भी नहीं था।'

गुणीदत्त सिर्फ न जाने की बात बताकर चुप रह गया। स्वर्ण को वह बता सकता था कि वह बगीचे और तालाब के किनारे भी गया था। वह उसके घर भी जा सकता था, लेकिन गया नहीं। आखिर उसे झूठ बोलने की जरूरत क्यों पड़ी ? गुणीदत्त ने ग्रीन-रूम की तरफ गर्दन घुमाकर देखा। उसे परेशानी हो रही थी। श्रावणी आ क्यों नहीं रही है। आज उसे बहुत थकान लग रही है। वह घर जाना चाहता है।

गुणीदत्त जानता है, उसके भीतर क्यों और किस बात की बेचैनी है। यह सब उसने उसी वक्त महसूस किया। कितने सालों की जमी हुई अनुभूतियाँ ताप बनकर उड़ती जा रही हैं। शायद इसी वजह से वह बेचैन हो उठा है। बचपन के जिस बिन्दु पर, उसके व्यक्तित्व का एक छोर अटक गया था, आज अचानक ही जैसे उससे मुक्त हो गया, इसलिए शायद उसे इतनी बेचैनी हो रही थी। वह जो इस वक्त है, बस, इतना-भर ही है। दरअसल उसका वर्तमान परिचय ही उसका असली परिचय है। उसकी वर्तमान उम्र ही सच्ची उम्र है। यह सद्यः वर्तमान ही उसका एकमात्र सच है। यह स्वर्ण अब दूरागत स्मृति भर है। मुर्दा स्मृति ! मुर्दे को जिन्दा मानकर आखिर कौन उसे चिपटाए रखता है ? गुणीदत्त ही मुर्दा यादों को अब तक अपने से चिपटाए हुए था। वह तमाम पागलपन अब उसके सामने इतना स्पष्ट हो उठा है कि बेचैनी हो रही है !

स्वर्ण क्या कह-सुन रही है, उसके कानों तक पहुँच ही नहीं रहा था। वह उसका आखिरी वाक्य ही सुन पाया।

स्वर्ण कह रही थी, 'तुम बहुत बदल गये हो, गुणी' दा !'

गुणीदत्त ने हँसने की कोशिश की, 'सो कैसे ?'

'शो के समय तो दर्शकों को इतना हँसा रहे थे, यहाँ ऐसे चुप्पे बने बैठे हो। सुनो, मुझको बहुत देर हो गयी है। भाभी को बुलाओ न !'

श्रावणी को आवाज नहीं देनी पड़ी। लड़के का हाथ थामे हुए

श्रावणी खुद ही चली आयी। उसने हँसकर कहा, 'किस चीज की सहायता से कौन-सा खेल दिखाया जाता है, यह सब जानने का इसे बेहद शौक है।' फिर लड़के की माँ की ओर मुड़कर कहा, 'माँ को लेकर एक दिन फिर आना। तब ये मैंजीशियन साहब, तुमको सब समझा देंगे।'

स्वर्ण उठ खड़ी हुई। लड़के की तरफ देखकर कहा, 'अगर इसका वश चले तो अभी इसी वक्त पूछताछ शुरू कर दे। अच्छा, अब चलूँ··· बहुत दूर जाना है।'

वह बेटे का हाथ पकड़कर आगे बढ़ गयी। श्रावणी उसके साथ बाहर तक आयी। गुणीदत्त वहीं खड़ा रहा। स्वर्ण के घर का पता तक नहीं पूछा। उसने शायद जान-बूझकर ही पता नहीं पूछा।

श्रावणी से दूसरी बार विदा माँगकर, बेटे का हाथ थामे, वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती हुई बस स्टॉप की ओर चल दी। उसे बहुत देर हो गयी थी। वह कह भी रही थी कि उसे बहुत दूर जाना है। श्रावणी ने इधर-उधर नजर दौड़ायी, लेकिन अपनी कोई गाड़ी नहीं दिखी। अगर गाड़ी होती, तो उसे पहुँचाने आने को कहती। उसने टैक्सी बुलाने की बात भी सोची थी। लेकिन अच्छा हुआ, नहीं कहा; कह देती तो बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता। शो की टिकट खरीदने में ही उनका काफी खर्च हुआ होगा।

गुणीदत्त कार में, पीछे की तरफ पीठ टिकाए सिगरेट फूँकता रहा। श्रावणी ने बेहद सरल भाव से पूछा, 'यह स्वर्ण पहले से बहुत दुबली हो गयी है न?'

'हूँ!'

'उसका बेटा भी तो दुबला-पतला है। उनकी आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं जान पड़ी। बिचारी को पैसा खर्च करके तुम्हारा जादू देखना पड़ा। तुमने उसे पास क्यों नहीं भिजवा दिया।'

'मुझे उसका पता नहीं मालूम था।'

'खैर, अब तो पूछ लिया?'

'नहीं।'

'अरे, वाह! तुम्हारी न, हर बात ही निराली है। अब उनसे

दुवारा मुलाकात कैसे होगी ?'

गुणीदत्त ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने एक और सिगरेट जला ली। वह वेहद घुटन महसूस कर रहा था। वह मन ही मन यह कहने को छटपटा उठा, 'तुम चाहे जो समझो, श्रावणी, लेकिन विश्वास मानो, आज इतने दिनों बाद स्वर्ण को देखकर उसका बुखार मेरे सर से उतर गया है।'

लेकिन यह ख्याल उसे अपने में इतना हास्यास्पद लगा कि उसने मुंह खोलकर कुछ नहीं कहा।

व्याह के बाद आज पहली बार श्रावणी ने इतनी सहजता और स्वाभाविकता महसूस की। अचानक ही वह व्याह के पहले जैसी सहज हो उठी। श्रावणी को लगा, उसके लिए अभी बहुत कुछ सोचना-समझना बाकी है। जगहें खाली रह गयी हैं, उनका जोड़-तोड़ मिलाना होगा। वह उनका जोड़-तोड़ बिठाकर देखे, तो बहुत-सी बातें दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो उठेंगी। लेकिन उसे कोई हड़बड़ी नहीं है। बहुत जल्दी ही उसे लम्बी-सी फुर्सत मिलने वाली है। अतः आज या अभी कुछ नहीं सोचेगी।...बाद में फुरसत से सोच लेगी। दरअसल इस आदमी को रूप की पहचान है। वह रूप की कद्र करना भी जानता है, इसीलिए तो अपने घर में भी ऐसा धधकता हुआ रूप पाले हुए है। घर में ही ऐसी खूबसूरत परी के रहते, उसने उस ओर निगाह भी नहीं डाली। श्रावणी से मुलाकात होने के शुरू के दिन से ही वह उसकी तरफ आकर्षित हो गया। और उसे अपने घर भी ले आया। लेकिन उसने उसे ही अपने घर के लिए क्यों चुना, इस विषय में वह बाद में सोच लेगी।

अपनी ठुड्डी के उस निशान से, उसे इतना लगाव क्यों है, यह सवाल करने पर गुणीदत्त ने हमेशा यही सफाई दी कि उसकी तरफ देखते हुए, सब से पहले उस निशान पर नजर पड़ती है। आज श्रावणी ने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जिसे देखते हुए, सब से पहले एक और जगह निगाह अटक जाती है। उसके चेहरे का वह निशान किसी की आँखों में यूं घर कर गया था, जिसके उपहारस्वरूप उसे जिन्दगी-भर के लिए

अपनी पीठ पर एक बदसूरत-सा दाग सहना पड़ा। लेकिन वह आज कुछ भी नहीं सोचना चाहती। यह सब सोचने के लिए थोड़े दिनों में बहुत सारा समय होगा। श्रावणी के नाम के साथ दत्त तो अभी हाल ही में जुड़ा है। कुछ दिन पहले तक वह श्रावणी नन्दी थी। गुणीदत्त के जाने के बाद उसे फिर श्रावणी नन्दी की तरह फुरसत ही फुरसत होगी। अभी तो बाहर से शान्त दिखने पर भी, उसका मन स्थिर होकर कुछ भी नहीं सोच पा रहा है। जब यह अचकचाहट पूरी तरह मिट जाएगी, तब वह एक बार फिर सोच-विचार लेगी।

इसके बाद करीब बीसेक दिन इसी सहजता से गुजर गये। श्रावणी ने उसे अपनी मनःस्थिति का पता तक नहीं लगने दिया। उसे कुछ समझने का मौका ही नहीं दिया। वैसे वे लोग उस समय जाने की तैयारी में काफी व्यस्त भी थे।

जाने से सिर्फ दस दिन पहले श्रावणी ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि वह नहीं जा रही है।

गुणीदत्त उसका यह फैसला सुनकर अवाक् रह गया। लेकिन श्रावणी ने उसे जिद करने का मौका ही नहीं दिया। बेहद सहज भाव से कहा, 'देखो, लगी-लगायी नौकरी झट से नहीं छोड़ी जा सकती। बाहर आने-जाने का कार्यक्रम तो बाद में भी बन सकता है। इस बार मुझे रहने दो।'

'इस बार का मतलब ? तुमने कितने दिनों का अन्दाज लगाया है ?'

'कितने दिन ?' श्रावणी ने पलटकर पूछा।

'कम-से-कम दो साल ! और दो साल के लिए तुम्हें यहाँ छोड़ जाने को मैं कतई राजी नहीं।'

'कौन-सी बड़ी बात है ? लोग विदेश जाते हैं तो इससे भी ज्यादा दिनों के लिए छोड़ जाते हैं।' श्रावणी की आवाज में खीज नहीं थी। वह उसी तरह सहज बनी रही, 'देखो, दो साल तो देखते-देखते ही बीत

जाएँगे।' फिर वह हँस दी, 'और अगर बिल्कुल ही न रह सको, तो लिख देना। मुझे पहुँचने में कितनी देर लगेगी! असल में कालेज में बिना बताए या बिना कोई नोटिस दिए, चल देना अनुचित होगा।'

उस आदमी की इच्छा के ऊपर अपनी इच्छा को अहमियत देने में वह सफल हो गयी है, इस बात पर मन-ही-मन वह खुद ही हैरान हो उठी, और शायद कहीं से संतुष्ट भी।

वैसे यह प्रबन्ध गुणीदत्त को जरा भी पसन्द नहीं आया। लेकिन उसने अपनी तरफ से जोर नहीं दिया, कोई आपत्ति भी नहीं की। हाँ, यह जरूर लगा कि श्रावणी को और भी बहुत-सी बातें बताने-समझाने की थीं। हालाँकि इस बारे में उसके सामने कुछ स्पष्ट नहीं था। उसके मन में पलती हुई विकृति तो मिट गयी, नशा भी उतर गया। अब वह पूरी तरह अपने में लौट आया है। लेकिन ये सब बातें कहने और समझने की नहीं हैं। इसे तो सिर्फ महसूस किया जा सकता है। श्रावणी अगर उसके मन के करीब होती, तो शायद समझ लेती और अगर समझ पाती तो शायद बेहतर होता। लेकिन इस बात को लेकर बेकार का सिर-दर्द मोल लेने की उसे फुरसत ही नहीं मिली। इस बार वह बहुत दिनों बाद यात्रा पर निकल रहा है। अतः उसका मन उसी तरफ दौड़ता रहा। पार्टी का हर आदमी जाने की तैयारी में व्यस्त है। हर किसी में अजीब-सा उत्साह। गुणीदत्त सब से अधिक व्यस्त था। जाने के मामले में वही सब से अधिक उत्साहित दिख रहा था। वह सारे दिन मिसेज उड के साथ बैठकर बाहर दिखाए जाने वाले खेलों की लिस्ट तथा और बाहरी इन्तजामों में व्यस्त हो गया। कभी कारण-अकारण जूली पर आँखें तरेरता हुआ कुछ कह बैठता। कभी श्रावणी से निरर्थक-सा सवाल करता कि उसने अभी तक अपना फैसला बदला या नहीं। वह सचमुच वहाँ रुक रही है या उसके साथ चल रही है।

श्रावणी मन-ही-मन अपनी खीज छुपाए रही।

कई बार जूली ऐण्डरसन ने भी उससे साथ चलने का आग्रह किया। हारकर उसे डराने-धमकाने की भी कोशिश की, 'सुनो, तुम्हारे मियाँ का जो स्वभाव है न, यूँ अकेले छोड़ देना ठीक नहीं है, समझीं? अब

भी सोच लो। चाहो, तो चल सकती हो।'

श्रावणी उसके आगे विनम्र बनी रही। उसने हँसकर जवाब दिया, 'डरने की क्या बात है? तुम तो साथ जा ही रही हो।'

डेढ़-दो साल की जगह, देखते-देखते, साढ़े तीन साल की लम्बी अवधि समाप्त हो गयी। साढ़े-तीन साल का एक-एक दिन जैसे अँगुलियों पर गिना जा सकता है। श्रावणी ने भी किसी तरह गुजार दिए।

गुणीदत्त के जाने बाद पन्द्रह दिनों में ही श्रावणी के लिए सोचने या समझने की सारी बातें सत्य हो गयी। वह तो उसी दिन से उसके लौटने का इन्तजार करने लगी। दरअसल श्रावणी को जो सोचना था, सोच लिया, जो जानना था, जान लिया। उसने जितना सोचा, उसका मन और कड़ुआ आया। उसकी यन्त्रणा और तीखी हो उठी। उसके सिवा और कहीं कुछ नहीं हुआ।'

दरअसल श्रावणी के लिए कुछ भी सोचना या जानना बाकी नहीं था। स्वर्ण को देखते ही, कुछेक पलों में ही उसकी आँखों के आगे से एक भारी-सा पर्दा हट गया। अपने लिए वह थोड़ा-सा अवकाश ढूँढ रही थी, ताकि वह सोच सके कि ऐसी स्थिति में वह किस जमीन पर खड़ी है या उसके लिए भविष्य में पैर टिकाने को कौन-सी जगह है। लेकिन कुछ दिनों बाद जब उसे मनचाहा अवकाश मिला भी, तो उसके सीने पर बोझ बनकर अड़ गया। सब कुछ जान-समझ लेने के बाद, श्रावणी कर भी क्या सकती है।

गुणीदत्त टूर पर जाने से पहले थोड़ी देर को बेचैन हो उठा था, कहीं से उदास भी। जाने के दिन भी पूछा, 'तो तुम नहीं चल रही हो?'

श्रावणी मन-ही-मन खुश हो रही थी। उसे लगा वह अपने को उसमें पूरी तरह मुक्त करने में सफल हो गयी है। दो-एक दिन बीतते-न-बीतते उसकी सारी विचारधारा ही बदल गयी।

इन्सान की अनुभूतियाँ जैसे हर क्षण बदलती रहती हैं। इन डेढ़-दो सालों में, बहुत सारे दिन-महीने यूँ ही बीत गये। खामख्वाह की बेचैनी और रंज लिए इतने दिनों तक बैठे नहीं रहा जा सकता। यूँ बैठे रहना सम्भव भी नहीं। श्रावणी को अचानक ही लगा, उसकी बुझी हुई

जिन्दगी के सुदीर्घ डेढ़-दो साल भी किसी तरह गुजर गये।

उसे पहली बार अपनी गलती का अहसास हुआ। वह जूली ऐण्डरसन की बात मान ही लेती, तो बेहतर होता। इस विन्दु पर अगर वह कोई समझौता कर लेती तो शायद सब कुछ सहज हो जाता। दरअसल, जो कुछ हुआ था, उसमें श्रावणी तो पकड़ी नहीं गयी थी, गुणीदत्त ही रंगे-हाथों पकड़ा गया था। जो देखा, उसके लिए गुणीदत्त को चेतावनी देने के वदले उसने अपने को ही सजा क्यों दे डाली? इससे वह आदमी कौन-सा सँभल गया? और अगर सँभल भी गया हो, तो यह असर आखिर कितने दिनों तक रहेगा?

श्रावणी के मन में व्याह के पहले से ही आदमियों की ईमानदारी पर कभी भरोसा नहीं आया। शिक्षित और सम्भ्रान्त पुरुष भी रूप के मोह में पड़कर किस हद तक निर्लज्ज हो सकता है, यह तो वह पापा के घर ही देख चुकी है। प्रशान्त को मन देने का कभी मौका ही नहीं आया, इसीलिए बिना किसी तकलीफ के उसे मिलनी से व्याह की इजाजत दे दी। लेकिन उस हादसे से, उसने जैसे समूची पुरुष जाति को पहचान लिया।

उसका मर्द तो और वेसब्र और अशान्त है—और बेहद सेक्सी भी! अब भी जब उसके असंयम, उद्दाम और प्यार की याद आती है तो उसके रुचि-वोध को कहीं धक्का लगता है। अतः उसने जान-बूझकर इन बातों को याद करना छोड़ दिया। पहले भी वह आदमी जब-जब ललककर उसकी ओर बढ़ा है, उसने उसे वरजते हुए डाँट दिया है, लेकिन हर कदम पर यही महसूस किया कि डाँटकर उसने गलती की है।

श्रावणी अन्दर-ही-अन्दर इस भूल के लिए दर्द से छटपटाती रही और घुटती रही। अतः गुणीदत्त के जाते ही वह उसके लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। उसे अपने पर ही क्षोभ हो आया। अपने प्रति तीखी विरक्ति होने लगी। उसकी क्षोभ और विरक्ति उस वक्त चौगुनी हो उठती, जब अपने मन को लाख समझाने और तरह-तरह के तर्क देने, शिक्षा और रुचि-वोध का वास्ता देने के वावजूद, उसके मन का कोई अनजान, गोपन सत्य अभिव्यक्त होने को बेचैन हो उठता। अक्सर

वह रात को गहरी नींद से चौंककर जाग उठती और एक निचाट सूनापन उसे हहराकर अपने दामन में समेट लेता। लेकिन इसके साथ ही वह यह भी महसूस करती कि उसकी जिन्दगी में किसी शाहंशाह के कदम पड़े हैं, वह यूँ ही खो देने लायक नहीं है। इन विपरीत ख्यालों में, वह मरमाई हुई-सी चुपचाप जाने किसे खोजने लगती। वह दिल से महसूस कर रही थी कि हर औरत के दिल में ऐसे ही पुरुष की आकांक्षा करवटें लेती है।

श्रावणी अकेले में इन तमाम सत्यों को झुठलाने की भरसक कोशिश करती है, तो बेहद असहाय महसूस करती है और फिर अपने ही प्रति गहरा क्षोभ उभर आता है और वह अजीब-सी बेचैनी से छटपटाने लगती है।

श्रावणी जब काफी दिनों के लिए पापा के यहाँ लौट आयी तो घरवालों ने यही समझा कि उसके सिर का भूत उतर चुका है और अब सब कुछ पहले की तरह हो जाएगा। यूँ बाहर से देखने पर यही लगा भी कि सब कुछ पहले की तरह नॉर्मल हो गया है। श्रावणी ने बहुत दिनों की छूटी हुई आदतों को फिर से ओढ लिया। इन कुछ ही महीनों में इस घर की सजावट एकदम से श्रीहीन हो गयी थी। श्रावणी को घर की खोयी हुई श्री लौटा लाने के लिए दुबारा मेहनत करनी पड़ी। श्रावणी ने महसूस किया कि गुणीदत्त के साथ न जाने से, उसके भाई लोग यहाँ तक कि पापा भी मन-ही-मन खुश हुए हैं। इस घर के हर आदमी को उसकी जरूरत है, लेकिन एक और जगह उसके होने-न-होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। सारा काम वैसे ही चलता रहेगा।

बहुत बार कामों में व्यस्त रहने के बावजूद श्रावणी के हाथ अचानक ही थम गये। ब्याह के बाद कभी लगातार तीन-चार दिनों के लिए भी वह यहाँ नहीं रह सकती थी। उसे आपत्ति हो या न हो, कोई और भी था, जो उसे यहाँ छोडने को राजी ही नहीं होता था। आखिर उसे क्यों एतराज था? इसलिए कि उसका घर खाली-खाली लगेगा? या इसलिए कि उसके सीने के करीब कोई न हो, तो उसे अच्छा नहीं लगता था? नहीं, इससे भी अधिक स्थूल जरूरत के लिए श्रावणी ने अपने को निःशेष किया है, अपनी आहुति दी है। श्रावणी को इससे

बेहद क्षोभ और अफसोस हुआ है। स्वर्ण को अगर उसने पहले देखा होता, तो जो कुछ हुआ वह कभी न होता। इससे पहले उसके बारे में उसने सुना-भर था। उसे देखा नहीं था। स्वर्ण के प्रति उसके मन में कोई ईर्ष्या भी नहीं है। वह पढ़ी-लिखी लड़की है और ईर्ष्या का ख्याल आते ही वह संकोच से गड़ गयी।

कालेज में रोल-कॉल के समय नाम पुकारे जाने पर, आजकल लड़कियाँ एक दूसरे के लिए प्रॉक्सी देने लगी हैं। यह बात वह जानती है, फिर भी इसके लिए कभी किसी को अपमानित नहीं किया। लेकिन उस दिन एक लड़की को बुरी तरह डांट दिया। दो-चार तीखे व्यंग्य कस दिये। बाहर निकल कर उसे अफसोस हुआ कि उसने इतनी बुरी तरह क्यों डांट दिया। बड़े-बड़े प्रसंगों में भी बेमन से ही सही, उसे भी हमेशा इसी तरह की भूमिका निभानी पड़ी है। वह किसी की वहशत और निरर्थक आवेग-तृप्ति की माध्यम-भर थी। श्रावणी को यह सब बातें समझाने की जरूरत नहीं पड़ी, उसने खुद ही समझ लिया। यह यह बात अलग है कि यह सब समझने में काफी वक्त लगा था, लेकिन उसने पहली मुलाकात से लेकर, स्वर्ण को देखने तक के तमाम दिनों की छोटी-छोटी घटनाओं का अकेले में पोस्टमार्टम किया है। नहीं, उसे किसी से कोई ईर्ष्या नहीं है। लेकिन वह जो थी, वही रहना चाहती थी। उसने किसी की जगह प्रॉक्सी नहीं देनी चाही थी।

लेकिन अपने घरवालों के चेहरे पर खिला हुआ अव्यक्त सन्तोष भी कहीं से बहुत बुरा लगा। इस ख्याल से उसकी परेशानी चौगुनी हो उठी कि वह लोग इसलिए खुश हैं कि वह फिर से उनकी दुनिया सँवारने को लौट आयी है।

ब्याह के बाद लड़कियाँ दूसरों का घर बसाती हैं। मिलनी का भी अपना घर है। इस घर के लोगों को उसके बारे में भी यह ख्याल रखना चाहिए कि उसका भी अपना घर है। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि वह किसी और की अमानत है। उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि यहाँ वह अपनी मर्जी से आयी है और सिर्फ कुछ दिनों के लिए रहने आयी है।

कई दिनों बाद ही उसने पापा से कहा था, 'ऐसे कितने दिनों चलेगा ? अब भइया को व्याह करने को कहिए न•••।'

शुभेन्दु भइया और बाकी दूसरे भाई लोग यहाँ तक कि पापा भी, श्रावणी के हाव-भाव में कहीं कोई फर्क महसूस कर कर रहे हैं। वह जो सोच रही थी, उन लोगों को सचमुच अन्दाजा नहीं था। वे लोग तो बस, इसी बात से खुश हो गये थे कि वह काफी दिनों के लिए यहाँ रहने आयी है। वैसे, मुँह से भले ही किसी ने कुछ न कहा हो, लेकिन सबके सब यह बात महसूस कर रहे हैं कि उसके सहज, स्निग्ध, सहन-शील स्वभाव में कहीं से रुखी खिजलाहट भी भर गयी है।

श्रावणी ने शुभेन्दु के आगे भी व्याह की बात चलायी। वैसे वह मन-ही-मन अपने इस भाई पर थोड़ी-बहुत नाराज भी थी। जो आदमी इतने दिनों के लिए विदेश चला गया, उसका प्रसंग छिड़ते ही वह बेहद कुशलता से नजरअन्दाज कर देता है। श्रावणी की आँखों से यह छुपा नहीं रहा। वह अब गुणीदत्त के बारे में कुछ पूछता भी नहीं। श्रावणी जानती है, उसके भाई को आज भी उस पर विश्वास नहीं है। गुणीदत्त पर वह चाहे कुछ विश्वास करे या न करे, लेकिन कोई पराया उस पर अविश्वास करे, यह वह बरदाश्त नहीं कर सकती। उस आदमी में चाहे जितना दोष या कमजोरियाँ हों, लेकिन उसकी तुलना में श्रावणी को अपना यह भाई बेहद बेजान लगता।

मिलनी भी जब यहाँ दो-चार दिनों को आती है तो उसे भी अपनी दिदिया निहायत बदली हुई नजर आती है। एक दिन खुद उसी ने बात चलायी, 'दिदिया, तू खुद भी तो उसके पास जा सकती है।'

'क्यों ?'

'क्योंकि लगता है, यहाँ तेरा मन नहीं लग रहा है।'

श्रावणी चौंक पड़ी। वह बुरी तरह झुंझला उठी। मिलनी को उसने डाँट दिया। प्रशान्त को देखकर भी लगता है कि उसे लेकर वह उससे भी पंचायत कराती होगी। अगर श्रावणी का वश चलता, तो वह जरूर कहती, 'प्रशान्त से व्याह करके तूने मेरा परम उपकार किया है न ! बस, तुम लोग रहो मजे में।'

हालाँकि जिसे केन्द्र बनाकर वह इतनी सारी उल्टी-सीधी परेशानियाँ महसूस कर रही थी, उसके प्रति भी उसका क्षोभ दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा था—कहीं से रत्ती-भर भी नहीं छँटा था।

कभी-कमार पापा गुणीदत्त की खोज-खबर ले लेते हैं। वह कैसा है, उसका पिछला खत कब आया। बस !

इधर गुणीदत्त का खत भी बहुत देर-देर से आने लगा है। उन खतों में सिर्फ इसनी-सी सूचना-भर होती है कि वह फलाँ जगह से फलाँ जगह पहुँच रहा है। श्रावणी भी बीच-बीच में खत डाल देती—बेहद सादा-सा खत। काम-भर की सीख लिख देती है। कभी-कमार यह लिखना भी नहीं भूलती कि अगर उसने सेहत के बारे में लापरवाही बरती, तो वह नाराज हो जाएगी।

हिन्दुस्तान के पार सुदूर-पूर्वी देशों का दौरा करते हुए, खतों का सिलसिला और कम हो गया। तीन-चार महीनों के बाद एक सूचना-भर मिल जाती कि वह मजे में है। हर जगह उसकी खूब खातिर हो रही है। इन्हीं सब व्यस्तताओं में उसे फुरसत नहीं मिलती। काफी मेहनत पड़ रही है। एक-एक दिन में तीन-तीन शो दिखाए जा रहे हैं। श्रावणी ने भी इधर खत लिखना कम कर दिया है। उसका खत आता है, तो जवाब दे देती है। काफी भाग-दौड़ के कारण वह जवाब भी गुणीदत्त के हाथों समय से नहीं पहुँच पाता।

साल की जगह तीसरा साल खत्म होने को आया।

श्रावणी को तीसरे साल उसे कुल मिलाकर दो खत मिले हैं। गुणीदत्त का आखिरी खत अरब से आया है। उसमें भी उसने लौटने का कोई जिक्र नहीं किया। श्रावणी के मन में चाहे जो रहा हो, लेकिन उसने गुणीदत्त से यह भी कहा था, 'अगर मेरे बिना न रह सको, तो लिखना, मेरे पहुँचने में कितनी देर लगेगी !' लिखने की बात तो दूर रही, इतने सालों बाद अब नहीं रह पा रहा हो, ऐसा भी कोई आसार नजर नहीं आ रहा था। लगता है, वह बहुत मजे में है। अगर वह आदमी मजे में न होता, तो इतने दिनों तक यूँ रह सकता था ?

सुदूर-पूर्व के तमाम शहरों में खेल दिखाते हुए साढ़े-तीन साल का

दूर कोई बड़ी बात नहीं। श्रावणी ने अपने को तर्क देकर समझाना चाहा। वह अपने को तसल्ली देने की कोशिश कर रही है। लेकिन अब तो यह कोशिश भी बेकार होती जा रही है। गुणीदत्त अपनी अभूतपूर्व सफलता की कहानियाँ बहुत कम लिखता था। उसने जितना कुछ लिखा, श्रावणी दत्त को उससे कहीं अधिक खबरें मिलती रही हैं। दुनिया-भर की जादू-विषयक पत्र-पत्रिकाएँ गुणीदत्त के घर के पते पर ही आती थीं। जाने से पहले, गुणीदत्त खुद ही श्रावणी के पापा का पता दे गया था। अब सारी पत्रिकाएँ उसी पते पर आती हैं।

पूर्वी देशों की जनता गुणीदत्त के खेलों की किस कदर दिवानी है, श्रावणी तक इसकी एक-एक खबर पहुँचती रही है।

गुणीदत्त के साथ ही एक और नयन-मन-मोहिनी कलाकार के आविर्भाव की सूचना भी उसे मिल चुकी है। उसके आविर्भाव की घोषणा सिर्फ जादू की पत्रिकाओं में ही नहीं, आम अखबारों और साहित्यिक पत्रिकाओं में भी प्रकाशित की गयी।

कलाकार है—भानुमती! अन्यतम जादूगर गुणीडाटा के हाथों तराशी हुई, उसी के रंग-ढंग में ढली हुई अनिन्द्य रूप-सुन्दरी, गुणीडाटा की प्रधान जादू-सहचरी भानुमती!

शिरीन ही जादू की दुनिया में भानुमती की भूमिका में अवतरित हुई थी। श्रावणी ने उनके खेलों की तस्वीरें भी देखी हैं। एक-दो नहीं, अब तक हजारों तस्वीरें देख चुकी है। जादू-मंच पर शिरीन को कोई नहीं जानता। शिरीन ही भानुमती बन गयी है। अच्छा उसे यह नाम किसने दिया?

और कौन देगा? जिसे देने का हक है, उसी ने दिया होगा। शिरीन तो छुरी की तरह तेज थी, लेकिन तस्वीरों में वह कल्पना की शाहजादी जान पड़ती है। भानुमती के अलावा और कोई नाम उसे फबता भी नहीं।

श्रावणी ने उन तस्वीरों को बड़े गौर से देखा। यह आदमी अब भी उतना ही रहस्यमय लगता है जितना पहले लगा करता था। ब्याह के बाद भी कई महीनों की समवेत जिन्दगी के एकान्त सान्निध्य के

बावजूद, स्टेज पर वही आदमी अजीबोगरीब गोरखधन्धों से घिरा हुआ रहस्यमय जादूगर जान पड़ा है।

कई-कई अखबारों में दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। कई जगहों में दर्शक उसका खेल देखने के लिए इस कदर बेसब्र और दिवाने हो उठे हैं कि टिकट प्राप्त करने के लिए तरह-तरह के आश्चर्य-जनक गुल खिलाने से भी नहीं चूके। ये दर्शक आखिर किसे देखने को पागल हो उठे हैं? गुणीडाटा का जादू देखने के लिए या भानुमती के रूप की झलक पाने के लिए? कई-कई बार देखी हुई तस्वीरों को उसने एक बार फिर गौर से देखा। दर्शक शायद दोनों को देखने को पागल हो उठे होंगे—एक साथ उन दोनों को।

श्रावणी इसी शिरीन के बारे में बहुत-सी बातें सुन चुकी है। इसी सन्दर्भ में चाँद साहब की बातें भी सुनी हैं। इसी सिलसिले में उस अजूबे पत्थर का भी किस्सा सुना है, जो अचानक ही किसी के हाथ लग गया था। उस लड़की के साथ इस उजले-धुले इन्सान का रिश्ता महज किस्मत की बात है। लेकिन उस लड़की की आखिर क्या उम्र होगी? यही कोई बाईस साल! गुणीदत्त की किस्मत से जुड़कर उसकी भाग्य-मणि बन गयी तो क्या हुआ? वह कोई पत्थर तो नहीं है। इस लड़की को अगर पत्थर मान लिया जाए, तो दुनिया-भर के तमाम लोगों को बिल्कुल जड़-पत्थर मान लेना होगा।

साढ़े तीन साल बाद वह लौट रहा है।

साढ़े तीन साल भी नहीं, तीन साल, आठ महीने, सत्तरह दिन! लोग तो यही कहेंगे कि चार वर्ष बीत-गये। लेकिन श्रावणी बेइन्साफी नहीं करेगी। वह गुणीदत्त के बाहर रहने को साढ़े तीन साल ही कहेगी, लेकिन उसे इन साढ़े तीन सालों का हिसाब देना है या लेना है? खैर, यह सब तो बाद में देखा जायेगा। पहले वह आये तो सही। अभी भी उसने अपने आने की सूचना उसे नहीं भेजी है। श्रावणी ने तो अखबारों में उसके आने की खबर पढ़ी है।

कुछ ही दिनों में उसके पास भी चिट्ठी आ गयी। गुणीदत्त अभी बम्बई में है। अभी कुछेक दिन वहीं रहेगा, फिर फलाँ तारीख को वहाँ से रवाना होगा। उसने बम्बई से ही सूचना भेजी है कि वह किसी अच्छे होटल मे दो बढ़िया कमरे बुक करा ले, फिर देख-सुनकर कोई अच्छा-सा फ्लैट किराये पर ले लिया जाएगा।

गुणीदत्त निश्चित तारीख को आ पहुँचा। घर-भर मे जैसे खलबली मच गयी। सिर्फ श्रावणी को ही कोई जल्दी नही थी। हाँ, स्टेशन तो जाना ही होगा ! चार साल बाद...नही, चार नहीं, साढ़े तीन साल बाद वह लौट रहा है, उसे लेने तो खैर जाना ही होगा।

बम्बई-मेल प्लेटफार्म पर आ लगी। अखबार के लोगों की भीड़ और जादू-प्रेमियों की धक्का-मुक्की मे हर कोई थोडी देर को जैसे गुम हो गया। अचानक सामने के कम्पार्टमेण्ट में दो हँसते हुए चेहरे, उसकी तरफ झाँकते हुए नजर आए। दूसरा चेहरा शिरीन का है। लेकिन अब वह उसे शिरीन कहे या भानुमती ?

श्रावणी भीड से हटकर एक तरफ खड़ी हो गयी। शुभेन्दु और मिलनी भीड में धँसकर गुणीदत्त तक पहुँचने की कोशिश कर रहे थे ! लेकिन श्रावणी को एक तरफ खड़े देखकर, जाने क्या सोचकर वह भी रुक गये। गुणीदत्त और शिरीन भीड़ को चीरते हुए आगे बढे और उनके सामने आ खड़े हुए। श्रावणी यह देखकर अवाक् रह गयी कि लोगो के नाम पर सिर्फ दो जन ही आगे आए। सिर्फ जादूगर गुणीडाटा और भानुमती ! और कोई नहीं। वे हँसते हुए उसकी तरफ बढे। सब से पहले शुभेन्दु से मिले। गुणीदत्त ने दोनों हाथो से उसका कंधा झकझोर डाला। फिर मिलनी की पीठ पर दो धौल जमा दी और फिर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए श्रावणी के बिल्कुल सामने आ खड़ा हुआ। इतने लोगों के सामने श्रावणी को भी जरा मुस्कराना चाहिए। वह मुस्करा दी। उसी समय चेहरों पर फ्लैश कैमरे चमक उठे। कोई तस्वीरें ले रहा था। हुँहु ! इतनी देर तक गुणीदत्त और भानुमती की तस्वीरें उतारकर भी साध पूरी नहीं हुई !

'और बाकी लोग कहाँ हैं ?' श्रावणी ने सहज भाव से पूछा।

'और कौन ?'

'क्यों, मिस्टर और मिसेज उड ?'

'वे लोग चले गये।'

'और जूली ?'

'जूली भी। वे लोग सब अपने देश वापस लौट गये। खैर, वह सब वाद में वताऊँगा। अभी आओ, चलें।'

यानी ये दो लोग ही वापस आए हैं। श्रावणी का ध्यान अव शिरीन की ओर मुड़ गया। शिरीन ने मुस्कराते हुए अपने दोनों हाथ माथे से लगाते हुए नमस्कार किया। उत्तर में श्रावणी ने भी सिर हिला दिया। अचानक उसे हँसी आने लगी। हाँ, वह विल्कुल संगमरमर की तराशी हुई सूरत लग रही थी। जैसे उसकी दोनों आँखों की जगह रोशनी विखरने वाले पत्थर के टुकड़े फिट कर दिए गये हों—जीवन्त पत्थर ! और सुर्ख होठों के वीच पत्थर की लकीर-सी खिची हुई हँसी।

पन्द्रह

श्रावणी मामूली जोड़-घटाव के सवाल में न सही, कही किसी और हिसाव में भयंकर गलती कर वैठी है। गलती होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि पिछले चार सालों से वह गलतफहमियों के अजीव-से चक्कर में उलझी रही। अव यह भूल, सच की तरह दुर्भेद्य वन गयी है।

श्रावणी ने इस समूचे चक्कर को एक-दो वार नहीं, वहुत वार, कई-कई तरीकों से घुमा-फिराकर देखा है, जाँच-परख भी लिया। गुणीदत्त के लौट आने के वाद उसने सारी स्थिति को एक वार फिर

नए सिरे से जाँचने की कोशिश की। गुणीदत्त के अतीत और वर्तमान को जोड़कर समूची स्थिति की एक समूची तस्वीर आँखों के सामने ला खड़ी की।

...गुणीदत्त उन्नीस साल की उम्र का था तो जवानी के नशे मे एक सोलह साल के लड़की के पीछे पागल हो उठा। पीठ का वह बदनुमा दाग भी उसके मन की विकृति को दूर न कर सका। वह विकृति अभी भी नही मिटी है, इसका प्रमाण श्रावणी स्वयं है। बचपन की उद्‌भ्रान्त स्मृति ही गुणीदत्त को श्रावणी तक खींच लायी थी। दरअसल वह उसके आकर्षण से बँधकर उसके करीब नही आया था। वह तो उसके लिए कुछ भी नही थी।

गुणीदत्त के युवा वर्षों मे भी, उसकी जिन्दगी मे प्रवेश करने वाली वह पहली औरत नहीं है। उससे पहले नाचने-गानेवाली, वही लडकी जूली ऐण्डरसन आ चुकी थी। शुभेन्दु ने भी बातो ही बातो मे इस ओर संकेत भी किया था। उसके बारे मे वह भी कुछ-कुछ जानता था, अतः इस ब्याह मे उसी ने सब से जबर्दस्त आपत्ति की थी। जादूगर गुणीदत्त ने भी यह सब बातें स्वीकार करने से कभी इनकार भी नही किया। वैसे उसे सच्ची बात छुपा लेने का जादू भी आता है। उसी आदमी की उन्मुक्त-उद्दाम वासना की प्रतिक्रिया, उसके हाड-मांस मे भी घुल-मिल चुकी है। जिस आदमी में इतनी उद्दाम वासना है और जिसके अन्दर इतनी तीखी भूख है, उसकी जिन्दगी मे जूली ऐण्डरसन के अलावा और भी दस-पाँच लडकियाँ नही आयी होंगी, यह कौन कह सकता है।

उसके बाद चार साल का सुदीर्घ, तटस्थ अन्तराल, नही, चार साल नहीं! श्रावणी बेइन्साफी हरगिज नही करेगी—साढे तीन साल ही कहेगी। इस निरंकुश अन्तराल में उसने एक परायी लड़की शिरीन में हर दिन भानुमती का आविष्कार किया है। श्रावणी ने उस भानुमती को भी देख लिया।

श्रावणी दरअसल यही गलती कर बैठी।

इस बार जो शिरीन लौटकर आयी है, उसमें भानुमती ने भी जन्म लिया है, यह निःसन्देह सच है। शिरीन तो तेज छुरी थी, भानुमती तो

जादूगरनी है। एक में दूसरी औरत जैसे घुल-मिल गयी है। लोग उसे देखकर पागल न हों तो और क्या हों ?

श्रावणी का यह तर्क वास्तविक है। लेकिन शिरीन के साथ-साथ उसने एक और व्यक्ति को सन्देह-भरी निगाहों से परखने की कोशिश की, यहीं वह गलती कर बैठी।

श्रावणी की नजरों ने चार साल बाद भी इस सद्यः शिरीन में जो कुछ देखा, उसे हर रोज ध्यान-साधना का अभ्यास कराते हुए, गुणीदत्त की अभ्यस्त आँखें भी नहीं देख पायीं। वह तो जिस शिरीन को लेकर यात्रा पर गया था, उसी को लेकर वापस लौटा है।

श्रावणी के आस-पास ऐसा कोई भी तो नहीं था, जो उसकी गलतियों का एहसास कराता। अब न मिसेज उड थी, न जूली।

मिसेज उड ने एक दिन मजाक-मजाक में गुणीदत्त की भावमग्न निगाहों को खोंचा देते हुए कहा भी था, 'लगता है कि अब जल्दी ही किसी के डाईवोर्स की सूचना मिलने वाली है।'

अब ? यानी भानुमती के आविर्भाव के बाद ! गुणीदत्त पहले की तरह मन-ही-मन नाराज हो उठा। लेकिन मिसेज उड पर बिना किसी तरह की नाराजगी जाहिर किए, पलटकर उसे ही एक सीख दे डाली, 'जी नहीं, ऐसा हरगिज नहीं होगा। हाँ, इन दिनों कभी-कभी यह आशंका जरूर होती है कि आप दोनों मियाँ-बीवी के बीच ऐसी कोई दुर्घटना न हो जाए। दरअसल मैं कलकत्ते में ही आपको इस विषय में आगाह करना चाहता था, लेकिन मौका ही नहीं मिला। आप अब अपने पतिदेव की तरफ भी जरा ध्यान दें। रुपया तो बहुत जमा कर लिया।'

मिसेज उड अपनी जिन्दगी में इतनी हैरान मानो कभी नहीं हुई थी। वह विमूढ़ नजरों से उसकी ओर एकटक देखती रही। गुणीदत्त की आवाज में आत्मीयता की झलक थी। मिसेज उड की जुबान से एक शब्द भी नहीं निकला। कई दिनों तक वह गुमसुम बनी रही, फिर पहले की तरह ही मुखर हो उठी, शायद पहले से भी अधिक। गुणीदत्त उस समय कुछ समझ नहीं पाया, लेकिन कुछ दिनों बाद, यात्रा के

आखिरी दौर में, उनकी बुद्धि की *मन-ही-मन* प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका।

पिछले चार साल गुणीदत्त ने किस तरह बिताए हैं, यह सिर्फ जूली ऐण्डरसन ही अनुमान लगा सकती थी। श्रावणी कैसे जान सकती थी?

गुणीदत्त की एकान्त-साधना जूली विलायत में ही देख चुकी है। वह यह भी जानती है कि उसकी एकान्त-साधना, अनुशीलन की सहचरी वह नहीं, कोई और है। जूली को उससे कभी ईर्ष्या भी नहीं हुई। उसने भानुमती के सृजन में गुणीदत्त की भरसक मदद ही की है। यह बात अलग है कि फुरसत के वक्त, जब वह अकेली हुई है तो दो-एक उसांसें भरकर रह गयी है।

इन चार सालों में वह सिर्फ खेल दिखाने में या रुपया बटोरने में *नहीं लगा रहा। उसका हर दिन मूर्ति गढ़नेवाले शिल्पी की तन्मयता में* बीता है।

शिरीन में अपनी सारी जादू-कला ढालकर उसे बेहद खूबसूरती से तराशने-सँवारने की कोशिश की है। उसने रूस के माध्यम से जादू के हैरतंगेज खेल दिखाने की कोशिश की।

भारत और सुदूर-पूर्वी प्रदेशों में उड दम्पती ने जितने रुपये कमाए, उतने की तो उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। उन्हें अपना मुल्क छोड़े हुए भी कई साल बीत गए थे। उनके बाल-बच्चे हॉस्टल-बोर्डिंगों में बड़े हुए थे। मिस्टर उड ने सहर्ष घोषणा की कि अब गुणीदत्त के साथ *कलकत्ता होते हुए, सागर पार, अपने देश लौट जाना चाहते हैं। मिस्टर* उड ने खुश आवाज में कहा, 'माई लेडी वान्ट्स टु गो बैक होम! और मेरा ख्याल है वह अद्भुत महिला है।'

गुणीदत्त ने भी हँसकर सहमति जतायी। कहा, 'आप सच कह रहे हैं। ठीक ही तो है।' और एकदम से मिसेज उड के कमरे में घुसकर उनका हाथ पकड़कर उन्हें झकझोरते हुए, उनके सम्मान में भावभीनी शुभकामनाएँ ज्ञापित की।

मिसेज उड ने छद्म-गम्भीरता से, एक बार मिस्टर उड इशारा किया और आँखें तरेरते हुए कहा, 'क्या करूँ, तुम्हारे

होती तो उस रैस्कल को अकेले ही विलायत भेज देती और मैं तुम्हारे साथ यहीं रस-बस जाती। लेकिन जब इसकी कोई सूरत नहीं दिख रही है तो सोचती हूँ, एक बार तुम्हें ही अपने साथ ले जाकर कोशिश कर देखूं।'

बाद में गुणीदत्त ने उन्हें स्पष्ट रूप से समझा दिया कि अब उसके लिए इस तरह घूमना-भटकना नामुमकिन है। बाहर वालों के आमन्त्रण पर, वह दूसरे शहरों में भी जाएगा, वर्ना बंगाल में ही स्थायी रूप से निवास करेगा। अब वह अपना समय किसी भ्रमणशील जादू कम्पनी में नहीं, अपना स्थायी दल गढ़ने में लगाएगा।

गुणीदत्त पर उस दम्पती के अनुनय-विनय का कोई असर नहीं पड़ा। उसके इन्कार करने पर वे लोग नाराज हो जाते, वे लोग इतने कृतघ्न भी नहीं थे। अपने मुल्क वापस जाते हुए उन्होंने गुणीदत्त के हाथों, जादू-खेलों का सारा सामान पानी के मोल बेच दिया। गुणीदत्त की जगह किसी और जादूगर को नियुक्त करके, अपनी जादू-कम्पनी कायम रखने का उनका कोई इरादा नहीं था। अब उनके पास इतनी दौलत थी कि कहीं एक जगह स्थायी रूप से जमकर किसी और काम-धन्धे में रुपये लगाकर निश्चिन्त हो पाते।

जूली ऐण्डरसन ने सूचना दी कि वह भी अब विलायत लौट जाना चाहती है।

गुणीदत्त ने कोई आपत्ति नहीं की। लेकिन शिरीन ने उसके सामने ही ऐतराज किया, 'जी नहीं, यह नहीं हो सकता! तुम भला क्यों जाओगी?'

जूली ने हँसकर कहा, 'क्यों? यहाँ भी किसके लिए रहूँ?'

'मेरे लिए! देखो, तुम जाने-वाने की बात भूल जाओ।'

जूली ने भौंहें चढ़ाकर पूछा, 'आखिर मैं यहाँ रहकर क्या करूँगी? तुम्हारे रहते मेरी ओर कौन नजर डालेगा?'

शिरीन को जैसे नाराज होने में समय नहीं लगता, हँसने में भी देर नहीं लगती। उसने हँसकर कहा, 'मैं भी देखती हूँ, कैसे जाती हो।'

गुणीदत्त ने भी कहा, 'और फिर ये लोग तो पार्टी ही खत्म कर

रहे हैं। तुम वहाँ लौटकर करोगी भी क्या ?'

अगर शिरीन सामने न होती तो जूली शायद कोई भद्दा-सा मजाक कर बैठती, लेकिन उस वक्त सिर्फ इतना ही कहा, 'तुम्हारी मेहरबानी से कुछ रुपये मेरे पास भी जमा हो गये हैं। वहाँ जाकर एक छोटा-मोटा घर बनाने की सोच रही हूँ। दो-चार पेइंग-गेस्ट रख लूँगी, मेरा खर्च मजे में चल जाएगा।'

शिरीन गुस्से के मारे उठकर चली गयी।

वे लोग बम्बई से विलायत के लिए रवाना हो गये। विदाई समारोह बेहद सहज, सुन्दर और मर्मस्पर्शी था। जूली जाने से पहले, इतने दिनों बाद, पहली बार गुणीदत्त को एकान्त में खींचकर ले गयी। कहा, 'मुझे पता है, तुम शिरीन की अच्छी तरह देखभाल कर लोगे। लेकिन जाने क्यों, तुम्हारी बीवी की तरफ से बहुत डर लग रहा है। यद्यपि वह बहुत अच्छी है, बहुत नेक है, लेकिन जाने कैसी आशंका---!'

गुणीदत्त ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'नहीं, डरने की कोई बात नहीं। चाँद साहब कहा करते थे, खुदा की मर्जी के मुताबिक ही सब कुछ होता है। वही होगा !'

'चाँद साहब इज ग्रेट।' और उसने अपनी दोनों बाँहें बढ़ाकर गुणीदत्त के सीने से लगकर, अपने को उसकी बाँहों में समो देना चाहा। गुणीदत्त के तपते हुए होठों को चूमते हुए, आखिरी बार अपने को जैसे भर लेना चाहा। फिर उसे मुक्त कर दिया। मिसेज उड की तरह ही उसके बालों को अपनी मुट्ठियों में भरकर, हल्के-से झकझोर दिया, फिर हँसकर कहा, 'हाँ, बस, इतना-सा चुराने का मन हो आया। तुम अपनी बीवी को बता देना, कि तुम बेकसूर हो।'

शिरीन उसके जाने की आखिरी घड़ी तक नहीं रोयी। जहाज आहिस्ते-आहिस्ते दूर होता जा रहा था। तट छोड़कर समुद्र के सीने में समाता जा रहा था। जहाज जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, शिरीन की आँखें डबडबा आयीं। गुणीदत्त को लगा, इससे बेहतर था कि वह खुलकर रो लेती।

मैंजिउड कम्पनी ने गुणीदत्त के साथ हिन्दुस्तान में अपना पहला शो

बम्बई में दिया था, आखिरी शो भी वहीं प्रस्तुत किया। जाने से पहले, कुछ दिनों के लिए बम्बई में लगातार कई शो दिखाए गये। फलस्वरूप बम्बई में हलचल, तर्क-वितर्क और जल्पना-कल्पना का बाजार फिर से गर्म हो उठा। दर्शकों को भानुमती ने आश्चर्य में डाल दिया। शो तो कई दिनों चला। इतनी बड़ी जगह में उमड़ती हुई भीड़ के अलावा, जिन्हें निमन्त्रण-कार्ड भेजे गये थे, ऐसे लोग गिनती में मुट्ठी-भर ही थे, इन लोगों की तारीफें सुन-सुनकर बाकी लोगों के लिए भानुमती, भानुमती की पिटारी की तरह रहस्यमयी हो उठी।

गुणीदत्त अगर राजी होता तो मैजिउड कम्पनी अभी थोड़े दिनों और टिकी रहती। लेकिन वह और शो देने को राजी नहीं हुआ। स्टेज-मालिकों ने उसके हाथ-पैर भी जोड़े, फिर भी वह तैयार नहीं हुआ। उसके राजी न होने के एक नहीं तीन-तीन कारण थे। अब उसे लौटने की जल्दी थी। उसके दिमाग में एक सुसंगठित दल निर्माण करने की योजना थी। वह सिर्फ जादू के तमाशे दिखाकर अपना फर्ज नहीं पूरा करना चाहता था। दूसरी वजह यह भी थी कि जिस दिन से उसने बम्बई में कदम रखा है, शिरीन को अन्दर-ही-अन्दर घुटते हुए देख रहा था। वह जितने दिन यहाँ रही, साहब जी को शायद एक पल को भी नहीं भूल पायी। वह गुणीदत्त को साथ लेकर कई बार उस मकान में भी गयी और चुपचाप उस कमरे को निहारती रही, जिसमें कभी वह अपने साहब जी के साथ रहा करती थी। चाँद साहब जिस अस्पताल में था, वहाँ भी गयी। चाँद साहब की मजार पर से तो उसे खींचकर उठाना पड़ा। हालाँकि उसके कारण शो की शान और बढ़ गयी। गुणीदत्त ने गौर किया कि शिरीन खेल दिखाते हुए भी मन-ही-मन कल्पना कर रही है कि दर्शकों की उस भीड़ में कहीं उसके साहब जी भी उसे देख रहे हैं—उसे देखकर खुशी के मारे बेहाल हो रहे हैं।

उसके जल्दी लौटने की तीसरी वजह यह है कि कलकत्ते में कोई उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसे याद आया, इस भरी-पूरी भीड़ में तमाम चीजों के बीच, कोई खास व्यक्ति विशेष रूप से अनुपस्थित है। बहुत दिनों की भूली हुई प्यास जैसे उसे फिर बेचैन कर गयी। श्रावणी

की याद अब उसे खींच रही थी।

लेकिन इस खिंचाव के पीछे एक छोटी-सी वजह भी है, जिसे गुणीदत्त अपने आगे शायद स्वीकार नहीं करना चाहता। घर छोड़ने के बाद पिछले चार साल के दौरान आज पहली बार इस सद्य: वर्तमान शिरीन की संगमरमरी खूबसूरती पर उसकी अचानक ही निगाह पड़ गयी। पिछले साढ़े सात साल के साथ उसने चार-पांच साल और जोड़ दिए। जिस नजर से जेनिफर उड, जूली ऐण्डरसन ने देखा था या हजारों दर्शक देखा करते थे या फिर कलकत्ते में कदम रखते ही उसे जिस नजर से श्रावणी ने देखा था, गुणीदत्त ने भी उसी नजर से देखने की कोशिश की।

लेकिन ऐसा तो सिर्फ एक ही दिन हुआ, वह भी सिर्फ कुछेक पलों के लिए। वह भी उस समय देखा, जब शिरीन को लेकर बम्बई के बंगाली और गैर-बंगाली फिल्म प्रतिष्ठानों के एक-एक करके तीन-चार लोग गुणीदत्त के पास पहुँचे। वे लोग शिरीन को फिल्म में उतारना चाहते हैं। उन लोगों ने एक-दो फिल्मों में उतारने के लिए, उसे मोटे रुपये का अविश्वसनीय लोभ भी दिखाया। लेकिन उसने शिरीन के सामने इस विषय में कोई बात नहीं की। शिरीन भी उसकी तरफ देख-देखकर हँसती रही।

गुणीदत्त भी हँस दिया।

लेकिन उन लोगों में से एक आदमी उनके पास दुबारा पहुँचा। इस बार उसने रुपयों की जो रकम आफर की, वह सुनकर उसकी अक्ल ही चकरा गयी। शिरीन उस वक्त घर पर नहीं थी। गुणीदत्त को एकदम से कोई जवाब नहीं सूझा। उसे याद आया कि उसकी माँ लाजवन्ती को भी लोगों ने चाँद साहब से इसी तरह छीनने की कोशिश की थी। रुपयों का लोभ दिखाकर शिरीन को भी उसके बाप ने छीन ले जाना चाहा था।

अब क्या फिर वही ड्रामा दुहराया जाएगा?

लेकिन चाँद साहब और उसकी पकड़ में भी थोड़ा फर्क है। फर्क यह है, कि इस सौदे की रकम उसे नहीं मिलेगी। असल में जिससे उसकी किस्मत का रिश्ता जुड़ चुका है, उसी को लेकर यह खींचतान है।

गुणीदत्त को लगा कि इसका फौरन ही कोई निश्चित फैसला हो जाना चाहिए। इस आदमी को लौटाकर, वह अपनी किस्मत लौटा पाएगा या नहीं, यह जान लेना जरूरी है।

उस आदमी को उसने खुद जवाब नहीं दिया। शिरीन को अपने कमरे में बुलाकर, उसके आगे उस आदमी का प्रस्ताव रख दिया। शिरीन ठण्डे दिमाग से उसकी बात सुनती रही और कमरे से बाहर जाकर उस आदमी को बेहद रुखाई से लौटा दिया। फिर बेहद गुस्से से गुणीदत्त के सामने आ खड़ी हुई, पूछा, 'तुमने मुझे क्यों बुलाया ? मुझे फिल्मों में जाना चाहिए कि नहीं, यह तुम नहीं जानते ?'

गुणीदत्त से फौरन कोई जवाब नहीं देते बना। शिरीन जब कमरे में आयी थी, तो उसके संगमरमरी चेहरे को देखकर गुणीदत्त को लगा था कि वह भी मामूली लड़कियों की तरह दो लाख रुपयों से अभिभूत हो जाएगी। चाँद साहब की साढ़े सत्तरह वर्ष की लड़की एकबारगी उसकी दृष्टि से ओझल हो गयी।

शिरीन का जवाब सुनकर गुणीदत्त अचानक आत्मस्थ हो आया और उसकी तरफ परखती हुई निगाहों से देखता रहा, फिर हँसकर जवाब दिया, 'नहीं ! लेकिन आज सचमुच समझ गया। अब तुम्हें नहीं बुलाऊँगा।'

गुणीदत्त अब चाहे इस बात को स्वीकार करे या न करे, उसने उसी दिन ही शिरीन को साथ लेकर श्रावणी की छाँव में लौट जाने का फैसला कर लिया।

—

श्रावणी ने उसे अपने यहाँ सिर्फ आश्रय दिया, प्रश्रय नहीं। अगर प्रश्रय दे पाती तो शायद जिन्दगी की सब से बड़ी भूल होने से रह जाती।

श्रावणी ने शुरू के कुछ महीने गुणीदत्त को देखने-परखने में ही बिता दिए। उस आदमी में उसे कोई खास फर्क नजर नहीं आया। श्रावणी मानो कोई स्थिर-शान्त किनारा हो और किसी अजनबी, दुर्दम

व्यक्ति के यौवन की उद्दाम लहरें उससे टकराकर, उसे तोड़-फोड़ डालने को ग्रातुर हो उठी हों। लेकिन इस बार श्रावणी ने अपने को नि.शेष नहीं होने दिया। उसके सम्मोहन में आत्म-विस्मृत नहीं हुई। इसके लिए उसे अपने समूची ताकत से जूझना पड़ा है। अभी भी जब वह उसे छूता है तो उसके स्पर्श-मात्र से उसके तन-बदन में अजीब-सी सिहरन दौड़ जाती है। उसका मन तमाम वर्जनाएँ तोड़कर अपने को दे डालने को अकुला उठता है। लेकिन श्रावणी में अब इतनी ताकत आ गयी है कि वह अपने को मुक्त कर ले। तमाम मोह-पाश काटकर वह जैसे चाहे उसे आजमा सकती है।

गुणीदत्त ने कहा भी, 'ए जी, तुम्हें पता है, तुम कहीं से बदल गयी हो !' श्रावणी कभी हँस दी, कभी मुस्कराकर कहा, 'हो सकता है, शायद तुमने ही कहीं से बदल दिया हो।'

गुणीदत्त को उस दिन पहली बार हैरानी हुई, जिस दिन उसने स्थायी रूप से घर का इन्तजाम करना चाहा। शिरीन के लिए दो कमरे का अलग फ्लैट लिया गया। श्रावणी उसे अपने फ्लैट में जगह नहीं दे पायी यद्यपि यह फ्लैट भी उसके फ्लैट से बिल्कुल सटा हुआ था, लेकिन श्रावणी ऐसा कोई इन्तजाम करेगी, उसने नहीं सोचा था।

श्रावणी ने कहा, 'किसी-किसी वक्त मैं यहाँ नहीं रहती हूँ। लोग बेकार ही तरह-तरह की बातें बनाएँगे। इसकी क्या जरूरत है ? फिर यह कौनसा बड़ा खर्च है ? रुपये तो तुम बेशुमार कमा रहे हो।'

गुणीदत्त ने लाचार होकर शिरीन को और कुछ कहकर समझाने की कोशिश की। उसके सामने सफाई देते हुए कहा, उसकी बीवी प्रोफेसर किस्म की जीव है। उसकी अपनी पढाई-लिखाई है, कॉलेज की भी बहुत-सी लड़कियाँ पढने आती हैं, अतः एक ही घर में खेलों के अभ्यास से मुश्किल होगी। अभ्यास के समय घर पर अगर आदमियों की भीड़ रहेगी तो परेशानी होगी। इसलिए एक अलग फ्लैट लेना जरूरी है।

शिरीन ने उसकी बातों का क्या अर्थ लगाया वही जाने, वह चुपचाप गुणीदत्त की बातें सुनती रही, मुँह से कुछ भी न कहा, लेकिन अपने अलग रहने की बात वह विलायत में जूली को लिखे बगैर नहीं रह

सकी, जवाब में जूली ने लिखा—'चलो, जो इन्तजाम किया गया है वह तुम्हारे हक में बहुत अच्छा है। अब तुम अच्छी तरह देख-सुनकर अपने लिए एक शौहर भी ढूंढ़ लो, या मेरे पास चली आओ, मैं ही तुम्हारे लिए किसी को ढूंढ़ दूंगी।'

शिरीन ने मारे गुस्से के, उसके खत के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। गुणीदत्त को छोड़ने की बात वह सोच भी नहीं सकती।

इसी तरह बहुत सारे दिन-महीने और साल गुजरते रहे। गुणीदत्त बेहद व्यस्त रहने लगा। एक ओर जादू-खेलों की योजनाएँ, दूसरी ओर एक विशाल दल तैयार करना, उसे बेहद सुसंगठित ढंग से आगे बढ़ाना। अपने व्यक्तित्व की चरम सार्थकता की उपलब्धि ही उसका चरम लक्ष्य है। इससे कम में उसे सन्तोष नहीं हो सकता। लेकिन अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वह श्रावणी को लेकर कहीं बेहद बेचैनी और घुटन महसूस करता है। इन दिनों उसकी घुटन और बढ़ गयी है।

जिस श्रावणी ने ब्याह के सिर्फ तीन महीनों बाद अपनी नौकरी की दुहाई देकर, उसके साथ बाहर जाने से इन्कार कर दिया उसने गुणीदत्त के एक आग्रह पर कॉलेज की नौकरी छोड़ दी।

गुणीदत्त ने कहा, 'तुम अगर मेरे काम-काज की देख-रेख नहीं करोगी, तो मैं अकेला किस-किस तरफ देखूंगा ? खतो-किताबत करना हिसाब-किताब रखना, यह सब क्या मेरा काम है ?' फिर हँसकर एक वाक्य और जोड़ दिया, 'भाई, कॉलेज में तुम्हें कितनी तनखा मिलती है ? न हो मुझसे उसका डबल ले लेना।'

श्रावणी ने भी हँसकर कहा, 'तो फिर नौकरी पक्की है न ?'

'पक्की !···मेरे आँख मूंदने तक बिल्कुल पक्की।'

श्रावणी उसी दम राजी हो गयी। कहा, 'ठीक है !···लेकिन तुम्हारी उस जेनिफर उड की तरह इधर-उधर भाग-दौड़ नहीं कर सकूँगी। लेकिन कोई बात नहीं, तुम मेरे साथ दो-एक ऐसिसटेंट भी दे देना।'

श्रावणी के इस नये पद ने उसे एकदम से मालकिन ही बना दिया। कम्पनी के लोगों के प्रति उसका बर्ताव बेहद मर्यादित, लेकिन मधुर और सदय था। हर कोई उसकी श्रद्धा-सम्मान करता है। ऐसी मालकिन

पाकर वह लोग मन-ही-मन खुश भी थे। गुणीदत्त के लिए भी असन्तोष का कोई कारण नही था। उसने योग्य हाथों मे कम्पनी की जिम्मेदारी सौंपी है, यह समझने मे उसे देर नही लगी। श्रावणी ने भी उसके किसी आदेश या सलाह-मशविरे की कभी अवहेलना नही की। जरूरत पड़ने पर, वह हंसी-हँसी में ही अपनी राय दे डालती।

लेकिन नाम, यश, रुपयों की बरसात और सुसंगठन के बावजूद भीतर-ही-भीतर कही कोई सुराख रह ही गया था। गुणीदत्त का आवेगप्रवण मन वही सुराख ही तो नही चाहता है। यह सुराख शिरीन की ही वजह से था। उसके साथ भी श्रावणी के बर्ताव मे कहीं कोई फर्क नही आया। उसके प्रति वह वैसी ही धीर-गम्भीर और सहृदय मालकिन बनी रही।

यह सब क्या ईर्ष्या थी ?

नहीं, यह ईर्ष्या नहीं हो सकती, गुणीदत्त ने मन-ही-मन महसूस किया। उसकी बीवी बेहद उदार और दरियादिल है, यह बात वह शान से सिर ऊँचा करके कह सकता है। शिरीन की तनखाह दुगुनी कर देने मे श्रावणी का ही हाथ था। उसी ने कहा था, 'तुम्हारी जो इतनी आमदनी है उसमें से कम-से-कम पच्चीस प्रतिशत उसकी बदौलत कमा रहे हो। अत वह रुपया उसे ही मिलना चाहिए।'

शिरीन जितने दिनों बाहर रही, जेनिफर उड उसे मोटी तनखाह देती रही। गुणीदत्त के निर्देश पर उसे देना पड़ा था वह रुपया शिरीन के नाम से बैंक मे जमा होता गया। अभी भी यही सिलसिला चलता रहा। श्रावणी के प्रस्ताव से गुणीदत्त को खुशी हुई। उसने हँसकर कहा, "भई, तुम ही इस कम्पनी की कर्ता-धर्ता हो, मालकिन हो। तुम जो फैसला करोगी, वही होगा।

और हुआ भी वही, जो श्रावणी ने चाहा! इसके बाद से शिरीन के बैंक एकाउण्ट मे हर महीने बहुत मोटी-सी रकम जमा होने लगी। लेकिन दरअसल जहां दरार थी और जिसे गुणीदत्त ने भर देना चाहा था, वह रुपयों से नही भरी जा सकता थी।

यह शिरीन भी बड़ी मस्तमौला लड़की है। गुणीडाटा की

बहुरिया उससे परायी की तरह बर्ताव करे यह बात शुरू-शुरू में उसे बेहद असहनीय लगी। वह अक्सर उसके फ्लैट में आ धमकती, धमा-चौकड़ी मचाती और श्रावणी के सामने ही गुणीदत्त को आँखें दिखाती, लेकिन उसने खुद महसूस किया कि वह जिसके करीब पहुँचना चाहती है, वहाँ तक नहीं पहुँच पायी।

बाद में अकेले में गुणीदत्त से ही सवाल किया, 'अच्छा, मिसेज दत्त मुझे देख नहीं सकतीं। क्यों?'

गुणी ने हँसकर बीवी की हिमायत करते हुए कहा, 'वह तुम्हें देख सकती है या नहीं, यह तुम अपनी पास-बुक खोलकर देखो न।'

'हूँहँ! तुम लोगों से रुपया कौन कमबख्त चाहता है?' दरअसल वह मुझे एक बूंद भी नहीं सह सकती।'

यूँ अभ्यास के वक्त या स्टेज पर गुणीडाटा उसका गुरु था, लेकिन बाकी वक्त वह उस पर गुस्सा दिखाने या धमकी देने से बाज नहीं आती है।

उस दिन गुणीदत्त ने भी हँसकर जवाब दिया, 'तो फिर इसकी वजह तुम उसी से पूछ देखो न?' उसका ख्याल था कि श्रावणी को अगर इस लड़की के बारे में अच्छी तरह समझा दिया जाए, तो वह उसे बहुत दिनों तक अपने से अलग नहीं रख सकती।

शिरीन को जैसे इन सब से कोई मतलब ही नहीं था। एक दिन सीधे-सीधे श्रावणी से ही पूछ बैठी, 'अच्छा मैं तुम्हें बिल्कुल अच्छी नहीं लगती न? इसीलिए तुम मुझे इत्ता-सा प्यार भी नहीं करती हो। क्यों?'

श्रावणी ने कोई जवाब नहीं दिया, उसकी तरफ खामोश नजरों से देखती रही।

शिरीन ने फिर पूछा, 'तुम मुझे देखना तक पसन्द नहीं करती न?'

इस बार श्रावणी जरा मुस्करा दी। कहा, 'तुम्हें तो हजारों लोग नजर भरकर देखते हैं, तब भी तुम्हारा जी नहीं भरता?' इस वाक्य के फौरन बाद ही मालकिन के लहजे में उपदेश दिया, 'कौन तुम्हें किस नजर से देखता है, इस ओर ध्यान न देकर बस अपना काम ईमानदारी से किए जाओ, इसी में सबका भला है।' अन्त में एक दिन गुणीदत्त से ही नहीं रहा गया। उसने श्रावणी से सीधे-सीधे पूछा, 'सुनो, तुम शिरीन

से भी वैसा व्यवहार करोगी, जैसा कम्पनी के और कर्मचारियों से करती हो ?' :

श्रावणी उसके चेहरे पर आँखें टिकाए हुए चुपचाप उसकी बातें सुनती रही, फिर पूछा, 'तो फिर उससे कैसा व्यवहार करना होगा। बता दो।'

'सुनो, वह चाँद साहब की बेटी है। अगर चाँद साहब न मिले होते, तो मैं मैं न होता।

श्रावणी ने हल्के से हँसकर जवाब दिया, 'लेकिन, वह चाँद साहब की असली बेटी तो नहीं है। खैर, छोड़ो, यह बताओ, मेरे व्यवहार में ऐसी कौन-सी गलती हो गयी ?'

गुणीदत्त श्रावणी का पहला वाक्य सुनकर एक बारगी स्तम्भित रह गया। कहा, 'गलती की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, श्रावणी। लेकिन तुम्हें यह भी समझना चाहिए कि उसका दर्जा औरों के बराबर या इतना साधारण नहीं है। जाने कितने लोग, लाखों-लाखों रुपये देने को तैयार हैं। फिल्म में काम करने के लिए उसकी आरजू-मिन्नत करते हैं। तुम एक बार यह सोच देखो कि वह हमारी या तुम्हारी करुणा की मोहताज नहीं है।'

'जी, हाँ, सोच देखा है।'

उसकी बातें सुनकर श्रावणी नाराज नहीं हुई, बल्कि और मुलायम आवाज में कहा, 'उस लड़की का तुमने सचमुच बहुत नुकसान किया है।'

'मैंने नुकसान किया है ?' गुणीदत्त अवाक् रह गया। 'या वह खुद ही नहीं गयी ?'

'वह तो नादान है। अगर तुम उसकी राह न रोकते तो शायद जिन्दगी-भर वह सिर्फ तुम्हारी भानुमती बनकर तो नहीं रहती।'

गुणीदत्त ने इसके आगे बात नहीं बढ़ायी। उसके हृदय की आकांक्षाओं का असंयमित वेग अचानक ही मानो किसी और की मजबूत इच्छा-शक्ति से टकरा कर चूर-चूर हो गया। उसे अन्दर ही अन्दर घुटन होने लगी। वह बुरी तरह परेशान हो उठा।

लेकिन दूसरी साल वीतते-न-वीतते श्रावणी के मन में फिर कोई नयी हलचल जाग उठी है, यह गुणीदत्त नहीं जान सका।

श्रावणी वाहर से चाहे जितनी शान्त दिखती हो, भीतर से उसका मन वेहद अशान्त था। उसके सामने शिरीन को लेकर कोई समस्या नहीं थी। असल परेशानी तो इसी व्यक्ति को लेकर थी। दरअसल यह वात वह कभी भूल नहीं सकी कि इस आदमी ने किसी अन्धे नशे में उसे अपनी जिन्दगी में जगह दी है। यह वात वह कभी भूल भी नहीं सकती। उसकी वासना का उद्दाम वेग वह आज भी महसूस करती है। उसे यह वात भी अक्सर याद आती है कि एक दिन यही आदमी उसे वेहद उपेक्षा से छोड़कर चल दिया था और उसे विल्कुल भूलकर कई सालों तक दुनिया की सैर में मस्त रहा। खैर, यह वात कभी भूल भी नहीं सकती।

इतनी सारी छानवीन के वावजूद, श्रावणी को उसके रहस्यों का कोई ओर-छोर नहीं मिला। फिर भी वह उसे जानने का मोह नहीं छोड़ पायी। गुणीदत्त के स्पर्श, यहाँ तक कि सान्निध्य में भी, उसे जाने कैसे रहस्य की गन्ध आने लगी।

आज अचानक ही उस रहस्य के मूलधन में कमी होते देखकर, श्रावणी अपने को वुरी तरह दिवालिया महसूस कर रही थी। इस वार भी गलती उसी की थी। गुणीदत्त की योग्य संगिनी वनने की धुन में उसके जादू-खेलों का रहस्य जानने का शौक जाग उठा। तीन साल के अन्दर उसने सारे रहस्य जान लिए। इतने आश्चर्यजनक खेलों के मूल में, इतना कुछ धोखा है, यह वात जानकर भी वह अव तक अनजान वनी हुई थी। कोई भी खेल, चाहे जितना नया और रोमांचकारी क्यों न हो, उसका रहस्य जान लेने के वाद, वह फालतू लगने लगता है।

श्रावणी को लगा वह अपना होशोहवास खो वैठेगी। उसे अपने को कई-कई तरीकों से समझाना चाहा कि असल में जादू के नाम पर दिखाया जाने वाला खेल आँखों का महज धोखा भर है। सचमुच में ऐसे अजीवोगरीव खेल दिखा पाना नामुमकिन है।

लेकिन उसका मन कोई तर्क स्वीकार करने को राजी ही नहीं होता। कभी-कभी उसे लगा है, मानो वह भी किसी बहुत बड़े धोखे में पड़ी है और धोखे के सहारे ही जिन्दा है। दर्शक की सीट पर बैठकर खेल देखते हुए उसे हर दिन यही डर लगा रहता कि बस, अभी ही दर्शकों की निगाह में गुणीदत्त की चोरी पकड़ी जाएगी और उसे बेइज्जत होना पड़ेगा। लेकिन हैरत है! लोगों ने कभी यह सोचने की भी कोशिश नहीं की कि यह सब खेल कैसे मुमकिन हैं।

श्रावणी के पास भी अगर पहले वाली दृष्टि होती, तो शायद वह खुद भी उन खेलों पर दस गुना सम्मोहित होती। ऐसे वह इस बात में भी दिमाग नहीं लगाती कि लोग ऐसे पागलों की तरह रुपये क्यों बरसाते हैं। पिछले तीन सालों में कम्पनी की मालकिन की हैसियत में वह बहुत-सी नयी-नयी जगहें भी घूम आयी।

कम्पनी यद्यपि भ्रमणशील नहीं थी, फिर भी इधर-उधर के शहरों में से निमन्त्रण तो आते ही रहते थे। उन्हें जितनी जगह से बुलावा आता है, उसमें से आधे से अधिक जगहों का आमन्त्रण वह अस्वीकार कर देते हैं। जिन जगहों पर वे गये, श्रावणी ने गौर किया है, दर्शक साँस रोककर उसका खेल देखते हैं। लोगों की हैरत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है, कहीं से बूँद भर भी कम नहीं हो रही है।

गुणीडाटा और भानुमती। दो नाम अब ऐसे मिल-जुल गये हैं कि अब उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। जादू की दुनिया में भानुमती के कदम रखते ही खेलों में नया रंग आ गया है। समूचे हाल में एक स्वप्निल वातावरण-निर्माण में उन्हें देर नहीं लगती।

मानो एक प्रेमी युगल ने अपने आस-पास, रहस्यों जालीदार-चादर बुन ली हो और अब पंख पसारे गीतों की दुनिया में खोए हुए, परी देश की ओर उड़ानें भर रहे हों। श्रावणी उन्हें अपलक देखा करती है। कभी गर्दन घुमाकर विस्मय-विमुग्ध दर्शकों पर भी एक नजर देख लेती है।

भानुमती को आँखों के वशीकरण और हाथों के जादू से सम्मोहित करके स्टेज पर लाया गया। भानुमती की दोनों आँखें ढुलमुल हो आयीं

लेकिन दूसरी साल बीतते-न-बीतते श्रावणी के मन में फिर कोई नयी हलचल जाग उठी है, यह गुणीदत्त नहीं जान सका।

श्रावणी बाहर से चाहे जितनी शान्त दिखती हो, भीतर से उसका मन बेहद अशान्त था। उसके सामने शिरीन को लेकर कोई समस्या नहीं थी। असल परेशानी तो इसी व्यक्ति को लेकर थी। दरअसल यह बात वह कभी भूल नहीं सकी कि इस आदमी ने किसी अन्धे नशे में उसे अपनी जिन्दगी में जगह दी है। यह बात वह कभी भूल भी नहीं सकती। उसकी वासना का उद्दाम वेग वह आज भी महसूस करती है। उसे यह बात भी अक्सर याद आती है कि एक दिन यही आदमी उसे बेहद उपेक्षा से छोड़कर चल दिया था और उसे बिल्कुल भूलकर कई सालों तक दुनिया की सैर में मस्त रहा। खैर, यह बात कभी भूल भी नहीं सकती।

इतनी सारी छानबीन के बावजूद, श्रावणी को उसके रहस्यों का कोई ओर-छोर नहीं मिला। फिर भी वह उसे जानने का मोह नहीं छोड़ पायी। गुणीदत्त के स्पर्श, यहाँ तक कि सान्निध्य में भी, उसे जाने कैसे रहस्य की गन्ध आने लगी।

आज अचानक ही उस रहस्य के मूलधन में कमी होते देखकर, श्रावणी अपने को बुरी तरह दिवालिया महसूस कर रही थी। इस बार भी गलती उसी की थी। गुणीदत्त की योग्य संगिनी बनने की धुन में उसके जादू-खेलों का रहस्य जानने का शौक जाग उठा। तीन साल के अन्दर उसने सारे रहस्य जान लिए। इतने आश्चर्यजनक खेलों के मूल में, इतना कुछ धोखा है, यह बात जानकर भी वह अब तक अन-जान बनी हुई थी। कोई भी खेल,चाहे जितना नया और रोमांचकारी क्यों न हो, उसका रहस्य जान लेने के बाद, वह फालतू लगने लगता है।

श्रावणी को लगा वह अपना होशोहवास खो बैठेगी। उसे अपने को कई-कई तरीकों से समझाना चाहा कि असल में जादू के नाम पर दिखाया जाने वाला खेल आँखों का महज धोखा भर है। सचमुच में ऐसे अजीबोगरीब खेल दिखा पाना नामुमकिन है।

लेकिन उसका मन कोई तर्क स्वीकार करने को राजी ही नहीं होता। कभी-कभी उसे लगा है, मानो वह भी किसी बहुत बड़े धोखे में पड़ी है और धोखे के सहारे ही जिन्दा है। दर्शक की सीट पर बैठकर खेल देखते हुए उसे हर दिन यही डर लगा रहता कि बस, अभी ही दर्शकों की निगाह में गुणीदत्त की चोरी पकड़ी जाएगी और उसे बेइज्जत होना पड़ेगा। लेकिन हैरत है! लोगों ने कभी यह सोचने की भी कोशिश नहीं की कि यह सब खेल कैसे मुमकिन है।

श्रावणी के पास भी अगर पहले वाली दृष्टि होती, तो शायद वह खुद भी इन खेलों पर दस गुना सम्मोहित होती। ऐसे वह इस बात में भी दिमाग नहीं लगाती कि लोग ऐसे पागलों की तरह रुपये क्यों बरसाते हैं। पिछले तीन सालों में कम्पनी की मालकिन की हैसियत से वह बहुत-सी नयी-नयी जगहें भी घूम आयी।

कम्पनी यद्यपि भ्रमणशील नहीं थी, फिर भी इधर-उधर के शहरों में से निमन्त्रण तो आते ही रहते थे। उन्हें जितनी जगह से बुलावा आता है, उसमें से आधे से अधिक जगहों का आमन्त्रण वह अस्वीकार कर देते हैं। जिन जगहों पर वे गये, श्रावणी ने गौर किया है, दर्शक साँस रोककर उसका खेल देखते हैं। लोगों की हैरत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है, कहीं से बूँद भर भी कम नहीं हो रही है।

गुणीडाटा और भानुमती। दो नाम अब ऐसे मिल-जुल गये हैं कि अब उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। जादू की दुनिया में भानुमती के कदम रखते ही खेलों में नया रंग आ गया है। समूचे हाल में एक स्वप्निल वातावरण-निर्माण में उन्हें देर नहीं लगती।

मानो एक प्रेमी युगल ने अपने आस-पास, रहस्यों जालीदार-चादर बुन ली हो और अब पंख पसारे गीतों की दुनिया में खोए हुए, परी देश की ओर उड़ानें भर रहे हों। श्रावणी उन्हें अपलक देखा करती है। कभी गर्दन घुमाकर विस्मय-विमुग्ध दर्शकों पर भी एक नजर देख लेती है।

भानुमती को आँखों के वशीकरण और हाथों के जादू से सम्मोहित करके स्टेज पर लाया गया। भानुमती की दोनों आँखें ढुलमुल हो आयीं

और थकान से शिथिल और अवश लग रही हैं। मानो वह अपने होशो-हवास में वहाँ नहीं आयी है, उसे लाया गया है। उसे एक स्टूल पर खड़ा कर दिया गया। दोनों वाँहों के नीचे वैसाखी टिका दी गयी। जादूगर ने हाल में स्तब्ध वैठे दर्शकों के सामने उसे पूरी तरह अपने सम्मोहन से वाँध लिया। उसके जादू ने दर्शकों को भी सम्मोहित कर लिया। उसका सिर एक ओर को ढुलक गया और ठुड्डियाँ वक्ष को छूने लगीं। उसकी दोनों वाँहें शिथिल होकर वैसाखियों पर झूल गयीं। जादूगर ने उसके पाँव के नीचे से तिपाई भी खिसका ली। अव भानुमती सिर्फ दो वैसाखियों के सहारे पर टिकी रही। जादूगर ने उसकी कमर के नीचे हाथ डालकर उसको सीधा करके हवा में लिटा दिया, और वह आखिरी वैसाखी भी हटा ली गयी। हवा की सेज पर सोयी हुई स्वप्नपरी भानुमती !

फ्लोटिंग लेडी ! तैरती हुई लेडी !

दर्शकों के मंत्रमुग्ध हर्षोल्लास से श्रावणी आखिर कैसे साथ दे ? हाँ, वह उसके अभिनय की प्रशंसा जरूर करती है। लेकिन इतने दिनों से लगातार एक-सा ही ड्रामा, आखिर कव तक मन लुभा सकता है ?

पलायनी जादू-सम्राट गुणीडाटा ने अपने पलायनी खेल में थोड़ा-वहुत हेर-फेर कर डाला। स्टेज पर एक वड़ा-सा ड्राम लाकर रख दिया गया। देखने में लगता था, उसमें पूरे-के-पूरे कई आदमी समा जाएँ, लेकिन उसमें दो लोगों के घुसने की कोई गुंजाइश नहीं थी। उसके भीतर भानुमती को जवर्दस्ती ठूँसकर, जादूगर ने ड्राम का ढक्कन वन्द करके ताला लगा दिया। दर्शकों में से ही कोई आदमी स्टेज पर आया और ताले को हिला-डुलाकर देखा और चावी लेकर चला गया।

जादूगर गुणीडाटा हाथ में एक काली चादर लिए उस वन्द ड्राम के ऊपर खड़ा हो गया। उसने चादर खोलकर ओढ़ लिया और घुटने समेट-कर ड्राम पर वैठ गया। जरा देर वाद ही वह दुवारा उठ कर खड़ा हो गया। चादर हटते ही, दर्शकों ने आश्चर्यचकित होकर देखा, वहाँ गुणीडाटा नहीं, भानुमती है। सद्यः नींद से जागी हुई परी की तरह भौचक्की-सी, दर्शकों की ओर देखती हुई।

ऐसे ही भालू का खेल देखकर भी दर्शक हमेशा की तरह आश्चर्य-चकित और ठगे-से रह गये। एक बड़े से पेड़ को जड़ समेत स्टेज पर ला खड़ा किया गया। सबके सामने ही भानुमती ने भालू का और गुणीडाटा ने शिकारी का रूप ओढ़ लिया। दोनों उसी पेड़ के चारों ओर, एक-दूसरे का पीछा करते हुए दौड़ने लगे। अचानक वे दोनों ठिठककर रुक गये। शिकारी और भालू एक-दूसरे की तरफ मुँह घुमाकर खड़े हो गये। दर्शकों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब उन्होंने देखा कि भालू की मुखौटे में गुणीडाटा खड़ा है और शिकारी के कपड़ों में जो उनके सामने खड़ी है, वह भानुमती है।

ऐसे ही बहुत सारे खेल आश्चर्य में डाल देते थे। छूटी हुई गोली का दाँत से पकड़ लेना। आदमी को आरी से काटकर दो टुकड़े कर देना। ऐसे बहुत तरह के पलायनी जादू के चमत्कार बेहद लोकप्रिय थे। तमाम खेलों के साथ भानुमती जुड़ी हुई थी। जादूगर गुणीडाटा के जादू खेलों से परे दर्शक उसकी कल्पना भी कैसे कर सकते थे?

रहस्यों को जान लेने का मतलब है जादू खेलों का बेड़ा गर्क कर देना।

लेकिन श्रावणी ने इन जादू-खेलों का बूँद-बूँद रहस्य जान लिया। अब वह लाख कोशिश के बावजूद जादू की दुनिया में खो नहीं सकती। लोग जब भानुमती और जादूगर गुणीडाटा की तारीफों की पुल बाँधने लगते, वह निर्लिप्त रहती है। उसे अक्सर आशंका हुई है कि जादू के नशे ने सिर्फ दर्शक ही नहीं, गुणीडाटा और भानुमती को भी [illegible]

सोलहों कलाओं सहित विकास पर ही थी। दुनिया का आश्चर्यजनक जादूगर गुणीडाटा उसका निकटतम व्यक्ति है। बस, यही बात वह गर्व से कह सकती थी। कभी-कभी मिलनी या उसके भाइयों को पकड़कर उनके यार-दोस्त भी मैजिक देखने चले आते। शो के बाद, गुणीडाटा से उनका परिचय कराया जाता। उससे मिलकर उसके प्रति इतना आदर-भाव देखकर, वह पिघल जाती।

मिलनी दो-एक बार पापा को भी गुणीदत्त का शो दिखाने को खींच लायी। कहा, 'तुम्हारा दामाद कैसे-कैसे करिश्मे दिखाता है, जरा, देखो तो सही।'

पापा भी उसका शो देखकर विस्मित रह गये। शो के बाद श्रावणी के सामने ही अपने गले पर हाथ फिराते हुए आश्चर्य से भरकर पूछा, 'सही ही तो, इतना कुछ आखिर वह करता कैसे है?'

लेकिन हैरत है! श्रावणी को जरा-सी भी खुशी नहीं होती। इसमें उसे खुश होने लायक कोई बात नहीं लगी। उल्टे मिलनी पर ही सारा गुस्सा उतारते हुए कहा, 'आखिर पापा को यहाँ तक खींच लाने की क्या जरूरत थी?'

श्रावणी मारे गुस्से के हाँफने लगी। उसकी ये प्रतिक्रियाएँ जाने क्या रंग लातीं लेकिन इसी बीच काफी दिनों के लिए वह फिर एक गोरखधन्धे में उलझ गयी।

वह एक बच्चे की माँ बनी—अपने पहले बच्चे की माँ! वह भी बेटा!

गुणीदत्त को जिस दिन यह शुभ सूचना मिली, उस दिन पहली बार श्रावणी ने उसे जादू मंच से उतरकर, वास्तविकता की ठोस धरती पर खड़े पाया। यह संवाद सुनकर कुछ पलों के लिए वह जैसे विमूढ़ दिखा, फिर एकबारगी खुश हो गया।

श्रावणी ने गुणीदत्त की पल-भर की विमूढ़ता के अन्दर असलियत की झलक पा ली। उसके आगे यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि उसे खुशी जाहिर करने में थोड़ी देर लगी। श्रावणी मन-ही-मन तर्कों में उलझी रही। उसे इस समाचार पर खुश होना चाहिए, बस, इसलिए वह

खुश हो गया। उसका विस्मय देखकर तो यही लगा था, मानो किसी ने उसके हाथ-पांव बांध दिए हों। जादू के खेल-तमाशे दिखाकर जो आदमी उन्मुक्त मस्त-मौला-सा घूम रहा था, उसके पैरों मे मानो लोहे की एक मोटी-सी जंजीर डाल दी गयी हो।

गुणीदत्त यद्यपि उसके बेटे का बाप बन चुका है, लेकिन श्रावणी के मन मे यह सन्देह, जैसे जड़ पकड़ता गया। उसके घर मे बेटा हो, बीवी हो, भरा-पूरा परिवार हो, लेकिन उन सबके बीच यह आदमी ऐसा है, जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होना चाहता है। इस मामले मे वह किसी से कोई समझौता करने को राजी नही है। उसे जो मिला है, उसमें रत्ती-भर भी कम मिले तो उसका मूड खराब हो जाता है। और वह रह-रह कर अन्दर-ही-अन्दर तिलमिला उठता है। श्रावणी अगर आंचने बैठे तो इस आदमी मे उसे कोई बड़ा दोष भी नही दिखता। उसके बेटे का बाप, उसके बेटे को लाड़-दुलार के अलावा, उसके सुख-सुविधा का भी पूरा ध्यान रखता है। लेकिन इसके बदले अपनी जरूरतों में इत्ती-सी भी कमी स्वीकार करने को तैयार नहीं है। श्रावणी अभी भी उसकी कम्पनी की मालकिन थी। उसका बेटा अब धीरे-धीरे छः महीने का होने को आया, लेकिन अभी भी वह काम-काज की ओर से सर्वथा उदासीन थी। गुणीदत्त को उसकी यह लापरवाही अच्छी नहीं लगी।

अब वह पहले की तरह उसके काम-धन्धे मे ध्यान भी नही देती, गुणीदत्त ने इस बात को लेकर बहुत बार शिकायत भी की। लेकिन जाने क्यों, श्रवाणी के मन मे यह ख्याल पुख्ता होता गया कि उसकी असली शिकायत बस, इतनी-सी ही नही है। दरअसल, वह अनजाने मे ही उसके बेटे से ईर्ष्या करता है। अपने हक के आगे वह बेटे के हक को भी अहमियत देने को तैयार नही।

श्रावणी को अपना यह अन्दाज बहुत गलत भी नही लगा।

लेकिन उसके बेटे के आने से एक और व्यक्ति को बेहद खुशी हुई है। श्रावणी इस बात से भी इन्कार नहीं कर सकी—वह थी शिरीन। वह शुरू-शुरू मे उस बच्चे को लेने में हिचकिचाती थी। अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से उसे एकटक निहारा करती थी। अन्त मे एक दिन बहुत

डरते-डरते, उसे गोद में उठा लिया। धीरे-धीरे उन दोनों में यथावत धमाचौकड़ी, छीन-झपट शुरू हो गयी। शो से काफी रात गये लौटने पर भी, गहरी नींद में सोए हुए बच्चे की एक झलक देखे बिना वह अपने फ्लैट नहीं जाती। बच्चा भी उसे देखते ही उछलकर उसकी गोद में आने को उतावला हो उठता है। गुणीडाटा और श्रावणी के सामने ही, वह अपने बेटे के बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ करती है—'देखना, बड़ा होकर, यह अपने बाप से भी बढ़कर मशहूर जादूगर बनेगा।' श्रावणी को अपनी बात पर भौंहें सिकोड़ते देखकर वह खिल-खिलाकर हँस देती है। कभी कहती, 'उहूँ ! नन्हा-सा है, तो क्या हुआ ? दुनिया में सफल जादूगर बनने की सब से बढ़िया उम्र यही है। सब लोग हाथ की मुट्ठी में रहते हैं। बच्चे की नन्ही-नन्हीं दँतुलिया चमक उठती, साथ ही शिरीन का ठहाका दुगने वेग से गूँज उठता।

कभी-कभी अपनी राय देते हुए कहती, 'गुणीडाटा ! तुम्हारा बेटा, रत्ती भर भी तुम पर नहीं गया है। देखो न, इसकी शक्ल बिल्कुल माँ पर गयी है। इसके सारे लक्षण भी माँ जैसे होंगे।' फिर जोर से एक ठहाका लगाकर कहती, 'लेकिन, अगर यह भी उसकी तरह गम्भीर हुआ, तो क्या होगा ?'

उसकी बातों पर कभी-कभी श्रावणी को भी हँसी आ जाती। गुणीदत्त को यह सब बेहद भला लगता। उसे विश्वास होने लगा कि इस लड़के की वजह से श्रावणी भी कभी न कभी शिरीन को सचमुच प्यार करने को विवश हो जाएगी।

शिरीन ने कभी-कभी यह सवाल भी किया कि उसका बेटा उसे क्या कहकर पुकारेगा ? फिर खुद ही काफी सोच-विचार के बाद राय दी, 'भाई, तुम लोगों में वो मौसी-फौसी कुछ कहते हैं न···वही तुम्हारा बेटा भी कहेगा।'

श्रावणी ने छूटते ही सवाल किया, 'क्यों, बुआ भी तो कह सकता है ?'

शिरीन ने उसकी बात समझने की कोशिश की। बुआ ! यानी बेटे के बाप की बहन ! फिर बिना कुछ सोचे-समझे सिर हिला दिया, 'नहीं !

नही ! बुआ नहीं—मौसी ही बुलाएगा ! माँ की बहन।' फिर अचानक हँसी के मारे दोहरी हो गयी। कहा, 'सुनो, तुम मुझे देख नही सकती न ? यह इसकी सजा है ! मेरा बेटा मुझे मौसी कहकर बुलाएगा।'

श्रावणी होंठों में हँस दी। और दूर बैठे हुए गुणीदत्त की ओर निगाह फेंकते हुए अचानक ताना कसा, 'तुम्हें यूँ हँसते देखकर लगता है कि तुम्हें भी यही रिश्ता ज्यादा पसन्द है।' फिर शिरीन की ओर देखते हुए, मुलायम आवाज में फैसला सुनाया, 'देखो, मौसी-बुआ कुछ नही चलेगा। बड़ा होकर वह भी तुम्हें भानुमती कहकर ही पुकारेगा।'

शिरीन सकपका गयी। पूछा, 'क्यों ? भानुमती क्यों पुकारेगा ?'

'अपनी सूरत जरा आइने में देख आओ, पता चल जाएगा। भई, जब वह बड़ा होगा तो उसके पास भी तुम्हारी खूबसूरती देखने को आँखें होंगी।'

शिरीन ने जोर से सिर हिलाया। उसका चेहरा शर्म से लाल हो उठा। कहा, 'अरे वाह ! ऐसा कब्भी नही होगा। बड़ा होकर उसने कभी भानुमती कहकर पुकारा तो मैं उसकी पिटैया करूँगी।'

जिन्दगी अगर यूँ भी कट जाती, तो गुणीदत्त शायद सुखी होता। लेकिन इन आपसी छेड़छाड़ के बावजूद वह बहुत छोटी-छोटी बातो की वजह से बुझने लगा है।

ऐसे ही पूरा एक साल बीत गया। बच्चा तुतलाकर बोलने लगा है। हर वक्त डगमगाते हुए इधर-उधर डोलता रहता है। दिन-भर में कई-एक घंटे तो शिरीन के ही फ्लैट में रहता है। माँ के पास लौटकर भी, वह अपनी तोतली भाषा और मौन इशारों में मौसी के यहाँ जाने की जिद करता है।

अभी से बेटे का शिरीन की तरफ झुकाव देखकर गुणीदत्त ने एक दिन हँसी-हँसी मे श्रावणी से दिल की बात कह डाली। उस समय उसके चेहरे पर खुशी की चमक थी।

श्रावणी ने भी बिना कुछ सोचे-समझे कह डाला, 'इतना प्रश्रय दोगे तो लड़का दुख पाएगा। उसे छोड़ने में तकलीफ होगी।'

गुणीदत्त ने विस्मित होकर पूछा, 'छोड़ने में तकलीफ होगी,

मतलव ?'

श्रावणी ने इसका मतलव जैसे पहले से ही निश्चित कर लिया था। उसने भी पलटकर सहज भाव से एक सवाल किया, 'तुमने क्या सोचा है, उसे इन्हीं सब गोरखधन्धों में उलझाए रखोगे ?'

गुणीदत्त ने कोई जवाव नहीं दिया। वह एकटक उसके चेहरे को घूरता रहा।

श्रावणी ने अपने काम में मन लगाने की कोशिश करते हुए कहा, 'पाँच वरस का होते ही मैं अपने लड़के को देख-सुनकर, किसी अच्छे-से वोर्डिंग में डाल दूँगी।'

'देखा जाएगा, पाँच साल का हाने में अभी वहुत देर है।'

गुणीदत्त अगर इन वातों पर ध्यान नहीं देता या हँसकर उड़ा देता तो शायद सारी वातें आसान हो जातीं। लेकिन गुणीदत्त से रहा नहीं गया। श्रावणी की वातों ने उसके मन में अजव-सी हलचल मचा दी। श्रावणी अपने वेटे को यहाँ नहीं रखेगी। उसका ख्याल है कि उसका वेटा यहाँ रहकर आदमी नहीं वन सकता। उसका वेटा क्या इस माहौल में आदमी नहीं वन सकता ? श्रावणी उसे आखिर समझती क्या है।

इतने दिनों वाद गुणीदत्त की आँखों के आगे वहुत-सी नयी-नयी वातें विल्कुल स्पष्ट हो गयीं। उसके काम-धन्धे और कम्पनी के इन्तजाम से श्रावणी ने अपने को समेट लिया है। यह वात जैसे अव दुवारा चुभ गयी। यही नहीं, उसे तो यह भी लगा कि माँ वनने के वाद से श्रावणी धीरे-धीरे उससे वहुत दूर होती जा रही है। गुणीदत्त भी जरा-जरा-सी वातों में वजह-वेवजह खोजने लगा है। इन दिनों उसकी शिकायतें, क्षोभ और माँगें भी वढ़ने लगी हैं।

श्रावणी ने उसकी वातों का कभी कोई खास विरोध नहीं किया। हाँ, कभी-कभी वह अपनी निगाहें उसके चेहरे पर टिका देती—उसे एकटक देखा करती है।

हठात् एक दिन गुणीदत्त ने सूचना दी कि वह महीने-डेढ़ महीने के लिए अपने दल-वल समेत दूर जा रहा है। वह यहाँ की नीरस जिन्दगी से वोर हो गया है।

श्रावणी ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की। बीच-बीच में उसे अक्सर बाहर जाना पड़ता है, जाना जरूरी भी है! वर्ना इस धन्धे की लोकप्रियता में जंग लगने लगता है। लेकिन इस बार सुदूर पूर्वी देशों से लौट आने के बाद, महीने-दो महीने के लिए भी वह बाहर नहीं गया। श्रावणी ने इस बारे में उससे कोई बात नहीं की। अपने लिए सफाई देते हुए कहा कि इतने छोटे बच्चे को लेकर, उसके लिए यात्रा करना मुश्किल है। उसे लेकर बेकार की परेशानी होगी। अतः वह यहीं रहेगी।

गुणीदत्त जानता था कि वह नहीं जाएगी। बच्चे को लेकर परेशानी होगी, यह बात भी सच थी। लेकिन जाने क्यों उसका मन इन बातों को सहजता से नहीं ले पाया। उसे याद आया, जब से उसने होश सम्हाला है, तकलीफों और लापरवाहियों के बीच गुजरते हुए, वह जिन्दगी के इस मोड़ पर आ खड़ा हुआ है।

शिरीन ने भी श्रावणी को समझाने की कोशिश की फिर नाराज होकर कहा, 'तुम नहीं जाओगी तो मैं अपने बेटे के बिना इतने दिनों कैसे रह पाऊँगी?'

'अरे, कोशिश तो करना, रह लोगी।'

शिरीन की अक्सर उससे झगड़ा लेने की तबीयत हुई है। अपना हक जमाते हुए बहुत-सी बातें कहने-सुनने को मन हुआ।

लेकिन श्रावणी से ऐसा ठंडा जवाब सुनकर वह चुप हो गयी। उससे कुछ बोला ही नहीं गया।

गुणीदत्त और शिरीन पूरे डेढ़ महीने तक बाहर रहे। इस बीच श्रावणी को गुणीदत्त का सिर्फ एक खत मिला। लेकिन शिरीन ने उसे तीन-तीन खत लिख डाले। पहले दो खतों में उसका कुशल समाचार पूछते हुए, मैजीशियन साहब के खिलाफ ढेर सारी शिकायतें लिखीं। लेकिन वह शिकायतें बहुत स्पष्ट नहीं थीं। शिरीन ने लिखा है—गुणीडाटा किसी की कोई बात नहीं सुनता। दिनों-दिन बेहद मूडी होता जा रहा है।

तीसरे खत में साफ-साफ शिकायत की है—[illegible]टा आजकल

बेतहाशा शराब पीने लगा है। प्रायः हर रोज पीता है और उसे शराब फूटी आँखों भी नहीं सुहाती। बेहतर हो कि मिसेज दत्त यानी श्रावणी गुणीदत्त को डाँटकर एक कड़ा-सा खत लिखे।

श्रावणी ने गुणीदत्त को कोई खत-वत नहीं लिखा। उसके लौट आने पर भी उससे कुछ नहीं कहा। लेकिन लौटकर गुणीदत्त को श्रावणी कुछ बदली हुई लगी।

बेटे के लिए शुरू से ही एक अलग आया रखी गयी थी। गुणीदत्त ने लौटकर देखा, उसके लिए सीधा-सादा-सा एक और प्रौढ़ आदमी भी रक्खा गया है। बेटे की देखभाल की सारी जिम्मेदारी उन दोनों को सौंपकर श्रावणी ने अपने को पूरी तरह मुक्त कर लिया। इससे फुर्संत पाकर, उसने कम्पनी के कामों में मन लगाया। उसने कम्पनी का सारा इन्तजाम अपने हाथों में ले लिया। आखिर वह मालकिन ठहरी। वह पिछले दिनों से भी अधिक कर्तव्यनिष्ठ हो उठी।

गुणीदत्त के लिए क्षोभ या शिकायत की कोई वजह नहीं थी। कभी-कभी हाथ फैलाकर कोई बेमतलब की माँग भी कर बैठा तो श्रावणी से कोई विरोध नहीं मिला। लेकिन जाने क्यों, वह अपने को नॉर्मल नहीं महसूस कर पाता है। उसे लगता है कि उसकी सीधी, सहज जिन्दगी में कहीं कोई दरार पड़ गयी है, जिसे वह देख नहीं पा रहा है।

सोलह

श्रावणी के सिर से कम-से-कम उसके जादू का नशा उतर चुका है, गुणीदत्त यह महसूस कर रहा था। किसी नयी जगह पर श्रावणी दर्शकों

किसी दिन उसकी तरफ चुपचाप एकटक देखती रहती, फिर अचानक पूछती, 'गुणीडाटा, तुम्हें क्या हुआ है ?'

गुणीडाटा कोई जवाब नहीं दे पाता है। अतः अन्दर-ही-अन्दर उसकी तिलमिलाहट और बढ़ जाती है। इन दिनों वह बात-बात पर खीजने लगा है।

शिरीन को इसकी कोई वजह समझ में नहीं आयी। अभी कई दिनों पहले तक उसकी बहुरिया को लेकर उसने गुणीडाटा से रार-तकरार की थी। खूब सारी शिकायतें भी जड़ी थीं, 'देखो, तुम्हारी बहुरिया ने यह कहा, मेरी ओर इस तरह देखा। तुम्हारी बीवी हमेशा कोई न कोई ऐसी बात कह देती है कि मेरी जुबान तक को पाला मार जाता है।'

उसकी शिकायतों के जवाब में गुणीदत्त हँस दिया। हँसी-हँसी में अपनी बीवी का पक्ष लेते हुए उससे बहस भी की है और आपसी मन-मुटाव एकबारगी पिघलकर बह भी गया है।

लेकिन इधर दिन-पर-दिन सारी बातें जैसी अजीब होती जा रही हैं। अब शिरीन उसकी बीवी के खिलाफ कभी शिकायत भी करती है, तो वह श्रावणी की हिमायत नहीं करता है। अतः शिरीन ही सकपकाकर चुप हो जाती। वैसे मिसेज दत्त के लिए उसके मन में कितना आदर भाव है, यह तो सिर्फ वही जानती है।

इन दिनों गुणीडाटा जब अन्यमनस्क मनःस्थिति में होता है तो उसकी ओर खामोश नजरों से एकटक देखा करता है। शिरीन उसकी यह हालत देखकर मन-ही-मन चिन्तित हो उठी। आजकल गुणीडाटा हँसता क्यों नहीं है ? दुनिया-भर में गुणीडाटा के जोड़ का एक भी व्यक्ति होगा, उसे विश्वास नहीं होता। ऐसे दुर्लभ इन्सान के हाथों उसे सौंप देने के लिए वह आज भी अपने साहब जी के प्रति मन-ही-मन कृतज्ञ है। दरअसल गुणीडाटा को सिर्फ साहब जी ने ही पहचाना था।···लेकिन क्या मिसेज दत्त उसे नहीं पहचान पायीं ? मिसेज दत्त ! उसकी निगाह इतनी तेज है, इतनी समझदार है—वह क्या उसके गुणीडाटा को पहचानने में गलती कर सकती है ?

शिरीन के मन में अगर कोई बात जाग उठती है तो वह उसे व्यक्त

किए बिना नहीं रह सकती। उस दिन जब वह लड़के को लेने गयी, तो हठात् ही श्रावणी से पूछ बैठी, 'अच्छा, आपको मालूम है, गुणीडाटा को क्या हुआ है ?'

श्रावणी मेज पर सिर झुकाये हुए कोई हिसाब मिला रही थी। सब गड़बड़ हो गया ! उसने धीरे से सिर ऊपर उठाकर पूछा, 'क्यों ?'

श्रावणी की ठण्डी दृष्टि और अपने प्रश्न के उत्तर में ऐसा संक्षिप्त, सा सवाल सुनकर शिरीन सकपका गयी। इन्हीं कारणों से उसका निश्छल, खुशमिजाज मन, यहाँ आकर आहत हो उठता है। अपने शब्दों पर जोर देते हुए दुबारा पूछा, 'तुम्हें क्या कुछ भी नहीं लगता ? तुम्हें क्या सचमुच कुछ नजर नहीं आता ?'

पलभर को श्रावणी के दोनों कान गर्म हो उठे। उसने धीरे से कुर्सी खिसका ली और घूमकर, उसके आमने-सामने बैठ गयी। पूछा, 'क्या देखने को है ? मुझे क्या दिखाई नहीं दिया ?'

शिरीन का सारा धीरज टूट गया। वह अपना गुणीडाटा पर किसी से कम हक नहीं समझती। उसने सिर हिलाकर कहा, 'तुम समझ नहीं रही हो, गुणीडाटा आजकल हँसता क्यों नहीं है ? वह खुश क्यों नहीं दिखाई देता ? तुम नहीं जानती, पहले वह कितना खुशमिजाज आदमी था ! कितना फुर्तीला और हर बात में कितना उत्साही दिखता था ! गुणीडाटा के होंठों से अगर हँसी ही गायब हो गयी तो उसके पास बच क्या रहा ? अन्त में यह जादू-वादू भी बर्बाद हो जाएगा।

श्रावणी की निगाहें उसके चेहरे को एकटक घूरती रहीं। इस लड़की ने इससे पहले कभी ऐसी बातें नहीं की थीं। एक साथ इत्ते सारे वाक्य भी कभी नहीं बोली थी। श्रावणी ने कहा, 'अच्छा, अभी जाओ। बाद में सोचकर देखूँगी। अभी मैं व्यस्त हूँ।'

श्रावणी फिर अपने हिसाब-किताब में दत्तचित्त हो गयी। शिरीन भी बच्चे को लिए बिना, पैर पटकती हुई बाहर चली गयी। उसके जाने के बाद श्रावणी चाहकर भी हिसाब में दुबारा मन नहीं लगा पायी।

रात में ठीक जगह पर उसने बात उठायी,

कि आजकल तुम्हें क्या हुआ है ? पहले शायद तुम और तरह के थे—यानी हमेशा खुश रहते थे, हँसते रहते थे—'

गुणीदत्त उसकी बातों को अगर हँसकर उड़ा देता, तो कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लगता। लेकिन वह एकदम से विगड़ उठा। उसने झुँझलाकर कहा, 'उसे डाँट क्यों नहीं दिया ?'

'वाह! डाँटती क्यों ? वह लड़की बहुत सरल स्वभाव की है। उसे जो लगा वह सरल भाव से बोल गयी।' श्रावणी ने उसके चेहरे पर उसी तरह निगाहें जमाए हुए पूछा, 'तुम्हारी तबीयत खराब है या सचमुच तुम्हें कुछ हुआ है ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर जताया कि उसे कुछ नहीं हुआ है। इस प्रसंग से बचने के ख्याल से बात बदलते हुए कहा, 'असल में कुछ दिनों से मैं एक नये खेल के बारे में सोच रहा हूँ—'

श्रावणी ने इसके आगे कुछ नहीं पूछा। यह भी नहीं कहा कि उसे नये-नये खेलों के बारे में सोचते हुए उसने बहुत बार न भी देखा हो, तो भी शिरीन ने तो उसे पहले भी देखा है। अगर यही बात है तो शिरीन ने ऐसा क्यों कहा ?

यह सच है कि जादू-खेलों के बारे में उसे बहुत चिन्तन-मनन, एकाग्र निष्ठा और अभ्यास की जरूरत है। खेलों के बारे में सोचने-गुनने में बुद्धि की जरूरत है। गुणीदत्त भी अपने खेलों के बारे में गम्भीरता से सोच-विचार करता, शिरीन को साथ लेकर नयी-नयी योजनाओं की परिकल्पनाएँ करता। उसके अभ्यास में भी कहीं कोई कमी नहीं थी। लेकिन जूली एण्डरसन की तरह श्रावणी इन को सहज एकाग्र साधना के रूप में नहीं ले पाती, गुणीदत्त ने यह समझ लिया था। वह घड़ी देखकर ठीक वक्त पर उसे बुला लाने को आदमी भेज देती है। उसके न जाने पर चुपचाप खुद आकर खड़ी हो जाती है। गुणीदत्त को उसका यह रूप और भी दमघोंटू लगता है।

इन दिनों वह अपनी साधना में भी बहुत कम ध्यान लगा पाता है। यह बात गुणीदत्त से बेहतर और कौन जान सकता है ? कई साल पहले तक शिरीन को साढ़े सत्रह साल की बम्बइया छोकरी ही समझता

रहा। वह बेहद आत्म-विश्वास के साथ उससे अपनी किस्मत का अटूट रिश्ता जोड़े रहा। एकान्त सान्निध्य के क्षणों में भी कभी किसी संकोच की दीवार नहीं खड़ी होने दी। लेकिन जो काम जेनिफर उड और जूली एण्डरसन नहीं कर सकीं, श्रावणी वही कुछ करने में सफल हो गयी। उसने वही कुछ किया भी। आहिस्ते-आहिस्ते उस लड़की को देखने की अदा सिखायी। उसे देखने लायक बना दिया।

कम-से-कम गुणीदत्त को यही लगा और यह सब सोच-सोचकर वह और चिढ़ गया।

शिरीन अब करीब सत्ताईस साल की होने को आयी। हालाँकि वह बीस-इक्कीस से अधिक की नहीं दिखती है।

गुणीदत्त अब अकेले में शिरीन से पहले की तरह नजरें नहीं मिला पाता। उसके इतने करीब होने के अहसास को भुलाकर, उसे खेल सिखाने में भी हिचकिचाहट होने लगी है। यूँ वह सारे कर्तव्य निभाता है। उसे खेल भी सिखाता है।

लेकिन जो काम वह बेहद सहज भाव से करता था, अब उसकी जगह मुखौटा ओढ़ना पड़ता है। उसे अपने पर ही क्षोभ और ग्लानि होती है। वह मन-ही-मन अपने प्रति भयंकर अविश्वास से तिलमिला उठता है।

जब वह और कुछ नहीं पाता तो उसका सारा गुस्सा श्रावणी पर ही बरस पड़ना चाहता है। लेकिन वहाँ पर भी वह चुप रहकर अपने को संयत किए रहता है। वह जानता है, उसकी खिजलाहट व्यक्त होते ही श्रावणी उसकी तरफ खामोश नजरों से एकटक देखती रहेगी। मानो कोई बहुत ऊँची जगह पर खड़े होकर किसी बौने को देख रही हो। श्रावणी कभी उससे झगड़ा नहीं करती है। वह उसकी बात काटने की भी कोशिश नहीं करती, बस बेहद मीठेपन से दो-एक ऐसी चुटकी लेगी, कि गुणीदत्त को एकदम से कोई जवाब ही नहीं सूझता। उसकी धीर-गम्भीर मूर्ति के सामने गुणीडाटा मारे खीज के होंठ चबाने लगता है।

दोनों के बीच अनजाने में ही एक अजीब-सा मानसिक दुराव जैसे जड़ पकड़ता जा रहा था। गुणीदत्त जाने किन उदास और तकलीफ-

कि आजकल तुम्हें क्या हुआ है ? पहले शायद तुम और तरह के थे—यानी हमेशा खुश रहते थे, हँसते रहते थे—'

गुणीदत्त उसकी बातों को अगर हँसकर उड़ा देता, तो कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लगता। लेकिन वह एकदम से बिगड़ उठा। उसने झुँझलाकर कहा, 'उसे डाँट क्यों नहीं दिया ?'

'वाह! डाँटती क्यों ? वह लड़की बहुत सरल स्वभाव की है। उसे जो लगा वह सरल भाव से बोल गयी।' श्रावणी ने उसके चेहरे पर उसी तरह निगाहें जमाए हुए पूछा, 'तुम्हारी तबीयत खराब है या सचमुच तुम्हें कुछ हुआ है ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर जताया कि उसे कुछ नहीं हुआ है। इस प्रसंग से बचने के ख्याल से बात बदलते हुए कहा, 'असल में कुछ दिनों से मैं एक नये खेल के बारे में सोच रहा हूँ—'

श्रावणी ने इसके आगे कुछ नहीं पूछा। यह भी नहीं कहा कि उसे नये-नये खेलों के बारे में सोचते हुए उसने बहुत बार न भी देखा हो, तो भी शिरीन ने तो उसे पहले भी देखा है। अगर यही बात है तो शिरीन ने ऐसा क्यों कहा ?

यह सच है कि जादू-खेलों के बारे में उसे बहुत चिन्तन-मनन, एकाग्र निष्ठा और अभ्यास की जरूरत है। खेलों के बारे में सोचने-गुनने में बुद्धि की जरूरत है। गुणीदत्त भी अपने खेलों के बारे में गम्भीरता से सोच-विचार करता, शिरीन को साथ लेकर नयी-नयी योजनाओं की परिकल्पनाएँ करता। उसके अभ्यास में भी कहीं कोई कमी नहीं थी। लेकिन जूली एण्डरसन की तरह श्रावणी इन को सहज एकाग्र साधना के रूप में नहीं ले पाती, गुणीदत्त ने यह समझ लिया था। वह घड़ी देखकर ठीक वक्त पर उसे बुला लाने को आदमी भेज देती है। उसके न जाने पर चुपचाप खुद आकर खड़ी हो जाती है। गुणीदत्त को उसका यह रूप और भी दमघोंटू लगता है।

इन दिनों वह अपनी साधना में भी बहुत कम ध्यान लगा पाता है। यह बात गुणीदत्त से बेहतर और कौन जान सकता है ? कई साल पहले तक शिरीन को साढ़े सत्रह साल की बम्बइया छोकरी ही समझता

रहा। वह बेहद आत्म-विश्वास के साथ उससे अपनी किस्मत का अटूट रिश्ता जोड़े रहा। एकान्त सान्निध्य के क्षणों में भी कभी किसी संकोच की दीवार नहीं खड़ी होने दी। लेकिन जो काम जेनिफर उड और जूली एण्डरसन नहीं कर सकी, श्रावणी वही कुछ करने में सफल हो गयी। उसने वही कुछ किया भी। आहिस्ते-आहिस्ते उस लड़की को देखने की अदा सिखायी। उसे देखने लायक बना दिया।

कम-से-कम गुणीदत्त को यही लगा और यह सब सोच-सोचकर वह और चिढ़ गया।

शिरीन अब करीब सत्ताईस साल की होने को आयी। हालाँकि वह बीस-इक्कीस से अधिक की नहीं दिखती है।

गुणीदत्त अब अकेले में शिरीन से पहले की तरह नजरें नहीं मिला पाता। उसके इतने करीब होने के अहसास को भुलाकर, उसे खेल सिखाने में भी हिचकिचाहट होने लगी है। यूँ वह सारे कर्तव्य निभाता है। उसे खेल भी सिखाता है।

लेकिन जो काम वह बेहद सहज भाव से करता था, अब उसकी जगह मुखौटा ओढ़ना पड़ता है। उसे अपने पर ही क्षोभ और ग्लानि होती है। वह मन-ही-मन अपने प्रति भयंकर अविश्वास से तिलमिला उठता है।

जब वह और कुछ नहीं पाता तो उसका सारा गुस्सा श्रावणी पर ही बरस पड़ना चाहता है। लेकिन वहाँ पर भी वह चुप रहकर अपने को संयत किए रहता है। वह जानता है, उसकी खिजलाहट व्यक्त होते ही श्रावणी उसकी तरफ खामोश नजरों से एकटक देखती रहेगी। मानो कोई बहुत ऊँची जगह पर खड़े होकर किसी बौने को देख रही हो। श्रावणी कभी उससे झगड़ा नहीं करती है। वह उसकी बात काटने की भी कोशिश नहीं करती, बस बेहद भोंडेपन से दो-एक ऐसी चुटकी लेगी, कि गुणीदत्त को एकदम से कोई जवाब ही नहीं सूझता। उसकी धीर-गम्भीर मूर्ति के सामने गुणीदाटा मारे खीज के होंठ चबाने लगता है।

दोनों के बीच अनजाने में ही एक अजीब-सा मानसिक दुराव जैसे जड़ पकड़ता जा रहा था। गुणीदत्त जाने किन उदास और तकलीफ-

देह ख्यालों में गुम होता जा रहा है। अब वह न मन लगा कर काम कर पाता है, न ढंग से कुछ सोच पाता है, अतः इन दिनों उसने फिर से शराब पीनी शुरू कर दी है। आखिर सेहत ठीक रखने के ख्याल से भी तो लोग शराब पीते हैं।

गुणीदत्त ने श्रावणी से भी कुछ छुपाने की जरूरत महसूस नहीं की। शराब में डूबकर उसने अपने सोए हुए पौरुष को दुबारा जगाने की कोशिश की।

श्रावणी एक-दो दिन तक हैरत से देखती रही। शिरीन ने भी अपने खत में उसके शराब पीने को लेकर शिकायत की थी। उसने इसका कोई जिक्र नहीं किया। लेकिन अब उससे चुप नहीं रहा गया। धीरे-धीरे चलती हुई वह उसके पास आ खड़ी हुई। थोड़ी देर उसकी आँखों में देखती रही फिर पूछा, 'सुना है, इस बार तुम बाहर जाकर भी यह जहर पीते रहे। यह आदत पहले से ही थी या नयी शुरू की है ?'

गुणीदत्त हँस पड़ा। उसके पीने का उस पर इतना असर पड़ेगा, अगर वह जानता तो बहुत पहले ही पीना शुरू कर देता। जवाब दिया, 'जानती हो, मेरा गुरु चाँद साहब था। वह भी पानी की जगह सिर्फ शराब पीता था।'

इसके बाद श्रावणी ने एक शब्द भी नहीं कहा। वह चुपचाप वहाँ से हट गयी। अब तक दोनों का बिस्तर अलग-अलग था, लेकिन कमरा एक था—अब कमरा भी अलग हो गया।

गुणीदत्त ने हँसते हुए, उसके कमरे में आकर कहा, 'मान लो, इसके बाद भी अगर मैं इस कमरे में आना चाहूँ तो मुझे कोई रोक नहीं सकता है ?'

श्रावणी पल-भर को उसकी तरफ अवाक् दृष्टि से देखा, फिर पूछा, 'तुम क्या यह चाहते हो कि मैं अब इस घर से ही चली जाऊँ !'

गुणीदत्त निःशब्द अपने कमरे में लौट आया। अब यह शराब भी उसे आग की तरह जलाने लगी है। उस आग को बुझाने के लिए, वह दुबारा शराब पीने बैठ गया।

लेकिन शराब पीकर वह कभी शिरीन के पास नहीं गया। एक

उसी लड़की की निगाह से उसे डर लगता है, अतः उससे भरसक बचने की कोशिश करता रहा। वैसे अभी भी उसके पीने की मात्रा सीमित है, अतः शिरीन को पता नहीं चलता। वह जानता है, उसे पता लगते ही, वह बेकार बकझक करेगी या फिर नाराज होकर तीन दिनों तक अनबोला ठान लेगी।

कुछ दिनों बाद, यानी छः महीनों बाद ही, एक चिर-परिचित मुसीबत तूफान की तरह टूट पड़ी।

इन दिनों गुणीदत्त ने एक नये किस्म का खेल प्रस्तुत करने का एलान किया।

श्रावणी और अपने दल-बल समेत एक बार बाहर का चक्कर लगा कर, इस बार जब वह कलकत्ते लौटा, तो यहाँ की महफिल में नए सिरे से धूम मचा दी। उसका नया खेल देखकर, दर्शक सिर्फ विस्मित या मुग्ध ही नहीं, परम अभिभूत भी हो गये। इस खेल को लेकर अखबार में फिर एक बार गुणीदत्त और शिरीन की तारीफों की धूम मच गयी।

गुणीदत्त ने अपने उस खेल को नाम दिया है—'कलाकार का स्वप्न!' 'आर्टिस्ट्स ड्रीम!'

श्रावणी पर इस खेल का कोई असर नहीं हुआ। लेकिन उनका अभिनय देखकर वह बुरी तरह अपसेट हो गयी। सिर्फ इसी खेल को देखने के लिए वह लगातार कई दिनों से, हर शो में मौजूद रहती है। कई बार उसने पक्का इरादा किया कि वह नहीं जाएगी; लेकिन फिर आए बिना वह रह नहीं पायी। हर शो का आखिरी आइटम होने की वजह से वह भी शो के आखिर में आती है और एक कोने में बैठकर चुपचाप गुणीदत्त का नया खेल देखा करती है।

उसकी आँखें उन दोनों की एक-एक गतिविधि को बेहद गौर से निरखती-परखती रहीं। सब से पहले, स्टेज पर एक तिकोना स्टैण्ड खड़ा किया गया। उस पर एक बड़ा-सा कार्ड-बोर्ड फिट कर दिया गया। स्टैण्ड के नीचे एक गज जगह खाली रक्खी गयी है, ताकि कार्ड-बोर्ड के

पीछे से कोई आए-जाए, तो दर्शक उसे देख सकें। बोर्ड पर तस्वीर बनाने के लिए एक बड़ा-सा कनवैस चढ़ा दिया गया। खाली तस्वीर के सामने रंग, ब्रश और पेंण्टिग के और सामान लाकर रख दिए गये।

जादूगर गुणीदत्त कलाकार की भूमिका में मंच पर प्रस्तुत हुआ। मानो वह किसी सुदूर के सपनों में खोया हुआ हो। थोड़ी देर यूं ही बैठा रहा, फिर तस्वीर पर ब्रश फेरने लगा। अचानक वह उठ खड़ा हुआ, इधर-उधर की कई लकीरें ठीक कीं, फिर इधर-उधर टहलते हुए तस्वीर में रंग भरता रहा। देखते-ही-देखते उस कागज पर उसकी काल्पनिक प्रेयसी की तस्वीर मुस्करा उठी। कलाकार उस अद्भुत रूप की तरफ निर्निमेष देखता रहा। वह अचानक निढ़ाल हो आया और बेहद उदास दीखा। नेपथ्य में दर्दभरा उदास संगीत गूँजता रहा।

शिल्पी कुछ दूर हटकर मोढ़े पर बैठ गया। उसकी आँखें उसी तस्वीर पर टिकी रहीं। अचानक उसकी तन्द्रिल आंखों के आगे तस्वीर की जगह उसकी सचमुच की प्रिया आ खड़ी हुई। उसकी प्रिया उसकी तरफ देखती हुई, दूर खड़ी मन्द-मन्द मुस्करा रही थी। तन्द्रा में खोए हुए कलाकार ने अव्यक्त आकुलता से उसकी ओर अपने दोनों हाथ बढ़ा दिए—'आओ, पास आओ। और करीब आ जाओ न।'

खेल में खोए हुए मन्त्रमुग्ध दर्शक, एकबारगी चौंक उठे। तस्वीर की जगह सचमुच कलाकार की मोहिनी प्रिया ही उतर आयी थी। अपने प्रिय को देखते हुए मन्द-मन्द मुस्कुराती रही। वह सचमुच ही फ्रेम से निकलकर धीरे-धीरे कलाकार की ओर बढ़ने लगी। कलाकार की प्रिया भानुमती!

कलाकार स्वप्नों की तन्द्रा में खोया हुआ एकबारगी उठ खड़ा हुआ। उसे बेहद आकुल स्वर में आवाज देता हुआ अपनी बाँहें फैला दीं और उसे पकड़ने को आगे बढ़ा। उसकी प्रिया पीछे सरकती गयी। कलाकार ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता गया, उसकी प्रिया पीछे सरकती हुई उस कैनवस से सटकर खड़ी हो गयी और आहिस्ते-आहिस्ते फिर उसी में समाहित हो गयी।

कलाकार की तन्द्रा टूटी। उसने अपनी आंखें मल-मलकर इधर-

उधर देखा—नहीं, वहाँ कोई नही आया था। उसकी प्रिया तो तस्वीर बनी खड़ी है। दरअसल वह सपना देख रहा था।

लेकिन कलाकार के साथ हाल के मारे दर्शक भी क्या सिर्फ स्वप्न देख रहे थे? उनकी आँखों ने जो कुछ देखा, वह क्या झूठ था? आखिर यह कैसे सम्भव हुआ? दर्शकों के दिमाग पर इस खेल का ऐसा जादुई असर हुआ कि कुछ देर के लिए वे गूँगे की तरह स्तब्ध बैठे रहे। अचानक होश आते ही उनकी हर्ष-ध्वनि से सारा हॉल यूँ गूँज उठा कि कान बन्द कर लेने का मन होता है।

और पैसा?

सिर्फ इसी खेल के लिए रुपया कैसे बरस रहा है, इसका अन्दाज नही लगाया जा सकता। सिर्फ कलाकार का स्वप्न देखने के लिए दूर-दूर से लोग जैसे टूटे पड रहे हैं। कई-कई दिनो पहले टिकट बुक कराने आते हैं, लेकिन निराश लौटना पडा है। काश, ऐसे मौके पर जेनीफर उड होती, तो गुणीडाटा और शिरीन के इस जादुई करिश्मे की सही-सही कीमत समझ पाती। वह तो खुशी से बेहाल होकर शायद नाचना शुरू कर देती।

लेकिन श्रावणी सिर्फ आमदनी का हिसाब-किताब मिलाती रही। रुपयों की संख्या नोट करके बैंक बेलेंस बढाती रही। इस खेल की आश्चर्यजनक सफलता के बाद शिरीन का भी पुरस्कार बढ़ा देना उचित था और उचित कामो मे उसने कभी कोई कंजूसी नहीं की। शिरीन के नाम भी मोटी रकम जमा होती रही। इसके अलावा इस अभूतपूर्व सफलता के बारे में उसके चेहरे पर कोई आभास नही था।

उसने दूर से देखा कि शुभेन्दु और उसके दोस्त मारे खुशी के अपने परम आत्मीय मैजिशियन के दोनों हाथ पकड़कर झकझोर रहे थे। उस दिन मिलनी ने हँसी-हँसी जो कह डाला, श्रावणी वह सुनकर चौंक उठी।

मिलनी ने अपने जीजा जी से कहा, 'आपका यह नया मैजिक देखते हुए जानते हैं, क्या लग रहा था? लग रहा था, जैसे सचमुच ही आपकी प्रिया गुम हो गयी हो।'

जिससे वह बात कही जा रही थी, श्रावणी की नजरें अचानक

उसकी ओर घूम गयीं। वह जानती है कि किसी को खो देने का खाली-पन अब मिट चुका है। वह यह बात अच्छी तरह समझ चुकी है, क्योंकि अब कोई उसकी ठुड्डी पर के तिल को नोचने-खसोटने की कोशिश नहीं करता। श्रावणी यह बात खुद भी महसूस कर रही थी कि स्वर्ण को देखने के बाद गुणीदत्त के मन से उसकी चाहत मिट चुकी है।

मिलनी के मजाक के उत्तर में गुणीदत्त ने झेंपी हुई आवाज में जो कुछ कहा था, वह भी श्रावणी के कानों तक पहुँचा था।

गुणीदत्त ने हँसकर मिलनी की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मेरी यही प्रिया गुम हो गयी है।'

मिलनी ने बनावटी क्रोध व्यक्त करते हुए कहा, 'अरे, वाह ! आपकी प्रिया तो लोकान्तरित जगत की है न ?'

'नहीं, भाई, हस्तान्तरित प्रिया है।'

मिलनी उसके नये जादू पर एकबारगी मुग्ध थी। उसकी तारीफों के पुल बाँधते हुए, बनावटी अफसोस जाहिर करते हुए मजाक किया, 'अरे, दिदिया, कलाकार-स्वप्न में तो तुझे उतरना चाहिए था। अधिक नेचुरल लगता।'

उसकी बातें सुनकर श्रावणी की भौंहें चढ़ गयीं, लेकिन उसने हँसते हुए पलट कर प्रश्न किया, 'क्यों री, मैं क्या तुझे सपना लगती हूँ।'

अखबारों में 'कलाकार-स्वप्न' को लेकर तर्क-वितर्कों की धूम मच गयी। कौन से सन में कौन से जादूगर ने इस खेल की शुरुआत की। उसके बाद किन-किन जादूगरों ने इस खेल को अपने ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की, उसका पूरा हवाला !

इस खेल में गुणीडाटा की मौलिकता कहाँ है ? वगैरह-वगैरह सवालों पर भी खूब-खूब बहसें होती रहीं।

श्रावणी की सब्र का बाँध टूट गया। इस खेल को लेकर वह बुरी तरह विचलित हो उठी। किसी-किसी दिन उसका मन होता कि वह चीखकर दर्शकों को बता दे कि उनको कैसे-कैसे कहाँ चकमा दिया जा रहा है। उन सबको कितनी आसानी से बुद्धू बनाया जा रहा है।

इसी बीच शिरीन कई दिनों के लिए बीमार पड़ गयी। कई दिनों

तक कोई शो ही नही हुआ। श्रावणी ने अपनी तरफ से प्रस्ताव रखा कि कम्पनी की और दो-एक लड़कियों को भी इस खेल की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए। कम्पनी में जो लड़कियाँ हैं, अगर वे गुणीदत्त के मन के लायक नहीं हैं, तो देख-सुनकर दो-एक बाहरी लड़कियाँ भी नियुक्त की जा सकती हैं। उस दिन मिलनी का मजाक सुनकर शायद उसके दिमाग में ऐसा ख्याल आया हो। कम्पनी का एक व्यक्ति बीमार हो जाए या गैरहाजिर रहे तो उसके लिए सारा शो क्यों कैंसिल हो ?

गुणीदत्त ने उस वक्त श्रावणी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया। उसका प्रस्ताव तर्क-संगत नहीं लगा, अत वह मन ही मन झुँझला उठा।

श्रावणी के मन में कही कोई ईर्ष्या है, उसे यह बात सोचते हुए भी शर्म आयी।

उस दिन श्रावणी जब घर लौटी तो एक विचित्र हरकत कर बैठी। शो के बाद दोनों साथ ही साथ घर लौटे। गाडी के किनारों पर अलग-अलग बैठे हुए दो प्राणी। श्रावणी को लगा, जादूगर के सपने की तन्द्रा अभी भी नहीं टूटी। वैसे आज का शो जमा भी खूब था, इसमें कोई शक नहीं।

इधर कई दिनों के अन्तराल के बाद जब शो पेश किया गया, उसमे कलाकार की विरह-कथा जैसे और मर्मस्पर्शी और जीवन्त हो उठी। घर लौटते हुए श्रावणी ने गौर किया, वह उस समय भी उन्हीं ख्यालों मे डूबा हुआ था। इन दिनों वह अवसर ऐसी तन्मय स्थिति में समाधिस्थ हो जाता था।

घर पहुँच कर श्रावणी कुछ ही देर बाद उसके कमरे मे आयी और बिना किसी तरह की भूमिका के सीधा-सा सवाल किया, 'ट्रेनिंग के लिए मैंने तुम्हें दो-एक और लड़कियों की खोज करने को कहा था, उनका क्या हुआ ?'

अब जाकर जादूगर की समाधि टूटी। गुणीदत्त की आँखों में अजब-सी तल्खी झलक आयी। वह कोई जवाब न देकर उसकी तरफ एकटक देखता रहा।

श्रावणी ने फिर कहा, 'तुम्हें अगर फुरसत न हो, तो मैं ही अखबारों में विज्ञापन दे डालूं। उसके बाद तुम देख-सुनकर चुन लेना। खेल के लिए एक व्यक्ति का मुंह जोहते रहना गलत है।'

गुणीदत्त को लगा, वह अपना सारा धीरज खो देगा। फिर भी अपना गुस्सा दबाते हुए कहा, 'तुम ऐसा क्यों चाहती हो, मैं जान गया हूं। वैसे तुम पढ़ी-लिखी हो, अपनी मर्यादा में चलना जानती हो, तुम्हें मैं कम-से-कम इन टुच्ची बातों से बहुत ऊपर समझता था।'

श्रावणी ने उसके मुंह की बाकी बातें छीन लीं। बेहद धीरे और शान्त भाव से पूछा, 'क्यों, अब ऐसा नहीं समझते ?'

'ना, इतने दिनों में भी तुम उस लड़की को नहीं अपना सकी, आखिर क्यों ?'

श्रावणी ने कोई जवाब देने से पहले उसकी तरफ एक बार गौर से देख लिया फिर स्पष्ट आवाज में जवाब दिया, 'तुम्हारी वजह से ही नहीं अपना सकी। दरअसल उस लड़की को लेकर मेरे सामने कोई समस्या नहीं है। वह सचमुच बहुत भली लड़की है। उस जैसी अच्छी लड़की दुनिया-भर में ढूंढ़ें तो भी नहीं मिलेगी। लेकिन मुझे तुम पर कैसे यकीन आए ?'

गुणीदत्त बैठा हुआ था, मारे उत्तेजना के उठ खड़ा हुआ और चीखकर कहा, 'तो यूं कहो न कि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है ?'

'हां, नहीं है। लेकिन ऐसे चीखो मत। नौकर-चाकर सुन रहे होंगे। बैठ जाओ। मुझे तुम पर कैसे विश्वास आए ? मेरी ठुड्डी पर काला तिल देखकर तुम्हें किसी और के चेहरे के लाल तिल की याद आती रही और तुम पागलों की तरह मुझे अपनी जिन्दगी में खींच लाए। तुम मुझे अपने घर इसलिए नहीं लाए थे कि तुम्हें मुझसे प्यार था। अब तुम फिर सपने देखने लगे हो। मुमकिन है कि कुछ ही दिनों में तुम इस सपने को सच समझने लगो। लेकिन मुझे तुम्हारी इन हरकतों पर सख्त एतराज है।'

श्रावणी उठकर बाहर चली आयी। गुणीदत्त को जैसे करेण्ट छू गया। वह थोड़ी देर उसी तरह पत्थर बना खड़ा रहा।

थोड़ी देर पहले किसी ने उसका मुखौटा नोचकर, उसी के मुँह पर दे मारा था। गुणीदत्त के शरीर का सारा खून जैसे चेहरे पर जम गया। उसे इस बात की कभी आशंका भी नहीं हुई कि कोई उसकी छिन निहारने की आदत को इतनी अच्छी तरह पहचान चुकी है। उसे लगा उसके भीतर का कोई जंगली जानवर जंजीर तुड़ाकर फुत्कार रहा हो। वर्षों पहले के उस बर्बर पशु की तीखी उसाँसें उसे आज अधिक असंयत और उद्भ्रान्त जान पड़ीं। अचानक मुखौटे के उतर जाने से, वह जैसे लाज-हया छोड़कर श्रावणी को निगल जाने को आतुर हो उठा।

उसने आलमारी खोलकर बोतल और गिलास निकाल लिया। थॉर्ड साहब कहा करता था, शराब पीए बिना दिमाग ठीक नहीं रहता। बेकार की भावुकता से सब गड़बड़ हो जाता है। लेकिन गुणीदत्त इस भावुकता के अलावा विवेक नामक अनुभूति को भी ग्लास में डुबो देना चाहता है। कितना पीने पर यह सम्भव होगा कि वह भावुकता, विवेक सब कुछ भूल सके ?

श्रावणी दुबारा उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। थोड़ी देर उसकी ओर खामोश नजरों से देखती रही। वह क्या देख रही है, गुणीदत्त समझता है। शराब पीने के बाद उसकी आँखें नशीली हो जाती हैं और उसमें सब कुछ निगल जाने की लोलुपता झलकने लगती है। श्रावणी वही देख रही है। उसे जो कुछ दिखता है, वह कहीं से गलत भी नहीं है।

श्रावणी जैसे निःशब्द आयी थी, वैसे ही लौट गयी।

गुणीदत्त ने जोर का ठहाका लगाया। हँसते-हँसते उसने शराब का गिलास होंठों से लगा लिया। सब से पहले उसके अन्दर के कलाकार का नामोनिशान मिट जाए, उसका [illegible]

हो। जाने कैसे उसकी जरूरत की बात श्रावणी को पहले से ही मालूम हो जाती है। वह जुबान से कुछ नहीं कहती, लेकिन उसके अभिमान व्यक्त करने का तरीका भी निराला है। वह अपने कमरे में जाकर भीतर से दरवाजा बन्द कर लेती है।

उसके बन्द दरवाजे पर किसी ने कभी दस्तक भी नहीं दी। लेकिन आज उस बन्द दरवाजे पर नजर पड़ते ही गुणीदत्त के दिल में जैसे आग जल उठी। यह आग शायद गुणीदत्त के मन में नहीं लगी थी, उसका नाम ओढ़े हुए व्यक्ति के मन में लगी थी। उसकी आँखों में क्रूरता झलक उठी। एक दिन वह भी था जब लोगों की आँखों के सामने ही स्वर्ण को खींचता हुआ तालाब के उस पार, झाड़ी की तरफ ले गया था। उस समय स्वर्ण को कोई बचा पाया था ? उँह, स्वर्ण चूल्हे में जाए। श्रावणी उसी के घर में अपने कमरे का दरवाजा बन्द किए बैठी है। चलो, देखा जाए, उस बन्द दरवाजे के कब्जों में आखिर कितना दम है ?

उसने श्रावणी के दरवाजे पर एक जोर का धक्का मारा। वह शायद कब्जों पर अपना जोर आजमाना चाहता था।

दरवाजा अन्दर से बन्द नहीं था—उढ़काया हुआ था। धड़धड़ाकर खुल गया। कमरे के भीतर भी कोई नहीं था। कमरा खाली था।

गुणीदत्त सकपका गया। उसकी आहट सुनकर दूसरी तरफ से एक नौकर उसके सामने आकर खड़ा हो गया। उसी ने बताया कि मालकिन मुन्ना बाबू को लेकर मायके चली गयी हैं। कह गयी हैं, आज वह नहीं लौटेंगी।

गुणीदत्त अपने कमरे में चला आया। उसका जी हुआ कि मेज पर पड़ी हुई बोतल और गिलास उठाकर दीवाल पर दे मारे। लेकिन ऐसा कुछ न करके वह फोन उठा कर एक नम्बर डायल करने लगा। फोन के दूसरी तरफ श्रावणी की आवाज सुनकर पूछा, 'तुम बिना कुछ कहे-सुने वहाँ क्यों चली गयीं ?'

श्रावणी ने कोई जवाब नहीं दिया।

गुणीदत्त ने ही दुबारा कहा, 'फौरन एक टैक्सी लो और इसी दम

'शराब तो मैं रोज पीता हूँ। आज जरा ज्यादा पी ली है, वर्ना तुम्हारे पास आने में मुश्किल हो रही थी।'

शिरीन निःशब्द खड़ी रही। थोड़ी देर उसे गहरी दृष्टि से परखती रही, फिर एक-एक कदम पीछे सरकती हुई बिस्तर पर आकर बैठ गयी। अभी भी वह मुँहबाए हुए, उसकी तरफ हैरत से देख रही थी।

गुणीदत्त उसके करीब आ गया—बेहद करीब ! उससे बिल्कुल सटकर बैठ गया। अपनी दोनों बाँहों से उसका चेहरा घुमाकर अपनी ओर कर लिया।

उसकी आँखों में अपलक डूबा रहा। उसकी देह की नसों में, पोर-पोर में नशा छाता जा रहा है।

गुणीदत्त बिल्कुल उसके चेहरे पर झुक आया। बेहद फुसफुसाती हुई आवाज में कहा, 'शिरीन, इतने दिनों मैंने तुम्हें देखा क्यों नहीं ? तुम्हें सबने देखा, एक मेरी ही आँखें बन्द रहीं ! क्यों ?'

शिरीन की विस्फारित आँखें अवाक्-विस्मय से उसकी तरफ देखती रहीं। अचानक कहीं बिल्कुल पास से शराब का एक तेज भभका उठा और उसने अपने कन्धों पर किसी का दबाव महसूस किया। वह कोई विरोध करे, इससे पहले ही किन्हीं बाँहों के घेरे में वह एकबारगी छटपटा उठी। शायद यह छटपटाहट नहीं, असहनीय यन्त्रणा थी। वह उसे रोकने की ताकत भी जैसे खो बैठी। सिर्फ भौंचक्की दृष्टि से उसे देखती रही···

···पूरी तरह निःशेष होते हुए भी उसकी तरफ निर्निमेष देखती रही। कुछ देर बाद इस आँधी-तूफान का भयंकर वेग भी जैसे थम गया। वह बेजान पत्थर बनी, उसी तरह बिस्तर पर पड़ी रही।

लेकिन गुणीदत्त अब क्या करे ? शिरीन के कमरे में तो शराब भी नहीं है।

वह उठ खड़ा हुआ। शिरीन अब भी उसकी ओर फटी-फटी आँखों से देखे जा रही थी। गुणीदत्त की वहशी आँखों में क्रूरता की झलक थी। वह शिरीन को एकटक घूरता रहा। शिरीन की खामोश आँखों में, मानो मद्धिम आग पिघल आयी हो, 'यह क्या किया, गुणीडाटा ?

यह तुमने क्या किया ?'

गुणीडाटा उसकी निगाहों के सम्मोहन से अपने को जबरन अलग करके लड़खड़ाते कदमों से अपने घर की तरफ चल दिया। उसे शराब की सख्त जरूरत है—अभी! इसी दम! लेकिन शराब तो उसके घर में है। लेकिन···घर? हां, घर कौन बड़ा दूर है?

वह लड़खड़ाते हुए चल दिया। पास ही उसका घर है···वह अपने कमरे में आलमारी के सामने आकर खड़ा हो गया। काफी देर तक बोतलों की ओर नजरें गड़ाये खड़ा रहा। फिर वहां से बरामदे में चला आया। बाहर चांदनी बरस रही है। चांदी की तश्तरी जैसा उजला-धुला चांद, बेहद श्वेत और शुभ्र जान पड़ा। समूचे आकाश में सितारों की भीड़। चांद साहब···चांद साहब, तुम क्या देख पा रहे हो? कहीं तुम इन सितारों में ही तो नहीं छुपे हो?···सुनो···सुनो, तुम इस बदनसीब के माथे पर, गाज बन कर टूट पड़ो न!

सत्तरह

श्रावणी अगले दिन जब लौटकर आयी तो शाम ढल चुकी थी।

वैसे शनिवार के पहले कोई तो भी नहीं था। अगर आज या कल नहीं आती तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन लौट आयी है। पिछली रात उसने जुबान दी थी कि अगले दिन वह लौट आएगी, और उसने कभी वादाखिलाफी की हो, ऐसा याद नहीं आता।

बच्चा रास्ते में ही सो गया था। आया उसे लेकर खाट पर सुलाने ले गयी। श्रावणी एक-एक कदम चलती हुई [illegible]

आकर रुकी। दरवाजा पार करके वह बगल वाले कमरे में चली आयी।

कमरे में कोई नहीं था। सारा कमरा अस्त-व्यस्त पड़ा था। विस्तर भी गुड़ी-मुड़ी पड़ा था। छोटी मेज के सामने की दोनों कुर्सियाँ उल्टी पड़ी थीं। मेज पर बोतल और गिलास भी ज्यों का त्यों पड़ा था।

श्रावणी के चेहरे पर तीखी कड़वाहट झलक उठी। उसने दरवाजे पर आकर नौकर को आवाज दी। बेहद गम्भीर, लेकिन सख्त लहजे में पूछा, 'यह कमरा ऐसा क्यूं पड़ा है?'

नौकर डरा-डरा-सा मालकिन के चेहरे की ओर देखता रहा। कोई जवाब नहीं दिया। उस नौकर को देखकर उसे जाने क्यूं यह लगा कि घर के मालिक ने ही कोई खुराफात की होगी, जिसकी वजह से किसी में कमरे में घुसने की हिम्मत नहीं हुई होगी। नौकर की चुप्पी मानो यह समझाना चाह रही थी कि उसने जान-बूझकर ऐसी गलती नहीं की।

'साहब कहाँ हैं?'

नौकर साहब के बारे में कुछ नहीं बता सके। श्रावणी को भी पूछ-ताछ करने में शर्म आयी। कमरा ठीक करने का आदेश देकर वह बेटे के सिरहाने आ बैठी।

यूं ही दो घण्टे बीत गये। अभी तक किसी के आने का आसार नहीं दिखा। रात के छह बजने वाले हैं। श्रावणी उठ खड़ी हुई। नौकरों को आखिर कितनी देर तक रोके रखा जा सकता है? उन्हें अब छुट्टी दे देनी चाहिए?

आया बरामदे की दीवार से पीठ टिकाए बैठे-बैठे ही नींद में ऊँघ रही थी। बाकी दोनों नौकर भी चुपचाप एक ओर बैठे हुए थे।

श्रावणी को दुबारा फिर कहीं खटका लगा। पिछली रात उसके जाने या आने के बीच कहीं कुछ घटा जरूर है।

सबके चेहरे पर मौन गम्भीरता! घोर विस्मय!

उसकी आवाज पर एक पुराना बैरा सामने आ खड़ा हुआ।

'साहब कितने बजे बाहर गये थे?'

'साहब भोर में ही—'

श्रावणी असमंजस में पड़ गयी। नौकर ने उसका सवाल जाने ठीक

तरह सुना भी या नहीं। लेकिन उसका उत्तर सुनकर लगा, उसने ठीक ही सुना और सही जवाब दिया है। उसने अपना विस्मय छुपाते हुए दुबारा पूछा, 'कुछ कह कर भी नहीं गये?'

बैरे ने सिर हिला दिया।

'अच्छा हम लोगों का खाना ढक कर रख दो, और सब खाना खा लो।'

श्रावणी निर्देश देती हुई, सहज दिखने की कोशिश मे मुँह फेरकर खड़ी हो गयी। बातचीत की आवाज सुनकर आया की तन्द्रा टूट गयी। वह भी उठकर खडी हो गयी। श्रावणी उन सब से आँखें चुराते हुए अपने कमरे मे चली आयी।

श्रावणी मन-ही-मन बेहद ग्लानि महसूस कर रही थी। बिना कुछ कहे-सुने, सुबह से ही घर से निकल पड़ने और इतनी रात गये तक घर न लौटने के पीछे कोई संयत कारण भी समझ मे नहीं आया। इस असंगति को लेकर घर के नौकर-चाकर भी उधेड़बुन में पड़े होंगे। घर मालिक की यह मनःस्थिति और आचरण उसे बहुत टुच्चा जान पड़ा।

रात के बारह बजने को हैं। आया को आवाज देकर, उसे बेबी के कमरे में बैठने को कहकर उसने साड़ी का पल्ला ठीक किया और पाँवों मे स्लीपर डालकर, चुपचाप नीचे उतर गयी। शिरीन अगले कई मकानो के बाद ही रहती है।

उसका दरवाजा भीतर से बन्द था। रास्ते के तरफ की कांच की खिड़कियाँ भी बन्द थीं। कमरे मे नीली रोशनी जल रही थी।

श्रावणी ने दरवाजे पर हल्की-सी थाप दी। कोई उत्तर न पाकर जोर से कुंडी खड़खड़ायी।

कोई उत्तर नहीं मिला।

श्रावणी ने सोचा, शायद वह सो चुकी है। वह दुबारा कुंडी खड़-खड़ाए या नहीं, वह इसी असमंजस मे खड़ी रही।

दूसरी तरफ से एक बूढ़े ने आगे बढ़कर सलाम किया।

श्रावणी ने पहचान लिया, वह उसी की कम्पनी का बैरा था। वह पास ही किसी झोंपड़ी में रहता था। और कभी-कभी शिरीन के छोटे-

मोटे जरूरी काम भी कर दिया करता था।

उसी ने वताया कि मिस साहव की आज शायद तवीयत ठीक नहीं है। सुवह से ही दरवाजा वन्द है। कल से सो रही हैं। वह घवड़ाकर, साहव को खवर देने के लिए उनके घर भी गया था, लेकिन साहव से भी मुलाकात नहीं हुई।

आवणी घर लौट आयी। आया को छुट्टी देकर खुद एक किताव लेकर वैठ गयी। उसने किताव में मन लगाने की कोशिश की। वह इतनी नासमझ नहीं है कि वेवजह ही परेशान हो। ऐसे में कई वार गलती हो जाती है। मन संयम तोड़कर इधर-उधर के निरर्थक ख्यालों में भटक जाता है। आदमी का अपने दिमाग पर भी कावू नहीं रहता।

लेकिन यह भला आदमी आखिर गया कहाँ? कलकत्ते की सड़कें। यहाँ कदम-कदम पर परेशानी या वेचैनी स्वाभाविक भी थी। वीच-वीच में किताव वन्द करके, उसने परेशान होने की कोशिश भी की। उसे परेशान होना चाहिए, शायद इसीलिए वह परेशान हो रही थी। वर्ना सचमुच किसी विपत्ति की आशंका नहीं थी। अगर उसे सचमुच किसी वात की आशंका होती, तो अव तक वह वहुत कुछ कर डालती। और कुछ नहीं तो अपने-मायके को खवर भेजती, अस्पतालों में टेलीफोन करती।

रात में दो-तीन वार वह अचानक हड़वड़ाकर उठ वैठी। वाहर वरामदे में उनका खाना उसी तरह मेज पर ढँका रखा था। वह कई वार गुणीदत्त के कमरे तक आ-आकर झाँक गयी। उसका कमरा और विस्तर खाली था।

अगले दिन सुवह करीव आठ वजे, आवणी ने आदमी भेजकर, शिरीन को वुलवा भेजा। पूरे चौवीस घण्टे होने को आए, घर का आदमी अभी तक घर नहीं लौटा। अव चुप रहने से काम नहीं चल सकता। लेकिन वह क्या करे, यह भी उसकी समझ में नहीं आया। अतः शिरीन को वुला भेजा।

आधा घण्टा वीत जाने पर जव शिरीन नहीं आयी तो उसने दुवारा पूछा कि उसे आने की खवर भिजवायी गयी या नहीं। हाँ, खवर भेज

दी गयी है, मिस साहब ने सुन लिया, लेकिन कोई जवाब नही दिया। श्रावणी ने थोड़ी देर और प्रतीक्षा की, फिर खुद ही नीचे उतर गयी। ...हूँह ! नाराज होकर किसी के बाहर रहने की वजह तो उसकी समझ में आ रही है, लेकिन इस लड़की का रवैया समझ मे आना, बहुत मुश्किल है। दो दिनों से लड़के का भी मुँह नहीं देखा। वह खुद नही आ सकी, तो नौकर भेजकर लड़के को तो बुला सकती थी।

पहले भी जब वह नही आती थी, तो बूढ़े बैरे को भेजकर बच्चे को बुलवा लेती थी। अचरज की बात तो यह है कि आज उसके बुलाने पर भी वह नही आयी। जरूर उसकी तबियत खराब है। लेकिन वह खबर तो भेज सकती थी।

शिरीन के घर का दरवाजा खुला हुआ ही था। शिरीन बिछौने पर ही बैठी थी। उसका गुलाबी चेहरा कागज की तरह सफेद दिख रहा था। सूखा-सा चेहरा ! अस्त-व्यस्त, उलझे रूखे बाल ! श्रावणी को उसने कमरे मे आते हुए देखा, लेकिन वह उसी तरह मुँह फेरकर बैठी रही।

'तुम्हारी क्या तबियत खराब है ?'

शिरीन ने कोई जवाब नही दिया। श्रावणी की तरफ देखा भी नही। पहले की तरह बुत बनी बैठी रही।

श्रावणी उसके बोलने का इन्तजार करती रही। उसकी तरफ एक बार गौर से देखा। लगता है उसे कुछ हुआ है। नही, वह नाराज नहीं है।

गुस्से में उसका चेहरा सफेद नही, लाल हो उठता है। जैसे किसी खूबसूरत फूल के पौधे को जड़ समेत उखाड़ लिया जाए तो वह एकबारगी मुरझा जाता है, वह भी उसी तरह मुर्झायी हुई दिखी। लेकिन वह बीमार भी नही लग रही थी। बीमार होती तो चुप रहने की क्या जरूरत है ?

श्रावणी के कान गर्म हो उठे। वह तीखी तो नहीं हुई। लेकिन सख्त आवाज में पूछा, 'मेरी बातें तुम्हारी कानों मे जा रही हैं या नहीं ?'

शिरीन ने अपना बुझा हुआ चेहरा धीरे-धीरे उसकी तरफ घुमाया।

'तुम्हें क्या हुआ है ?'

जाने उसने सिर भी हिलाया या नहीं। कहा, 'कुछ नहीं हुआ है।'

मैंने तुम्हें बुलाने को आदमी भेजा था, तुमने उसे भी जवाब नहीं दिया, खुद भी नहीं आयीं। अचानक इतनी गुस्ताख होने का क्या तुक है ?'

शिरीन ने तब भी कोई जवाब नहीं दिया, उसकी तरफ एकटक देखती रही।

श्रावणी न धीरज नहीं खोया। वह उसकी बेअदबी की कैफियत लेने आयी भी नहीं थी। बेहद शान्त और गम्भीर भाव से कहा, 'परसों रात मैं घर पर नहीं थी। जब शाम को लौटी तो सुना कि वह सुबह ही निकल गये थे। लेकिन आज, अभी तक नहीं लौटे। कहाँ गये हैं तुम्हें मालूम है ?'

शिरीन के निस्पृह चेहरे पर पहले विस्मय और फिर क्रोध की कई मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ उभरीं। श्रावणी को लगा वह मानो उसी से नाराज है। शिरीन उसकी ओर उसी तरह अपलक देखती रही। उसके निस्तेज चेहरे पर सफेदी की जगह धीरे-धीरे खून सिमट आया। उसकी आँखें एकबारगी तीखी हो उठीं। आखिरकार वह अपने पर काबू नहीं रख पायी, अस्फुट स्वर में बुदबुदा उठी। श्रावणी के प्रश्न का जवाब न देकर, फुसफुसाते हुए अपनी तरफ से प्रश्न किया, 'तुम घर पर क्यों नहीं थीं ?'

श्रावणी क्या करे ? नाराजगी या विस्मय या बेचैनी जाहिर करे ? शिरीन के कहने के ढंग से लगा कि वह अनजाने में किसी भयंकर अपराध की मुजरिम है।

श्रावणी थोड़ी देर चुपचाप बैठी रही। फिर अपने को संयत करते हुए, धीमी आवाज में कहा, 'तुमसे जो पूछ रही हूं, सिर्फ उसी का जवाब दो। तुम्हें वे कुछ कह गये हैं ?'

शिरीन ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया। जाहिर था कि वह उसकी तरफ देखना भी नहीं चाहती। उसके सवालों का जवाब भी नहीं देना चाहती।

श्रावणी लौट आयी। अब क्या वह सचमुच कुछ अन्दाज लगाने की कोशिश करे ? नहीं, अकेले में आदमी के मन में यूं भी बहुत तरह के ख्याल उठते रहते हैं, और एक बार उलझनें तो पैदा हो जाती हैं तो सोचने-समझने की ताकत भी कमजोर हो जाती है। और बाद में उसकी सोची हुई हर बात गलत साबित होती है।

सुबह बीतते-बीतते दोपहर हो आयी और दोपहर भी शाम में ढल गयी। अब तो शाम की रोशनी भी धीरे-धीरे धुंधली पड़ती जा रही है। श्रावणी बरामदे मे बैठी गुणीदत्त की आने की राह देखती रही। मायके वालों को भी कोई खबर नहीं भिजवायी। उसके बारे मे किसी थाने या अस्पताल में भी पूछ-ताछ नही की। सुबह अगर शिरीन से न मिली होती तो शायद कोई खोज-खबर लेती, लेकिन उसे देखकर श्रावणी ने समझ लिया कि कहीं कुछ करने की जरूरत नही है। कम-से-कम किसी दुर्घटना की आशंका, उसके मन से निकल गयी।

शिरीन का बूढ़ा बैरा दोपहर से शाम तक दो-तीन बार आकर झांक गया। पहली बार श्रावणी ने कुछ नही कहा, लेकिन जब तीसरी बार आया तो पूछा, 'क्या चाहिए ?'

बैरे ने हकलाते हुए कहा, 'साहब लौट आये हैं या नही, यह देखने…'

'तुमसे खबर लेने को किसने कहा है ?'

बैरा उसकी तरफ परेशान नजरो से देखता रहा, कोई जवाब नहीं दिया।

शायद शिरीन ने ही उसे बोलने को मना किया था। गुणीदत्त अभी तक लौटा या नहीं, सिर्फ यह देख आने को कहा होगा। उसने क्या कहा होगा या कौन इतनी परेशान होगी, श्रावणी जानती है।

'नहीं, अभी नही लौटे। तुम जा सकते हो।'

थोड़ी ही देर बाद दरवाजे पर एक टैक्सी आ खड़ी हुई। श्रावणी दुमंजिले की रेलिंग पर आ खड़ी हो गयी। 'अगले ही क्षण जड़ और निश्चल हो आयी। वह उस आदमी की बाट जरूर देख रही थी, लेकिन उसे इस हालत में देखे, यह उसने नही सोचा था।

सीढ़ियों पर किसी के कदमों की आहट सुनायी दी। धीरे-धीरे वह आहट बरामदे तक चली आयी। श्रावणी बिना किसी तरह की आवाज किए, घूमकर खड़ी हो गयी। गुणीदत्त ने एक बार नजरें उठाकर उसकी तरफ देखा, फिर मुँह फेर लिया और सीधे अपने कमरे में चला गया। उसकी पाँवों की लड़खड़ाहट साफ जाहिर थी। दरवाजे से होकर कमरे में जाते हुए वह दीवार से टकरा गया। उसका सारा चेहरा काला पड़ गया था। मटमैले कपड़े। उलझे हुए अस्त-व्यस्त बालों से आधा चेहरा ढँका हुआ!

श्रावणी एक-एक कदम आगे बढ़ी और उसके कमरे की देहली पर आकर रुक गयी।

गुणी तब तक अपने कोट और पाँव के जूते उतार चुका था। श्रावणी पर नजर न पड़ती तो शायद मोजे भी उतार देता। उसे देखकर, वह फौरन बिस्तर पर लेट गया और दूसरी तरफ मुँह फेर लिया।

श्रावणी उसके सामने आ खड़ी हुई। उसकी तरफ अपलक देखती रही। गुणीदत्त की सारी देह रह-रहकर काँप रही थी। लगा, उसकी देह की नसें झनझना रही हों। उसकी साँसें भी बहुत तेज-तेज चल रही थीं। अचानक वह झटके से उठ बैठा। श्रावणी की ओर बिना देखे ही पैरों के पास रखी चादर समूचे देह पर खींच ली और फिर लेट गया।

परेशान होने की बात ही थी। श्रावणी परेशान हो उठी और आगे बढ़कर अपना हाथ उसके माथे पर रख दिया।

गुणीदत्त ने फौरन गर्दन घुमाकर देखा। दोनों आँखें सुर्ख लाल थीं। आँखों के आस-पास जैसे काला रंग पोत दिया गया हो, लेकिन माथा बरफ की तरह ठंडा।

श्रावणी ने यह नहीं पूछा, कि उसे क्या हुआ है, उसने पूछा, 'डाक्टर को फोन करूँ?'

गुणीदत्त ने सिर हिलाकर बताया कि उसे कुछ नहीं हुआ है।

उसके साँस के साथ एक तीखी-सी गन्ध भी आ रही थी। फिर भी श्रावणी उसके पास ही खड़ी-खड़ी, थोड़ी देर उसे देखती रही। इन दो दिनों में शराब के अलावा शायद और कुछ उसके पेट में नहीं गया है।

वह कमरे से बाहर निकल आयी। नौकर को बुलाकर बाथरूम में गरम पानी रखने का आदेश दिया। दूसरे नौकर से साहब के लिए गरम दूध और कुछ नाश्ता तैयार करने को कहा। सामने बच्चे को गोद में लिए हुए आया सामने खड़ी थी।

श्रावणी ने एक पल को कुछ सोचा, फिर आया से कहा, 'जाओ, शिरीन से कह आओ कि साहब लौट आए हैं। और मुन्ने को भी लेती जाओ।'

श्रावणी अपने कमरे में लौट आयी। उसने गुणीदत्त के बिस्तर की तरफ एक निगाह डाली। उसे लगा, वह सो गया है। वह उसके करीब जा खड़ी हुई। वह सचमुच सो गया था। उसके अस्त-व्यस्त बाल माथे तक झूल आये थे। श्रावणी ने हाथ बढ़ाकर सँवार दिया। गुणीदत्त को पता नहीं चला, वह बेखबर सोया रहा।

श्रावणी कुर्सी खींच कर कुछ दूर जा बैठी और उसके निस्तेज, शान्त असहाय चेहरे को अपलक देखती रही। उसका यह रूप मानो वह पहली बार देख रही हो। मन-ही-मन कहीं कुछ दर्द कराह उठा। उसका मन हुआ कि वह उसके पास जा बैठे और अपने हाथ से उसकी देह-पीठ सहला दे।

लेकिन वह जानती है कि उससे यह भी नहीं होगा। बहुत दिनों से गुणीदत्त के खिलाफ उसके मन में तीखा आक्रोश पलता रहा है। उसके मन की मौन प्रतिक्रिया भी कम तीखी नहीं है।

श्रावणी के ही निर्देश पर अगले छः महीनों में, चार-पाँच बार शो देखने आये हुए, दर्शकों के टिकट के दाम तक वापस कर दिये गये। जिन्होंने चाहा, उन्हें पैसे वापस कर दिए गये, वर्ना उसी टिकट पर अगले शो में आने का आमंत्रण दिया गया।

यूँ बीच-बीच में प्रोग्राम स्थगित करने की वजह गुणीदत्त की अस्वस्थता थी। कम-से-कम दर्शकों को यही बताया गया। इस तरह किसी के अचानक बीमार पड़ जाने पर कोई कुछ कह भी क्या सकता है? लेकिन लाख छुपाने पर भी कम्पनी के लोग गुणीदत्त की बीमारी जान गये थे। श्रावणी शिरीन का चेहरा देखकर समझ गयी थी कि यह बात

उसे भी मालूम हो चुकी है। स्टेज के परिचालक भी उसकी बीमारी की वजह जान गये थे।

इन दिनों रात का शो खत्म होते ही गुणीदत्त शराब लेकर बैठ जाता है। शराब की मात्रा भी क्रमशः बढ़ने लगी है। आजकल तो सुबह से पीना शुरू कर देता है। श्रावणी उसी समय समझ लेती है कि उस दिन का शो गोल! और वह पहले से ही शो स्थगित करने का इन्तजाम करती है।

श्रावणी बाहर से बेहद शान्त दिखती हुई भी मन-ही-मन घबड़ा उठी। शुरू-शुरू में बहुत बार उसके सामने खड़े होकर सवाल किया, 'तुम्हें अब क्या इसी तरह चलना है?'

अपनी बातों का उसे कभी जवाब नहीं मिला। आजकल स्टेज के अलावा और किसी विषय पर बात करना वह लगभग छोड़ चुका है। अब वह किसी से बात भी नहीं करता।

श्रावणी ने दुबारा पूछा, 'सुनो तुम ऐसे क्यों होते जा रहे हो? ऐसी कौन-सी बात है, जिसे भूलने की कोशिश में, तुम अपने को तबाह कर रहे हो?'

गुणीदत्त ने उसकी इस बात का भी कोई जवाब नहीं दिया। हालांकि वह खुद भी जानती थी कि उसे जबाव नहीं मिलेगा, फिर भी उसने उम्मीद नहीं छोड़ी। वह थोड़ी देर चुप रहकर उसके उत्तर की प्रतीक्षा करती रही। फिर अपने को संयत करके दुबारा सवाल किया, 'अगर मैं तुम्हें सचमुच इतनी असहनीय लगने लगी हूँ, तो मुझसे कहो तो सही—मैं यहाँ से चली जाऊँ। मैं किसी की जिन्दगी में परेशानी का कारण नहीं बनना चाहती।'

इसके बाद दो-एक दिन के लिए शराब की मात्रा कम भले ही हो गयी हो, लेकिन फिर ज्यों-का-त्यों! श्रावणी सचमुच गम्भीरता से सोचने लगी कि वह चल दे या रहे। वह जानती है कि वह अगर चली भी जाए तो कोई उसे रोकने नहीं आयेगा। लेकिन उसके मुँह से जाने की बात सुनकर गुणीदत्त की आँखों में अव्यक्त बेचैनी झलक उठती है, उसे देखते हुए श्रावणी का मन ही उसे जाने की गवाही नहीं देता। जाने

क्यों उसे लगता है कि उसके दूर जाते ही यह आदमी खुदकुशी कर लेगा। अगर ऐसा हुआ तो उसे कोई हैरत भी नहीं होगी।

शिरीन को भी उस रातवाली घटना से जितना सदमा नहीं लगा था, उससे अधिक वह उसके यूं शराब में डूबने से अचम्भित हो उठी थी।

शो स्थगित होने की सूचना मिलते ही, वह चुपचाप गुणीदत्त के—कमरे में आकर खड़ी हो गयी। काफी देर वह उसकी शक्ल की तरफ एकटक देखती रही। अचानक उसकी आँखों में तीखा रोष झलक उठा। उसकी वह निगाहें श्रावणी को मानो भस्म कर डालना चाहती हों, लेकिन वह नि.शब्द अपने कमरे की तरफ लौट गयी।

इन दिनों इस लड़की के रंग-ढंग में भी जो परिवर्तन आया है, उसे लेकर श्रावणी हैरत में पड़ गयी। शिरीन पहले की तरह ही जादू-मंच पर शो पेश करते हुए वह जादूगर की जादू-सहचरी भानुमती के रूप में बेहद मुखर दिखती है। सैकड़ों दर्शकों की आखों में वह साक्षात जादू परी लगती है। श्रावणी ने उसकी हर गति-विधि को बड़े गौर से देखा परखा है। स्टेज पर आते ही इस लड़की के चेहरे के सारे मनोभाव बदल जाते हैं। उसके होठों पर जादुई सम्मोहन झलक आता है। उसकी काली-काली आँखों से जादू झरने लगता है और दर्शकों पर जादू का नशा छा जाता है। वह धीरे-धीरे जादूगर को सजग करके उसमें नयी जान फूंक देती है। जब वह शीशे के फ्लोर पर आकर खड़ी होती है तो कभी-कभी श्रावणी के लिए यह याद रखना मुश्किल हो जाता है कि इन दिनों वह कहाँ से बदल गयी है। शो प्रस्तुत करते हुए, उसका शान्त सौम्य चेहरा जीत की खुशी से चमकने लगता है। श्रावणी को उसका यह दमकता हुआ रूप बेहद क्षमाशील और खूबसूरत लगता है। लेकिन शो से बाहर आते ही, वह लड़की बदल जाती है। स्टेज से बाहर उसे जो लड़की दिखती है, वह भामुमती नहीं शिरीन है, उस समय वह अतिशय सजग हो उठती और उसके चेहरे पर चंचलता की जगह गम्भीरता की छाया उतर आती है। शो के बाद वह किसी से एक शब्द भी नहीं बोलती, सिर्फ इधर-उधर गर्दन घुमाकर सबकी तरफ टुकुर-टुकुर देखा करती है।—खासकर श्रावणी की ओर और अपने जादूगर की। इस

लड़की के प्रति भी घर के मालिक का रुख बदल गया है, यह बात भी श्रावणी की निगाह से छुपी नहीं रही।

शिरीन के यहाँ अब वह प्रैक्टिस के लिए भी नहीं जाता। स्टेज के बाहर उन दोनों में दिन भर में शायद ही कोई बात होती हो।

इन दिनों श्रावणी को भी उसकी इस आत्महन्ता मनःस्थिति की वजह का कुछ-कुछ आभास होने लगा है। वैसे उस रात के बाद से ही उसे थोड़ा-बहुत सन्देह होने लगा था।

दो महीने पहले किसी फिल्म कम्पनी ने अपने फिल्म के लिए शिरीन को अनुबन्धित करना चाहा। उनकी तरफ से प्रस्ताव आते ही श्रावणी ने गुणीदत्त के सामने ही शिरीन को बुलाकर कहा ! 'अगर तुम चाहो, तो जा सकती हो—वैसे भी अगर तुम अपना भविष्य बनाना चाहती हो, तो तुम्हें फौरन राजी हो जाना चाहिए।'

शिरीन ने हाँ या ना कुछ भी नहीं कहा। उसकी क्रोधभरी तीखी दृष्टि श्रावणी के चेहरे पर से फिसलती हुई गुणीदत्त पर जा टिकी। वह थोड़ी देर तक उसे घूरती रही, फिर चुपचाप बाहर निकल गयी। इतना बड़ा प्रलोभन छोड़कर, महज जादू-सहचरी बने रहने की चाह, श्रावणी को बेहद अस्वाभाविक जान पड़ी।

जयपुर में अचानक ही यह त्रिकोण, आपस में बुरी तरह टकरा गया। शो का आमन्त्रण पाकर वे लोग चार-पाँच दिनों पहले ही, वहाँ पहुँच गये। राजा-महाराजाओं का मामला ठहरा ! काफी लोभनीय रकम का अनुबन्ध हुआ था। बाहर से बहुत राजनीतिक नेता और कूटनीतिज्ञ भी उनका 'शो' देखने आ रहे हैं। लेकिन यहाँ पहुँचने के दूसरे दिन से ही गुणीदत्त नॉन-स्टॉप पी रहा है। यह कलकत्ता नहीं है।

अपने इस आश्चर्यजनक जादूगर मेहमान की मेहमान-नवाजी के लिए सैकड़ों प्रतिष्ठित लोग हर वक्त आते-जाते रहते हैं। श्रावणी ने गुणीडाटा की तबीयत ठीक न होने का बहाना बनाकर उन सब को टाल

दिया। लेकिन मन-ही-मन मारे खीज और चिन्ता के वह परेशान हो उठी। कई बार गुणीदत्त के कमरे में आकर उस पर झल्लाहट व्यक्त करते हुए, उसे होश में लाने की कोशिश की लेकिन गुणीदत्त पर इन सबका कोई असर नहीं हुआ।

यह अपना कलकत्ता नहीं है कि बात, दबी-ढँकी रहे। यहाँ वे लोग किसी के मेहमान हैं। जादूगर की अवस्था को लेकर लोगों में काफी कानाफूसी होने लगी। शो शुरू होने से दो रात पहले, शिरीन श्रावणी के पास आयी थी। दोनों एक ही अहाते में रहते हुए भी पिछले दो दिनों में श्रावणी ने खाने के अलावा और किसी वक्त उसे देखा भी नहीं था।

शिरीन ने बेहद धीर-गम्भीर भाव में पूछा, 'तो तुम गुणीडाटा की शराब नहीं छुड़वा सकी ?'

श्रावणी उसकी बात सुनकर अवाक् रह गयी, फिर सम्हलकर अपने को संयमित करते हुए कहा, 'नहीं ! मैं तो नहीं छुड़ा सकी. अब क्या तुम कोशिश करना चाहती हो ?'

'मैंने तो बिल्कुल छुड़वा ही दिया था। तुमने फिर से शुरू करवा दिया। तुम अगर उसे अपना प्यार दे पाती, तो वह कभी-कभी शराब नहीं पीता।'

उसकी इस स्पर्धा पर श्रावणी स्तब्ध रह गयी।

लेकिन उसके कुछ कहने से पहले, होंठों तक आयी हुई बात को पीछे धकेलते हुए, शिरीन उसके और करीब खिसक आयी। अव्यक्त भय से कातर आवाज में कहा, 'सुनो इसी शराब की वजह से मेरी माँ मर गयी, मेरे साहब जी मर गये। तुम क्या नहीं देख रही हो कि गुणी किस ओर जा रहा है। तुम्हें क्या वाकई समझ में नहीं आ रहा है कि क्या होने वाला है ?'

श्रावणी को जवाब देने में थोड़ा वक्त लगा। धीमी आवाज में कहा, 'हाँ, समझ रही हूँ। अब अगर चाहो, तो तुम ही उसे प्यार देकर देखो न कि वह शराब छोड़ पाता है या नहीं।'

शिरीन अपनी काली-काली आँखों से श्रावणी को एकटक घूरती

जवाब कल मिलेगा । आज, तुम जाओ ।'

शिरीन रुकी नही बाहर निकल आयी । श्रावणी उसी तरह दरवाजे पर खड़ी रही । शिरीन ने उसकी तरफ आँख उठाकर देखा भी नही ।

अगले दिन दोपहर को तीनों खाने की मेज पर आ बैठे । श्रावणी, गुणीदत्त और शिरीन ।

गुणीदत्त ने आज सुबह से ही शराब को हाथ नही लगाया था । खाना खाते हुए अचानक ही वह उठ खड़ा हुआ । एक मिनट मे लौट आने को कह कर, वह बाहर निकल गया और जब लौटा तो उसके हाथ में शराब की बोतल थी ।

वह बेहद सधे हुए हाथों से अपनी गिलास मे शराब उड़ेलने लगा । उसने गिलास खाली करके उसे दुबारा भर लिया । इस बार उसने सिर्फ गिलास मे ही शराब नही उड़ेली, भात, तरकारी, मास-मछली—समूचे खाने पर ही शराब छिड़क लिया । सब कुछ शराब में डुबोकर खाना शुरु किया ।

नौकर तटस्थ भाव से खड़े रहे । श्रावणी स्तब्ध रह गयी । शिरीन के काटों तो खून नही था । गुणीदत्त ने आज जवाब देने को कहा था । उसने अपनी तरफ से जवाब दे दिया । शराब-वर्जित किसी खाद्य को वह मुँह में भी नही डालेगा ।

शिरीन खाना छोड़कर आहिस्ते से उठकर खड़ी हो गयी । उसका गोरा चेहरा, कागज की तरह सफेद लग रहा था । वह एक-एक कदम चलती हुई कमरे से बाहर निकल गयी ।

श्रावणी को अचानक जैसे होश आया । नौकर-चाकरों के सामने उसका सिर शर्म से झुक गया । वह क्रोध और वितृष्णा के मारे सुध-बुध भुला बैठी । वह भी एक झटके से उठकर बाहर चली गयी । तमाम खुराफातों की जड़ मानो वह छोकरी ही ।

'ठहरो——!'

शिरीन ठहर गयी । पलटकर श्रावणी की तरफ देखा । [illegible] दबे स्वर मे, उसका पहला अग्निबाण छोड़ा, 'तो ? अब तुम [illegible]

अभी जो कुछ हुआ है, उसके बाद भी अपनी शक्ल दिखाते हुए, तुम्हें शर्म नहीं आएगी ? अपने प्यार की ताकत देख ली या अभी और देखना बाकी है ?'

शिरीन ने कोई जवाब नहीं दिया ।

श्रावणी ने भरसक अपना गुस्सा दबाते हुए मुलायम आवाज में कहा, 'अगर तुममें इतनी-सी भी गैरत और आत्म-सम्मान बच रहा हो, तो मुझे उम्मीद है कि तुम इसी क्षण यहाँ से चल दोगी ।' और वह गुस्से से जलती-भुनती दुबारा खाने के कमरे में लौट आयी ।

अगले दिन सुबह से ही रात के शो के लिए जोरदार तैयारियाँ शुरू हो गयीं । इन दो दिनों में जाने कौन-कौन-सा खेल दिखाना है, गुणीदत्त उनके चुनाव में सुबह से ही व्यस्त था । उसने गम्भीर सोच-विचार के बाद एक खास खेल के बारे में तय किया—फ्लोटिंग लेडी ? नहीं, यह खेल दिखाना सम्भव नहीं है । इसके लिए एक बेहद कुशल सहचरी की जरूरत है । पीपे और भालू का इरादा भी इसी वजह से छोड़ दिया गया । और बिना किसी अनुभवी सहचरी के 'सीइंग थ्रू ए लेडी' खेल भी दिखाना जोखिम का काम है । ऐसे ही अपने ईजाद किए हुए तमाम खेल इसी वजह से स्थगित कर देने पड़े । अन्त में 'कलाकार का स्वप्न' बच रहा । वह खेल भी कैसे दिखाया जा सकता है ? लेकिन गुणीदत्त ने सबको यही तसल्ली दी है, 'सब ठीक है—हो जाएगा ।'

शिरीन कल से ही गायब है । जाने कहाँ चली गयी । श्रावणी को भी उसका अता-पता नहीं मालूम ।

श्रावणी आज अपने को बेहद असहाय महसूस कर रही थी । उसे भी लग रहा है कि उसके बिना शो की सारी ताकत ही जैसे शिथिल पड़ गयी है ।

विलक्षण जादूगर गुणीडाटा के प्राणहीन नीरस जादू खेलों को देखकर शहर के गणमान्य दर्शक, शायद बेहद निराश भी होंगे । कम्पनी के

बाकी सब कर्मचारियों का उत्साह भी जैसे बुझा-बुझा-सा जान पड़ा।

गुणीदत्त शाम तक बेहद अनमना हो उठा। उसने श्रावणी से इतना भर पूछा, 'कल तुमने शिरीन को चले जाने को कहा था न?'

श्रावणी ने कोई जवाब नहीं दिया।

गुणीदत्त ने फीकी-सी हँसी हँसकर कहा 'मैंने भी उससे यही कहना चाहा था और जिस ढंग से मैंने कहा, उसकी तुलना में तुमने जो कहा, वह बहुत साधारण था। खैर, जाने दो, कोई बात नहीं। जो हुआ, ठीक हुआ।'

श्रावणी को आखिर कहना ही पड़ा, 'कहाँ? मुझे तो कहीं, कुछ भी सही नहीं दिख रहा है। हमारे जो खास-खास खेल थे, प्रायः उन सब को कैंसिल कर देना पड़ा।'

'अब जो है, उसी से काम चल जाएगा। तुम परेशान मत हो।'

गुणीदत्त उठकर बाहर चला गया। लेकिन श्रावणी निश्चिन्त होने के बजाय, अपने को जाने क्यों और अधिक निरुपाय महसूस कर रही थी।

निश्चित समय पर बेहद बिखरे-बिखरे तरीके से शो शुरू किया गया। अचानक ग्रीन-रूम में उत्साह की लहर दौड़ गयी। भीतर शिरीन बैठी हुई थी। गुणीदत्त की जादू-सहचरी के रूप में वह जैसे आती थी, वैसे ही तैयार होकर आयी थी।

श्रावणी कोई अप्रिय-सी बात कहते-कहते रुक गई। वह मन-ही-मन बेहद निश्चिन्त हो उठी। गुणीदत्त ने उसकी तरफ देखा जरूर, लेकिन कोई बात नहीं थी।

उस दिन के शो ने निराला समाँ बाँध दिया। अगले दिन भी शो काफी जमा। जाने क्यों, श्रावणी को भी यही लगा कि इतना जीवन्त जादू खेल उसने बहुत कम देखा है।'

सब लोग साँस रोककर खेल देखते रहे। वह भी उसके खेलों को कला का पर्याय मानने को विवश हो गयी। शिकारी और भालू के रूप के हेर-फेर का रहस्य जानते हुए भी, आज उसी खेल ने उसे नये तरीके से भरमा लिया? वह नये तरीके से फिर धोखा खा गयी।

क बार अन्दर की तरफ झाँककर देखा, फिर बौखलाया-सा इधर-उधर
ढ़ता रहा ।

श्रावणी से आँखें मिलते ही, वह चौंक उठा । अपने को किसी तरह
यत करके, वह उसके पास आकर खड़ा हो गया । कहा, 'चलो, चलें ।'

श्रावणी अवाक् रह गयी । वह किसी अज्ञात आशंका से काँप
उठी । पूछा, और शिरीन —?'

'लगता है, वह कहीं बीच में ही उतर गयी है ।'

यह कहते हुए गुणीदत्त तेज-तेज कदमों से गेट की तरफ बढ़ा ।

श्रावणी विमूढ़-सी उसी तरह खड़ी रही ।

वह आदमी गेट की तरफ बढ़ता जा रहा है—यह देखते हुए भी,
वह उसे रोक नहीं पायी और उसके पीछे-पीछे जा नहीं पायी ।

लेकिन कुछेक पलों में जैसे उसकी चेतना लौट आयी । प्लेटफॉर्म पर
अभी भी लोगों की भीड़ थी । सब अपना-अपना सामान उतारने में लगे
थे । कुछ लोग कुली के लिए चीख-पुकार मचाए हुए थे । उन लोगों के
देखने में भूल भी तो हो सकती है । होस कता है कि शिरीन शायद इसी
भीड़ में ही कहीं मिल जाए ।

श्रावणी शिरीन के कम्पार्टमेण्ट की ओर बढ़ी । उसकी आँखें बड़े
गौर से इधर-उधर कुछ खोजती रहीं और अन्त में बेहद शिथिल कदमों
से गेट की तरफ लौट आयी । इससे साफ जाहिर था कि वह लड़की
सिर्फ उनके नाम और सम्मान की रक्षा के लिए दो दिनों रुकी रही ।
उनका सम्मान बढ़ा दिया और चली गयी । उससे तो यह कहा ही गया
था कि वह चली जाए । लेकिन शिरीन के चले जाने के ख्याल से वह
अपने आप को इतना खाली क्यों महसूस कर रही है ?

गुणी गेट के सामने उसकी प्रतीक्षा कर रहा था । टिकट भी उसी
के पास थी । उसने श्रावणी से कुछ नहीं पूछा । उसकी तरफ देखा भी
नहीं । वह चुपचाप गेट से निकलकर स्टेशन के बाहर खड़ी गाड़ी में आ
बैठी ।

गाड़ी की पिछली सीट से पीठ टिकाए हुए बैठ गया । और आँखें
मूँद लीं । श्रावणी ने चेहरा घुमाकर दो-एक बार उसकी तरफ देखा ।

भूल भी तो सकते हैं। दर्शकों के दिल से भानुमती की याद मिट जाए, जादू कम्पनी के लोगों ने यही कोशिश की।

लेकिन उनकी तमाम कोशिशें किसी एक बिन्दु पर पहुँचकर अकारथ पड़ जाती हैं, यह बात सिर्फ श्रावणी ही जानती है। इस कटु सत्य को सिर्फ वही महसूस कर सकती है।

लगभग दो मास बाद गुणीदत्त के नाम विलायत से एक खत आया। उसे पढ़ते हुए उसके चेहरे के उतरते-चढ़ते भावों को देखकर श्रावणी का दिल बुरी आशंका से धड़क उठा। उसे लगा, गुणीदत्त को अचानक फिर कोई शॉक लगा है। उनका समूचा चेहरा रक्तहीन और पीला पड़ गया था।

'किसका खत है?'

गुणीदत्त कोई जवाब न देकर, वह खत उसकी तरफ बढ़ा दिया। श्रावणी खत पढ़ने लगी। खत जूली एण्डरसन का था।

'बन्धु, उम्मीद है मुझे भूले नहीं होंगे। मेरा खत पाकर शायद हैरान भी होंगे। मैंने भी यह कभी नहीं सोचा था कि किसी दिन तुम्हें खत लिखूँगी। वैसे यह खत छुपाकर लिख रही हूँ। सिरीन से छुपा कर। आजकल वह मेरे ही पास है। इस देश के एक जादूगर की सहचरी बन गयी है, लेकिन उसके लिए मुझे बेहद फिक्र रहने लगी है। उसकी शराब की मात्रा क्रमशः बढ़ती जा रही है—आजकल वह दोनों वक्त पीने लगी है। मेरे मना करने पर हँसती है। कहती है, जिस चीज को गुणीदादा नहीं छोड़ पाया, मैं देखना चाहती हूँ—आखिर वह कैसी चीज है। अच्छा, दोस्त! क्या तुम एक बार झूठ-मूठ भी नहीं लिख सकते कि तुमने अब शराब पीनी छोड़ दी है?—जूली एण्डरसन!

श्रावणी का मन रो आया। उसने उसी वक्त जवाब देना चाहा।

में यह सूचना छपी थी, जाने तुमने पढ़ी या नहीं। यहाँ सबका यही ख्याल है कि खेल दिखाते हुए, उसकी अपनी ही किसी गलती की वजह से यह दुर्घटना हुई। लोग इसे दुर्घटना ही कहेंगे।

'बन्दूक से छूटी हुई गोली को दाँतों से पकड़ने का खेल उसने शायद तुमसे ही सीखा था। लेकिन उस दिन जादूगर के हाथों नकली नहीं, असली गोली ही छूटी थी। इस आकस्मिक दुर्घटना पर जादूगर खुद भौंचक्का रह गया। लेकिन तुम ही बताओ, इसमें उसका क्या दोष था। दर्शकों को असली गोली दिखाकर, उसे शिरीन ने ही बन्दूक में भरा था। लेकिन उस खौफनाक हादसे के बाद पता चला कि नकली गोली तो शिरीन के हाथों में ही रह गयी थी। उसकी जगह उसने बन्दूक में असली गोली भरकर जादूगर को थमा दिया था। जाहिर है कि लोगों को यही लगा कि उसे अपनी ही गलती से बेमौत मरना पड़ा।

'लेकिन मैं तो जानती हूँ, उसने यह गलती अनजाने में नहीं की। पिछले कई दिनों से वह बेहद उदास थी। अभी तीन दिन पहले बेतहाशा शराब पी लेने के बाद, उसने हँसते-हँसते कहा, 'सुनो कभी अचानक ही मुझे कुछ हो जाए, तो गुणीडाटा को जरूर खबर देना।' लेकिन ऐसा कुछ होगा, यह मैंने नहीं सोचा था। अस्पताल में भर्ती होने के बाद भी करीब चार-पाँच घण्टे वह जिन्दा थी और अपने पूरे होशोहवास में थी। मुझे बुलाकर बेहद कमजोर आवाज में फुसफुसाकर कहा था, गुणीडाटा ने अब भी शराब छोडी या नहीं, बस, यह नहीं जान पायी।'

'तुमसे एक अनुरोध है, बन्धु! तुमने अगर अब भी शराब न छोडी हो, तो अब छोड़ देना। बस।

—जूली ऐन्डरसन

काफी देर तक कोई आहट न पाकर गुणीदत्त दबे पाँव कमरे में आया। श्रावणी दोनों बाँहों में मुँह छुपाए, मेज पर शायद रो रही थी। गुणीदत्त की आँखों में भी आँसू झिलमिला आए—सामने का सब कुछ बेहद धुँधला हो आया।

लेकिन···वह रो नहीं रहा—वह तो हँस रहा है—

कम-से-कम कोशिश जरूर कर रहा है—

●●●